CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रभारती के गायक

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर'

(अभिनन्दन-ग्रन्थ)

●

सम्पादक की ओर से
सादर भेंट।

डॉ० शोभनाथ 'लाल'
मो० बगदीबपुर,
बलिया-277001

सम्पादक

डॉ० शोभनाथ 'लाल'

●

प्रकाशक

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' अभिनन्दन समारोह समिति

बलिया–277001 (उत्तर प्रदेश)

१९८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' अभिनन्दन समारोह समिति

बलिया—277001

भोजपुरी रत्न डॉ० रामविचार पाण्डेय
अध्यक्ष

जगन्नाथ प्रसाद
उपाध्यक्ष/कोषाध्यक्ष

हरिशंकर चतुर्वेदी
संयोजक

नन्हैंलाल श्रीवास्तव
संयोजक;
वित्त उपसमिति

लालजी सहाय 'लोचन'
संयोजक,
प्रचार उपसमिति

डॉ० शोभनाथ 'लाल'
सम्पादक

कार्यकारिणी के सदस्य :

प्रभुनाथ मिश्र
काशी प्रसाद 'उन्मेष'
शिवकुमार राय
प्रो० कैलाशपति श्रीवास्तव
डॉ० हैदर अली खां
कमला प्रसाद श्रीवास्तव
त्रिभुवननाथ त्रिपाठी
डॉ० ललता प्रसाद
प्रो० श्यामजी चौबे

जुलाई, १९८५ ई०
मूल्य : ३१ रुपये मात्र

मुद्रक :
सुदर्शन मुद्रक
६३/४२, उत्तर बेनिया बाग,
वाराणसी-२२१००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण !

कालजयी कवि महामनस्वी,
राष्ट्रभारती के गुण-गायक ।
दिशा-बोध कविकुल दिनकरके,
देश-चेतना के सह-नायक ।

सरल सुगम निर्द्वन्द्व निरन्तर,
निर्विवाद सुखदायक सुन्दर ।
निश्छल 'मधुर' तोतले भावों,
के हे रचनाकार मनोहर !

शत-शत तेरा अभिनन्दन कर,
जन-जन हर्षित, हिन्दी गर्वित ।
सुभग स्वस्थ जीवन शतायु हो,
अभिनन्दन यह ग्रंथ समर्पित !

—सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्तावना

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' राष्ट्रीय जनजागरण के ओजस्वी गायक तथा हिन्दी में बालसाहित्य के प्रमुख उन्नायक रहे हैं। इन्होंने हिन्दी में उन दिनों काम करना प्रारंभ किया था, जब हिन्दी को गँवारू भाषा और हिन्दी बोलने-लिखने वालों को गँवार समझा जाता और उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था। 'मधुर' जी एक ओर साहित्य-क्षेत्र में आचार्य क्षितिमोहन सेन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, लाला भगवान 'दीन', महापंडित राहुलसांकृत्यायन, मुंशी प्रेमचन्द, पण्डित माखनलाल चतुर्वेदी आदि से लेकर राष्ट्रकवि स्व० रामधारी सिंह 'दिनकर' से सीधे जुड़े रहे हैं, तो दूसरी ओर स्वातन्त्र्य आन्दोलन में महात्मा गांधी से लेकर १९४२ के शेरे बलिया श्री चित्तु पाण्डे तथा रामअनन्त पाण्डेय तक की राजनीतिक गतिविधियों के प्रत्यक्ष द्रष्टा भी रहे हैं। 'कर्मवीर' में इनकी राष्ट्रीय जागरण की कविताओं को पढ़कर 'दिनकर' चौंक पड़े थे—'यह कौन है जो इतनी लापरवाही से, और इतनी अच्छी चीज लिखता है!' बाद में 'मधुर' जी की काव्य-साधना 'दिनकर की प्रेरणास्रोत बन गयी। 'मधुर' जी न केवल राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक एवं राजनीतिक क्रियाकलापों के साक्षात् इतिहास हैं वरन् नयी पीढ़ी के बहुविध प्रेरणा पुरुष भी हैं। इनकी प्रेरणा से आज भी हिन्दी का युवा-साहित्य-सृजन स्पन्दित है। वास्तव में आप संस्मरणों की मुखर मंजूषा हैं और एक प्रख्यात ऐडवोकेट भी, जिन्होंने भय और आतंक के जमाने में भी साहस और दृढ़ता से क्रांतिकारी देशभक्तों की पैरवी की।

ऐसे साहित्यकार एवं युगपुरुष का सारस्वत सम्मान किया जाना नितान्त समीचीन तथा अपने आप मे एक ऐतिहासिक आयोजन है। इनका अभिनन्दन वास्तव में इनके दिव्यगुणों और दैवी वाणी के प्रति कृतज्ञतापूर्ण आदर व्यक्त करने का दुर्लभ अवसर है।

अभिनन्दन-समारोह की सुसम्पन्नता में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायक सभी महानुभावों विशेषकर जनाब इज़हारुल हुसैन साहब (भदोही) के प्रति हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। अभिनन्दन ग्रंथ के सम्पादन में सहयोगी सभी लेखकों, रचनाकारों, कवियों एवं महापुरुषों के हम अभारी हैं जिन्होंने हमारे निवेदन प कृपापूर्वक लेख, संस्मरण, संदेश एवं काव्यांजलियाँ प्रेषित कीं। अभिनन्दन-ग्रंथ के व्यय-साध्य प्रकाशनमें सहयोग देकर 'अभिनन्दन समारोह समिति' ने वास्तव में एक दुर्गम परन्तु स्पृहणीय कार्य किया है। सदस्यों के निष्ठा एवं मनोयोगपूर्ण सत्प्रयास के लिये अनेकशः साधुवाद।

—संपादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर'

२४ नवम्बर, १९०३ ई०] आविर्भाव [अगहन शुक्ल ५, १९६० वि०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रम

	पृष्ठ
क. समर्पण	ग
ख. प्रस्तावना	घ
ग. सन्देश	१–६

१. जीवन-वृत्त एवं साहित्य यात्रा— डॉ० शोभनाथ 'लाल' ९–४४

संक्षिप्त जीवन-वृत्त–शिक्षा–गृहलक्ष्मी में–लेखन की प्रेरणा–कवि का उत्कर्ष–स्वागत गानों के रचयिता–बदलते आयाम —बालकाव्य के प्रणेता—कवि सम्मेलनों में—स्वातन्त्र्य-संग्राम में भूमिका—'मधुर' जी जब दरबारी बने—दिनकर से परिचय—साहित्यिक कर्तृत्व—मूल्यांकन—कविता पर 'मधुर' जी के विचार—राजकीय सम्मान—साहित्यिक सम्मानों के प्रेरक—अखबारों का सम्पादन—हिन्दी प्रचारिणी सभा में।

२. 'मधुर' जी की लोकप्रिय कविताएँ— ४७–५८

कुरुक्षेत्र – डोमिन—डोम—हलवाहा—राजाओं से—दिल्ली कितनी दूर—विद्रोही—मधुविन्दु – शृंगार—झण्डा—अम्मा अब मैं बड़ा हो गया—बलिहारी—सुन्दर पाप—जलियांवाला बाग—खेलो भारत के नौनिहाल—राजपाट का खेल।

३. 'मधुर' जी : साहित्यकारों की लेखनी से ५९–१०६

१. विलक्षण प्रतिभा के धनी कविवर 'मधुर'	—स्व० रामधारी सिंह 'दिनकर'	५९
२. 'गरल-सुधा' की भूमिका	—स्व० डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी	६६
३. कालजयी कवि 'मधुर' जी	—डॉ० विवेकी राय	६६
४. मधु रातीति मधुरः	—हीरालाल	७०
५. 'मधुर'जी का स्पृहणीय व्यक्तित्व	—डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी	७३
६. 'मधुर' जी : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—नर्मदेश्वर चतुर्वेदी	७७
७. मधुर-स्तोत्र	—डॉ० श्रीपाल सिंह 'क्षेम'	७९
८. महामनस्वी 'मधुर' जी	—श्री रामसिंह 'उदय'	८१
९. राष्ट्रभारती के गायक कविवर श्री 'मधुर'	—प्रभुनाथ मिश्र	८४
१०. 'मधुर' जी के साथ एक भेंट	—भवगती प्रसाद द्विवेदी	८७
११. सफल बालसाहित्यकार 'मधुर' जी	—सुरेन्द्र विक्रम	९०
१२. मधुर जी की मधुरता	—नरेन्द्र शास्त्री	९३
१३. अधिवक्ता 'मधुर' जी की सूझ-बूझ	—शिव कुमार राय एडवोकेट	९७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४. ऐसे हैं बाबू जी ! —डॉ० श्रीमती शशिबाला १००
१५. सब कुछ मधुर-मधुर —हरिशंकर चतुर्वेदी १०४
१६. बच्चों के कवि के प्रति हमारा दायित्व —डॉ० राष्ट्रबन्धु १०६

४. **विशिष्ट साहित्यकारों के चुने हुए पत्र** १०९-१३४
मैथिली शरण गुप्त—रामधारी सिंह 'दिनकर'—कन्हैया लाल फूलफगर—सोहन लाल द्विवेदी—श्री० बा० हर्डीकर—माखन लाल चतुर्वेदी—श्री कान्त जोशी—गुरुभक्त सिंह 'भक्त'—डॉ० भगवत शरण उपाध्याय—डॉ० उदयनारायण तिवारी—निरंकार देव सेवक—लल्ली प्रसाद पाण्डेय—मनोरंजन प्रसाद सिन्हा—डॉ० हरिकृष्ण देवसरे—डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी—डॉ० विवेकी राय ठाकुर प्रसाद सिंह—केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'—श्री रामसिंह 'उदय' अविनाश चन्द्र विद्यार्थी—नवीन रश्मि—डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा—सूर्य कुमार पाण्डेय—श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश'—नर्मदेश्वर चतुर्वेदी—रोहिताश्व अस्थाना—भगवती प्रसाद द्विवेदी ।

५. **स्मृति-शेष**
१. राष्ट्रकवि स्व० रामधारी सिंह 'दिनकर' —डॉ० सौमित्र १३७
२. विपुल प्रतिभा के धनी डॉ० भगवत शरण उपाध्याय —डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी १४५
३. 'मधुर' जी के अनन्य मित्र : डॉ० उदयनारायण तिवारी —स्वामी विमलानन्द सरस्वती १५०

६. **कुछ स्फुट साहित्यिक निबन्ध**
१. बाल साहित्य की चुनौतियाँ और समस्यायें —डॉ० रोहिताश्व अस्थाना १५७
२. काव्यानन्द : ब्रह्मानन्द —काशी प्रसाद 'उन्मेष' १६२
३. बलिया की विभूति डॉ० गणेश प्रसाद —स्व० डॉ० उदयनारायण तिवारी १६५
४. भोजपुरी भाषा और साहित्य —डॉ० रामविचार पान्डेय १६६
५. बलिया जनपद का साहित्य दर्पण —सम्पादक १७४
६. स्वातन्त्र्य-संग्राम के कवि 'दिनकर'—रामसिंहासन सहाय 'मधुर' १८१

७. **काव्यांजलियाँ** १८९-१९८
अमृतपुत्र—जगदीश ओझा 'सुन्दर'—हरिशंकर चतुर्वेदी—रमाशंकर पाण्डेय 'नवल'—शब्दानन्द 'शब्द'—अवधेश पाण्डेय 'विवश'—दयाशंकर तिवारी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं
दे
श

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्देश

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' पूर्वांचल के प्रसिद्ध नगर बलिया के निवासी हैं। बलिया ने हिन्दी-जगत् को श्री परशुराम चतुर्वेदी डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० उदयनारायण तिवारी, डॉ० भगवत शरण उपाध्याय, विद्वद्वर पं० बलदेव उपाध्याय के समान साहित्यिक विभूतियाँ दी हैं जिन्होने हिन्दी वाङ्मय की अनुपम श्रीवृद्धि की। स्व० श्री परशुराम चतुर्वेदी की तरह मधुर जी कोरे साहित्यिक नहीं हैं। उन्हीं की तरह वे भी व्यवसाय से ऐडवोकेट हैं, और अत्यन्त सफल ऐडवोकेट हैं। किन्तु उनकी मौलिक साहित्यिक प्रतिभा को सफल, अर्थकारी और शुष्कवकालत एकदम दबा नहीं सकी।

महात्माजी के आन्दोलन के आरंभिक युग में उनकी राष्ट्रीय कविताओं ने पूर्वांचल में जागृति उत्पन्न करने में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया और वे बड़ी लोकप्रिय हुईं। बाद में उन्होंने बालकों के लिए कविताएँ लिखना आरंभ किया जिसका सिलसिला अब भी चल रहा है। ८ दशक पार कर लेने के बाद भी उनकी साहित्य-सेवा न तो वृद्ध या अशक्त हुई और न उसने विश्राम ही लिया। हाल ही में प्रकाशित उनकी प्रौढ़ कृति 'गरल-सुधा' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। साहित्य-सेवा उनके लिए, अन्य साहित्यकारों की तरह, व्यवसाय नहीं है, वह विशुद्ध सेवा भाव से अपनी नैसर्गिक प्रतिभा के कारण स्वान्तः सुखाय प्रस्फुटित होती रहती है। हिन्दी में स्वान्तः सुखाय रचनाएँ अधिकतर महत्त्वपूर्ण और लोकोपयोगी हुई हैं। मधुर जी की निष्काम सेवा ने कभी प्रचार या प्रसिद्धि की अपेक्षा नहीं की। इसलिए मेरे ऐसे व्यक्ति के लिए वे विशेष रूप से वरेण्य हैं। ऐसे मौन साधक के नागरिक सम्मान का आयोजन किया जा रहा है, इस समाचार से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं आयोजकों को इसके लिए हार्दिक बधाई देता हूं। एक हिन्दी-प्रेमी होने के कारण मैं इस अभिनन्दन का स्वागत करता हूँ कि मधुर जी अभी कई दशक अपनी प्रतिभा से हिन्दी साहित्य को आलोकित करते रहें। उनके अभिनन्दन के अवसर पर मैं इस वय में (९२ वर्ष) इतना कह कर ही संतोष किये लेता हूँ कि—

"वन्दना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो।"

५३, खुर्शेदबाग,
लखनऊ—२२६००४
२९-५-१९८५

श्रीनारायण चतुर्वेदी
एम० ए०, डी० लिट्, साहित्य वाचस्पति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्देश

D/3375/CM/85

नारायणदत्त तिवारी मुख्यमन्त्री विधान भवन

लखनऊ

दिनांक २२ अप्रैल, १९८५

मुझे यह जानकर हर्ष है कि हिन्दी के यशस्वी साहित्यकार एवं कवि श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' के सम्मान में उनका अभिनन्दन समारोह आयोजित किया जा रहा है और अभिनन्दन-ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है।

साहित्यकार समाज का प्रतिबिम्ब होता है और मार्ग दर्शक भी। उनको सम्मान देकर पूरा समाज उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है। आशा है अभिनन्दन समारोह में 'मधुर' जी के प्रति इसी भावना की अभिव्यक्ति की जायगी और अभिनन्दन-ग्रन्थ पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत होगा।

समारोह तथा अभिनन्दन-ग्रन्थ की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएँ !

नारायणदत्त तिवारी

साहित्यकार का अभिनन्दन स्वयं में एक अभिनन्दनीय कार्य है। इसमें श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' जैसे साहित्यसेवी, विद्वान् एवं स्नेहिल व्यक्तित्व के सम्बन्ध में अभिनन्दन-ग्रन्थ का प्रकाशन जनपद बलिया के लिये और भी गौरव की बात है। मैं स्वयं 'मधुर' जी की राष्ट्रीय भावना, रचना-शैली, तार्किक शक्ति एवं प्रेरक तथा अनुशासित जीवन से प्रभावित हुआ हूँ।

अभिनन्दन समारोह समिति के इस सार्थक एवं प्रशंसनीय प्रयासों के साथ ही 'मधुर' जी के प्रति अपनी शुभकामनाएँ एवं सद्भावनाएँ व्यक्त करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। सरल, सहज एवं मधुर स्वभाव के धनी 'मधुर' जी के उज्ज्वल तथा प्रेरणादायक जीवन-दर्शन से आनेवाली पीढ़ी को शक्ति, सामर्थ्य एवं दिशा-बोध मिलता रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

बलिया :

२७ मार्च, १९८५

कालिका प्रसाद
आई० ए० एस०
जिलाधिकारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि 'मधुर' जी के अभिनन्दन के अवसर पर अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। 'मधुर' जी से मेरा परिचय १९६५ में हुआ था जब मैं बलिया में मुंसिफ के पदपर तैनात हुआ था। उस समय उनकी वाणी स्वतन्त्रता-संग्राम के दिनों की यादें बरबस ताजी करती थी। इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। मैं सदैव ही 'मधुर' जी के प्रति अगाध श्रद्धा और सम्मान संजोये रहा और गत २६ जनवरी को जब दीवानी न्यायालय के हाल में कवि सम्मेलन और मुशायरे का संयुक्त आयोजन हुआ तो 'मधुर' जी से उपयुक्त और किसी को सभापति पद के लिए उपयुक्त नहीं समझा गया। उन्होंने अपनी अस्वस्थता के बावजूद सम्मेलन में भाग लेकर हम सबका उत्साहवर्धन किया था। हम उनके चिर ऋणी रहेंगे। ईश्वर उनको शतायु करें जिससे बलिया-वासी काफी समय तक उनसे प्रेरणा ग्रहण करते रहें।

बलिया — **गणेशदत्त दूबे**

११–५–८५ — जनपद एवं सत्र न्यायाधीश

श्रीरामसिंहासन सहाय 'मधुर' का हिन्दी में बाल-साहित्य के उन्नायकों में प्रमुख स्थान है। पुराने चार-पाँच चोटीके बाल साहित्यकारों में उनकी गणना की जा सकती है। 'बालसखा' के वह नियमित लेखक रहे थे। उनकी 'बच्चों के गीत' तथा 'बच्चों के मधुर गीत, पुस्तकों की सभी कविताएँ बाल–मनोभावनाओं के अनुरूप हैं। वकालत जैसे तर्क और विवेक के व्यवसाय में व्यस्त रहते हुए भी वह बाल भावनाओं में कैसे बह लेते रहे हैं इसका रहस्य कुछ-कुछ मैं भी समझता हूँ क्योंकि विगत चालीस वर्षोंसे मैंने भी वकालत पेशे में रहते हुए बच्चोंके लिए लगभग चालीस पुस्तकें लिखी हैं।

बहुत-से लोगों को वकालत और साहित्य दो विरोधाभासी शब्द लगते हैं। पर, कोई हृदय से मनुष्य हो तो इसमें कहीं कुछ भी असंगत नहीं है। 'मधुर' जी से मेरा जो भी थोड़ा-सा पत्राचार रहा, उसमें मैंने उनके व्यक्तित्व में भावनाओं में बह जाने की अद्भुत क्षमता देखी है जो एक साहित्यकार के लिए नितान्त आवश्यक होती है। आप उनकी साहित्य-सेवाओं के लिए जो अभिनन्दन करने जा रहे हैं उसमें मेरी सद्भावनाएँ आपके साथ हैं। मैं हृदय से उनका अभिनन्दन करता हूँ।

१८५, सिविल लाइन्स — **निरंकारदेव सेवक**

बरेली—२४३००१ — २०-४-८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि प्रसिद्ध रससिद्ध कवि श्री राम-सिंहासन सहाय 'मधुर' जी का सार्वजनिक अभिनन्दन करने का सत्संकल्प किया गया है। अपने बलिया-प्रवास के दिनों में अनेक बार मैंने उनकी परम रसमयी कविताओं का मुग्ध होकर रस लिया है और व्यक्तिगत रूपसे उनके सान्निध्य, मधुर व्यवहार, सात्त्विक शील और हँसमुख स्वभाव से भी प्रभावित हुआ हूँ। कवि तो अजर-अमर होता है। वह देशकालाद्यवच्छिन्न होकर सरस्वती की वीणा के साथ सतत् रागलीन रहता है। ऐसे सुकवि का जो अभिनन्दन और सम्मान करते हैं वे वास्तव में उसके दिव्य व्यक्तित्व और दैवी वाणी के प्रति कृतज्ञतापूर्ण स्नेह और आदर व्यक्त करते हैं। गुण के आदर के लिये भी सात्त्विक भावभूमि अपेक्षित है। आप लोग उस भावभूमि में पहुँच कर पुण्य के भागी हो रहे हैं।

मेरी मंगल कामना है कि 'मधुर' जी अपनी मधुर वाणी को ओजमयी-रसमयी बनाए रखते हुए परमायु प्राप्त करें और उनकी कीर्ति-वर्चस्व निरन्तर उत्कर्षोन्मुख हुआ रहे।

मेरी ओर से भी उनका स्नेहपूर्ण अभिनन्दन कीजिएगा। आपके सभी सह-योगियों को बधाइयाँ।

वेदपाठी भवन :
मुजफ्फरनगर— २५१००२

आचार्य सीताराम चतुर्वेदी
६–२–१९८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मधुर' जी एक यशस्वी साहित्यकार हैं। बाल-साहित्य-रचयिताओं में अग्रणी हैं और जब प्रगतिवाद को कोई जानता भी नहीं था तब आपकी 'डोम-डोमिन' रचनाएं पाठकों के समक्ष आ गयी थीं। आपकी सशक्त रचनाओं ने राष्ट्रकवि 'दिनकर' को भी अनुप्राणित—प्रेरित किया था। 'गरल-सुधा' में व्यक्त आपकी शाश्वत-आध्यात्मिक भावनाएँ महत्वपूर्ण हैं। आपकी बहुमुखी प्रतिभा ने लोगों को बराबर प्रभावित किया है।

सफल अधिवक्ता के रूपमें आप प्रतिष्ठित रहे हैं। अपनी उदार भावना एवं अपने सरल व्यक्तित्व के कारण आप मनुष्य रूप में महान हैं। पच्चीस वर्ष पूर्व के 'मधुर' की स्मृति बनी हुई है। आज ८२ वर्ष की अवस्था में भी आप वैसे ही हैं, यह आपकी विशेषता है। भले ही सियाटिका की असह्य पीड़ा आपको पीड़ित करती रहे, दृढ़व्रती और संकल्प के धनी 'मधुर' जी को वह कर्मपथ से डिगा नहीं सकती। इसीलिए तो आप अब भी कचहरी जाते हैं तथा सृजन में भी संलग्न हैं।

ऐसे महामनस्वी साहित्यकार का अभिनन्दन होना ही चाहिए एवं उनके सृजन-शील व्यक्तित्व के प्रति अभिनन्दन-पुष्प के रूप में ये दो शब्द समर्पित हैं।

वाराणसी, **डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा**
२६ मार्च, १९८५ सहायक निदेशक
राज्य हिन्दी संस्थान, उ० प्र०

मध्य प्रदेश बालसाहित्यकार परिषद, शाखा दतिया के संरक्षक, अध्यक्ष तथा सचिव क्रमशः सर्वश्री जगदीश शरण बिलगइयाँ 'मधुप', हरि सिंह 'हरीश' तथा राज गोस्वामी ने अपने अलग-अलग पत्रों में 'मधुर' जी के नागरिक अभिनन्दन के अवसर पर बधाइयाँ भेजी हैं। शैल साहित्य परिषद, दतिया के संयोजक श्री शांति स्वरूप 'शैल' ने भी शुभकामनाएँ व्यक्त की हैं। आभार।

—संपादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्देश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि मेरे अग्रज 'मधुर' जी के नागरिक अभिनन्दन का आयोजन किया गया है।

'मधुर' जी एक सिद्ध साहित्यकार और बालसाहित्य के मर्मज्ञ शिल्पी हैं यह इनका हल्का–सा परिचय है। जैसा मैंने समझा है 'मधुर' जी शुद्ध गांधीवादी हैं और गीता के उपदेशों को अपने आचरण में उतारने वाले कर्मयोगी हैं। सम्मान-असम्मान से प्रभावित न होने वाले व्यक्तित्व के धनी हैं! इनके व्यक्तित्व को एक शब्द में व्याख्यायित करना हो तो कहेंगे कि ये 'नर-द्राक्ष' हैं।

गांधीवादी युग के कवियों की अगली कतार में इनका स्थान सुरक्षित है। ये दलितों-शोषितों के कवि हैं।

'मधुर' जी का अभिनन्दन और सम्मान करके बलिया के नागरिक बंधु कर्तव्य के प्रति अपनी जागरूकता का सम्मान कर रहे हैं।

एक अभिनन्दनीय व्यक्तित्व के प्रति अपनी श्रद्धा को समष्टि की श्रद्धा का आकार देनेका आपका प्रयास स्तुत्य है। अतः आपको भी साधुवाद।

'मधुर' जी दीर्घजीवी हों और उनके स्नेह का प्रपास मुझ जैसे अनेक लोगों को सुलभ होता रहे, यही कामना है।

नखास, गाज़ीपुर। श्रीकृष्णराय 'हृदयेश'

४ मार्च, १९८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्देश

मुझे जानकर हर्ष हुआ कि प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' का नागरिक-अभिनन्दन किया जा रहा है, और इस अवसर पर उनके सम्मान में एक अभिनन्दन-ग्रंथ भी प्रकाशित किया जायेगा।

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' के व्यक्तिगत परिचय का सौभाग्य मुझे सन् १९२५-३० से ही प्राप्त है। उनकी रचनाओं से मैं प्रभावित होता रहा हूँ, और मैं उनका प्रशंसक हूँ।

समारोह की सफलता की कामना करता हूँ।

५२८, ममफोर्डगंज — श्रीनाथ सिंह

इलाहाबाद २०-२-८५

यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि कविवर्य श्री मधुर जी का नागरिक अभिनन्दन हो रहा है। अभिनन्दन-ग्रंथ उनका स्मारक होगा। उनकी साहित्य-सेवा अभिनन्दन के योग्य है ही। अनेक प्रणामों के साथ मेरा भी प्रणाम स्वीकार करें। समारोह की सफलता के लिए प्रभु से प्रार्थी हूँ।

डुमग्राम, आज़मगढ़ — श्यामनारायण पाण्डेय

१५-२-८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवनवृत्त

एवं

साहित्ययात्रा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविवर रामसिंहासन सहाय 'मधुर'

किसी ने विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर से पूछा, "आपने कोई महाकाव्य तो लिखा नहीं, फिर विश्वकवि कैसे हो गये ? आपकी कृतियों का परिमाण भी उतना नहीं है फिर भी इस उच्च प्रतिष्ठा को आप कैसे प्राप्त कर सके ?"

"हमने महाकाव्य लिखा था जिसे प्रभु के चरणों में समर्पित कर दिया और महाकाव्य अमर गीत बनकर बिखर गया।" टैगोर का संक्षिप्त उत्तर था। उनका अभिप्राय 'गीतांजलि' से था।

किसी व्यक्ति को लक्ष्य तक पहुँचाने में 'पुरस्कार' (माध्यम) का बहुत महत्व होता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर को अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त कराने में माध्यम बने पाश्चात्य कवि विलियम बटलर यीट्स। उनकी प्रेरणा से ही टैगोर ने बंगला गीतांजलि का अंग्रेजी अनुवाद करके पुरस्कार समिति के सम्मुख प्रस्तुत किया था।

कविवर रामसिंहासन सहाय 'मधुर' ने निःसन्देह थोड़ा लिखा है, परन्तु जो कुछ भी लिखा है, बहुत महत्वपूर्ण है, उनका विशिष्ट साहित्यिक महत्व है। स्व० राष्ट्रकवि दिनकर ने खुलासा कहा है कि पं० माखनलाल चतुर्वेदी की भाँति मधुरजी ने भी परिमाण की दृष्टि से थोड़ा लिखा है परन्तु जो कुछ भी लिखा है उसका मूल्य और महत्व माखनलाल चतुर्वेदी के सदृश ही है। पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी भी तो महज दो-तीन कहानियों से ही हिन्दी साहित्य में अमर हो गये। बलिया के कवि 'सुन्दर' की मात्र 'बलिदानी बलिया' कविता ही क्या उनकी यशः पताका को उच्चस्थ रखने के लिए पर्याप्त नहीं है ? साहित्यकार का मूल्यांकन उसके कर्त्तृत्व की गुणात्मकता से न कर, मात्रात्मकता से करना समीक्षक की भूल होती है। मधुरजी ने कम भी नहीं लिखा है। जो लिखा है, वह अमर है।

संक्षिप्त जीवनवृत्त

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' का जन्म बलिया (उ० प्र०) जिले के सागरपाली गाँव में अगहन शुक्ल पंचमी, संवत् १९६० वि०, तदनुसार मंगलवार, दिनांक २४ नवम्बर, १९०३ ई० को उत्तराषाढ़ नक्षत्र में हुआ। पिता मुंशी राजकुमार लाल का इनकी ढाई वर्ष की अल्पायु में ही इनके सिर से साया उठ गया। माता परमज्योति देवी एक परम विदुषी महिला थीं। इन्होंने दूने स्नेह से बालक का लालन-पालन किया। पिता का प्यार इन्हें साहित्यकार पत्रकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पितामह द्वय मुंशी भृगुदयाल तथा मुंशी बैजनाथ सहाय से मिला। 'पयामे यार'[1] के रचयिता मुंशी भृगुदयाल जो उस समय के जाने-माने कवि थे, खास पितामह थे; दूसरे पितामह श्री बैजनाथ सहाय का भी अपार स्नेह इन्हें मिला। बैजनाथ सहाय का काव्यसंग्रह 'कन्या कौमुदी' गृहलक्ष्मी (इलाहाबद) से प्रकाशित हो चुका था। सो कविकर्म तथा काव्य के प्रति स्वाभाविक अभिरुचि मधुर जी को विरासत में सहज ही मिले थे। यही कारण है कि इनकी साहित्यिक प्रवृत्तियों का बीज-वपन मिडिल-स्कूल तक पहुँचते-पहुँचते होने लग गया था। चौबीस वर्ष की आयु में बांस थाना (बलिया) के मुंशी हवलदार लाल की कन्या सुदामादेवी के साथ सन् १९२७ ई० में ये परिणय-सूत्र में बँधे। आगे चलकर इन्हीं सुदामादेवी के छद्मनाम से इन्होंने कतिपय कविताएँ लिखीं और प्रकाशित करायीं किन्तु ऐसी कविताओं को संगृहीत करना इन्होंने उचित नहीं समझा।

शिक्षा

'मधुर' जी की प्रारंभिक शिक्षा सागरपाली की प्राथमिक पाठशाला में हुई। इस पाठशाला के प्रधानाध्यापक पं० सच्चिदानन्द पाण्डेय 'सरयूपारीण' नामक पत्रिका मंगाया करते थे जिसे कभी-कभार उलटने-पलटने का अवसर 'मधुर' जी हाथ से नहीं जाने देते थे। कक्षा पाँच से इनका साथ प्रसिद्ध भाषाविद् डा० उदयनारायण तिवारी, कवि और लेखक श्री प्रसिद्धनारायण सिंह, अध्यापक, श्री राम इकबाल लाल तथा नेता श्री राम अनंत पाण्डेय (भू० पू० विधायक) से हो गया था। बलिया तहसीली स्कूल में इन लोगों ने मिडिल की शिक्षा पूर्ण की। मिडिल स्कूल के प्रधानाध्यापक मुंशी बजरंगी लाल के यहाँ 'सरस्वती' पत्रिका आया करती थी; 'मधुर' जी की साहित्यिक रुचियों एवं कवित्व शक्ति को विकसित करने में इस पत्रिका ने भी सहयोग किया। उदयनारायण तिवारी तथा 'मधुर' जी की साहित्यिक प्रतिभा से वाराणसी के सहायक विद्यालय निरीक्षक श्री सीताराम बहुत प्रभावित थे। उन्होंने १४-१५ पुस्तकें लाकर इन्हें दीं। इन्हें कुछ दिनों के लिए अध्ययन से अवकाश मिल गया। इन दोनों मिडिलची बालकों ने उन पुस्तकों से गद्य-पद्य का जो संकलन तैयार किया, 'गद्य पद्य मञ्जरी' नाम से प्रकाशित हुआ। इन्हीं दिनों विद्यालय-प्रांगण में ईंट-गारा ढुलवाने के विरोध में 'मधुर' जी ने एक गुप्त संवाद भेजा था जिसके कानपुर के प्रताप समाचार पत्र में

१. 'पयामे यार' के मुखपृष्ठ पर उसका मोटो छपा होता था—
"तूर पर हज़रते मूसा जो गिरे गश खाकर,
जलवये यार पुकार अभी देखा क्या है?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशित होने के बाद बड़ी खलबली मची थी। जिले के आठों मिडिल स्कूलों की 'ब्रह्मचर्य' विषय पर लेख प्रतियोगिता में मधुर जी को 'मंगलकोश' ग्रंथ पुरस्कार मिला था। इस प्रतियोगिता में अपने गाँव के स्कूल से हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी भाग लिया था।

हाई स्कूल की परीक्षा इन्होंने जिला हाई स्कूल, बलिया से सन् १९२३ में उत्तीर्ण की। नंदलाल चन्द्र एक बंगाली हेडमास्टर थे। इन दिनों 'स्वदेश' में मधुरजीके लेख एवं गृहलक्ष्मी में कविताएं बराबर स्थान पा रहे थे। गृहलक्ष्मी में उदयनारायण तिवारी का प्रथम लेख 'भारत में सिलाई का इतिहास' इसी समय मधुरजी के सहयोग से छपा।

इनके परिवार का सहज धार्मिक, शैक्षिक एवं साहित्यिक परिवेश था जिसके घर में पद्मावत, अखरावट और रामायण ग्रंथ हो, उसका बड़ा मानसम्मान रहा करता था। इन ग्रंथों को लोग पुस्तक न मानकर एक कीमती संपत्ति मानते थे। इनके पितामह पद्मावत, अखरावट, दरियादास तथा रामायण-खंडन-मंडन (१९११-१२ में लिखित) रखते थे। परिवार में उर्दू-फारसी की परंपरा थी; लेकिन उर्दू पढ़ने वालों का तीन पीढ़ी से वंश नहीं चल पा रहा था। अतः इनके बड़े भाई हिन्दी पढ़ने के लिए भेजे गये। मधुर जी ने भी हिन्दी ही पढ़ने का निश्चय किया। कुछ यह भावना भी काम कर रही थी कि उर्दू वाले शराबी-कबाबी हुआ करते हैं। इससे भी हिन्दी की ओर इनका झुकाव हुआ। हाई-स्कूल में भाषा और संस्कृत विषयों में अपेक्षाकृत कम अंक मिलने के कारण इन्होंने संस्कृत छोड़कर विज्ञान विषय ले लिया। मधुरजी के विचार से संस्कृत एवं हिन्दी के भाषा-शिक्षकों ने परीक्षार्थियों को अन्य विषयों की तुलना में कम अंक दे-देकर इनके प्रचार-प्रसार में बड़ा अपकार किया है। फिर भी मधुर जी कक्षा में प्रायः प्रथम या द्वितीय रहा करते थे।

गृहलक्ष्मी में

हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के पश्चात् ये इण्टरमीडिएट की शिक्षा हेतु इलाहाबाद गये। 'गृहलक्ष्मी के साथ पहले से ही रचनाओं के माध्यम से इनका संपर्क बना हुआ था। पढ़ाई का विचार त्याग कर 'गृहलक्ष्मी' में नौकरी करने लगे। इसी समय हाईकोर्ट में इनकी नियुक्ति हो गयी। पुनः 'चांद' पत्रिका में भी इन्हें संपादन विभाग से सम्बद्ध कर लिया गया। इस समय मधुर जी ने गुरुभक्त सिंह 'भक्त' की ४८ पंक्तियों की 'सिंदूर' शीर्षक कविता १६ पंक्तियों में संपादित कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'गृहलक्ष्मी' में प्रकाशित की। संपादक की सूझ इन्हें मिडिल स्कूल में ही प्राप्त हो गयी थी। कक्षा ९ में 'वर्तमान विद्यार्थी' नामक दो फर्मे की पुस्तक में पूर्वार्द्ध का गद्य भाग मधुर जी एवं उपमन्यु शीर्षक से पद्य भाग उदयनारायण तिवारी ने लिखे थे। इस छोटी-सी पुस्तक की समीक्षा कलकत्ता से प्रकाशित होने वाली प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्रिका 'माडर्न रिव्यू' में छपी थी। इलाहाबाद प्रवास के दौरान मधुर जी को राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन में दक्षिणी भारत के विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ाने के लिए अल्प मानदेय पर अंशकालिक शिक्षक नियुक्त कर लिया था।

'चांद' कार्यालय में रामकुमार वर्मा आया करते थे। रामरख सिंह सहगल संपादक थे। इन पत्रिकाओं का काफी प्रसार था। अकेले गृहलक्ष्मी की ३६०० प्रतियां छपती थीं। अनेक तरुण युवक अपनी-अपनी रचनाओं को पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित देखना चाहते थे। विस्मिल इलाहाबादी की कविता हिन्दी लिपि में जबसे मधुर जी ने 'अभ्युदय' में प्रकाशित करवायी, वह इनके दोस्त बन गये। रामकुमार वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पंत ;ये सभी छात्र-लेखक (Student writers) की भाँति ही रचनाएं किया करते थे। श्रीधर पाठक, लक्ष्मीधर बाजपेयी, लाला भगवान दीन 'दीन' तथा मैथिलीशरण गुप्त आदि से यहीं संपर्क सूत्र बढ़ा। 'अत्याचारी का अंत' कविता के 'कर्मवीर' में प्रकाशन के साथ पं० माखन लाल चतुर्वेदी से संपर्क हुआ। मधुरजी का उनसे प्रथम साक्षात्कार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के काशी-अधिवेशन में हुआ।

उपर्युक्त सभी साहित्यिक संस्थाओं एवं हस्तियों से सम्बद्ध होते हुए भी मधुर जी ने हाईकोर्ट की नौकरी का सदुपयोग किया। १९२५ के मार्च में कानून की शिक्षा (मुख्तारशिप) पूर्ण कर ये पुनः बलिया वापस लौट आये १० अगस्त, १९२५ को इन्होंने श्री परशुराम चतुर्वेदी तथा श्री बालेश्वरसिंह के साथ एकही दिन वकालत प्रारम्भ की।

लेखन की प्रेरणा

जिन दिनों मधुर जी मिडिल के छात्र थे, मैथिलीशरण गुप्त की 'जयद्रथ वध' और 'भारत भारती' पुस्तकें बहुत लोकप्रिय हो रही थीं। किन्तु इन्हें ब्रिटिश शासन की कोप-दृष्टि का भाजन होना पड़ा। 'भारत भारती' जब्त करके जला दी जाती थी। इन पुस्तकों का मधुर जी के मानस पर अवश्य प्रभाव पड़ा। इनका लेखन गद्य विधा में 'गद्य-पद्य-मंजरी' के संपादन के साथ प्रारम्भ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुआ था। इसके पश्चात् विद्यालय परिसर में छात्रों से ईंट-गारा ढुलवाने के विरोध में इन्होंने जिला विद्यालय निरीक्षक श्री जगन्नाथ मिश्र के विरुद्ध 'प्रताप' (कानपुर) में एक संवाद गुप्त नाम से प्रकाशित करवाया। यहीं से लेखन की अभिरुचि क्रमशः बढ़ती गयी-पहले गद्य में, फिर पूर्णतः पद्य में। 'स्वदेश' तथा 'वर्तमान' (कानपुर) में बराबर लेख प्रकाशित होते रहे। स्वदेश (गोरखपुर) में 'पंडित जी और पारखी' देश और समाज पर संवादात्मक व्यंग्य लेख प्रकाशित हुआ जिसकी काफी चर्चा रही। लेखों का स्वर देशभक्ति और व्यंग्य रहा करता। गद्य-लेखन क्यों छोड़ दिया? उत्तर में इन्होंने बताया कि गद्य लेखन के लिए पर्याप्त समय और व्यापक अध्ययन की आवश्यकता होती है; गद्य लेखन में केवल भाव से काम नहीं चलता। समयाभाव के कारण गद्य लेखन से हाथ खींच लेना पडा। गद्य विधा छोड़कर पद्य विधा को अपनाया परन्तु देशभक्ति और व्यंग्य का स्वर नहीं छोड़ा। इनकी दूसरी अथवा तीसरी कविता 'प्रियतम की पहचान' सर्वप्रथम 'प्रभा' (कानपुर) में प्रकाशित हुई। तब तक, 'चांद' में 'पुष्प का पश्चाताप रचना छप चुकी थी। इसके पश्चात् जिस वेग से राष्ट्रीय कविताओं की ओजस्वी धारा इनकी लेखनी से बह चली, अनेक कवियों को इनकी काव्य प्रतिभा से ईर्ष्या होने लगी। 'त्यागभूमि' (अजमेर), 'माधुरी' (लखनऊ), 'प्रभा' (कानपुर), 'विद्यार्थी' (प्रयाग), 'बालक' (लहेरिया सराय), 'देश' (पटना), 'तरुण भारत' (पटना ही) 'संघर्ष' (कलकत्ता), 'गृहलक्ष्मी' तथा 'चांद' (प्रयाग) और 'कर्मभूमि' (खण्डवा, म० प्र०) ने समय-समय पर इनकी ऐसी अनेक रचनाओं को ससम्मान प्रकाशित किया जिनमें से बहुत सी कविताएँ इनके काव्य संग्रहों में अभीतक संकलित नहीं की जा सकीं।

कवि का उत्कर्ष

कविता तो सभी लिखते हैं पर कवि-हृदय विरले ही होते हैं। 'मधुर' जी को एक सच्चे कवि का हृदय मिला हुआ है। कविता सयास लिखी जाती है और सहज भी। सहज कविता लिखी नहीं जाती, लिख जाती है। सयास कविता प्रायः कवित्व की गुरुता से बोझिल संभावित होती है। ऐसी कविताओं में उर्दू के शायरों-जैसी बेलौस तथा बेलाग अभिव्यक्ति की जवानदानी का अभाव देखा जाता है। वास्तव में कविता वही है जो भाव भाषा के सामंजस्य तथा उक्ति-वैचित्र्य के साथ सहृदय के मन में उतर जाय, पैठ जाय और एक स्थायी प्रभाव के साथ बैठ भी जाय। यह गुण सहज कविता में ही हो सकता है। सयास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविता चंपक की भीनी गंध, तो सहज कविता कमल-परागों की मोहक मादकता सिक्त होती है। चंचरीक, चंपक से दूर भागता है, कमल के संपुट में स्वत: बँध जाता है। 'मधुर' जी की रचनाएँ सहज प्रस्फुटित होकर वर्षों तक पाठकों एवं श्रोताओं को आह्लादित तथा आलोडित करती रही हैं। इसी सहजता और अयासता के कारण मधुर जी की कविता में कतिपय स्थलों पर कुछ पंक्तियों में भाषा की वह कसावट नहीं दीखती जिनके होने से कविता और भी निखर उठती। इसी सहजता के कारण ही 'दिनकर' चौंक पड़े थे 'यह कौन कवि है जो इतनी लापरवाही से और इतनी अच्छी चीज लिखता है।' यह 'लापरवाही' ही मधुर जी के काव्य का आभूषण है। ये रचनाओं को सजाने सँवारने में वह समय नहीं दे पाये हैं जिसकी वे अधिकारिणी रही हैं। सत्य तो यह है कि इन्होंने काव्य का हीर पकड़ लिया। फिर कविता चाहे जैसे और जहाँ पंक्तिबद्ध होती रहे, कोई चिन्ता की बात नहीं। इन्हें कविता की पकड़, अभिव्यक्ति की सूझ, अनुकथन की सच्चाई और विषयवस्तु में गहरे उतर जाने की पैनीदृष्टि एक साथ ही प्राप्त हो गये थे। फिर क्या था—'चली सुभग कविता सरिता सो।'

अग्नि की दाहकता निकट से मालूम होती है। पाटल की मोहक सुगंध का अनुमान दूर से नहीं लगाया जा सकता। निकट से देखने परखने पर ही वस्तु की वास्तविकता अथवा गुण-दोष का सही पता चलता है। अभिप्राय यह कि 'मधुर' जी की रचनाओं में अग्नि का-सा तेज और पाटल का सा मधुर सौरभ एक साथ पाये जाते हैं। ओज और प्रसादात्मकता का मणि-कांचन योग हुआ है इनकी कविताओं में। यही कारण है कि सामान्य जन की तो बात ही छोड़ दीजिए, इनकी काव्य–प्रतिमा से गांधी जी से लेकर 'भारतीय आत्मा', पं० माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर', लक्ष्मीधर बाजपेयी और श्रीनाथ सिंह प्रभृति कवि और साहित्यकार प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। इनके शिल्प और शैली पर ये लोग भी दंग रह गये। इनकी शैली का नमूना निम्नोक्ति दो पंक्तियों में:—

मैं घायल सा तड़प रहा हूँ तू हँसती बौरी-सी।
कुरुक्षेत्र के पथ में आयी तू चौरा-चौरी सी।

'लेनिन का झण्डा' शीर्षक कविता १९२४ में 'विद्यार्थी' में प्रकाशित हुई। आज लेनिन जेहन न होकर पेशा बन कर रह गया है। इन्हीं दिनों इनकी प्रसिद्ध रचना 'डोमिन' को महात्मा गांधी ने अपने 'हरिजन' में प्रकाशित किया। गांधी जी इस कविता पर मुग्ध हो गये थे। यह कविता इतनी प्रसिद्ध हुई कि गांधी जी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषणों के पूर्व इसका सस्वर पढ़ा जाना परम्परा बन गया। २० पंक्तियों की इस कविता का अंतिम पद आप भी देखिये—

क्यों भावों से भर जाता हूँ, पता नहीं पाया है।
तेरी सुन्दरता में भी उस प्रभु की कुछ माया है।
क्यों तुझको कहते अछूत, यह सहा नहीं जाता है।
इस अँधेर नगरी में मुझसे रहा नहीं जाता है।

गाँधी जी के चार सूत्रीय कार्यक्रमों में से सर्वप्रमुख अछूतोद्धार की हिमायती इस कविता को पढ़कर पं० माखन लाल चतुर्वेदी ने 'मधुर' जी को एक पत्र में लिखा था, "डोमिन की कुछ पंक्तियां लिखते हुए आपने साहस का काम किया है।"

बक्सर में गांधी के भाषण का आयोजन था। गाँधीजी के अस्पृश्यता-निवारण-नीति के विरोधी कुछ लोगों की साजिश से यह सभा न हो पायी और गाँधी जी को वापस लौट जाना पड़ा जिसका विस्तृत उल्लेख 'दिनकर' ने 'साहित्यमुखी' में किया है। इस घटना के दूसरे ही दिन छोटी सरयू के उस पार रेत पर बैठे-बैठे 'मधुर' जी ने कोहेनूर पेंसिल से एक अन्य रचना 'डोम' शीर्षक से रची। महात्मा-गांधी का पत्र आया—

महाशय,

प्रसादियां मिलीं। 'डोम' छपेगी।

आप का—मो० क० गाँधी।

इसकी कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य हैं:—

मरघट तेरा अचल राज है, पर्णकुटी रजधानी।
कौन नहीं करने आता है तेरे घर मेहमानी?
तेरा निन्दक भी आवेगा, मुँह पर ओढ़ कफनियाँ।
उस दिन मौन रहेंगी, उसकी पोथी, माला, मनियां।

राष्ट्रीय कविता की सुरसरि इनकी लेखनी से १९४७ तक निर्बाध प्रवाहित होती रही। प्रणयन में मंथरता देख पं० माखनलाल चतुर्वेदी इन्हें समय-समय पर सचेत भी करते रहते। कुछ समय तक इनकी चुप्पीपर जब 'भारतीय आत्मा' ने पत्र द्वारा लिखने का आग्रह किया तो 'मधुर' जी ने उन्हें इन शब्दों में उत्तर भेजा, "आपने भी तो राष्ट्रीय काव्य-सुरसरि को गंगोत्री से लाकर हरिद्वार तक छोड़ दिया। मैंने पकड़कर उसे आगे बढ़ाने की कोशिश की किन्तु मैदानी क्षेत्र में उसका पाट चौड़ा और प्रवाह मंथर हो गया है। 'दिनकर' उसे समुद्र तक पहुँचाना चाहते हैं। देखें क्या करते हैं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वागत-गानों के रचयिता

राष्ट्रीय नेताओं के बलिया-आगमन पर स्वागत-गान का भार 'मधुर' जी के जिम्मे था। कभी-कभी वह आशुकवि की भांति स्वागत-गान रच लिया करते थे। स्वागत-गान सुनाने के उत्तरदायित्व का निर्वाह इन्होंने बराबर डा० कैलासनाथ काटजू के आने तक किया। १६ अक्टूबर १९२५ ई० को गांधी जी जब बलिया पधारे तो उनके सार्वजनिक भाषण के पूर्व प्रिंसिपल मनोरंजन बाबू ने अपनी प्रसिद्ध 'फिरंगिया' कविता गाकर सुनायी। स्वागत-गान के लिए 'मधुर' जी को मात्र डेढ़ मिनट का समय मिला जिसमें इन्होंने यह कविता प्रस्तुत की—

स्वागत है देव ! तुम्हारा निर्धन की झोपड़ियों में।
जिसका वैभव सोया है टीलों में टेकड़ियों में।
अपने अतीत-गौरव का साक्षी वह गंगा तट है।
वह धर्मारण्य हमारा अब बाल और पचट' है।
हम क्या अब भेंट चढ़ायें चुनकर कछार फूलों से।
रजधानी पर जंगल है स्वागत है वन फूलों से।
फर्ग्यूसन भी आये हैं वह गोली लेकर आये।
बलिदानों की बलिया में तुम होली लेकर आये।

गोहाटी में कांग्रेस का अधिवेशन होने वाला था। सरोजिनी नायडू अध्यक्ष चुनी गयी थीं। कांग्रेस में आपसी खींच-तान के कारण महात्मा गांधी ने इस अधिवेशन में भाग लेने की अनिच्छा प्रकट कर दी थी। श्रीमती नायडू ने विनती की, मुझे अध्यक्ष चुनवा कर यदि आप इस अधिवेशन में भाग न लेगें तो कैसे काम चलेगा। मेरी बड़ी अवमानना होगी। खैर, गांधी जी किसी प्रकार तैयार कर लिए गये। इसी बीच पं० माखनलाल चतुर्वेदी का एक तार 'मधुर' जी को मिला। अधिवेशन में गांधी जी का जाना तय हो गया है। इस अवसर पर पढ़ी जाने वाली कोई कविता शीघ्र भेजो। 'अधिवेशन में पढ़ी गयी 'मधुर' जी की उस कविता की चार पंक्तियां आप भी देखिए:—

वह कहता ही रह गया किन्तु फिर उसके पथ पर कौन हुआ।
लखकर अनुशासन भंग दंग वह अपने रथ पर मौन हुआ।
अगणित योद्धा जब जूझ गये जाकर कौंसिल की घाटी में।
फिर उस सेनापति को लेकर अब देश चला गौहाटी में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९३७ में कांग्रेस मंत्रिमंडल बन चुका था। यातायात मंत्री महामहिम हाफिज मोहम्मद इब्राहिम बलिया पधारने वाले थे। जनता प्रतीक्षारत थी। कांग्रेस कार्यकर्त्ता बेसब्री से उनका इंतजार कर रहे थे। १६ तारीख के बजाय १७ तारीख को एक दिन विलम्ब से वह बलिया पहुँचे। 'मधुर' जी के जिम्मे स्वागत-गान था ही। व्यंग्यपूर्ण स्वागत-गान की ये चार पंक्तियाँ:—

पाया हमने आज आपको कल से पाते-पाते।
सचमुच खींच लिया बलिया ने स्वागत गाते-गाते।
महामहिम हाफिज इब्राहिम बढ़ कर लगे निशाना।
इन वीरों की अनी चलेगी, ऐसी सड़क बनाना।

बदलते आयाम

स्वातंत्र्य-पूर्व का साहित्य, राजनीति के ऊपर था। साहित्य, राजनीति का पिछलग्गू नहीं बल्कि संवाहक था। साहित्य ही गांधीजी और उनकी राजनीति को जन-जन तक ले गया। स्वातंत्र्योत्तर काल में राजनीति द्वारा साहित्य को दबोचने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी। अब तो राजनीति पूर्णतः साहित्य पर हावी दिखायी देता है। साहित्यकार, राजनीति से प्रेरणा और निर्देश लेने का यत्न करता है। साहित्य कराह रहा है, राजनीति मगन है। गांधी जी ने कहा था, 'कांग्रेस भंग कर दो।' पदलोलुप कांग्रेसियों ने बापू की वाणी का अर्थ नहीं समझा। जो तब नहीं हुआ, अब कांग्रेस का हुआ और हो रहा है। सारा देश रो रहा है नेताओं की ओछी नीति पर। शायद जोश मलीहाबादीने भारतीय राजनीति में चारित्रिक अधःपतन के कारण ही भारत का परित्याग कर दिया, और पाकिस्तान जाते-जाते यह कहते गये—

'किसी मुल्क में यह जवानी नहीं है।
फकत एक हिन्दुस्तानी नहीं है।'

पत्र-पत्रिकाओं में राजनीति पैठ गयी है, भाईबंदी का बोलबाला है। पहले के पत्र-संपादक अपने पत्र की प्रशंसा अपने ही पत्र में प्रकाशित नहीं करते थे। अब प्रायः यही हो रहा है जो उचित नहीं है। नये प्रकाशनों की समीक्षा पत्रों में बहुत ही कम देखने को मिलती है। इससे साहित्य पिछड़ता जा रहा है। साहित्य की प्रगति मंद हो गयी है। मित्रमण्डली की पुस्तकों की समीक्षा अच्छे पत्रों में आसानी से छप जा रही है। यह साहित्य की प्रगति का स्वस्थ लक्षण नहीं है। पहले के पत्र निज-संवाददाताओं द्वारा प्राप्त समीक्षाएं भी नहीं प्रकाशित करते थे। तटस्थ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और निष्पक्ष रहने के लिए बाह्य अभिकरणों द्वारा प्राप्त समीक्षाओं के प्रकाशन में भी सावधानी बरती जाती थी। अब जो कुछ हो रहा है उससे 'मधुर' जी एक छटपटाहट महसूस करते हैं। ऐसे ही उनके विचार हैं।

बाल-काव्यके प्रणेता

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय कविताएँ उतनी उपादेय नहीं समझी जाने लगीं। लोगों का ध्यान इस धारा से हटने लग गया। सन् १९३९-४० में काशी में 'मधुर' जी ने सुभद्रा कुमारी चौहान की कुछ रचनाएँ सुनी थीं। तब रुची थीं, भली लगी थीं। आगे चलकर मनोरंजन बाबू के सुझाव पर इनका बाल-काव्य की ओर झुकाव हो गया। व्यंग्य का तेवर लोरियों में भी वही रहा। 'बाल-सखा' (इंडियन प्रेस, प्रयाग) में इनकी बालोपयोगी रचनाएँ प्रमुखता पाने लग गयीं। चाचा नेहरू का जन्म-दिवस जब प्रथम बार बालदिवस के रूप में मनाया जाना प्रारंभ हुआ तो बाल-साहित्य-संसद की ओर से कविवर सोहनलाल द्विवेदी ने बालगीतों से सुसज्जित 'महँकते फूल' का संपादन कर नेहरूजी को भेंट किया था। इसमें 'मधुर' जी के दो बालगीत "राजपाट का खेल" तथा "खेलो भारत के नौनिहाल" संगृहीत हैं। 'बच्चों के मधुर गीत' काव्य-संग्रह का पहला नमूना द्रष्टव्य है :—

अम्मा, अब मैं बड़ा हो गया, सब अक्षर पढ़ लेता हूँ।
चाचा के कंधे पर अब मैं, अपने बल से चढ़ लेता हूँ।
मुझे मंगा दो नीलम घोड़ा, सन्-सन्-सन् दिल्ली पहुँचूगा।
बापू का ललाट छू लूँगा, वहाँ जवाहर लाल बनूँगा।
माखन-मिसरी, दूध-मलाई, रबड़ी भी सरकारी होगी।
सोने चाँदी की पूरी पर, हीरे की तरकारी होगी।

अंतिम दो पंक्तियों में व्यंजित व्यंग्य क्या आज राजधानी में भास्वर नहीं दिखता? इसे पढ़ कर पं० माखन लाल चतुर्वेदी ने लिख भेजा था, 'यह कविता मुझे बहुत रुची।' उनके एक अन्य पत्र के कुछ अंश पुन: द्रष्टव्य है :—

प्यारे मधुरजी, खण्डवा (म० प्र०)

सस्नेह नमन २८-८-५४

—— आपकी रचनाएँ खूब अच्छी बन पड़ी हैं। कला और कलेजा दोनों साथ-साथ चले हैं। आशा है, ये रचनाएँ किलकारी-नरेशों, उपद्रव धीरों और घर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्यों जहान को सर पर लिए घूमने वाले Little Tyrants, नन्हें-मुन्ने जालिम राजा-बेटों को खूब पसंद आयेंगी।——

विनम्र—
माखनलाल चतुर्वेदी

कविवर सोहनलाल द्विवेदी, 'मधुर' जी की बालोपयोगी कविताओं पर लहालोट हो गये। नन्हें-मुन्नों की भाषा में पिरोये गये नन्हें-मुन्नों के भाव भला किसका हृदय न छू लेते! 'फूलों का देश' पढ़ कर द्विवेदी जी से न रहा गया और उन्होंने 'मधुर' जी को ऐसी रचना के लिए बधाई लिख भेजी। 'फूलों का देश' की चंद पंक्तियाँ :—

हरी धरती नीला आकाश,
बीच उड़ चल पंछी के वेश।
सहस दल कमल बलिहार,
हमारा यह फूलों का देश।

देवता आता है कोई।
फूल बरसाता है कोई।

बिन्दकी, उ० प्र० से २० दिसम्बर, १९६० के एक पत्र में श्री सोहनलाल द्विवेदी ने लिखा, "बधाई, फूलों के देश के कवि को! दिसम्बर के अंक में उसे छापकर 'बाल सखा' धन्य हुआ है और जनवरी के नव वर्षांक के लिए इसी प्रकार की मधुर कविता को छापने के लिए उत्सुक एवं उत्कंठित हूँ। समय कम है, क्या समय निकाल कर कुछ लिखकर भेजने की कृपा कर सकेंगे नये वर्ष पर? बच्चे आपका प्यार-दुलार पाकर फूले नहीं समाते।

सस्नेह—
सोहनलाल द्विवेदी

अभी तक मधुर जी 'बच्चों के मधुर गीत' ही लिखते रहे। अब इन्होंने बाल-साहित्य के क्षेत्र में एक नवीन देन दी। बालोपयोगी 'सुबाहु-वध' खण्ड-काव्य प्रकाशित हुआ। पुस्तक समर्पित है—'दिनकर' जी को। समर्पण की चार पंक्तियाँ प्रयाग में त्रिवेणी संगम पर नौका में बैठकर लिखी गयी थी—

लो राम और लक्ष्मण की कुंकुम रोली,
जय धनुष-बाण, मैंने जयगान किया है।
प्रिय 'दिनकर' मेरा संचित स्नेह समर्पित,
वह स्नेह जिसे तुमने सम्मान दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविवर सोहनलाल द्विवेदी ने इस पुस्तक की जो 'बधाई' लिखी है उससे न केवल इस पुस्तक के महत्त्व बल्कि कवि की काव्यकला पर भी यथेष्ट प्रकाश पड़ता है। वह लिखते हैं, "मैं स्वयं मधुर जी की कविता का प्रेमी पाठक हूँ, और प्रशंसक भी ! बच्चों के लिए, विशेष रूप से इन्होंने जो गीत लिखे हैं, बड़े प्यारे हैं, बड़े अनूठे। उनके गीतों में रस उल्लास बनकर उमड़ पड़ता है, और भाव स्वयं छंद बन गये हैं। 'सुबाहु-वध' उनकी ही नवीन रचना है। इससे राष्ट्रभाषा हिन्दी की श्रीवृद्धि हुई है।"

'मधुर' जी की 'ग्राम-गौरव' कविता स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पूर्व ही १९४६ में मिडिल स्कूलों में कक्षा ६ की हिन्दी-पुस्तक साहित्य-किरण भाग–२ में संकलित कर ली गयी थी। इस कविता में गाँवों की कीमत पर पनपने वाले शहरों और राजमहलों के प्रति 'मधुर' जी का तीखा व्यंग्य देखा जा सकता है :—

आज राजमहलों की छवि पर चकित हमारा ग्राम हुआ।
ताजमहल हमने बनवाया, शाहजहाँ का नाम हुआ।
इन्हीं किसानों के बल पर वैभवशाली राज बने।
इन झोपड़ियों की कौड़ी से, तख्त बने थे, ताज बने।

शीर्षक कोई भी हो, कथ्य को राष्ट्रीय धारा से जोड़ देना, 'मधुर' जी की अपनी विशेषता रही है। कविता का शीर्षक डोम-डोमिन हो अथवा ग्राम-गौरव या हलवाहा, इनके व्यंग्य के तेवर में वही झंकार मिलती है। 'हलवाहा' शीर्षक कविता के सम्बन्ध में एक सम्पादक ने लिखा—

इण्डियन प्रेस लि०
प्रयाग।

२४–४–३९

भाई मधुर जी,

'हलवाहा' शीर्षक आप की कविता मिली। क्या कहना है ! गजब की कविता है। 'हल' के आगामी अंक में उसे प्रकाशित करूँगा।

आपका—
श्रीनाथ सिंह
संपादक, 'हल'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस पुरानी कविता में, मधुर' जी के वे ही भाव व्यंजित हुए हैं जो सभी के भाव हैं, स्थायी और जीवन्त हैं। वे जितने सार्थक तब थे, उतने ही सामयिक आज भी। उद्धरण प्रस्तुत है :—

हँसने लगीं सुनहली किरणें, दसों दिशाएँ लाल हुई।
चलने लगा तुम्हारा हल, फिर धरती आज निहाल हुई।
तुम दुनिया के भाग्य विधाता, विधना के किसने देखा ?
हल के फल से खींच रहे हो, कैसी किस्मत की रेखा ।।

× × ×

हे राजाओं के राजा, तकदीर तुम्हारी क्यों छोटी ?
जीवन में भर पेट अभी तक कभी न पाई जो रोटी।
दोपहरी में घरवाली वह लाती है रूखी - सूखी।
तुम मर - भूखे देख रहे हो, क्या लाती है मर - भूखी ।।

कवि सम्मेलनों में

प्रयाग में रहते हुऐ 'मधुर' जी ने क्रिश्चियन कालेज और मेयो हाल में आयोजित प्रायः सभी कवि सम्मेलनों में भाग लिया। उन्हीं के शब्दों में, "उस समय के कवि सम्मेलनों का अर्थ होता था—आचार्यों का सम्मेलन। आचार्य जिसे Introduce करा दे उसे काव्य-पाठ का अवसर मिल जाता था।" मैथिलीशरण गुप्त और महादेवी वर्मा मंच पर उपस्थित रहते थे पर काव्य-पाठ नहीं करते थे। 'दीन' जी, सुभद्रा कुमारी चौहान, रत्नाकर जी, पंत जी और पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के साथ इन्हें कई बार कई स्थानों पर काव्य-पाठ करने का अवसर मिला था। उन दिनों मंच पर संचालक नहीं हुआ करते थे। अध्यक्ष ही कवियों को पढ़वाते भी थे। ददरी मेले के स्तरीय कवि सम्मेलनों में भी भाग लेते ही थे। श्रोता सन्न मार कर कवियों को सुनते थे। श्रोताओं की निगाहें कवि पर और कान उसकी वाणी पर लगे होते थे। क्या हो गया आज के कवि-सम्मेलनों को ? सस्ती लोकप्रियता के पीछे स्तर गिरता रहा। ...... और कवि सम्मेलन बनकर रह गये क्षणिक मनोरंजन के साधन।

स्वातंत्र्य-संग्राम में भूमिका

'मधुर' जी ने स्वातंत्र्य-संग्राम में प्रत्यक्षतः कोई भाग नहीं लिया लेकिन उन्होंने राष्ट्रीय जागरण के कवि की जो भूमिका निभायी वह किसी भी 'पिसान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पोतकर भण्डारी बनने वाले' स्वातंत्र्य-सेनानी की भूमिका से अधिक महत्त्वपूर्ण है स्वातंत्र्य-आन्दोलन के दौरान एक गुप्त द्वितीय रक्षा-पंक्ति हुआ करती थी जो अग्रिम पंक्ति की हर प्रकार की सहायता के लिए तैयार रहा करती थी। प्रया में इनका सम्पर्क 'आजाद' और राजगुरु से था। उन दिनों 'आजाद' अभी एक बहादुर (Student Leader) के सदृश मान्य थे। 'आजाद' कविता सुनने के शौकीन थे और राष्ट्रीय आन्दोलन में कवियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारते थे। एक बार कवि सम्मेलन में जाने के लिए 'मधुर' जी के साथ 'आजाद' भी तैयार हो लिए। 'मधुर' जी ने विनोद ही में कहा—'भाई, तुम अलग होकर चलो, तुम्हारी वजह से आफत आ सकती है।'' "आफत का क्या सवाल है? यदि हमारी निगाह दुश्मन पर पहले पड़ जायेगी तो उसका काम तमाम हो जायेगा और यदि उसकी निगाह पहले मुझ पर पड़ गयी तो बमतुल बुखारा के साथ मैं सो जाऊँगा," आज़ाद का उत्तर था। इन्होंने जिज्ञासा प्रकट की, "यह बमतुल बुखारा क्या है ?" इतने में 'आज़ाद' ने अपनी तहमद (लुंगी) उठा दी, कमर से लटकती हुई पिस्तौल देखकर 'मधुर' जी को यह समझते देर नहीं लगी कि क्रान्तिकारी इस पिस्तौल को ही 'बमतुल बुखारा' कह रहा है। आजाद का दूसरा हाथ कमीज की जेब में दूसरी पिस्तौल पर था। 'मधुर' जी ने कहा—"तब यह क्यों नहीं कहते कि 'सजनी' के साथ मैं सो जाऊँगा।' तब से 'आजाद' अपनी पिस्तौल को 'सजनी' नाम से अभिहित किया करते।

बलिया में अनेक अवसरों पर एक वकील की हैसियत से भी मधुर जी ने क्रांतिकारियों की सहायता की है। इनके निवास के सम्मुख सड़क की दूसरी पटरी पर वृक्ष के नीचे फिरोज़ गांधी से, छिपाव में, बातें हुई थीं, कारण घरों में क्रांतिकारियों से बात करना निरापद नहीं था।

'मधुर' जी जब दरबारी बने

बलिया कचहरी में कोई अधिकारी 'रिक्रूटिङ्ग आफिस' अंग्रेजी का उपयुक्त हिन्दुस्तानी पर्याय खोज रहा था। भिन्न-भिन्न लोगों ने भिन्न-भिन्न पर्याय सुझाये। 'मधुर' जी के सम्मुख भी यही प्रश्न उपस्थित किया गया। इन्होंने 'रिक्रूटिङ्ग आफिस' के स्थान पर 'रंगरूट दफ्तर' पर्याय बतलाया। अधिकारी ने हिन्दुस्तानियों की हिन्दी अल्पज्ञता पर टिप्पणी करते हुए इनके इस पर्याय को भी अस्वीकार कर दिया। इनके हिन्दी–अहं को बहुत ठेस लगी जिसका समुचित उत्तर देने के लिए ये उपयुक्त अवसर की तलाश में लग गये। 'चांद' और हाईकोर्ट में काम करते समय ही इन्हें अनुवाद की दृष्टि प्राप्त हो गयी थी अस्तु, गाजीपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीकृष्णराय 'हृदयेश' और बलिया के श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' को Hony. Astt. Publicity आफिसर नियुक्त किया गया था। मधुर जी ने इस पद पर ७ सितम्बर १६३९ से १९४६ तक कार्य किया जिसके लिए सरकार की ओर से एक सौ रुपया मानदेय प्रतिमास स्वीकृत था परन्तु इसे लेना मधुर जी ने स्वीकार नहीं किया।

इन्हीं दिनों दिसम्बर, १९४१ में लन्दन से प्रकाशित होने वाले—"सण्डे टेलीग्राफ" के एक अंक में इंगलैण्ड के राष्ट्रीय कवि विलियम ओजिलवी की कविता 'How many Miles to Moscow' (हाऊ मेनी माइल्स टु मास्को) प्रकाशित हुई। कविता, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, हिटलर द्वारा रूस पर आक्रमण के सम्बन्ध में लिखी गयी थी। किस प्रकार रूसी 'स्कॉर्च पालिसी' (Scorch policy) के तहत अपने खेतों में आग लगाते, घरों को उजाड़ते-वीरान करते, हिटलर को आगे चढ़ आने के लिए स्टैलिनग्राड तक लगभग ६०० मील पीछे हटते गये। भरपूर चढ़ आने पर रूसियों ने हिटलर को घेरकर धर दबोचा। इस युद्ध-कविता की विश्वभर में चर्चा हुई। मधुर जी ने इसी कविता का हिन्दी अनुवाद उतने ही वर्णों में, 'दूर है मास्को, कितनी दूर ?' शीर्षक से पूर्ण कर ब्रिटिश सरकार के पास भेजा। बी० बी० सी० की हिन्दी सर्विस में लार्ड हा हा नामक हिन्दुस्तानी कार्यक्रम अधिकारी था। बी० बी० सी० ने इस अनुवाद को अनुमोदित एवं प्रमाणित कर दिया। ब्रिटिश सरकार के गृह विभाग ने इस अनुवाद पर 'मधुर' जी को उचित पुरस्कार देने के लिए भारत के वाइसराय को आदेशित किया। वाइसराय की ओर से १० मार्च, १९४२ को बलिया के कलेक्टर मिस्टर जे० निगम ने एक भव्य दरबार का आयोजन किया। जिले के सभी दरबारी रेशमी शेरवानी, चूड़ीदार पायजामा और टोपी-साफा में उपस्थित हुए। 'मधुर' जी सादर आमन्त्रित किये गये। इनसे पूछा गया—'क्या पुरस्कार स्वरूप आप की कुल मालगुजारी रु० २३) माफ़ कर दी जाय ?' इन्होंने अस्वीकार कर दिया। दूसरा कोई पुरस्कार लेने में भी इन्होंने असमर्थता प्रकट की। तब उस दिन इनकी लाख अनिच्छा के बावजूद इन्हें जिले का ४१ वां या ४२ वां दरबारी घोषित कर दिया गया। इस साहित्यिक सम्मान से इन्होंने 'रंगरूट दफ्तर' वाले प्रसंग का उत्तर दे लिया था। इस घोषित पुरस्कार का इन्होंने कभी उपयोग नहीं किया। करते भी कैसे ? जिसकी लेखनी अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रीय आन्दोलन को सदा गरम करती रही, वह अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त पुरस्कार का उपयोग करता भी कैसे !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुवाद की बात चल रही है तो इसी क्रम में 'मधुर' जी के दो-एक अन्य अनुवादों की चर्चा कर लेना अप्रासंगिक न होगा। इन्होंने केरल में गायी जाने वाली मलयालम लोरी का अनुवाद किया है। उमर खैय्याम की कुछ रुबाइयों का भी अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया है। जिन दिनों सरोजिनी नायडू गौहाटी-कांग्रस की अध्यक्षता करने वाली थीं, मन की उमंग से प्रेरित होकर 'मधुर' जी ने उनकी एक कविता का अनुवाद प्रस्तुत किया था—

अरी ममता तरंगिणि ! धार ले लड़ले अकेली हो।
अरे आशा जलधि चिंघाड़ ले, लड़ले अकेली हो।
कलाधर बांध ले लेकर रुपहली मोहिनी कड़ियां।
सलोने स्वप्न की खाई डुबा ले मैं अकेली हूँ।

'दिनकर' से परिचय—

'मधुर' जी, 'दिनकर' से परिचित हुए अथवा 'दिनकर' 'मधुर' जी से परिचित हुए, सामान्यतः इसमें कोई अन्तर नहीं मालूम होता। परन्तु वास्तविकता यह है कि पहले 'दिनकर' ही 'मधुर' जी से परिचित और प्रभावित हुए थे।

स्व० राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' को 'मधुर' जी का परिचय सर्वप्रथम इनकी रचनाओं के माध्यम से प्राप्त हुआ था। सच तो यह है कि 'मधुर' जी की प्रथम कृति 'मधुर लहरी' ने 'दिनकर' की मनोदशाओं के निर्माण में एक विशेष प्रेरणाप्रद भूमिका निभायी थी। 'मधुर' जी के द्वितीय काव्य-संग्रह 'मधुविन्दु' की भूमिका में इस तथ्य को 'दिनकर' ने अत्यन्त ईमानदारी से स्वीकारा है। वह लिखते हैं, "याद आता है कि सन् १९२८ ई० में (मधु-विन्दु का प्रकाशन-वर्ष १९२९ है) मैंने 'मधुर लहरी' नामक उनकी एक छोटी-सी पुस्तिका देखी थी जिसमें छोटी-छोटी कोई पंद्रह-बीस कविताएँ संगृहीत थीं और जिसकी भूमिका स्वयं पंडित माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखी थी। उन दिनों, मैं अपने लिए अभिव्यक्ति का नया मार्ग ढूंढ़ रहा था (जिसकी तलाश शायद अभी भी खत्म नहीं हुई है) और मुझे जो भी चीज कुछ नयापन लिए मिलती थी, उसे मैं बड़े चाव से पढ़ा करता था। इस छोटी सी विचित्र पुस्तक ने मेरी मनोदशा के निर्माण में बड़ा ही प्रभाव डाला और जिसे मैं नई राह कहता था, उसका पता लगाने या रचना करने में उससे मुझे अच्छी प्रेरणा मिली। ... 'मधुर लहरी' मुझे एक नवीन क्षितिज से उतरती-सी दिखाई पड़ी, अतः मैं उस दिशा की ओर गहरे मोह से देखने लगा जिसकी ओर उसकी कविताओं ने इंगित किया था।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनः त्रिपुरी-कांग्रेस के समय महात्मा गांधी ने राजकोट में दरबार-वीरवाला के विरुद्ध सत्याग्रह किया था। गांधी जी के अनशन को लक्ष्य करके 'मधुर' जी द्वारा रचित 'राजाओं से' कविता 'कर्मभूमि' में एक बार फिर बहुत दिनों के बाद दिनकर को पढ़ने को मिली। इस कविता की प्रथम एवं अंतिम दो-दो पंक्तियां इस प्रकार है :—

ऊपर अम्बर रोता है, नीचे धरती अकुलानी।
यह मुकुट बेच दो राजा ! यह महल बेच दो रानी।
यह धरती धँस जायेगी, है दो दिन की मेहमानी।
इतिहासों के पन्नों पर, उड़ते हैं राजा - रानी।

'दिनकर' जी इस कविता के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रिया इन शब्दों में व्यक्त करते हैं, "......कविता की अंतिम पंक्ति से मैं एक बार ही चौंक पड़ा, मानों, मेरी कल्पना को किसी ने चिराग दिखा दिया हो, मानों, मेरी अपनी प्राणमणि किसी दूसरे की जिह्वा पर चमक उठी हो। 'मधुर लहरी' की स्मृति एक बार फिर सजल होकर मेरे मनोव्योम पर छा गई और मैं फिर अचरज करने लगा कि यह कौन है जो इतनी लापरवाही से और इतनी अच्छी चीज लिखता है। तब से लेकर आज तक मैं बराबर इस कोशिश में रहा कि 'मधुर' जी से किसी प्रकार मेरा सम्पर्क स्थापित हो जाय; किन्तु, (कई कारणों से जिनमें एक यह भी है कि 'मधुर' जी चिट्ठियों का जबाब कम देते हैं) अभी हाल तक मैं असफल रहा।"

उनके मन की सच्चाई एक कदम और आगे बढ़ी। लोग यह न समझ बैठें कि भूमिकाओं में प्रशस्ति लिखने का एक चलन-सा हो गया है, हिन्दी-जगत् को अपनी स्पष्टोक्ति से अवगत् करा देने के लिए 'दिनकर' ने 'मधुबिन्दु' की संपूर्ण भूमिका को इस काव्य-संग्रह तक ही सीमित न रहने देकर, अपने वृहत् ग्रंथ 'अर्धनारीश्वर' में भी संगृहीत कर लिया।

'मधुर लहरी' ने दोनों के मध्य जो मधुर सम्बन्ध सेतु कायम किया उससे इनके साहित्यिक एवं व्यक्तिगत संपर्क मधुरतर होते गये और 'दिनकर' को एक दिन (नवम्बर, १९४८ में) स्वयं बलिया तक खिंच आना पड़ा, जब उन्होंने बैठकर 'मधुर' जी की अन्य रचनाओं का संचयन करके 'मधु-बिन्दु' के प्रकाशन की योजना भी बनायी। उस समय ददरी मेले का अवसर था जिसके कवि सम्मेलन में उन्होंने भाग भी लिया। 'मधुर' जी से वह इतने प्रभावित थे कि उन्होंने अपने साहित्य में कम से कम चौदह स्थलों पर इनके सम्बन्ध में या तो विस्तृत या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रासंगिक वर्णन भी किया है। कई अवसरों पर उन्होंने 'मधुर' जी की रचनाओं का श्रोताओं के सम्मुख स्वयं वाचन कर गर्व का अनुभव भी किया। उपर्युक्त 'राजाओं से' शीर्षक कविता को उन्होंने राजकोट में ही सुनाई थी। आगे चल कर उन्हीं के प्रयासों से 'मधुर' जी का दूसरा काव्य-संग्रह 'मधुविन्दु' श्री अजन्ता प्रेस, पटना से प्रकाशित हुआ, जिसके लोकनायक जयप्रकाश नारायण १रामर्शदाता थे।

एक बार 'मधुर' जी 'दिनकर' जीसे मिलने उसके निवास पर पटना पहुँचे। नौकर ने बताया "साहब अन्दर बन्द हैं, किसी से नहीं मिलेगें।" वास्तव में उस समय वह कमरे में बैठकर 'उर्वशी' की पाण्डुलिपि तैयार कर रहे थे। 'मधुर' जी ने कहा, "दिनकर जी' साहब कब से हो गये ? उन्हें बंन्द किसने कर रखा है ?" आवाज सुनकर खिलखिलाते हुए दिनकर स्वयं ही बाहर आ गये। उन्होंने कहा, "देखिए न, कैसा संयोग है, कुरुक्षेत्र को पांच महीने में लिख डाला और 'उर्वशी' के पीछे पांच वर्ष से लगा हूँ' प्रकाशन का सुयोग नहीं जुट पा रहा है।" ११ फरवरी १९५९ को उसी समय 'दिनकर' ने 'उर्वशी' का वाचन कर 'मधुर' जी को सुनाया। 'उर्वशी' का प्रथम सर्ग उर्वशी के बचपन से संबन्धित था। संपूर्ण वाचन सुन लेने के पश्चात 'मधुर' जी ने अपनी पहली प्रतिक्रिया व्यक्त की "भाई दिनकर ! वेश्या का कोई बचपन नहीं होता और न ही उसे कोई जानने की कोशिश करता है।" 'दिनकर' ने पूर्व प्रणीत प्रथम सर्ग को विकाल देना स्वीकार कर लिया और प्रारम्भ में दो-चार नये छन्द जोड़ कर 'उर्वशी' का प्रकाशन हुआ।

'दिनकर' जी मधुर जी को पत्र लिखने में जितने तेज थे, 'मधुर' जी उतने ही मन्द। 'मधुर' जी के पास उनके अनेक पत्र पड़े हुए हैं इन पत्रों से इनके मधुर संबन्धों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। आगे दिये गये इन पत्रों में व्यंजित दिनकर के विचारों से मधुर जी के प्रति उनके लगाव और भावों का भी द्योतन होता है।

'मधुर' जी का संबंध और संपर्क अनेक विशिष्ट साहित्यकारों से रहा है उनमें से कुछेक का, जो इनके यहाँ बलिया पधारे थे, यहां उल्लेख कर देना भी उचित होगा। महापंडित राहुल सांकृत्यायन इनके यहां दो बार आये, प्रथम बार १९३६ में भिक्षु के रूप में तथा दूसरी बार १९४६ में जनपद हिन्दी प्रचारिणी सभाके अध्यक्ष के रूप में। दूसरी बार आगमन के सम्बन्ध में वह आने से अन्यमन्यस्क हो गये थे। इतने में उन्हें मधुरजी का तार मिला, "आपके स्वागत में फाटक बन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे हैं। कुली काम पर लगे हैं।" उत्तर में उन्होंने तार से ही आने की सूचना भेजी। पुआल की पहल पर उन्होंने आत्मीयता के सुख में मधुर जी के यहां रात्रि-निवास भी किया।

इनके यहां पधारने वालों में दूसरे उल्लेख्य सज्जन आचार्य क्षितिमोहन सेन हैं। संत-साहित्य पर खोज के सिलसिले में वे यहां आये थे। 'मधुर' जी ने विनोद में उनसे कहा था, "भाई, मेरी तो इस क्षेत्र में कोई पहुँच नहीं है। हां, एक सज्जन यहाँ हैं जो गड़ा हुआ मुर्दा उखाड़ने का काम करते हैं। उनसे आप को मिलाऊंगा। इनका संकेत स्व० आचार्य परशुराम चतुर्वेदी की ओर था। ज्ञातव्य है कि इसी 'गड़ा मुर्दा उखाड़ने वाले' ने गड़े हुए मुर्दे उखाड़-उखाड़ कर 'उत्तरी भारत की संत-परंपरा' का प्रणयन किया जिससे अनेक विस्मृत संत और उनका साहित्य प्रकाशित हो पाया।

इनके एक अन्य सुहृद थे भोजपुरी के प्रसिद्ध कवि प्रिंसिपल मनोरंजन बाबू जिनकी प्रेरणा से 'मधुर' जी की काव्य प्रतिभा का बाल साहित्य की ओर झुकाव हुआ था। अपनी मृत्यु से मात्र चार दिन पूर्व उन्होंने भ्रातृ द्वितीया के दिन, २० अक्टूबर, १९७१ को जो भोजपुरी कविता में इन्हें पत्र लिखा था उससे दोनों कवियों के मध्य आत्मीयता का पता चलता है। और पता चलता है इस देह की नश्वरता के बारे में मनोरंजन बाबूके विचारों का। वे लिखते हैं—

धन्य हमार भाग्य हऽ
पवलीं राउर आशीर्वाद
स्नेह अइसहीं बनल रहो
मिट जाय सकल अवसाद
मधुर जी!
हमरा हरदम याद रहेला
अपने के ऊ बानी,
'इतिहासों के पन्नों पर
उड़ते हैं राजा - रानी'
हऽ ई देह जगत् के खाद
मधुर जी!

साहित्यिक कर्त्तृत्व

'मधुर' उपनाम आपने कब और क्यों धारण किया? इसके उत्तर में 'मधुर' जी ने बताया कि १९२५-२६ में राष्ट्रीय आन्दोलन बुरी तरह मात खा गया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देश में चारों तरफ उदासी छा गयी थी। राजनीतिक कार्य-कर्त्ता मायूस-से होने लग गये थे। इस उदासी की घड़ी में कवियों और साहित्यकारों के कंधों पर विशेष उत्तरदायित्व आ गया था। इन्हीं दिनों 'मधुर' जी की कोई नवीन रचना न पाकर 'कर्मवीर' के संपादक पं माखनलाल चतुर्वेदी ने इन्हें लिखा, "ऐसे क्षणों में चुप्पी उचित नहीं प्रतीत होती" उन्होंने इनसे अपेक्षा की, 'मधुरता की चाह तो सदा बनी रहेगी।' संभवतः इसी 'मधुरता' में से इन्होंने अपना 'मधुर नाम', चुन लिया जिसका सर्व प्रथम प्रयोग 'कर्मवीर' में ही प्रकाशित हुआ। मधुरजी १९२५ से १९४७ तक लगातार 'कर्मवीर' में लिखते रहे।

वैसे तो 'मधुर' जी ने मिडिल स्कूल में ही उदयनारायण तिवारी के सहयोग से 'गद्य-पद्य मञ्जरी' का संकलन कर दिया था। इसी प्रकार की एक अन्य पुस्तक 'महिला मनोरमा' का संपादन इन्होंने २१ वर्ष की आयु में ही कर दिया था। महिला मनोरमा मधुरजी के पितामह कन्या कौमुदी के रचयिता मुंशी वैजनाथ सहाय के द्वारा लिखित गद्य-पद्य का संग्रह है। इस पुस्तक की प्रथम रचना 'प्रार्थना' को देखने से ही हिन्दी के प्रारंभिक निर्माण में इस कवि की भूमिका का सहज अनुमान हो जाता है। कविताओं में शुद्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है। भाषा में मिश्रण प्रायः नहीं के बराबर है। इनके मौलिक कर्तृत्व निम्नलिखित है—

१. **मधुर लहरी**—यह वही काव्य-संग्रह है जिसने 'दिनकर' की मनोदशाओं के निर्माण म महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाया। इसका प्रकाशन वर्ष १९२९ में गोविन्द प्रेस, बलिया से हुआ था। इसके लिए भूमिका पं० माखनलाल चतुर्वेदी तथा परिचय ठाकुर प्रसिद्धनारायण सिंह ने लिखे हैं। इसमें 'कर्मवीर', 'चाँद', 'गृहलक्ष्मी', 'प्रभा' तथा 'माधुरी' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित २९ रचनाएं संगृहीत हैं जिनमें 'प्रियतम की पहिचान' 'अत्याचारी का अंत' 'कुरुक्षेत्र' 'प्रलयबिन्दु', 'गौरव-गान', 'कर्मभूमि', 'डोमिन', 'टूटेगी हथकड़ियां', 'पुष्प का पश्चाताप्' और 'परमपिता का पता' आदि विशेष रूप से उल्लेख्य हैं। इस संग्रह की कविताओं में कवि के मधुर भावों ने स्वयं छंद खोज लिए हैं। अनूठे पद लालित्य तथा कविता की भाषा में सर्वत्र एक नैसर्गिक सौन्दर्य दिखाई देता है। इसकी समीक्षाएं उ० प्र०, म० प्र०, उड़ीसा और लाहौर आदि के १०-१२ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं। 'मधुर लहरी' एक ऐसी कृति है जिसने 'भारतीय आत्मा' को मोह लिया था और राष्ट्रकवि को झकझोर दिया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. मधु-बिन्दु—'मधुर लहरी' से झंकृत एवं प्रेरित होकर राष्ट्रकवि 'दिनकर' ने स्वयं 'मधु-विन्दु के प्रकाशन की योजना साकार करवायी। इसका प्रकाशन सं० २००८ वि० (१६४१) में अजन्ता प्रेस, नयाटोला, पटना से हुआ। इस संग्रह की भूमिका स्वयं 'दिनकर' जी ने लिखी है। पुस्तक पं० माखनलाल चतुर्वेदी को इन पंक्तियों में समर्पित है।

देव, तुम्हारे पदचिह्नों पर युग का संचित प्यार समर्पित।
फूल खिले जो उदयाचल पर उन फूलों का हार समर्पित॥

इस संकलन में 'मधुर' जी द्वारा १६२० से १६४७ के मध्य रचित कुल ५० कविताएं संगृहीत हैं जिनमें से 'मधुविन्दु', 'छलिया', 'जलबाला', 'हरियाले दिन', 'मंदिर में', 'मेरी होली', 'श्रृंगार', 'निर्धनता', 'धर्म की जय', 'भारतेन्दु के प्रति', 'ग्राम-गौरव', 'हलवाहा', 'डोम' तथा 'छुआछूत पर छू-मन्तर' आदि विशेष रूप से उल्लेख्य हैं। 'मधुर लहरी' की कतिपय रचनाओं को इसमें भी स्थान दे दिया गया है। इसी संकलन में वे दो पंक्तियां भी संगृहीत हैं जिन्हें भारतीय संसद में इस देश में हिन्दी की शर्मनाक अधोगति का यथार्थ एवं मर्मस्पर्शी चित्रण करते हुए राष्ट्र कवि ने प्रस्तुत कर सारे देश को झकझोर दिया था। पंक्तियां इस प्रकार हैं—

आज देश स्वाधीन हो गया हम किसान मजदूर।
दिल्ली में ही पूछ रहे हैं, दिल्ली कितनी दूर?

इस कविता को मधुरजी ने ठीक १५ अगस्त, १६४७ को लिखा था। 'सरस्वती' के हीरक जयन्ती के अवसर पर राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की अध्यक्षता में 'दिनकर' ने दूसरी बार इस कविता को सुनाया जिसकी रिपोर्टिंग सुर्खियों में १४ जनवरी, १६६२ के 'आज' में प्रकाशित हुई।

'मधुविन्दु' में 'मधुर' जी की राष्ट्रीय कविताओं के अतिरिक्त स्नेह, करुणा, वात्सल्य; आस्था और रहस्य की कविताओं का भी प्रतिनिधित्व हुआ है। रचनाओं के शिल्प और शैली के तेवर ठीक वैसे ही हैं जैसे 'मधुर लहरी' के।

३. ऐतिहासिक कथाएँ—साम्प्रदायिक सद्भाव की दृष्टि से वर्धा-योजना के प्रकाश में आजादी से पूर्व लिखित यह ग्रंथ सन् १६४७ में अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन पटना से प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ में हिन्दू-मुस्लिम दोनों संप्रदायों से संबंधित सात कथाएँ हैं जिनमें रामकथा, लीलावती की कहानी, महाराज अशोक, बादशाह अकबर चांदबीबी, तुलसीदास तथा गांधी जी विशेष उल्लेख हैं। 'हरिजन' के कार्यकारी संपादक श्रीयुत बप्पा ठक्कर के परामर्श से इस ग्रंथ की पाण्डुलिपि इस प्रकार तैयार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की गयी कि छापे के अंग्रेजी अक्षरों की भाँति ही हिन्दी के अक्षर भी एक दूसरे से सटने न पावें। तात्पर्य, सम्पूर्ण पुस्तक में संयुक्ताक्षरों का प्रयोग बचाया गया। यह इस दृष्टि से किया गया कि कोई भी भारतीय जिसे हिन्दी का अक्षर-ज्ञान हो इस पुस्तक को पढ़ और समझ सके। पुस्तक में भाषा के 'हिन्दुस्तानी' रूप से भी बचा गया है। बोल-चाल के सहज 'हिन्दी' शब्दों का प्रयोग किया गया। ग्रंथ की भाषा एवं कथाओं की प्रामाणिकता, 'विश्वमित्र' के संपादक रामअशीष सिंह, मुंशी प्रेमचन्द, श्यामू संन्यासी और आचार्य शिवपूजन सहाय के द्वारा परीक्षित, प्रमाणित एवं प्रशंसित थी।

४. **बच्चों के गीत**—'बच्चों के गीत' मधुरजी के साहित्यिक जीवन की युगान्तरकारी कृति के रूपमें अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन, पटना से ही प्रकाशित हुई। इस संकलन में प्रायः वे ही बालगीत संगृहीत हैं जो अभी तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके थे। इसके प्रकाशन के साथ ही मधुरजी को बालगीतों के प्रथम रचयिता के रूप में 'बालगीत साहित्य के इतिहास' में स्थान मिल गया।

५. **बच्चों के मधुर गीत**—मधुरजी द्वारा प्रणीत बालोपयोगी काव्य उद्यान का यह दूसरा पुष्प फरवरी, १९६३ में सर्वोदय-साहित्य प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित हुआ। उद्बोधन शैली की सहजता एवं भाषा की मधुरता में पगे बच्चों के ये गीत पाठक के सम्मुख उसका अपना भाव-चित्र उपस्थित कर देते हैं। इसमें छोटी-बड़ी कुल बीस रचनाएँ संगृहीत हैं जिनमें 'अम्मा अब मैं बड़ा हो गया', 'झूला', 'फूलों का देश', 'गंगा की धारा', 'आई निंदिया-आई निंदिया', 'राजपाट का खेल' तथा 'माता का दूध' आदि उल्लेखनीय हैं। बच्चों की तोतली जिज्ञासाओं को अपने भावों में अवतरित कर 'मधुरजी' ने जिस प्रकार छन्दों का हार पिरोया है उससे इनकी बाल-चेष्टाओं को स्वाभाविक ढंग से समझने एवं अनुभव कर लेने की सूक्ष्म दृष्टि का पता मिलता है। संग्रह की विशेषता यह है कि कविता के कथ्य के अनुसार प्रत्येक पृष्ठ को व्यंग्यकार कांजिलाल ने चित्रों से सजा दिया है। ये रंगीन चित्र कविता के भाव एवं अनुकथन को स्वयं भी मुखर कर देने में सहायक है। गीतों का विशुद्ध आत्मा ठीक वैसा ही है जैसा बच्चों का।

'बालगीत साहित्य का इतिहास' के लेखक श्री निरंकार देव सेवक ने 'मधुर' जी को हिन्दी में मध्यकाल के पहले बालगीत लिखने वाले कवि के रूप में उल्लिखित किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६. **सुबाहु-वध**—(खण्ड काव्य)—बालोपयोगी काव्य-कानन का यह तृतीय सुमन वर्ष १९६८ में छात्र हितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग द्वारा प्रकाशित किया गया। बाल साहित्य के क्षेत्र में अभी तक फुटकर गीत ही लिखे जाते थे। एक व्यवस्थित पौराणिक कथा के धरातल पर बालोपयोगी खण्ड काव्य की रचना मधुरजी का एक अभिनव प्रयोग तथा हिन्दी साहित्य को सर्वथा एक नूतन अवदान है। जैसा कि खण्डकाव्य के 'टाइटिल' से ही प्रकट है कवि ने व्यापक राम-कथा से सुबाहु-वध-प्रसंग का चयन कर बच्चों की मीठी बोली में मधुर भावों को घोलकर एक काव्य-कलश तैयार कर दिया है। कथा का आधार श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण तथा चक्रवर्ती राजगोपालचारी के रामायण से लिया गया है। पुस्तक राष्ट्रकवि 'दिनकर' को इन पंक्तियों में समर्पित है।

लो राम और लक्ष्मण की कुंकुम रोली,
जय धनुष - बाण, मैंने जयगान किया है।
प्रिय 'दिनकर' मेरा संचित स्नेह समर्पित,
वह स्नेह जिसे तुमने सम्मान दिया है।

७. **गरल-सुधा**—अप्रैल, १९७८ ई० में सर्वोदय साहित्य प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित यह कवि की एक अत्यन्त प्रौढ़ रचना है। बाल काव्य के तुरन्त बाद (यद्यपि दस वर्ष का अन्तराल है) इस प्रकार की रचना प्रस्तुत कर सकना एक समर्थ कवि के वश की ही बात है। इससे इनके सक्षम काव्य-प्रतिभा का प्रकाशन होता है। सुबाहु बध में इन्होंने भावना के अतिरिक्त बुद्धि और शिल्प का भी प्रयोग किया है। गरल सुधा में सहज शिल्प का प्रयोग हुआ है पर उसे छिपाने का प्रयत्न किया गया है ये दोनों कृतियाँ विचार प्रधान हैं। पुस्तक की भूमिका में स्व० डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं, "मधुरजी की भाषा सरल किन्तु सशक्त हैं। वे आधुनिक विचारों को बड़े ही सरस और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करते हैं।"

इस काव्यग्रंथ का परिचय स्वयं मधुरजी के शब्दों में, "इस पुस्तक की रचना लोकमंगल की भावना से हुई है। स्वार्थ की समर भूमि पर देवासुर संग्राम युग-युग से हो रहा है। देव और असुर दोनों मानव के ही विभिन्न रूप हैं।·····—·········· हार जीत का कभी अन्तिम निर्णय नहीं हो सका। फिर भी शुभ कामना है—शान्ति चाहिए, प्रेम चाहिए और चाहिए अमृत रस।············ किन्तु; 'अमृत नहीं, लोक कल्याण के लिए विषपान निवेदित है—जो विषपान शिवत्व एवं अमरत्व प्रदान करता है।" लोक मांगल्य से अभिप्रेरित कवि की कैसी उदार,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महनीय दृष्टि है ! यह दृष्टि चाहे बाल-खण्ड काव्य 'सुबाहु वध' हो अथवा प्रौढ़ कृति 'गरल-सुधा'—सर्वत्र एक समान है । 'सुबाहु-वध' में वर्णित :—

मानव के वैरी दानव हैं, जब से है संसार ।
दानव का है कर्म सदा से केवल अत्याचार ।।

की पूर्ण अभिव्यक्ति 'गरल-सुधा' में देखी जा सकती है—

देव, असुर दोनों मानव के ही स्वरूप रंगीन ।
दोनों के गर्वित हाथों में चम-चम-चम संगीन ।।

और कवि का संदेश:—

लो ललाट कुंकुम रोली, जय गान अमर होने दो ।
अमृत दे अमरत्व आज विषपान अमर होने दो ।।

ये वे कृतियाँ हैं जो संख्या में अल्प और परिमाण में लघु होते हुए भी 'मधुर' जी को हिन्दी साहित्य के इतिहास में अमर बना देने के लिए पर्याप्त हैं ।

मूल्याङ्कन

कीमत में मत कोहनूर दिखलाना रे अभिमानी ।
किस कीमत पर बेचूँ अपनी चढ़ती हुई जवानी ।
सुन्दर, अति सुन्दर है हँसना, फँसना, रोना-गाना ।
यही साध बाकी है बढ़कर सूली पर चढ़ जाना ।

डा० विवेकी राय लिखते हैं, 'मधुविन्दु' में कविता का एक अत्यन्त ताजा राष्ट्रीय स्वर है । कवि दृढ़ और स्पष्ट शब्दों में अपने गौरवमय इतिहास को स्मरण करते हुए आसन्न पराभव के संदर्भों को आख्यायित करता है । वह जब भी मुँह खोलता है मानवता अथवा राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में ही कुछ कहता है और अनन्त भाव छवियों का गुंजलक बुनता चला जाता है । कवि निकट से भारत की आत्मा को पहचानता है ।" (और 'भारतीय आत्मा' पं० माखनलाल चतुर्वेदी की दृष्टि भी इन्हें निकट से ही पहचानती रही ।) वह आगे लिखते हैं, "'मधुर' जी की भाषा मे एक नया, खरा और मीठा स्वाद है : सरल सीधे शब्दों में आग भर-भर कर गाना सरल नहीं है । ज्वलन्त प्रश्नों को संप्रेषित कर वांछित आग भड़का देना सामान्य कवि के बूते की बात नहीं है । स्वाधीनता पूर्व की लिखी इन कविताओं की अनुभूति में न तो बासीपन आया है और न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं इसका स्वर मद्धिम हुआ है।" ......"उन्होंने अपनी मौन-साधना से स्वस्थ साहित्य निर्माण के वातावरण को संवलित किया है।"

(सा० गाजीपुर समाचार, १६-२-६८)

गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार—

निज कवित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका।।

एक कवि की कविता सामान्य जन को भले ही ठीक लगे, दूसरे कवि को भी रुचे और जँचे तो समझना चाहिए कि उस कविता में अवश्य ही 'कुछ' है। इसी 'कुछ' को ऊपर विवेचित करने का प्रयास किया गया है। पं० माखनलाल चतुर्वेदी ने खण्डवा (म० प्र०) में बैठे-बैठे इनकी एक-एक पंक्ति को प्यार किया। राष्ट्रकवि 'दिनकर' इनकी रचनाओं पर रीझ गये। कविवर सोहनलाल द्विवेदी इनकी मधुर कविताओं के 'प्रेमी पाठक और प्रशंसक' बन गये। यहाँ उल्लेख्य है कि कथाकार अमृत लाल नागर अपने उपन्यास 'नाच्यो बहुत गोपाल' की रचना के संदर्भ में श्रद्धेय पं० नर्मदेश्वर चतुर्वेदी के संदर्भ से 'मधुर' जी की 'डोम', 'डोमिन' रचनाएँ प्राप्त कर बहुत ही प्रभावित हुए। उन्होंने 'मधुर' जी की काव्य प्रतिभा एवं रचना शैली की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस बात का स्पष्ट उल्लेख उपन्यास की प्रस्तावना में नागर जी ने किया है। अनेक लेखक और समालोचक इनकी ओजस्वी लेखनी के प्रशंसक बन गये। फिर इनकी काव्य प्रतिभा और कवित्व के मूल्यांकन में किसी न्यूनता का अवसर रह ही कहाँ जाता है? भाव-भाषा तथा शैली और शिल्प उनके अपने हैं, सहज हैं; और हैं साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट। 'इनकी कविताएँ शब्दों की सजावट और विचारों के चमत्कार से अधिक अनुभूति की वेधने वाली सच्चाई एवं उक्ति की वक्रता के लिए प्रशंसित एवं समादृत हैं।' जिनके गद्य को भी विश्वमित्र के संपादक श्री राम अशीष सिंह तथा आचार्य शिवपूजन सहाय ने देखा, परखा और पसंद किया हो, उनका मूल्यांकन क्या अभी बाकी रह जाता है? हाँ, इस कवि का मूल्यांकन किया जाना अभी भी शेष है!

राष्ट्रीय एवं सामाजिक जन चेतना से जुटा हुआ यह कवि कहीं-कहीं रहस्य-वादी बन गया है—

विश्व वही है, देश वही है, प्यारा सदन वही है।
इधर उधर, हैं वहीं दिशाएँ, ऊपर गगन वही है।
एक विचित्र उदासी-सी फिर क्यों रहती है मन में।
त्रुटि लख पड़ती नहीं जगत में, त्रुटि है क्या जीवन में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और 'महाक्रांति' का आह्वान कवि के इन पंक्तियों में—

जिन आँखों में अश्रुधार थी, उन आँखों में ज्वाला।
आग लगी इस पार, धधक उस पार हुआ उजियाला।
आज उदधि-मंथन कर पीले कालकूट का प्याला।
नाच दिगंबर! नाच, पहन कर नरमुण्डों की माला।
धूल-धूल उड़ चले धरित्री, अम्बर चकना-चूर।
एक नया संसार बसे फिर इस दुनियां से दूर।

इस महाक्रांति में भारत का एक तुच्छ 'हलवाहा' भी महत्त्वपूर्ण भूमि
निभा सकता है—

हलचल, हलचल, हलचल, हलचल,
प्रतिपल उथल-पुथल, हा-हा!
एक बार हल की नोकों से—
धरा उलट दे हलवाहा!

महाक्रांति का गायक कितनी सहजता से बच्चों के भोले संवेद्य संवेग
उतर जाता है, इसके प्रमाण हैं मधुर जी द्वारा प्रणीत 'बच्चों के 'मधुरगीत
पुनः बच्चों के पालने और लोरियों से उठकर तुरन्त देने लगता है मानव-दा
के शाश्वत महासमर में लोकमंगल के लिए विषपान का संदेश अपनी प्रौढ़ कृ
गरल सुधा में।

राष्ट्रभारती के इस वरद-पुत्र ने निस्पृह जीवन जिया है, अमृत देकर
पिया है, क्रांति का शंखनाद किया है, रोम-रोम में मधुरिमा समाई है, ब
की लोरियां गाई हैं, अनुराग के पराग बिखरे है, काव्य कानन के अद्भुत चि
हैं, जिजीविषा के दृढ़ तार बनाये हैं, आस्था के अलख जगाये हैं, जीने
राह बताये हैं, हमारे और आपके गीत गाये हैं। आप ही बता
हिन्दी के इस समर्थ कवि को क्या हिन्दी वाले उपयुक्त सम्मान दे पाये
'मधुर' जी ने कोई महाकाव्य नहीं रचा। परन्तु इनकी एक-एक कविता रा
जन चेतना का महाकाव्य है। उत्सर्ग की प्रेरणा लिए इनकी भावना प्रधान रा
कविताएँ केवल जय जयकार नहीं हैं।

'दिनकर' जी स्वयं इसी पीड़ा की छटपटाहट महसूस करते रहे। उन्हीं के श
में—"मधुर' जी ने केवल राष्ट्रीय कविताएँ ही नहीं, वरन् स्नेह, करुणा,
व्याह और वात्सल्य से प्रेरित होकर भी अनेक छोटी-मोटी रचनाएँ की हैं
प्रत्येक रचना में उस विलक्षणता का स्पर्श मिलता है जिसे उन्होंने अपनी शै

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रदान-स्वरूप बड़ी ही साधना के बाद प्राप्त किया है। उनके क्रांति-गीत ही हीं, बल्कि लोरी और बारहमासे भी छायावाद कालीन प्रभाओं से युक्त हैं। वे प्रयोग हैं जिनसे प्रेरणा लेकर हमारे कितने ही नवोदित कलाकार साहित्य में वीन रेखाओं का निर्माण करने में समर्थ हो सकते हैं। किन्तु, अचरज की बात कि आज जब सभी प्रकार के लोगों को आसानी से प्रकाशन मिल जाता है, ब 'मधुर' जी के समान विलक्षण कवि को ही हिन्दी वाले नहीं जानते।"

है न मूल्यांकन होना अभी शेष ?

मारे विचार से भी यह सत्य है कि--

"इतिहासों के पन्नों पर उड़ते हैं राजा - रानी।"

रन्तु--

सिंहासन युत राम 'मधुर' की रहती अमर कहानी।

कविता पर मधुरजी के विचार--

ो किसी समीक्षक को मधुर जी की कविताएं छायावाद की प्रभा से युक्त प्रतीत त सकती हैं पर वास्तविकता यह है कि इन पर किसी 'वाद' का प्रभाव नहीं ड़ा और न ये किसी 'वाद' के कायल रहे। मैथिली शरण गुप्त से अच्छा संपर्क । 'भारत भारती' मिडिल स्कूल में ही इनके सामने आ चुकी थी। पर गुप्तजी शैली से ये अप्रभावित ही रहे। हां, कुछ प्रभाव इन्होंने स्वीकारा है तो मात्र माखन लाल चतुर्वेदी का। काव्य, काव्य है, जीवित रहेगा, स्थायी महत्त्व काव्य रचना-जैसे युग-धर्म से प्रेरित होकर इन्होंने निजी शैली को ही अपनाये खा। कविता की अपनी पैंठ, सूझ और पकड़ के आधार पर ये बराबर सृजन गीत गाते रहे।

ाः नई कविता के संदर्भ में पं० माखन लाल ने भी इन्हें लिखा था, "आप हित्य की धाराओं को पकड़ने में न अपने को छोटा अनुभव करें, न संकोच करें। र लिखना प्रारंभ करें--किसी भी विषय पर। जिस विषय पर आप लिख गे, वही कविता का Expression बन जायेगा। आलोचना के पत्थर फेंकने वाले त्रों की ओर स्नेह से किन्तु जरा उपेक्षा से देखें। मुझसे पहले आपको बूढ़ा ने का कोई हक नहीं।" परन्तु उनके लाख प्रोत्साहन के बावजूद ये नई ा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम न बना सके। अपने भाव, अपनी भाषा, नी शैली को अपनी पकड़ के आधार पर लेकर 'एकला चलो रे' की मस्ती में नाएँ करते रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नई कविता के सम्बन्ध में आप के क्या विचार हैं ? इन्होंने बताया कि
एक तो छन्द-विधान न होने से रचनाओं के आधार पर 'माल' का इतना आ
हो जाएगा कि कवि, सुकवि और कुकवि में भेद करना कठिन हो जाएगा। इ
प्रभृति पाश्चात्य कवियों का अनुकरण करें तो अपनी हस्ती और अस्तित्व
रह जायेगें ? नई कविता में अधिकांश 'फैशन' है। लिख कर कवि हो
'फैशन'। इसमें कविताएँ कम ही दिखाई देती हैं, फैशन अधिक। कुछ अ
स्वरूप कवि हैं भी तो बहुत सशक्त, जैसे स्व० सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' की
देश की संसद मौन है।' ऐसा ही ओज मधुर जी की 'दिल्ली में ही पूछ
दिल्ली कितनी दूर ?' कविता में भी अभिव्यक्त है। एक छन्दों के बन्धन से
है, तो दूसरी छन्दों के पाश से युक्त। परन्तु ऐसे समर्थ 'नये कवि' हैं, कितने ?

अपनी ही प्रतिभा से आक्रान्त प्राणियों, कवियों और लेखकों के मध्य
प्रचार से सर्वथा विरत मधुरजी निर्वैर, आस्था और आशा का जीवन जी
प्रेरणा देते हैं। यथा नाम तथा गुण ! जीवन को गंभीर बनाना, दुख और
को निमंत्रण देना है। मोद, विनोद, हास तथा माधुर्य के साथ जीवन जीना चा
इसीलिए मिला भी है। कितने आशा और आस्थावान हैं ये—

यौवन की दुर्गम घाटी में,
टीलों से गीत सुनाती हूँ,
उस पार भटकता है भविष्य,
मैं कब से उसे बुलाती हूँ।

अंतस में दीप जलाती थी,
वह आग लगी अभिलाषा में,
मैं हाय जलन में जीती हूँ,
हरियाले दिन की आशा में।

मैं जाती हूँ उन खेतों में,
तुम मेघ घेर लाना प्यारे,
मेरी प्यासी हरियाली में,
रस बूँदें बरसाना प्यारे !

राजकीय सम्मान—

फरवरी, १९६८ में सरकारी स्तर पर इनका सम्मान किया गया।
और गाज़ीपुर जिलों के संयुक्त तत्वावधान में १७-२-६८ को अन्तर्ग्रामीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोष्ठी में श्री अन्नूराय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चौरा के प्रांगण में प्राय: पन्द्रह हजार समुपस्थित जनसमुदाय के बीच मधुरजी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से सूचना सह-निदेशक और प्रसिद्ध साहित्यकार श्री ठाकुर प्रसाद सिंह उपस्थित थे। बलिया के साप्ताहिक 'विहान' (१६-२-६८), सा० बलिया समाचार (२०-२-६८) तथा सा० ग़ाज़ीपुर समाचार (१९-२-६८) ने विशिष्ट सामग्री के साथ 'मधुर-सम्मान-विशेषांक' निकाले जिनमें डा० विवेकीराय, रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा प्रभुनाथ मिश्र आदि की लेखनियों ने मधुरजी के जीवन एवं कर्तृत्व पर अपने-अपने ढंग से प्रकाश डाला।

पुनः शनिवार, २४ नवम्बर, १९७९ को इनके हीरक वर्ष ग्रंथि के उपलक्ष्य में बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा की ओर से एक मंगल कामना समारोह में श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी की अध्यक्षता में इनका भव्य साहित्यिक सम्मान किया गया। सम्मान के उत्तर में मधुरजी ने कहा था कि मैं इस सम्मान के योग्य हूँ या नहीं, इस पर मुझे यकीन नहीं होता। मैंने लिखा ही क्या है ? पर जो कुछ भी लिखा है, बस लिखने के लिए लिखा है। आत्मसुख के लिए। लिखने को मैंने कभी पेशा नहीं समझा। इस आयोजन की सुसम्पन्नता के लिए श्री काशी प्रसाद 'उन्मेष' तथा श्री राधाकृष्ण गुप्त के सत्प्रयास विशेष सराहनीय रहे।

साहित्यिक सम्मानों के प्रेरक

खण्डवा से प्रकाशित 'कर्मवीर' में 'मधुर' जी का एक लेख प्रकाशित हुआ। उसका मन्तव्य था—अब तक इस देश में देवी-देवताओं का बहुत स्वागत-सत्कार होता आया है, अब साहित्यकारों और सैनिकों का भी सम्मान किया जाना चाहिए। 'मधुर' जी का यह विचार काशी के स्वनाम-धन्य राष्ट्ररत्न बाबू शिवप्रसाद गुप्त को बहुत अच्छा लगा। उन्होंने 'मधुर' जी के 'कर्मवीर' वाले उस लेख को सम्पाद टिप्पणियों के साथ 'आज' में भी प्रकाशित करवाया। वे देशभक्तों के संरक्षक तो थे ही, साहित्यकारों के सम्मान के लिये भी उनके मन में एक तड़प थी। उन्होंने इस कार्य का भार अपने जिम्मे ले लिया। सर्वप्रथम, उन्होंने श्री मैथिलीशरण गुप्त का सार्वजनिक अभिनन्दन करने का निश्चय किया। अभिनन्दन-समारोह-समिति गठित कर दी गई। 'मधुर' जी भी उस समिति के सदस्य बनाये गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात उस समय की है, जिस दिन काशी में प्रसिद्ध भारत-माता मन्दिर उद्घाटन होने वाला था। महात्मा गांधी समेत पं० जवाहरलाल नेहरू, सर पटेल, खान अब्दुल गफ्फार खाँ आदि अनेक दिग्गज राजनेताओं का जमघट हुआ था। बलिया से 'मधुर' जी के साथ बाबू मुरली मनोहर तथा श्री दुर्गा प्र गुप्त भी वहाँ गये थे। सभी लोग 'सेवा-उपवन' में ठहरे थे। उसी दिन श्री मैथि शरण गुप्त का सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया जाना था। गांधी जी द्वारा अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट कराये जाने का कार्य-क्रम बनाया गया था। कार्य-क्रम प्रस्तावक में 'मधुर' जी तथा समर्थक में पं० रामबहोरी शुक्ल का नाम पहले ही सूचीबद्ध था। श्री सियाराम शरण गुप्त कार्यक्रम के संचालक थे। बाबू प्रसाद गुप्त स्वागताध्यक्ष थे। कार्यक्रम सनातन धर्म इण्टर कालेज, काशी प्रांगण में आयोजित हुआ था।

पं० रामबहोरी शुक्ल समर्थक की जगह प्रस्तावक की भूमिका निभा चाहते थे। 'मधुर' जी की अनापत्ति पर श्री सियाराम शरण गुप्त ने कार्य-क्रम संशोधन कर पं० शुक्ल को प्रस्तावक तथा मधुर जी को समर्थक बना दिया लेकिन प्रस्तावक पं० रामबहोरी शुक्ल के द्वारा अनजाने ही क्या गलती हो सक थी, इस ओर संचालक का ध्यान नहीं गया। व्याख्याता होने के नाते शुक्ल समझते थे, इस कार्य को बखूबी निभा लेंगे।

जाड़े की प्रातः सात बजे का समय था। मैथिलीशरण जी नहा-धो चमचम जैसे ही फाटक के अन्दर प्रविष्ट हुए, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छ ने ऑटोग्राफ के लिए उन्हें घेर लिया। इतने ही में महात्मा गांधी भी आ ग मंच पर यथास्थान सभी लोग पहले से ही विराजमान थे। अनुमानतः घण्टे का आयोजन था। स्वागताध्यक्ष बाबू शिवप्रसाद गुप्त मंच पर नहीं पहुँचे। व्यवस्था में ही इधर-उधर लगे हुए थे।

प्रस्तावक की हैसियत से पं० रामबहोरी शुक्ल मंच पर खड़े हुए। जि अभिनन्दन हेतु यह कार्यक्रम आयोजित था, श्री मैथिलीशरण गुप्त की शुभ में कुछ न कहकर उन्होंने महात्मा गांधी की ही प्रशंसा शुरू कर दी। यहाँ कह डाला—"आप सत् + चित + आनन्द यानी सच्चिदानन्द हैं।" अपने में यह प्रशस्ति गांधीजी को भली नहीं लगी। वे खिन्न होकर तुरन्त खड़े हो अपने हाथों से अभिनन्दन-ग्रन्थ उठाकर मैथिलीशरण जी की ओर बढ़ाते उन्होंने कहा—"मैं ऐसा कुछ नहीं। आप लोगों का मुझमें विश्वास है इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आप लोगों की तरफ से यह ग्रन्थ मैं मैथिलीशरण जी को देता हूँ।" और मंच से उतर कर चल दिये।

घण्टे भर का आयोजन डेढ़ मिनट में समाप्त हो गया। सारा समारोह खड़बड़ा गया। उदासी छा गई। क्योंकि आयोजकों के कार्यक्रमानुसार कुछ नहीं हो पाया। लेकिन कोई कर भी क्या सकता था ? सभी लोग काना-फूंसी करते हुए यत्र-तत्र चले गये। किन्तु साहित्यकारों के सम्मानार्थ सार्वजनिक अभिनन्दन की शुरुआत हो चुकी थी। एक अच्छी प्रेरणाप्रद परम्परा का बीजांकुरण हो चुका था।

साहित्यकारों को सम्मान प्रदान करने की ओर सर्वप्रथम 'मधुर' जी की दृष्टि गई थी। राष्ट्ररत्न बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने इस परम्परा की शुरुआत करने के साथ ही इसे घोषित और पल्लवित भी किया। वे मधुरजी का बहुत आदर करते थे। 'आज' के तत्कालीन सम्पादक पराड़करजी तथा खाडिलकरजी भी इन्हें बहुत आदर-सम्मान देते रहे। कैसी विडम्बना है कि दूसरों को सम्मान दिलाने के लिए प्रयत्नशील 'मधुर, जी सदा आत्म-प्रचार से विरत, बहुत दूर-दूर रहे। आत्म-प्रचार से उन्हें बड़ा संकोच होता है। आत्म-प्रशंसा से वह बहुत भयभीत रहते हैं। ये साधु पुरुष के लक्षण हैं।

अखबारों का संपादन

सन् १९२५ में मधुर जी इलाहाबाद से बलिया वापस आ गये। यहाँ माल-विभाग की वकालत शुरू की। प्रयाग में साहित्य-सेवा और पत्रकारिता का जो बीज अंकुरित हुआ था वह बलिया में भी पुष्पित-पल्लवित होने की जगह खोजने लगा। फलतः हरिहर प्रेस से प्रकाशित होने वाले 'बलिया गजट' साप्ताहिक से सम्बद्ध हो गये। इस साप्ताहिक पत्र के पं० रामचीज दुबे, नाम के तथा मधुरजी वास्तविक सम्पादक थे। दुबे जी के बाद उन्होंने श्री वशिष्ठ नारायण 'निर्मल' को इसमें लगवा दिया।

आगे चलकर मधुर जी की प्रेरणा से पं० हरिद्वार शर्मा वैद्य ने ६४५ रु० में मशीनें लाकर गोविन्द प्रेस खोला। यहाँ से जब 'संसार' साप्ताहिक निकलने लगा तो मधुर जी इसके अवैतनिक संपादक हो गये। इसी 'संसार' में श्री प्रभुनाथ मिश्र भी आ गये। बाद में मिश्र जी इससे अलग होकर स्वतन्त्र रूप से 'गुरु घण्टाल' निकालने लगे। 'संसार' बड़ा लोकप्रिय अखबार हो गया था। 'बलिया गजट' और 'संसार' में प्रतिद्वंद्विता भी थी। 'संसार' में मधुर जी के कारण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अच्छे-अच्छे साहित्यकारों और रचनाकारों के लेख-कविताएँ छपा करती थीं। बिस्मिल इलाहाबादी और उनके उस्ताद नूह नारवी की रचनाएँ भी स्थान पाती थीं। 'बलिया गजट' से मधुर जी के हट जाने के बाद सम्मानित रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ भी 'बलिया गज़ट' को भेजना बन्द कर दिया और 'संसार' में भेजने लगे। बिस्मिल इलाहाबादी ने तो यहाँ तक लिख दिया कि—

'संसार' से फुरसत न मिली थी अभी बिस्मिल,
फरमाइशें करने लगा 'बलिया का गज़ट' भी।

'संसार' से मधुर जी सन् १९३० तक सम्बद्ध रहे।

बाबू शिवप्रसाद और महादेव प्रसाद ने प्रभात प्रेस खोला। इस प्रेस से जब 'प्रभात' साप्ताहिक निकालने की योजना बनी तो मधुर जी को इसमें बुला लिया गया। फिर मधुरजी ने इस पत्र के पूर्णकालिक सवैतनिक सम्पादक के रूप में कार्य देखने के लिये बशिष्ठ नारायण 'निर्मल' को बुलवा लिया। वेतन भुगतान के प्रश्न पर जब निर्मल जी यहाँ से हट गये तो लगभग १९३६-३७ में श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त आकर 'प्रभात' से जुट गये। श्री दुर्गाप्रसाद हाल ही में श्री काशी विद्यापीठ से 'शास्त्री' पास कर आये थे और उत्साहपूर्वक पत्र का कार्य करते थे। मधुर जी सन् १९४७ तक 'प्रभात' से सम्बद्ध रहे। यहाँ भी वे अवैतनिक सम्पादन का कार्य करते रहे। फिर दोनों मालिकों द्वारा प्रेस के आपस में बँटवारे के समय कुछ कारणों से खिन्न होकर मधुर जी पत्रकारिता से हटे तो फिर कभी उधर झाँका तक नहीं! कारण, एक दिन इन्हें एक बही अकस्मात देखने को मिल गयी जिसमें प्रेस मालिक ने मधुर जी के प्रति एक पैसे के पान और एक पैसे के सिगरेट के खर्च का हिसाब भी लिखा था। प्रेस और पत्रकारिता से अलग हो जाने की खिन्नता का यही कारण बना था। अवैतनिक सम्पादक के समय का कोई मूल्य नहीं और दो पैसे के सिगरेट-पान का इतना बड़ा मूल्य।

हिन्दी प्रचारिणी सभा में

विद्यार्थी जीवन से ही मधुर जी साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति रहे हैं। उनके सहपाठियों में स्व० डॉ० उदयनारायण तिवारी, स्व० डॉ० भगवतशरण उपाध्याय और स्व० ठाकुर प्रसिद्ध नारायण सिंह कविता सुनाने और लेख लिखने में रुचि लेते थे। स्व० डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी मधुरजी से एक कक्षा पीछे थे और बसरिकापुर मिडिल स्कूल से आते थे। ये सभी लोग कानपुर के 'प्रताप' को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़े चाव से पढ़ा करते थे। भगवत्शरण उपाध्याय गर्मी की छुट्टियों में कलकत्ते चले जाया करते थे। कक्षा ६ में वे जेल भी गये।

हल्दी के राजकवि पं० रामबख्स पाण्डे 'सुजान' उन दिनों के जाने-माने कवि थे। उन्होंने 'सुकवि-समाज' की बलिया में स्थापना की थी। प्रत्येक रविवार को वह हल्दी से बड़े ताम-झाम के साथ आते थे। सुकवि समाज के अन्य कवि थे— अब्दुल सत्तार प्यारे, डुमरांव के राजकवि नकछेदी पांडे 'अजान', ठाकुर चन्द्रिका सिंह तथा मन्नन द्विवेदी। 'सुकवि-समाज' के आयोजनों में साहित्यिक चर्चा के अलावा समस्या पूर्तियां भी होती थीं। श्रीरामसिंहासन सहाय 'मधुर' तथा उदयनारायण तिवारी स्वयंसेवक का कार्य करते और कभी-कभी समस्यापूर्ति की कविताएँ भी सुनाते थे। १६१६ से १६२० तक वे सुकवि समाज से सम्बद्ध रहे।

हिन्दी प्रचारिणी सभा, बलिया की स्थापना में मधुर जी का स्मरणीय योगदान रहा है। उन दिनों बलिया में दो पुस्तकालय थे: (१) नागरी प्रचारिणी पुस्तकालय, जुबली संस्कृत कालेज जिसके पुस्तकाध्यक्ष थे आचार्य रामउदित उपाध्याय। इसे 'ब्राह्मणों' का पुस्तकालय कहा जाता था। (२) दूसरा पुस्तकालय राबर्ट्स पब्लिक लाइब्रेरी थी जिसकी स्थापना भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के हाथों १८८३-८४ में हुई थी। यह 'कायस्थों' का कहा जाता था। एक तीसरा पुस्तकालय भी बैरिया में था जिसके संस्थापक रहे—हरिकृष्ण राय विशारद और शिवप्रसाद सिंह विशारद। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये लोगों में एक ललक थी। लोग चाहते थे कि तीनों पुस्तकालयों को मिलाकर एक संगठित संस्था के माध्यम से काम किया जाय। लेकिन कोई ऐसा व्यक्ति नहीं दिखाई दे रहा था जिसकी बातें सब लोग मानकर मिल जायँ। राबर्ट्स पुस्तकालय तो महज दो बक्सों में पड़ा था। श्री जगदेव उपाध्याय और दूधनाथ उपाध्याय के तालमेल से श्री मुरली मनोहर और मधुरजी विख्यात गणितज्ञ और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर प्रिंसिपल डॉ० गणेश प्रसाद को बुला लाये। उनकी मध्यस्थता तथा अध्यक्षता में सीताराम अग्रवाल की फुलवारी में (१६२०) एक सभा हुई। सभा के एक संकल्प के साथ तीनों पुस्तकालयों ने मिलकर हिन्दी के संवर्द्धन हेतु बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा को संगठित किया और चलता पुस्तकालय की स्थापना भी हुई। पहले पुस्तकाध्यक्ष बने नन्दनबाबू और श्रीरामसिंहासन सहाय 'मधुर' को साहित्य मंत्री बनाया गया।

साहित्य मंत्री की हैसियत से इन्हें पुस्तकालय की व्यवस्था भी देखनी पड़ती थी तथा मासिक एवं वार्षिक बैठकों का आयोजन भी करना पड़ता। हिन्दी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन से पंजीकृत हो गयी और विशारद की परीक्षाएँ आयोजित करने की सुविधा मिल गई। काशी से लाला भगवानदीन 'दीन' आये और बहुत उत्साहवर्द्धन कर हिन्दी अध्यापन का इंचार्ज मधुरजी को बनाया। मीना बाजार की ठाकुरबाड़ी के एक कमरे में हिन्दी की कक्षाएं चला करती थीं।

मधुर जी २६ जून, १६२३ से २६ जून, १६२५ तक इलाहाबाद में रहे। वहाँ उनके साहित्यिक जीवन का बड़ा विस्तार हुआ। बलिया वापस लौटने के बाद वे पुनः हिन्दी प्रचारिणी सभा के कार्यों में जुटे। कवि सम्मेलनों के तो वे प्राण थे। मंच पर उनका पूरा वर्चस्व रहता।

१९२० में जब डॉ० गणेश प्रसाद आये थे, उन्होने बलिया-वासियों को लड़कियों का एक कालेज खोलने के लिये ४० हजार रुपये देने का प्रस्ताव किया था। परन्तु यहां के बुद्धिजीवियों ने यह कहकर कि स्कूल-कालेज में पढ़ाने से घर की बहू-बेटियों की इज्जत चली जायेगी, रुपया लेने से इन्कार कर दिया।

साहित्य मंत्री मधुरजी ने अनेक कवि सम्मेलन करवाये। उन दिनों के कवि सम्मेलन आज जैसी सस्ती लोकप्रियता और वाह-वाही लूटने के लिये नहीं होते थे। हिन्दी प्रचार को एक मिशन मानकर कवि सम्मेलन कराये जाते थे। गवर्नमेन्ट स्कूल के कवि सम्मेलन में श्री हरिवंश राय बच्चन इलाहाबाद से आये। वही ऐसे पहले कवि थे जिन्होंने ४० रुपये मुँह खोलकर मांग दिया। यह बात प्रबन्ध मंत्री को अच्छी नहीं लगी। दूसरा वृहद् कवि सम्मेलन मिल्की (बैरिया) में मधुर जी ने ही कराया। यहाँ एक राजनीतिक सम्मेलन हुआ था जिसमें मुख्यमंत्री गोविन्दवल्लभ पन्त, सम्पूर्णानन्द, आर० एस० पंडित, विजयालक्ष्मी पंडित आदि ने भाग लिया था। इसी मंच से बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा के तत्वावधान में कवि सम्मेलन भी हुआ जिसमें वीररसावतार श्रीश्यामनारायण पाण्डेय ने 'हल्दी घाटी' कविता पहली बार सुनाया था। पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी ने कानपुर के आशुकवि अवस्थी जी को यहाँ भेजा था।

साहित्य मंत्री मधुर जी बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा का वार्षिकोत्सव बड़े धूम-धाम से करते थे। आने-जाने साहित्यकारों और महापुरुषों को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाते थे। उनके कार्यकाल में आने वालों में श्री सी० वाई चिन्तामणि, संपादक 'लीडर' इलाहाबाद, जीवानन्द शर्मा, सम्पादक 'प्रजाबंधु' पटना, डा० राजेन्द्रप्रसाद, श्यामनारायण पाण्डेय, गणेशशंकर विद्यार्थी, बाबा राघवदास, रामचन्द्र शुक्ल, लालाभगवानदीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'दीन', महापण्डित राहुल सांकृत्यायन (दोबार) काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष पं० रामनारायण मिश्र (जिन्हें मधुरजी ने भारतेन्दु बाबू के 'बलिया लेक्चर' की मूल प्रति सौंप दी), वेढ़ब बनारसी और 'दिनकर' जी प्रमुख थे।

इसी बीच प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रबंध तंत्र में विवाद को लेकर हाईकोर्ट ने उसे जप्त कर एक 'रिसीवर' वैठा दिया। 'सम्मेलन' से पंजीकृत जिलों की प्रचारिणी सभाएँ भी निष्प्रभावी हो गईं। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन बलिया पधारे। उन्होंने नये प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधीन यहाँ भी जनपद हिन्दी साहित्य सम्मेलन स्थापित कराकर मधुरजी को उसका अध्यक्ष और प्रभुनाथ मिश्र को मंत्री बनाया। इसी सम्मेलन के निमंत्रण पर राहुलजी दूसरी बार बलिया पधारे। १९४९ में दिनकर जी भी आये। बाद में जब प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन हाईकोर्ट से जीत गया तो बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा पुनरुज्जीवित हो गई और जनपद—सम्मेलन अस्तित्वहीन हो गया। 'दीन' जी तथा सम्मेलन के परीक्षामंत्री श्री गोपालस्वरूप भार्गव का सक्रिय सहयोग हट जाने के कारण यहां विशारद की परीक्षाएं भी बन्द पड़ गईं। पुनरुज्जीवि बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा के स्थाई अध्यक्ष आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, मंत्री श्यामसुन्दर उपाध्याय और साहित्य मंत्री कभी मधुर जी और कभी दूसरे लोग होने लगे।

संभवत: १९३६ का समय था। चलता पुस्तकालय भवन-निर्माण के लिए धन एकत्र किया जा रहा था। प्रवन्ध मंत्री के प्रति कतिपय कारणों से अविश्वास के कारण दुखी होकर मधुर जी ने हिन्दी प्रचारिणी सभा के साहित्य मंत्री पद से हट जाना ही उचित समझा। फिर उन्होंने कोई पद इस संस्था में नहीं स्वीकारा। परन्तु, 'सभा' तथा 'पुस्तकालय' के कार्यों में अद्यावधि उसी निष्ठा और लगन से अपना सहयोग देते रहे हैं। मधुर जी के साहित्यमंत्रित्व काल में बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा एक प्राणवान संस्था रही और प्रदेश में उसका एक गरिमापूर्ण स्थान रहा। लोग उत्साहपूर्वक उनके क्रियाकलापों में भाग लेते रहे तथा निःस्वार्थ भाव से हिन्दी सेवा का कार्य करते रहे। वैसा कार्य अब कहाँ देखा जाता है? चाहे मधुरजी के कार्यकाल में, चाहे उसके बाद, बाहर से जितने भी साहित्यकार यहाँ पधारे, मधुरजी का नाम ही उन्हें यहाँ खींच लाया। वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिये 'दिनकर' जी १९४९ में यहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आये और उसके बाद ददरी मेले के कवि सम्मेलन में भी उन्हीं के आकर्षण से आ सके।

डॉ विवेकी रॉय को लिखे अपने एक पत्र में मधुरजी के प्रति अपने लगाव का दिनकरजी ने उल्लेख किया है। अन्तर्ग्रामीय सुहृद गोष्ठी में 'दिनकर' को बुलाने की बात थी। सन् १९५० में डॉ० विवेकी रायने इसमें सम्मिलित होने के लिये 'दिनकर' से आग्रह किया था। 'दिनकर' ने उत्तर में जो कुछ लिखा, उनका भाव यह था कि उनके आने में भारी खर्च न पड़े अन्यथा गाँवों की यह साहित्यिक संस्था वहन नहीं कर पायेगी। उन्होंने खीझ के साथ यह भी लिखा था, "आप क्या समझते हैं कि कवि सम्मेलनों के द्वारा मैं फीस कमाता हूँ? आप मधुरजी से पूछते, जिनका स्नेह मुझे बलिया खींच ले गया।"

यही बात उन्होंने बलिया नगर पालिका के तत्कालीन अध्यक्ष से दोहराई जो उन्हें लिवाने गये थे। वह बार-बार यह कहते रहे कि आप बलिया से आये हैं तो क्या मधुरजी का पत्र लाये हैं? अफ़सोस! पत्र नहीं था, और वे आये भी नहीं।

मधुरजी का भरा-पूरा परिवार है। चार पुत्र तथा चार पुत्रियाँ—क्रमशः उर्मिला, गिरिधर गोपाल, श्रीधरलाल, निर्मला, कृष्णमोहन, मनोरमा, मंजुला तथा हरिमोहन श्रीवास्तव। गिरिधर गोपाल तथा हरिमोहनजी ऐडवोकेट हैं। कृष्णमोहनजी संप्रति बिहार न्यायिक सेवा में सब-जनपद न्यायाधीश के पद पर कार्यरत हैं। पुत्रियाँ प्रायः इंजीनियर या डाक्टर से ब्याही हैं—सभी संतुष्ट और प्रसन्न। मधुरजीका साहित्यिक और आर्थिक-दोनों ही पक्ष अभावग्रस्त साहित्यकारों की वेदना और उलझनों से मुक्त रहा है।

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' आज भी हिन्दी-सेवा तथा साहित्य-सृजन से सीधे जुड़े हुए हैं। अपने बालोपयोगी खण्डकाव्य 'सुबाहु वध' के अनुक्रम में लंका-विजय के पश्चात् भगवान श्रीरामचन्द्र की अयोध्या-वापसी पर एक प्रबन्ध काव्य 'श्रीराम की पुष्पक यात्रा' की रचना करने में लगे हैं। हाल के वर्षों में 'गरल-सुधा' के बाद यह इनकी दूसरी प्रौढ़ कृति होगी। उनकी साहित्यिक गतिविधियाँ ८२ वर्ष की आयु में भी रंच कम नहीं हुई हैं—गोष्ठी, कविसम्मेलन या जिज्ञासु साहित्य-सेवियों का मार्ग-दर्शन ही क्यों न हो! उनकी प्रेरणा से अनेक लेखकों, कवियों की रचनाएँ प्रकाश पा सकीं। इस अवसर पर उनके स्वस्थ दीर्घायुष्य की अनेक मंगलकामनाएँ!

—डॉ० शोभनाथ 'लाल'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मधुर' जी की लोकप्रिय कविताएँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मधुर' जी की कविताएँ :—

कुरुक्षेत्र

देखा है कौरव सेना को पथ पर बढ़ते देखा।
देखा है अर्जुन को तूने रथ पर चढ़ते देखा॥
देखा उस रथ का इठलाना अश्वों की बरजोरी।
देखा कैसे थे माधव जब खींची पहली डोरी॥

तेरे ही घर खेल रहा था मेरा सत्यानाश।
साक्षी है नीचे की यमुना ऊपर का आकाश॥

कण - कण में सैनिक सोता है कैसे छेड़ जगाऊँ।
द्वापर के गीतों को अब मैं किसके स्वर में गाऊँ॥
कह दे उन्हें जगाकर कब से उनका रथ खाली है।
बालू की कणिका में किस गौरव की रखवाली है॥

नहीं - नहीं बालू की कणिका नहीं - नहीं यह धूल।
रहने दे सैनिक का पहरा उनके हैं ये फूल॥

—मधुर लहरी, पृष्ठ—४।

डोमिन

रवि किरणें तेरे आंगन में वैसे ही आती हैं।
स्वर्ग सदन से सरस बदलियां शीतलता लाती हैं।
मलय पवन की मृदुल उमंगें प्रति-दिन सांझ सबेरे—
आती हैं, सौरभ पहुँचाने, सुन्दरि ! घर में तेरे॥ १॥

वैसे ही सजधज तेरे घर ऋतुएँ सब आती हैं।
तेरे पावस के नभ में भी चपला लहराती है॥
वही शिशिर में शीतलता है वही ग्रीष्म में लू है।
उसी विधाता की रचना है, वही सृष्टि में तू है॥२॥

आग लगाती हो दीपक में दीपक बल जाता है।
शलभ सनेही उसी प्रेम से आकर जल जाता है॥
तेरी चमकीली चूड़ी में वैसी ही लाली है।
तेरी चूनरि में वैसी ही सुन्दरि ! हरियाली है॥ ३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यौवन के बसन्त में जब तुम होती मदमाती हो।
उस मस्ती में पग-पग पर जब चलती बलखाती हो॥
अलसाई आँखों में जब सौंदर्य्य झिलमिलाता है।
कैसी सुन्दर लगती हो, कुछ कहा नहीं जाता है॥४॥
क्यों भावों से भर जाता हूँ, पता नहीं पाया है।
तेरी सुन्दरता में उस प्रभु की कुछ माया है॥
क्यों तुझको कहते 'अछूत' यह सहा नहीं जाता है।
इस अँधेर नगरी में मुझसे रहा नहीं जाता है॥ ५॥

—मधुर लहरी, पृष्ठ १६।

डोम

तू राजा है, डोमिन तेरी झोपड़ियों की रानी।
तेरे आश्रय में पलते थे हरिश्चन्द्र से दानी।
मुकुटों में मणियाँ रोई हैं. रनिवासों में रनियाँ।
किन्तु एकरस रहीं सदा से धन्य - धन्य डोमिनियाँ॥
मरघट तेरा अचल राज है, पर्णकुटी रजधानी।
कौन नहीं करने आता है तेरे घर मेहमानी?
तेरा निन्दक भी आवेगा, मुँह पर ओढ़ कफनियाँ।
उस दिन मौन रहेंगी उसकी पोथी, माला, मनियाँ॥
हरि बोलो, माँगेगा—दे-दे अन्तिम आगी - पानी।
हरिजन को कहता अछूत, तब जानेगा अभिमानी।
तेरे अपमानित गौरव पर मेरी श्रद्धाञ्जलियाँ।
बापू दर - दर घूम रहा है व्यथित देश की गलियाँ॥
ले लेंगे वे प्राण, हाय वह देने पर राजी है।
बक्सर से पत्थर - प्रहार, पूने से बमबाजी है॥
डोमराज, भयभीत न होना, निष्ठुरता हारेगी।
प्रभु की करुणा, हृदय चीरकर यह बाजी मारेगी॥
अन्तर माँग रहा है कैसे दीपक राग जगाऊँ।
बापू अपनी चिनगारी दे, मैं भी आग लगाऊँ॥
जल उठ, जल उठ, अरी धधक उठ, तीस कोटि में ज्वाला।
छुआछूत पर धुआँधार, हो उसका देश निकाला॥

—मधुबिन्दु, पृ० ७३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हलवाहा

हँसने लगीं सुनहली किरणें, दसों दिशाएं लाल हुईं।
चलने लगा तुम्हारा हल, फिर धरती आज निहाल हुई।।
तुम दुनियाँ के भाग्य-विधाता, विधना को किसने देखा ?
हल के फल से खींच रहे हो, कैसी किस्मत की रेखा।।

बैलों की घंटी रुनझुन, क्या मन ही मन में गाते हो ?
'आव' 'आव' कहकर तुम कब से सुख-सौभाग्य बुलाते हो।।
बोते हो जो बीज, उसी से राजा के घर मोती है।
इन खेतों की हरियाली में राजलक्ष्मी सोती है।।

हे राजाओं के राजा, तकदीर तुम्हारी क्यों छोटी ?
जीवन में भरपेट अभी तक कभी न पाई जो रोटी।।
दोपहरी में घरवाली वह लाती है रूखी-सूखी।
तुम मर - भूखे देख रहे हो, क्या लाती है मर - भूखी।।

इन खेतों में हल चलता है, घर में चक्की चलती है।
हलवाहिन अरमान पीसती और कलेजा मलती है।।
गाती है जँतसार, पीठपर व्याकुल बच्चे रोते हैं।
पता नहीं करुणा-निधान भगवान कहाँ पर सोते हैं।।

हलचल, हलचल, हलचल, हलचल, प्रतिपल उथल-पुथल हा-हा।
एक बार हल की नोकों से धरा उलट ये हलवाहा।।
फिर दुनियाँ देखे, हलवाहिन घर में मालामाल हुई।
हँसने लगीं सुनहली किरणें दसों दिशाएँ लाल हुईं।।

—मधुबिन्दु, पृ० ५९।

राजाओं से

ऊपर अम्बर रोता है, नीचे धरती अकुलानी।
यह मुकुट बेंच दो राजा, यह महल बेंच दो रानी!
विस्तृत साम्राज्य तुम्हारा, मर-भूखों की बस्ती है।
परवानों की हस्ती क्या, मर मिटने की मस्ती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन कोटि-कोटि प्राणोंमें, है एक आग तूफानी।
यह आग बुझाओ राजा, यह आग बुझाओ रानी!
इन बेकलियों के रथ पर, चढ़कर आई है आँधी।
दरबार बीरबाला में, रो पड़ा हमारा गांधी।

वह राम-राज्य तुम भूले, सो गये डाल गलबहियां।
नाहक यौवन बीता है, झुलनी की छहियां-छहियाँ।
जब लाखों की आँखों से, वह उमड़ पड़ेगा पानी;
मछली बन कर तैरेगी, यह सेजरिया सैलानी।

जो श्रमकण से सिंचित है, उन मैदानों में आओ।
जो दानों से खाली हैं, उन खलिहानों में आओ।
स्वागत है आज तुम्हारा, आओ इन झोपड़ियों में।
कल क्या करने आओगे, इन विप्लव की घड़ियों में।

यह धरती धँस जायेगी, है दो दिन की मेहमानी।
इतिहासों के पन्नों पर, उड़ते हैं राजा-रानी।

—मधुविन्दु, पृ० ४५।

दिल्ली कितनी दूर ?

गोली गरज उठी-तेरे चालीस कोटि की क्या हस्ती है !
बोलो परवानों की टोली, मर मिटने में भी मस्ती है !

वह अन्तिम बलिदान हमारा, इम्फल का मैदान हिला था।
उत्तर का हिमवान हिला था, सारा हिन्दुस्तान हिला था।
रजकण में सोये हैं कितने सैनिक चकनाचूर।
सपने में सिसकी लेते हैं—दिल्ली कितनी दूर?

सूम सनन चल री पुरवाई, सेनापति का नाम न पूछो।
कोहनूर की क्या कीमत है, 'आजादी का दाम न पूछो';

आज कण्ठ से कण्ठ मिलाओ, अमर शहीदों की जय बोलो।
लाट - किला - मीनारोंवाली दिल्ली का दरवाजा खोलो।
भीम मांगता गदा, द्रौपदी मांग रही है चीर।
बापू आज लुटा दो झोली, दो अर्जुन को तीर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदियों से हम उजड़ गये हैं, फिर से देश बसाना होगा।
घर-घर राजा, घर-घर रानी, ऐसा राज चलाना होगा।
नील गगन कितना ऊँचा है, पुष्पक से फिर हम साधेंगे।
सागर में जलयान हमारे सप्त सिंधु को फिर बांधेंगे।
आज देश स्वाधीन हो गया, हम किसान मजदूर—
दिल्ली में ही पूछ रहे हैं, दिल्ली कितनी दूर ?

—मधुबिन्दु, पृ० ५१।

विद्रोही

दास-देश में देशभक्ति अपराध कठिन है।
बेसमझे क्यों निकल पड़े घर से विद्रोही !
अपनी अलबेली को घर में छोड़ अकेली—
किसके पीछे प्राण गवाँते हो निर्मोही।
किसको छवि पर छलक पड़ा था प्रेम तुम्हारा ?
किसके ऊपर हुआ तुम्हारा आत्म प्रलय है ?
यह ललाट, यह लाली, यह रस भरी जवानी !
प्राण-दण्ड से दण्डित होने का निश्चय है।
नहीं रहेंगी बन्दीगृह की ये दीवारें।
नहीं रहेंगे सदा अस्त्र वाले अभिमानी।
हे माता के लाल ! विश्वपति के हे सैनिक !!
केवल रह जायेगी तेरी कीर्त्ति - कहानी।

—मधुर लहरी, पृ० २७।

मधुबिन्दु

सुन्दर है, व्याकुल मेघों का आज गरजते आना,
सुन्दर है, यौवन-विलास में चपला का लहराना।
किन्तु हाय, कितना सुन्दर है घिरना धीरे-धीरे,
और तड़प कर प्रलय बिन्दु पर अपना प्राण गँवाना !
सुन्दर है कलियों का खिलना, मधुकर का मँडराना.
सुन्दर है उस रस-लोभी का हिलना और हिलाना।
किन्तु हाय, कितना सुन्दर है, हाँ रे निष्ठुर माली।
हँसते फूलों का, छाती में सुख से छेव कराना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कीमत में मत कोहनूर दिखलाना रे अभिमानी।
किस कीमत पर बेचूं अपनी चढ़ती हुई जवानी।
सुन्दर अति सुन्दर है हंसना, फंसना, रोना-गाना,
यही साध बाकी है बढ़कर सूली पर चढ़ जाना।

—मधुविन्दु, पृ० ३।

शृंगार

ऊपर से छप्पर टूटा है, नीचे घर का कोना।
और माँगती हो तुम मुझसे लाओ चांदी-सोना !
पराधीन है देश प्रिये. मैं कैसे क्या समझाऊँ ?
कहो, गोलकुण्डेमें जाकर किसके मोल बिकाऊँ ?
हाय, मैं कैसे लाऊँ हार।
करो वनफूलों का शृंगार।

—मधुविन्दु, पृ० १७।

झण्डा !

—पताके ! क्यों इतने चंचल हो ?
क्या स्वराज्य की दीप - शिखा पर माता के अंचल हो ?
मौन दिशाएं, नीरव नभ, उफ ! कैसी आई आंधी।
भटक गये सब इधर - उधर, पड़ गया अकेला गांधी ।। १ ।।

—तिरंगे फिर ऊपर जाओगे।
विश्व - विजय के समय अहो रवि - रथ पर लहराओगे ।।
उसी रात तुझमें तारों की झालर झमक उठेंगी।
तेरे स्वागत में मुकुटों की मणियाँ चमक उठेंगी ।। २ ।।

—ध्वजे क्यों लड़ते भाई - भाई ?
इस मन्दिर में क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, ईसाई ?
तेरे रंगों में तीनों को प्रभु की किरणें दीखें।
भारत के हे त्राता ! तुझपर सब मिल मरना सीखें ।। ३ ।।

—मधुर लहरी, पृ० ६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अम्मा, अब मैं बड़ा हो गया

१

अम्मा अब मैं बड़ा हो गया, सब अक्षर पढ़ लेता हूँ।
चाचा के कन्धे पर अब मैं, अपने बल से चढ़ लेता हूँ।
मुझे मँगा दो नीलम घोड़ा, सन् सन् सन् दिल्ली पहुँचूँगा।
बापू का ललाट छू लूंगा, वहाँ जवाहर लाल बनूंगा।

२

माखन - मिसरी दूध-मलाई, रबड़ी भी सरकारी होगी।
सोने चांदी की पूरी पर, हीरे की तरकारी होगी।
कह दो दाता हलवाई से, उसको खोल खजाना दूँगा।
घर-घर रोज जलेबी देगा, मैं ऐसा परवाना दूँगा।

३

दिन भर राज करूँगा कसकर, सन्ध्या होते घर आऊँगा।
फिर गोदी में कथा सुनाना, तुम गाना मैं भी गाऊँगा।
कैसे हंस ले उड़ा अम्मा, रानी दमयंती की सारी ?
कल ही उसे पकड़ लाने को. फर्मान करूँगा जारी।

—बच्चों के मधुर गीत. पृ० ५।

बलिहारी-बलिहारी

हीरा चमके, मोती चमके, चमके चाँदी-सोना।
सबसे चम-चम, सबसे सुन्दर, मेरा श्याम सलोना।
सूरज चमके, चंदा चमके, बलिहारी बलिहारी !
काजल के टीके से चमके, घर का कोना - कोना
चम्पा और चमेली चमके, सोन जुही सैलानी।
सबसे चम चम, सबसे सुन्दर मेरी बिटिया रानी !
इन्द्र लोक इन्द्रानी चमके, बलिहारी बलिहारी।
बिटिया की गुड़िया से चमके, कुटिया में रजधानी।

—बच्चों के मधुर गीत, पृ० १३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुन्दर पाप

किसने कहा धर्म की जय है, यहाँ लूट है जारी।
कबसे मानवता रोती है, हँसती है ठगहारी।
तज दूँगी वह धर्म आज इस भेद भरी शंका पर।
मेरी पर्णकुटी लज्जित है सोने की लंका पर।
अरे, हृदय की पुण्यराशि में मेरे सुन्दर पाप !
क्या कहते हो, इस काया को गलने दूँ चुप-चाप ?

—मधुबिन्द, पृ० १५।

जलियाँवाला बाग

अभी तक है गोली का दाग,
यही है जलियाँवाला बाग।
देश को बापू उठे पुकार,
उठी आजादी की ललकार।
अजब थी सत्याग्रह की शान,
देश पर आओ हो बलिदान।
सभा में जनता जुटी अपार,
हुमकते बालक कई हजार।
उधर से चढ़ आये अंग्रेज,
कई तैमूर, कई चंगेज।
अरे ये तिरछे-तिरछे टोप,
संग में गन, मशीनगन, तोप।
उधर जनरल डायर विकराल,
इधर भारत के बाल-गोपाल।
हो गये दोनों दल मुहँ मेल,
देश पर मर मिटने का खेल।
उधर से गोली की बौछार,
इधर से सीने थे तैयार।
गजब अपने बापू की टेक,
चढ़े बलिदान एक पर एक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हार थी जीत, जीत थी हार,
खुल गया आजादी का द्वार।
अभी तक है सीने पर दाग,
यही है जलियाँवाला बाग।

बच्चों के मधुर गीत, पृष्ठ २३।

खेलो भारत के नौनिहाल

गालों पर मुट्ठी भर गुलाल,
मुखड़ा सँभाल, चेहरा सँभाल;
ले लाल लाल दे लाल लाल,
टोपी सँभाल, सेहरा सँभाल।

हो हो होली है मची धूम,
यह नाच कूद यह छनन छूम।
है आज हवा में सनन् सूम,
सब खेल रहे हैं झूम-झूम।

करताल, झाल बज रहे चंग,
बज रहे अजब घुँघरू तरंग।
तक् धीन-धीन ढोलक-मृदंग,
मेरी होली में गजब रंग।

उड़ता अबीर, उड़ता गुलाल,
हैं दसों दिशाएं लाल-लाल।
संसार हथेली पर उछाल,
खेलो भारत के नौनिहाल।

बच्चों के मधुर गीत, पृ २०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजपाट का खेल

धूल सजाओ, फूल उगाओ, बड़ा मजा है आज,
—ढुनमुन आओ जी।
कंकड़ चुन-चुन किला बनाओ, तख्त बनाओ ताज,
—चुनमुन आओ जी।
तुम बन जाओ वीर जवाहर, मैं राजेन्द्र महान्,
—सोहन आओ जी।
कौन बने जनरल करियप्पा, लेकर तीर-कमान,
—सोहन आओ जी।
एक बात की कमी रह गई, इसका आदि न अंत,
दाढ़ी लाओ तुम बन जाओ, टण्डन-जी-सा संत,
सूरत आओ जी।
बापू कौन बनेगा, बापू सदा रहे जो मौन,
अब बापू का भार उठाये, होगा बापू मौन ?
—मूरत लाओ जी।
राज-पाट सज गया सजीला, रामराज्य है नाम।
अब अमरीका हाथ बढ़ाता, लन्दन करे सलाम।
—मुनरो आओ जी।
रामचन्द्र के धनुष उठाओ, लो लक्ष्मण के तीर।
किसने माँ का दूध पिया है, कौन चले कश्मीर।
—कदम मिलाओ जी।
बच्चों के मधुर गीत, पृष्ठ २४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मधुर' जी : साहित्यकारों की लेखनी से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विलक्षण प्रतिभा के धनी कविवर 'मधुर'

—स्व० रामधारी सिंह 'दिनकर'

बलिया के श्रीरामसिंहासन सहाय 'मधुर' हिन्दी के एकमात्र कवि हैं जिन्होंने भारतीय आत्मा (पं० माखनलाल चतुर्वेदी) की सरणि पर चलकर अपना विकास किया है। वे, प्रायः १६२० से लिखते आ रहे हैं किन्तु अबतक भी उनकी रचनाओं की संख्या, शायद, दो सौ से अधिक नहीं है। उन्होंने बहुत ही कम लिखा है, किन्तु जो कुछ भी लिखा है, प्रेरणा की मुद्रा और अनुभूति की बेचैनी में लिखा है। इतना कम लिखने का एक कारण यह भी है कि जिस शैली में वे लिखते हैं, वह शैली विचारों से अधिक अनुभूति की तीव्रता और उक्ति की विचित्र वक्रता लिये रहती है और जिसमें जितना चाहें उतना लिख डालना सम्भव नहीं हो सकता। विचारों को छन्दों में उँडेल देना अपेक्षाकृत कुछ सुगम कार्य है, किन्तु अनुभूतियों को विलक्षण शैली में लिखना, स्वभावतः ही, कुछ कठिन हुआ करता है। यह भी ध्यान देने की बात है कि स्वयं माखनलाल जी की रचनाओं की संख्या भी कुछ बहुत अधिक नहीं है। उनकी कविताएँ भी हम शब्दों की सजावट और भाषा तथा विचारों के चमत्कार के लिए नहीं, बल्कि अनुभूति की बेधने वाली सचाई एवं उक्ति की विचित्रता के लिए ही पढ़ते हैं, यद्यपि, मधुर जी के प्रयास कहीं-कहीं ढीले मालूम होते हैं, मानों, लिखनेवाला कुछ जल्दी में रहा हो, मानों, जो शैली उसका लक्ष्य है, उसकी बारीकियों और पूरी कसावट तक पहुँचने की धीरता का उसमें अभाव हो।

याद आता है कि १६२८ ई० (वस्तुतः १६२६) में मैंने 'मधुर लहरी' नामक उनकी एक छोटी-सी पुस्तक देखी थी जिसमें छोटी-छोटी कोई पन्द्रह-बीस कविताएँ संगृहीत थीं और जिसकी भूमिका स्वयं पण्डित माखनलालजी चतुर्वेदी ने लिखी थी। उन दिनों मैं अपने लिए अभिव्यक्ति का कोई नया मार्ग ढूंढ़ रहा था (जिसकी तलाश, शायद, अभी भी खत्म नहीं हुई है) और मुझे जो भी चीज कुछ नयापन लिए मिलती थी उसे मैं बड़े ही चाव से पढ़ा करता था। इस छोटी-सी विचित्र पुस्तक ने मेरी मनःदशा के निर्माण में बड़ा ही प्रभाव डाला और जिसे मैं नई राह कहता था उसका पता लगाने या रचना करने में उससे मुझे अच्छी प्रेरणा मिली। 'मधुर लहरी' की वह प्रति मैंने एक मित्र से लेकर देखी थी, अतएव १६२८ के बाद उसके फिर कभी दर्शन नहीं हुए,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किन्तु दो-तीन दिनों के संसर्ग में ही उस पुस्तक ने मेरे हृदय में जो आर्द्रता उत्पन्न कर दी थी, वह कभी सूखी नहीं और उसकी गीली तस्वीर मेरे मनोदेश में कहीं बराबर तैरती रही। 'मधुर लहरी' मुझे एक नवीन क्षितिज से उतरती-सी दिखाई पड़ी अत: मैं उस दिशा की ओर गहरे मोह से देखने लगा जिसका इंगित उसकी कविताओं ने किया था। उसकी कुछ पंक्तियाँ थीं जिन्हें कभी तो शुद्ध रूप में और कभी स्मृति की लुप्त रेखाओं को जैसे-तैसे जोड़कर मैं जब-तब गुनगुनाता रहा। कई पंक्तियां थीं जिसके साथ मादकता की अनिर्वचनीय घटाएं स्मृति के कूल से उठकर मनके आकाश पर छा जाती थीं और मैं भीतर ही भीतर किसी अलभ्य लोक की समीपता का बोध करने लगता था।

यौवन की दुर्गम घाटी में टीलों से गीत सुनाती हूँ,
उस पार भटकता है भविष्य मैं कब से उसे बुलाती हूँ।
अन्तस में दीप जलाती थी, वह आग लगी अभिलाषा में,
मैं हाय जलन में जीती हूँ हरियाले, दिन की आशा में।
मैं जाती हूँ उन खेतों में, तुम मेघ घेर लाना प्यारे,
मेरी प्यासी हरियाली में रसबूंदें बरसाना प्यारे।

अथवा

मैं किस राजमहल की थी अलबेली रे छलिया।
तजकर परिजन, पुरजन और सहेली रे छलिया।
तेरे पीछे-पीछे चली अकेली रे छलिया।
पहनी तुझपर आकर कफनी-सेली रे छलिया।

या

कब से ढरकाते जाते हो माया की यह प्याली,
भर न सके तुम, जन्म-जन्म से यह अंजलि है खाली।
देख चुकी मैं विश्व तुम्हारा, रे निर्धन यदुवंशी,
बेचो अपना मोर मुकुट अब, बेचो अपनी बंशी।

मधुरजी की ये पंक्तियां मेरे भीतर एक अपरिचित प्रकाश की सनसनाहट सी पैदा कर देती थी और जब-जब मैं गुनगुनाता कि "मैं जाती हूँ उन खेतों में तुम मेघ घेर लाना प्यारे!" अथवा "पहनी तुझपर आकर कफनी-सेली से छलिया!" या "बेचो अपना मोर मुकुट अब बेचो अपनी बंशी!" तब-तब मैं एक अनिर्वचनीय आनन्द से भर जाता था। पन्तजी का "लाई हूँ फूलों का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हास, लोगी मोल; लोगी मोल" पढ़कर भी उन दिनों मेरे मन की ऐसी ही दशा हो जाती थी।

मगर, आज वह बात नहीं है। कोई जादू था जो मन से निकल चुका है, कोई आर्द्रता थी जो, शायद सूख चली है। 'छलिया' के लिए 'कफनी और सेली' पहनने की कल्पना में अब वह उन्माद नहीं रहा जो पहले था और खेतों में खड़ा होकर भींगने के लिए मेघों को निमंत्रण देने की अब जैसे फुरसत ही नहीं रही हो। और 'फूलों की हंसी' बेचने के लिए भी घर से बाहर जाने की हिम्मत नहीं रही क्योंकि मेरा पड़ोसी सौदागर और एकाउण्टैन्ट, दोनों है। इसके सिवा वह चुन-चुनकर उन्हीं मालों की तिजारत करता है जिनमें ज्यादा से ज्यादा मुनाफाखोरी और चोरी की गुंजाइश हो। सारी चीजें पीछे छूट गई हैं। वे जब याद आती हैं तब ऐसा मालूम होता है, मानों, दूर पर कहीं कोई वंशी बजा रहा हो।

मगर, परिवर्तन कहाँ है? मन के भीतर या मन से बाहर? वर्ड्सवर्थ ने कहा था कि फूलों के बीच आखें बन्द करके चलने में जो सुख है वह आँखें खोलकर चलने में नहीं। शायद, उसी ने कहा था कि मन जब झँपकी लेने लगे तब फूलों के खिलने या नहीं खिलने से क्या? इकबाल की भी इसी से मिलती-जुलती एक पंक्ति है—"क्या लुत्फ अंजुमन में जब दिल ही बुझ गया हो?"

कल्पना के भीतर विचारों की रीढ़ पैदा हो जाने से मनुष्य फिर इस अवस्था में नहीं रहता कि सौन्दर्य की उन रंगीन लहरियों से बेसुध होकर खेल सके जो सिर्फ दीखती ही हैं, छूने से पकड़ में नहीं आतीं, बल्कि, स्पर्श के लगते ही बिला जाती हैं। विचारों के ढाँचे में कहीं कोई तत्व है जो फेन और बुदबुद का विरोधी है, जो इन्द्र धनुष को "धरती की वेणी", पर बांधना चाहता है, जो चाँदनी को समेट कर एक छोटी-सी शीशी में बन्द कर देना चाहता है और जिसे यह चिन्ता सताती है कि अंधकार और प्रकाश इस प्रकार निरवयव होकर क्यों फैले? वे श्वेत और श्याम, दो पर्वतों के समान, पुंजीभूत होकर क्यों नहीं खड़े हो गये? अस्तु।

ऐसा याद आता है कि, सन् २८ के बाद मधुरजी की कविताएँ मुझे फिर कहीं भी देखने को नहीं मिलीं। मैंने समझा, शायद, उन्होंने लिखना छोड़ दिया। और तब त्रिपुरी-कांग्रेस के समय गांधीजी ने राजकोट जाकर अनशन शुरु किया और मधुरजी की 'राजाओं से' नामक एक छोटी-सी कविता 'कर्मवीर' में छपी, जो इस प्रकार थी;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ऊपर अम्बर रोता है, नीचे धरती अकुलानी,
यह मुकुट बेंच दो राजा ! यह महल बेंच दो रानी।
विस्तृत साम्राज्य तुम्हारा, मरभूखों की बस्ती है,
परवानों की हस्ती क्या, मर-मिटने की मस्ती है।
इन कोटि-कोटि प्राणों में, है एक आग तूफानी।
यह आग बुझाओ राजा ! यह आग बुझाओ रानी।
इस बेकलियों के रथ पर, चढ़कर आई है आँधी,
दरबार वीरबाला में, रो पड़ा हमारा गाँधी।
वह रामराज्य तुम भूले, सो गले डाल गलबहियां,
नाहक यौवन बीता है, झलनी की छहियाँ-छहियाँ।
इन कोटि-कोटि आँखों से जब उमड़ पड़ेगा पानी,
मछरी बनकर तैरेगी, यह सेजरिया सैलानी।
जो श्रमकण से सिंचित है, उन मैदानों में आवो,
जो खिरमन से खाली हैं, उन खलिहानों में आओ।
स्वागत है आज तुम्हारा, उजड़ी इन झोपड़ियों में,
कल क्या करने आओगे, इन विप्लव की घड़ियों में,
यह धरती धँस जाएगी, है दो दिन की मेहमानी,
इतिहासों के पन्नों पर, उड़ते हैं राजा-रानी।"

बाज पंक्तियों का लंगड़ाना और बाज-बाज का राह में ही बैठ जाना, मेरे मन को भी खटका, किन्तु कविता की अंतिम पंक्ति से मैं एक बार ही चौंक पड़ा, मानों, मेरी कल्पना को किसी ने चिराग दिखा दिया हो, मानों, मेरी अपनी प्राणमणि किसी दूसरे की जिह्वा पर चमक उठी हो। 'मधुर लहरी' की स्मृति एक बार फिर सजल होकर मेरे मनोव्योम पर छा गई और मैं फिर अचरज करने लगा कि यह कौन है जो इतनी लापरवाही से और इतनी अच्छी चीज लिखता है।

तब से लेकर आजतक मैं बराबर इस कोशिश में रहा कि मधुर जी से किसी भी प्रकार मेरा सम्पर्क स्थापित हो जाय, किन्तु, कई कारणों से (जिनमें एक यह भी है कि मधुरजी चिट्ठियों का जवाब कम देते हैं।) अभी हाल तक मैं असफल रहा। हाँ, अब उनकी कविताओं का एक संग्रह (हस्तलिखित रूप में ही) मेरे कब्जे में आ गया है और उन्हें पढ़ लेने के बाद मेरी बीस वर्षों की तृषा कुछ शांत हो चली है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊपर जो मैंने 'लापरवाह' विशेषण का प्रयोग किया है वह लापरवाही से नहीं। पूरा संग्रह देख लेने के बाद मैं और भी मानने लगा हूँ कि मधुर जी काव्य-रचना के विषय में कुछ लापरवाह–से हैं। स्पष्ट ही, वे रचनाओं को उतना समय नहीं देते जिसकी वे अधिकारिणी हैं। अथवा, यह भी संभव है कि जिस शैली में वे लिखते हैं, यह लापरवाही उसकी विवशता का ही एक रूप हो। मेरे ऐसा लिखने का एक कारण यह भी है कि माखनलालजी के अनुकरणकर्ताओं में से मधुरजी के अतिरिक्त कोई भी कवि विशिष्टता प्राप्त नहीं कर सका। जिससे यह व्यंजना आसानी से ली जा सकती है कि उनकी शैली का अनुकरण कोई सुगम कार्य नहीं है।

कभी-कभी मैं यह भी सोचता हूँ कि यह असावधानता भी मधुरजी की कविताओं का एक भूषण है, क्योंकि इसकी पृष्ठभूमि पर उनकी विंशिष्ट पंक्तियां इतनी तेजी से चमकती हैं जितनी तेजी से वे पूर्ण कौशल की पृष्ठभूमि पर नहीं चमक सकती थीं। जिसे साहित्य में 'क्लाइमैक्स' कहते हैं, वह कला का एक ऐसा शिखर है जिसके प्रदर्शन और चमत्कार के लिए उसके आस-पास के कँगूरों को अपेक्षाकृत कुछ छोटा होना चाहिए। इस दृष्टि से मधुरजी पंक्तियों के कवि हैं। उनकी वाटिकामें जो फूल खिलते हैं, उन फूलों के नीचे वृन्तों और पत्रों का आकलन बहुत आकर्षक नहीं होता है। धूलों में हरे रंग की धार, कुहासे में भटकती हुई अद्भुत किरणों और मंद तारिकाओं के कुंज में जहां-तहां जगमगाते हुए अनेक शुक्र इन दृष्टान्तों से हम उनके संग्रह का प्रायः सही मूल्यांकन कर सकते हैं। मगर, क्या मजाल कि आपकी आँखें धारा को छोड़कर धूल पर या शुक्र को छोड़कर अन्य तारिकाओं पर भी अटक सकें! आलोचना-संम्बन्धी आपके गुर जब तक सँभले-सँभलें, तब तक आपका हृदय ही आपके हाथ से निकल भागता है, फिर दोषों का विचार कौन करे? और दोषों के विवेचन से आप किसे सन्तुष्ट करेंगे? हृदय को ही तो? लेकिन, वह तो पहले ही आपके हाथ से निकल जाता है।

मधुर जी के काव्य द्रव्य जीवन के अत्यन्त साधारण स्तर से आते हैं जो आज कई वर्षों से संसार भर के अप्रतिम प्रमुखता प्राप्त कर रहे हैं। किन्तु, उनका वर्णन अन्य बहुत लोगों के वर्णनों से भिन्न एवं नवीन होता है तथा उससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मधुर जी का प्रयास बौद्धिक, नहीं वरन् हार्दिक है।

'डोम' पर उनकी एक कविता है :—

मुकुटों में मणियाँ रोई हैं रनिवासों में रनियाँ।
किन्तु एक रस रही सदा से धन्य-धन्य डोमनियाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेरा निन्दक भी आवेगा मुँह पर ओढ़ कफनियाँ।
उस दिन मौन रहेंगी उसकी पोथी-माला-मनियाँ।

और 'डोमिन' पर उनकी उक्ति है :—

आग लगाती तू दीपक में दीपक बल जाता है,
शलभ सनेही उसी प्रेम से आकर जल जाता है।

मधुर जी की प्रेरणा के अधिक भाग समय के अन्तराल से आते रहे हैं और इसी प्रेरणा को उन्होंने बड़े ही ओज के साथ लिखा है। गांधीजी ने हरिजनोद्धार के लिए जो महान् प्रयास किया उसका प्रतिबिम्ब मधुर जी की कविताओं में बड़ा ही स्पष्टता के साथ पड़ा है।

ले लेंगे वे प्राण, हाय वह देने पर राजी है;
बक्सर से पत्थर-प्रहार, पूने से बमबाजी है।
डोमराज भयभीत न होना, निष्ठुरता हारेगी,
प्रभु की करुणा हृदय चीरकर यह बाजी मारेगी।
अन्तर भींग रहा है, कैसे दीपक राग जगाऊँ ?
बापू ! अपनी चिनगारी दे, मैं भी आग लगाऊँ।

'छुआछूत पर छूमन्तर' नामक अपनी एक छोटी-सी कविता में वे कहते हैं—

हैं तीस कोटि उसके हरिजन,
मत बोलो, कर देगा अनशन,
मच जाएगा घर-घर क्रन्दन,
हम मर जाएँगे हाय-हाय !
वह हो जाएगा अजर-अमर।

लेकिन कौन जानता था कि अन्तिम पंक्ति के भीतर भविष्यत् ही बोल रहा है।

मधुर जी की कविताओं में जो सरलता मिलती है, वह बहुत कुछ वैसी ही है जैसी कि ग्रामगीतों में हुआ करती है। कहीं-कहीं तो वस्तुस्थिति के स्पष्ट वर्णन मात्र से वे चमत्कार उत्पन्न कर देते हैं।

'हलवाहा' कविता की एक कड़ी है,

इन खेतों में हल चलता है, घर में चक्की चलती है,
हलवाहिन अरमान पीसती और कलेजा मलती है।
गाती है जँतसार, पीठ पर व्याकुल बच्चे रोते हैं,
पता नहीं करुणा निधान भगवान कहाँ पर सोते हैं ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'दिल्ली कितनी दूर ?' नाम्नी एक छोटी-सी कविता के तो तीनों ही पद अपनी जगह पर इतिहास की महत्ता लिये खड़े हैं। पहले पद की अन्तिम दो पंक्तियों में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का एक म्रियमाण सिपाही, मानों आज भी अर्ध-चैतन्य अवस्था में पड़ा सिसकियाँ ले रहा है :—

वह अंतिम बलिदान हमारा इम्फल का मैदान हिला था,
उत्तर का हिमवान हिला था, सारा हिन्दुस्तान हिला था।
रजकण में कितने सोये हैं सैनिक चकनाचूर,
सपने में सिसकी लेते हैं दिल्ली कितनी दूर ?

दूसरे पद की महत्ता कुछ और भी विचित्र है। एक महान् जाति के स्वातंत्र्य-संग्राम के सेनापति के रूप में बापू का चित्र अनेकों बार अंकित किया गया, किन्तु कभी भी किसी कवि को यह साहस नहीं हुआ कि वह बापू के हथियारों की माँग करे। अपनी स्थिति तो यह है कि मैंने 'लज्जित मेरे अंगार' कहकर अपनी 'वायलेन्स की वीणा' को बापू की आँखों से छिपाकर अलग ही रख दिया। किन्तु, मधुर जी ने एक ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है जिसमें बापू से शस्त्र माँगना एक स्वाभाविक बात मालूम होती है और उसके लिए क्षमा-याचना की भी आवश्यकता नहीं होती।

सून सनन् चल री पुरवाई, सेनापति का नाम न पूछो,
कोहनूर की क्या कीमत है, आजादी का दाम न पूछो।
आज कण्ठ से कण्ठ मिलाओ, अमर शहीदों की जय बोलो
लाट, किला, मीनारों वाली दिल्ली का दरवाजा खोलो।
भीम माँगता गदा द्रौपदी माँग रही है चीर
बापू ! आज लुटा दो झोली, दो अर्जुन को तीर।

कौन कह सकता है कि जिस झोली में निर्भीकता के स्फुलिंग और बलिदान की लपटें सँजोई हुई थीं, उसमें अर्जुन के लिए तीर ही नहीं मिलते ?

तीसरे पद में जो कुछ विलक्षण है उसकी व्याख्या के सूत्र के लिए किसी हिन्दुस्तानी को अन्यत्र नहीं जाकर अपने हृदय के ही भीतर झांकना चाहिए। अफसोस कि इसकी अंतिम पंक्ति भी सत्य है।

नील गगन कितना ऊँचा है, पुष्पक से फिर हम साधेंगे;
सागर में जलयान हमारे सप्त सिन्धु को फिर बाँधेंगे।
आज देश स्वाधीन हो गया, हम किसान मजदूर,
दिल्ली में ही पूछ रहे हैं, दिल्ली कितनी दूर ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुर जी ने केवल राष्ट्रीय कविताएँ ही नहीं, स्नेह, करुणा, शादी-विवा और वात्सल्य से प्रेरित होकर भी अनेक छोटी-मोटी रचनाएँ की हैं और प्रत्ये रचना में उस विलक्षणता का स्पर्श मिलता है, जिसे उन्होंने अपनी शैली वरदान-स्वरूप बड़ी ही साधना के बाद प्राप्त किया है। उनके क्रान्ति-गीत नहीं, बल्कि लोरी और बारहमासे भी छायावाद-कालीन प्रभावों से मुक्त हैं ये वे प्रयोग हैं जिनसे प्रेरणा लेकर हमारे कितने ही नवोदित कलाकार साहि में नवीन रेखाओं का निर्माण करने में समर्थ हो सकते हैं। किन्तु, अचरज बात है कि आज जब सभी प्रकार के लोगों को आसानी से प्रकाशक मि जाते हैं, तब मधुर जी के समान विलक्षण कवि को ही एक सुयोग्य प्रकाशक प्रतीक्षा है। 'योगी' (पटना) दीपावली अंक, अक्टूबर, १९४८ से साभार।

गरल-सुधा की भूमिका

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' की 'गरल-सुधा' नामक रचना पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। 'मधुर' जी की भाषा सरल किन्तु सशक्त है। वे आधु विचारों को बड़े ही सरस और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करते हैं। मुझे विश्व है कि मर्मज्ञ पाठक इस सरस रचना का स्वागत करते हैं। 'मधुर' जी से सा जगत् को अभी बहुत पाना है। परमात्मा उन्हें स्वस्थ एवं दीर्घायु बनायें, मेरी हार्दिक शुभकामना है।

ए-३३, रवीन्द्रपुरी (स्व०) डॉ० हजारी प्रसाद द्वि

वाराणसी

२६-३-७८

कालजयी कवि 'मधुर' जी

—डॉ० विवेकी राय

श्री राम सिंहासन सहाय 'मधुर' को जो लोग बलिया के एक श्रेष्ठ वकी रूप में जानते हैं वे वास्तव में अधूरा जानते हैं। 'मधुर' जी जन्मजात सिद्ध हैं। कार्यक्षेत्र की दृष्टि से यद्यपि वे बहककर दूसरी ओर चले गये तथापि कवि आज भी सहज उद्बुद्ध है। भारती के मंदिर में वाणी के जो प्रसून

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वारा अर्पित किये गये वे आज भी टटके हैं और उनका लालित्य आज भी अक्षुण्ण है। कम लिखकर भी अधिक यशस्वी होनेवाले सौभाग्यशाली सारस्वत कवियों की कोटि में आपकी गणना इतिहास करेगा।

मैं सन् १९५० से 'मधुर' जी को जानने लगा इस परिचय का एक दिलचस्प इतिहास है। सुहृद-गोष्ठी की स्थापना दो वर्ष पूर्व हो चुकी थी। उसके वार्षिकोत्सव में 'दिनकर' जी को बुलाने की बात थी। साल-भर पूर्व वे बलिया में आ चुके थे। मैंने एक पत्र 'दिनकर' जी को लिखा। उसमें घुमा-फिराकर एक बात यह कही गई थी कि उनके आने में भारी व्यय न पड़े अन्यथा गाँवों की यह साहित्यिक संस्था वहन नहीं कर पायेगी।

'दिनकर' जी ने इस पत्र का उत्तर एक हलकी खीझ के साथ दिया। आपने लिखा, "आप क्या समझते हैं कि कवि-सम्मेलनों के द्वारा मैं फीस कमाता हूँ? आप 'मधुर' जी से पूछते जिनका स्नेह मुझे बलिया खींच ले गया।" इस पत्र के सूत्र से मैंने न केवल 'मधुर' जी को जाना अपितु उनकी अमर काव्य-कृति 'मधु-बिन्दु' से परिचित हुआ जिसकी भूमिका स्वयं श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखी है।

'मधु—बिन्दु' का सिन्धु-हिल्लोल

कुछ वर्ष पूर्व 'दिनकर' जी ने दिल्ली की संसद में स्वातन्त्र्योत्तर भारत की समालोचना करते हुए एक कविता की चार पंक्तियों को उद्धृत किया था। ये पंक्तियाँ देश की वर्तमान शर्मनाक अधोगति का यथार्थ और मर्मस्पर्शी चित्र होने के कारण सम्पूर्ण देश में गूँज उठी थीं—

'आज देश स्वाधीन हो गया
हम किसान मजदूर,
दिल्ली ही में पूछ रहे हैं
दिल्ली कितनी दूर ?'

कुछ समाचार पत्रों ने 'बलिया के एक कवि की कविता' कहकर इस समाचार को प्रकाशित किया था परन्तु इस क्षेत्र में यह जानकर हर्ष और कौतूहल हुआ कि ये पंक्तियाँ कवि श्री 'मधुर' जी के काव्य-संग्रह 'मधु-बिन्दु' से अवतरित हैं।

'दिल्ली कितनी दूर' शीर्षक पूरी कविता बहुत ही ओजस्वी और रोमांचक है। क्रूर दमन के सम्मुख बलिपंथी युवकों के धैर्य और अडिग विश्वास की चोट से मन का तार-तार झंकृत हो उठता है। कवि के एक-एक इंगित हजार-हजार क्षोभ-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्फीत भावों को झटकारते हैं। खरी शब्दावली की बेलाग चोट कानों को छू फिसल नहीं जाती है। वह मन के स्तर-स्तर को खण्डित करती है। दिल्ली मृग-मरीचिका में डहकते आतुर प्राणों की ऐसी संजीदा तसवीरें दुर्लभ हैं।

अपनी धरती की खोज

वास्तव में मधु-बिन्दु में कविता का एक अत्यन्त ताजा राष्ट्रीय स्वर है। दृढ़ और स्पष्ट शब्दों में अपने गौरवमय इतिहास को स्मरण करते हुए आत्म पराभव के सन्दर्भों को आख्यायित करता है। वह जब भी मुँह खोलता है मानव अथवा राष्ट्रीयता के परिप्रक्ष्य में ही कुछ कहता है और अनन्त भाव-छबियों का मधु गुंजलक बुनता चला जाता है। कवि निकट से भारत की आत्मा को पहचानता है। उसकी 'ग्राम-गौरव' शीर्षक कविता देश-भू की परम्परित ग्राम-संस्कृति का दस्तावेज है। नगर-सभ्यता और उसकी वैभवशीलता पर चकित होने वाले के लिए कवि का एक सन्देश है। वह कहता है, 'ताजमहल हमने बनवाया, शाहजहाँ का नाम हुआ।' यह कैसा नियति का खेल है? अन्नदाता गाँव आज भूख मारे बिलबिला रहे हैं। कवि के स्वर में इनके प्रति गहरी वेदना है।

'राजाओं से' शीर्षक कविता में कवि सामाजिक और राजनीतिक जीवन नये आयाम का स्पर्श करता है। उसके मीठे शब्दों में कड़ी चोट भरी मिलती है राजा अपना मुकुट बेच दे और रानी अपना महल! अजीब क्रान्तिकारी परि निर्मित हो सकता है। कल्पनाओं के काफिले नये उत्साह की आहट मिलती है आक्रोश-विक्षोभ राहत और कड़कड़ाहट हीन सरल शब्दावली में कवि ने सामाजिक विषमता की भावना को उभारा है और सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। पंक्ति में जब वह घोषित करता है कि इतिहास के पन्नों पर उड़ते हैं राजा-रानी तो एक रोमांचक मर्मानुभूति से पाठक का मन भर उठता है।

'मधुर' जी की भाषा में एक नया, खरा और मीठा स्वाद है। सरल शब्दों में आग भर-भरकर गाना सरल नहीं है। ज्वलन्त प्रश्नों को संप्रेषित वांछित आग भड़का देना सामान्य कवि के बूते की बात नहीं है। स्वाधीनता की लिखी बात इन कविताओं की अनुभूति में न तो बासीपन आया है और न इसका स्वर मद्धिम हुआ है। आज कविता इस धरा-भूमि को छोड़कर आसमानी हो चुकी है किन्तु हमारी समस्याएँ जहाँ की तहाँ हैं। जब-जब हवा सिसकी भरती है तब-तब मिट्टी की पीड़ा से आहत मन किसी 'मधु-बिन्दु' जैसे काव्य-संग्रह में डूबना चाहता है ताकि कुछ राहत मिले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुटिया में राजधानी

श्री निरंकारदेव सेवक ने एक 'बालगीत साहित्य' ग्रंथ लिखा है, जिसे किताब महल, इलाहाबाद ने प्रकाशित किया है।[1] उक्त इतिहास में विवेचित मध्ययुग जिस 'बलिहारी-बलिहारी' की गूँज से आरंभ हुआ है वह गीत कवि श्री 'मधुर' जी का है। इतिहासकार ने 'मधुर' जी को मध्यकाल के पहले-पहल बालगीत लिखनेवाले कवि के रूप में याद किया है। 'मधुर' जी का बाल-साहित्य से सम्बन्धित पुस्तक 'बच्चों के मधुर गीत' (सर्वोदय प्रकाशन, काशी) जिसका उक्त गीत इतिहास में उद्धृत है, बाल साहित्य का उद्घाटन है। हिन्दी में आज बाल साहित्य की न्यूनता और उसके स्तर के गिरावट की बात की जाती है। कहा जाता है कि क्षेत्र में लेखकों का दृष्टिकोण शुद्ध व्यावसायिक हो गया है।

यह देखकर प्रसन्नता होती है कि 'मधुर गीत' की आत्मा ठीक वैसी ही विशुद्ध जैसी बालकों की आत्मा। व्यावसायिक मनोवृत्ति तो एकदम नहीं। स्वस्थ-प्रेरणाप्रद कविताओं का एक चहकती ताजगियों वाला यह संग्रह अनमोल है। एक कविता 'फूलों का देश' बहुत आकृष्ट करती है। 'फूलों का देश' कवि 'मधुर' जी स्वप्न-कल्पनाओं का वह रमणीय प्रदेश है जहाँ अपने अकूत वैभव को लिए प्रकृति रहती है और उसकी महत्तर अनुकम्पाओं के नीचे हम अपने को सुरक्षित अनुभव करते हैं।

वासन्ती चाँदनियों की गमकती रातों, टेसू और कचनार क्यारी में नहीं मन में खिलते हैं, यह पूरी कविता की जादुई निष्पत्ति है। 'मधुर' जी ने बाल-गीत से सम्बन्धित अभिव्यक्तियों को आकार देने के क्रम में प्रौढ़ और बाल-हृदय के अन्तर ठीक से समझा है। इसीलिए इन रचनाओं की अन्विति में एक ऐसी कोमल ... और भावुक स्पर्शशीलता होती है जो बाल-हृदय को सहज ही आकर्षित एवं ...न्दित करने में समर्थ होती है।

'मधुर' जी के स्वभाव से जो लोग परिचित हैं उन्हें उनकी कविताओं में एक ...राला आनन्द मिलता है। मार्दव, उनके स्वभाव, नाम और व्यक्तित्व का सम्पूर्ण ... में पर्याय है। अपने व्यस्त जीवन में भावुकता की जो निधि अन्तस्तल में ...होंने बचा रखी है वह बहुत है। आज के टूटन और बिखराव के युग में 'मधुर' ... आस्था अडिग है। उनके विश्वासों का हिमालय आज भी प्रभामंडित है।

---

[1] इस ग्रंथ का द्वितीय संस्करण अब उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ से प्रकाशित हुआ है। पृष्ठ ५०८, मूल्य ५६ रु०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज भी हीरे-मोती की चमक के बीच चमकने वाला उनका 'श्याम सलोन' जीवित है। 'बिटिया की गुड़िया से चमके कुटिया में रजधानी' जैसा भावुकता इस यंत्रयुग में भी सुरक्षित है।

अन्तर्ग्रामीय सुहृद-साहित्य-गोष्ठी (गाजीपुर-बलिया) की ओर से १७ फरव सन् १६५८ का मधुर जी का सम्मान किया गया। वह वास्तव में साहित्य लोक संस्कृति का एक विशाल समारोह था। उस समारोह में मधुर जी ने आज साहित्य और आज के आदमी के बीच पड़ी हुई खाइं की चर्चा की और कहा कि दोनों को जोड़ने वाला जो लोक संस्कृति का सूत्र था आज के साहित्य में गया है। ऐसा लगता है कि मधुर जी के जीवन और साहित्य को परखने के लि भी यहाँ लाक सस्कृति का सूक्ष्म सूत्र उपयुक्त आधार है। आधुनिक युग के नागर जीवन को सम्पूण रूप से जाते हुए और कचहरी की संवेदन-शून्य हवा जीवन भर साँस लेते हुए भी मधुर जी के भीतर का संवेदनशील आदमी लोक संस्कृति की अन्तरसत्ता में आपाद मस्तक रमा कवि सम्पूर्ण रूप से जीवि है। ऐसे कालजयी कवियों की कृतियों का मूल्यांकन भविष्य करता है।

ऐसे भाव-शिल्पी का सहज ही शत-शत अभिनन्दन श्लाघनीय है। 'मधुर' मूर्त रूप में साहित्यकारों की एक पीढ़ी हैं। उन्होंने अपने मौन-साधना से स्व साहित्य निर्माण के वातावरण को संचालित किया है। शतायु होकर वे का जगत की मधुरता को आश्रय देते रहें, कामना है।

बड़ी बाग,
गाजीपुर।

मधु रातीति मधुरः

– हीरालाल

संस्कृत में एक धातु है 'रा' जिसके दो अर्थ होते हैं—देना तथा मिल जा 'मधु रातीति मधुरः' अर्थात् जो मधु दे या जो मधु से मिलकर मधुमय हो हो वह है मधुर।

कविवर 'मधुर' से हमारा परिचय लगभग दो दशकों से है और अ मात्र एक परिचय कहना कदाचित ठीक नहीं। वह परिचय अब एक आत्मिक संबंध में परिणत हो चुका है जिसने मुझे बहुत कुछ दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यक्ति के प्रति अतिशय श्रद्धा हो जाती है, उसके विषय में कुछ लिखना बड़ा कठिन कार्य प्रतीत होता है। कहाँ से लिखूँ, क्या लिखूँ ? लगता है, लिखकर उसे छोटा कर रहा होऊँ। शब्द ढीले पड़ते हैं, मनके भावों को तद्रूप अभिव्यक्त करने में असमर्थ। फिर भी, अभिव्यक्ति के बिना, चाहे वह माध्यम शब्द हो, संकेत हो अथवा आचरण, और चाहे ढीला हो या कसा, व्यवहार नहीं चलता। अतः डॉ० शोभनाथ लाल के अपनापन भरे दबाव के कारण कुछ लिखने के लिए विवश होना पड़ा।

इतने दिनों के सम्बन्ध और सत्संगति के अनुभव के आधार पर मैं यही कह सकता हूँ कि कविवर 'मधुर' सच्चे अर्थों में मधुर हैं और उनमें उपर्युक्त 'रा' धातु के दोनों अर्थ समाहित है। 'मधुर' जी ने अब तक जो भी दिया है और दे रहे हैं, वह सब मधुर है क्योंकि मधुरता उनका धर्म, उनकी आत्मा बन चुकी है। कदाचित् इसे वे सब लोग स्वीकार करेंगे जो उनके निकट उठे-बैठे हैं और जो उनकी आत्मीयता की परिधि में प्रविष्ट हुए हैं। वे सभी लोग सहमत होंगे यदि मैं कहूँ, 'मधुर' जी सभी तरफ से मधुर हैं, उनको चाहे जिस दिशा से कोई चखे। मधुरता के सिवा और कोई स्वाद नहीं मिलेगा। यह अतिशयोक्ति नहीं, वास्तविकता है। काव्य का क्षेत्र हो या काव्येतर जीवन का व्यावहारिक ठोस सत्य, 'मधुर' जी कभी कोई बात आक्रामक ढंग से नहीं कहते। उनकी बात सीधे हृदय को छूती है—बेरोक-टोक। कड़वी या लगने वाली बात को भी इस ढंग से, इस सच्चाई से आपके हृदय में उतार देंगे कि आप स्वयं को स्वस्थ ही अनुभव करेंगे। किसी कविता का भाव हो, उसका शीर्षक हो, कोई अभिव्यक्ति-स्थल हो, जहाँ आपकी कमजोरी हो, वहाँ उनकी मधुर अँगुली पड़ जायेगी। कोई शब्द हो, जिसके प्रति आपका मोह हो गया हो, उसके प्राचीन प्रयोग से लेकर अधुनातन प्रयोग तक स्पष्ट कर आपका मोह भंग कर देंगे और आप उनके सुझाव को मानकर ही आश्वस्त होंगे। ऐसा क्यों है ?

'मधुर' जी का काव्य प्रेम उनका स्वभाव है। जब वे कविता सुनते हैं तो इतने एकाग्र हो जाते हैं, जैसे साधक ईश्वर के किसी रूप में एकाग्र हो। यही कारण है कि उस कविता का समग्र रूप वह देख पाते हैं और जहाँ कहीं भी, जिस दिशा में भी कोई कमजोरी होती है, उसे देख पाते हैं। और उसके बाद भी उनकी समीक्षा सुनकर आप आश्चर्य चकित हो उठते हैं। फिर, उनके सुझावों को अपनाने के सिवा आपके सामने कोई रास्ता नहीं होता। यह तथ्य ऐतिहासिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो चुका है। राष्ट्रकवि 'दिनकर' को भी 'उर्वशी' के प्रथम सर्ग के प्रारम्भि अंश को, जो उर्वशी के बचपन से सम्बन्धित था, काट देना पड़ा था।

काव्यक्षेत्र से अलग, जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में भी वे मधुर कोमल हैं, किन्तु उनकी मधुरता और कोमलता ठोस धरातल पर स्थित है किसी निरर्थक सामंजस्य का प्रतिफल नहीं है। शुद्ध सोने की चमक है। 'मधुर' जी आपकी परिस्थितियों को सुनने के बाद आपके हृदय के इतने निकट होते कि जैसे आपके दुःख से, आपसे अधिक दुखी हैं, द्रवित हैं, विह्वल हैं। यही कारण है कि उनकी कविताओं में करुणा तथा वेदना के स्वर अधिक मुखरित हुए हैं सत्य ही है, जिसके हृदय का धर्म करुणा नहीं है, संवेदनशीलता नहीं है, उसकी रचनाएं किसी के हृदय को क्यों छू पायेगी। 'मधुर' जी का कहना है, "आंख का जो सम्बन्ध आंसू से है, हृदय का वही सम्बन्ध करुण गीतों से है। करुण गीतों में विश्व को हिला देने की शक्ति होती है।"

'मधुर' जी की इस मधुरता का परिचय सबसे पहले किसको हुआ और किसने उन्हें 'मधुर' नाम दे डाला? शायद इसे आप भी जानना चाहें। बात बहुत पीछे जाती है। उनकी रचनाओं को पढ़ने के बाद उनकी आत्मा के सहज गुण को परखने वाले थे –'भारतीय आत्मा' पं० माखनलाल चतुर्वेदी। उस साहित्य-ऋषि ने मुंशी रामसिंहासन लाल श्रीवास्तव में 'रामसिंहासन' की 'मधुरता' देखी और सारे उपसर्ग–प्रत्ययों को हटाकर मधुर' उपनाम से मधुर कर दिया। स्व. जिस प्रकार पं० माखनलाल चतुर्वेदी 'भारतीय आत्मा' बन गये, उसी प्रकार रामसिंहासन सहाय केवल 'मधुर' बनकर रह गये हैं।

'भारतीय आत्मा' की दृष्टि युग की आत्मा को परखती-पहचानती थी और इसलिए राष्ट्रीय, सामाजिक एव सांस्कृतिक आवश्यकताओं को देखते हुए उन्होंने जातीय उपसर्गों को हटाकर वास्तविक गुण-स्वभाव प्रगट करने वाला एक उपनाम जोड़ दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने इस 'मधुर' पौधे को सींचा, जिसने ठीक उनकी इच्छा के अनुरूप फल दिये, फूल दिये। 'मधुर' जी की काव्य साधना से स्पष्ट है कि वे 'मधुर लहरी' की लहरों पर यात्रा करते हुए 'मधु विन्दु' पर 'मधुर' बन कर ठहर गये। पूर्ण परिणति 'मधुर' हो गयी। बाद में जो उन्होंने दिया है उन्हें —

'मधु की बूंदें टप टप टपकीं
गिरी क्षीर सागर में'

कह सकते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे मधु-बूँदें आज भी टपक रही हैं—ठहर-ठहर, क्योंकि वे पानी की बूँदें नहीं हैं, केवल तरल, वे हैं मधु-बूँदें—गाढ़ी, सघन और मिठास भरी।

प्रधानाचार्य
टाउन पॉलीटेकनिक,
बलिया–२७७००१

मधुरजी का स्पृहणीय व्यक्तित्व

—डा० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी

श्रीरामसिंहासन सहाय 'मधुर' एक युगीन-विशिष्ट साहित्यकार हैं। उनका कवि जीवन सरल, गम्भीर परन्तु रस-प्रवण है। यद्यपि उनकी कृतियों की संख्या बहुत अधिक नहीं है फिर भी उनका लेखन एक भी प्रश्न-चिन्ह लगाने लायक नहीं है। राष्ट्रकवि 'दिनकर' उन्हें अपना काव्यगुरु मानते थे। वस्तुतः मधुरजी में माघ कवि की उक्ति चरितार्थ होती है।

तुंगत्वमितरा नाद्रौ नेदं सिन्धावगाधता।
अलंघनीयता हेतुरुभयं तन्मनस्विनी॥

(अर्थात् पर्वत में ऊँचाई है तो अगाध गहराई नहीं है और समुद्र में अगाध गहराई है तो ऊँचाई का अभाव है। परन्तु अलंघनीय होने के कारण ये दोनों मनस्वी पुरुष में विद्यमान रहते हैं।) मधुरजी पर्वत की भांति अत्युच्च तथा सागर की भाँति अत्यन्त गम्भीर हैं। एक तरफ वकालत की ऊँचाई है जो इनकी जीविका-वृत्ति है, और दूसरी ओर साहित्यिक गम्भीरता है, जो अपने में पूर्ण है।

शाल वृक्ष की भाँति लम्बी, मेघाच्छादित चाँदनी-जैसी काया, प्रतिभाशाली भव्य ललाट जिसपर धारा से सँवरित रेत सदृश रेखाएँ, सघन फाल्गुनी पतझड़ से पूर्ण वल्लरी की पत्तियों से सिर पर छोटे-छोटे बाल, खंजनी दृग, धनुषाकृति भौंहों के बीच मछलियों–जैसी फुदकती पुतलियाँ, नासिका तोते की तरह नुकीली नहीं अपितु सुष्ठु, लाल होठों की रक्षापंक्ति में लाल स्फटिक पर जड़े सफेद मोती जैसी दन्तावलि (अब वेदान्ती)—यह सब उस व्यक्ति की ऊपरी पहचान है जो भीतर से कुछ और ही है। यह व्यक्तित्व सादगी का प्रतिनिधित्व धोती-कुर्ता, कोट और पाजामा में करता है। छड़ी हाथ में रहती है जो अब वार्धक्य की सहायिका बन गयी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बचपन इनका पितृहीन, मातृ - स्नेह से दुलारित - पोषित था, जिसने इन्हें कुशाग्र बुद्धि-बालक के रूप में विद्यालय में प्रतिष्ठापित किया। मिडिल स्कूल के साथी प्रसिद्ध भाषाविद् स्व० डॉ० उदयनारायण तिवारी, हाईस्कूल के साथी प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता स्व० डॉ० भगवतशरण उपाध्याय तथा वकालत के साथी 'बलिया बलिदानी' के गायक श्री प्रसिद्धनारायण सिंह 'प्रसिद्ध' थे।

मधुरजी की काव्य-प्रतिभा मिडिल स्कूल से ही प्रस्फुटित हो चली थी। प्रयाग में इनके साहित्यिक जीवन की अच्छी शुरुआत हुई। वहाँ ये अनेक पत्र-पत्रिकाओं से सम्बद्ध रहे। इनका सम्पर्क राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन से हुआ और ये प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन से भी सम्बद्ध हो गये।

मधुरजी के काव्य में हृदय की प्रतिच्छाया मिलती है। शब्दजाल नहीं, अपितु अनुभूति की गहराई, परख की सूक्ष्मता, अभिव्यक्ति की सरलता-सहजता और अनूठेपन का अनुपम साक्ष्य है। बाल-साहित्य के निर्माताओं में ये पं० सोहनलाल द्विवेदी के समकक्ष हैं, यद्यपि प्रचार से बहुत दूर। यही कारण है कि द्विवेदी जी इनका हार्दिक आदर एवं सम्मान करते रहे हैं।

मधुर जी विद्रोही कवि हैं जिसका प्रमाण उनकी 'दिल्ली में ही पूछ रहे हैं दिल्ली कितनी दूर' कविता है। 'दिनकर' ने इस कविता को राज्यसभा में एक बार सुनाकर संसद को झकझोर दिया था। उस समय सभी को इनकी प्रतिभा के सम्मुख नत होना पड़ा था। 'कर्मवीर' में प्रकाशित इनकी रचना 'इतिहासों के पन्नों पर उड़ते हैं राजारानी' ने 'दिनकर' को बलिया बुला लिया। यह थी मधुरजी की कवित्व-शक्ति और 'दिनकर' की पारखी दृष्टि !

मधुरजी की साहित्य-साधना अवकाश के क्षणों की स्वर्णिम अनुकृति है। वे मूलतः एक वकील हैं। अपनी विलक्षण प्रतिभा, नाद्र स्मृति, कठिन परिश्रम और मधुर स्वभाव के कारण जिले के अग्रणी माल के वकील हैं। अपने पेशे में आप सच्चे, ईमानदार तथा एकनिष्ठ हैं। साहित्य के विद्यार्थी से वे वकालत की फीस तक नहीं लेते। स्वभावतः उदारमना हैं। धर्मशील तो हैं, परन्तु साधु-सन्यासी और पुजारी के 'प्रसाद' से किंचित् भयभीत रहते हैं। उदार चरितानां वसुधैव कुटुम्बकं की वे प्रतिमूर्ति हैं।

व्यवहार-पक्ष स्वच्छ और पवित्र है। न ऊधो का लेना न माधो का देना। सभी कार्य समयबद्ध तथा नपा तुला। भीड़ से भीड़ मे भी साहित्यिक आगन्तुक से एकान्त वार्ता कर लेते हैं। उनका दरबार 'चित्रकूट का घाट' है, चाहे जो समय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निकाल कर सत्संग कर ले ! संस्मरणों के धनी हैं। साहित्यिकों के बीच उनका व्यवहार बालरूप हो जाता है—निश्छल, निःसंकोच। चुटकुलों, कथानकों एवं संस्मरणों का प्रयोग कचहरी में भी करने से नहीं चूकते।

मधुरजी पुरुषार्थी हैं। कीर्ति, यश और प्रतिष्ठा अपने पुरुषार्थ से ही अर्जित किया है। महाभारत में वादरायण वेदव्यास ने कहा है :—

अर्थो वा मित्रवर्गो वा ऐश्वर्यं वा कुलान्वितम्।
श्रीश्चापि दुर्लभा भोक्तुं तथैवाकृत कर्मभिः ॥

(जो पुरुषार्थ नहीं करते, वे धन, मित्रवर्ग, ऐश्वर्य उत्तम कुल तथा दुर्लभ लक्ष्मी का उपभोग नहीं कर सकते।) मधुर जी ने अपने पौरुष से सभी वस्तुएँ प्राप्त की हैं। सन् १९६८ की एक अन्तर्ग्रामीय सुहृद गोष्ठी में मधुरजी के सम्मान के अवसर पर प्रसिद्ध साहित्यकार एवं सूचना सह निदेशक श्री ठाकुर प्रसाद सिंह ने कहा था कि मधुरजी की शीतल छाया में ही मैंने काव्य का आरम्भ किया और बलिया में इनके यहाँ मान सम्मान पाया। उस पीढ़ी के ये प्रतिनिधि कवि हैं जिसने राष्ट्र को जगाया है और यश-कीर्ति की एषणा से दूर रहकर मात्र साहित्य-सेवा ही की है। इनका सम्मान तो राष्ट्रीय-स्तर पर होना चाहिए।

प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० विवेकी राय ने कहा है—"इतना बड़ा व्यक्तित्व परन्तु वह अपने को ऐसा सिमटा कर रखता है, जैसे वह मात्र घात-पेंच वाला वकील भर हो और किसी दुनिया से कोई मतलब नहीं हो। परन्तु जब उसकी कविताएँ कागज के पृष्ठों पर आती हैं तो ऐसा लगता है, कि इस कविता का एक भी शब्द न तो घटाया-बढ़ाया जा सकता है, न बदल कर पर्याय ही रखा जा सकता है। पच्चीकारी की हुई रचना जिसमें मात्र तन्मयता और भाव-गम्भीरता, जो सहज अभिव्यक्ति है।"

मधुरजी इतने सरल हैं कि सबके लिए सुलभ हैं। सुलभं वस्तु सर्वस्य न यात्यादणीयताम्, फिर भी वे आदरणीय हैं अपनी 'मधुरता' के कारण। वे सन्तों की तरह मानापमान-रहित हैं। उन्हें इस बात का व्यामोह नहीं है कि मैं महान् कवि या साहित्यकार नहीं कहलाया क्योंकि उन्हें श्रद्धेय स्व० श्री माखनलाल चतुर्वेदी, पं० मोहनलाल द्विवेदी, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर', डा० भगवत शरण उपाध्याय, डॉ० उदयनारायण तिवारी, जगदीश ओझा 'सुन्दर' आदि का आदर, प्रेम एवं स्नेह प्राप्त रहा है।

मधुरजी के पास लोकमान्य तिलक महात्मा गांधी, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि के कार्यों का प्रत्यक्ष संस्मरण है। सन् १९२० से १९४२ तक की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रीय क्रांन्ति के वे प्रत्यक्ष द्रष्टा रहे हैं, भोक्ता रहे हैं। राष्ट्रीयता के उद्‌बोधन में उनकी लेखनी ने बहुत बड़ा योगदान किया है। इसी कारण वे 'संघर्ष' आदि पत्रों में शीर्ष पर छपते रहे। इसके बावजूद वह वकालती काट के कारण कभी फिरंगी अफसरों की नजर में नहीं चढ़े।

अंग्रेजों के भीषण अत्याचार तथा क्रांति-दूतों की उबलती ललकार की तस्वीरें मधुरजी के संस्मरणों की निधि हैं। वे हिन्दी, फारसी, अंग्रेजी—तीनों ही भाषा और साहित्य के जानकार हैं।

डॉ० अर्जुन तिवारी 'पूर्वाञ्चल की पत्रकारिता' पर अपने शोधग्रंथ में लिखते हैं—"मधुरजी के पास पूर्वाञ्चल–पत्रकारिता का जो संस्मरण और यथार्थ ज्ञान है, उससे मेरा शोध प्रबंध गौरवान्वित और सही उतरा है अन्यथा हमने एक वर्ष भटकने में ही व्यतीत कर दिये होते और तथ्यों से सदैव अनभिज्ञ रह जाता।"

मधुरजी का व्यक्तित्व एकहरा और सरलतम है। कोई मिलावट नहीं, कोई बनावट नहीं। शुद्ध शाकाहारी रूप। जिसमें प्राकृतिक सुगन्ध है, नकली इत्र की क्षणिक आभा नहीं! कौटिल्य की उक्ति चरितार्थ होती है :—

छिन्नोऽपि चन्दन तरुर्न जहाति गन्धम्,
वृद्धोऽपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम्।
यन्त्रार्पितो मधुरतां न जहाति चेक्षुः,
क्षीणोऽपि न त्यजति शीलगुणान्कुलीनः॥

(कटा हुआ चन्दन का वृक्ष सुगन्ध नहीं छोड़ देता, बूढ़ा गजपति भी क्रीड़ा नहीं छोड़ता, कोल्हू में पेरी हुई ईख भी मधुरता नहीं छोड़ती, कुलीन दरिद्र भी सौशील्य आदि गुणों को नहीं छोड़ देता।)

मधुरजी वार्धक्य में भी माधुर्य को बिखेरते रहते हैं। रुग्णावस्था में भी उनका वही व्यवहार देखा जाता है। कुछ वर्ष पूर्व वे अधेड़ी से महीनों रुग्ण रहे! पर मिलने-जुलने वालों को हँसते-हँसाते रहे। इतना महान् और स्पृहणीय व्यक्तित्व हैं श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' का, जिन्होंने बलिया की धरती की यशोगाथा में अनेक दिग्गज एवं उद्‌भट साहित्य-मनीषियों की पंक्ति में अनजाने ही अपना नाम भी जोड़ दिया है। इससे हम सभी गौरवान्वित हैं।

(नरही, बलिया)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मधुर' जी : एक प्रेरक व्यक्तित्व

—नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

झिरझिराती बसंती बयार के झूलेपर हिचकोले खाता, बलखाता-सा दुबला-पतला तन और उद्दाम भाव-तरंगों के साथ-साथ लहराता-मदमाता क्वारे मन द्वारा निर्मित 'मधुर' जी का मोहक व्यक्तित्व दृष्टि को अनायास ही आकर्षित कर लेता है। उनके सरल एवं तरल किशोर-सुलभ मानस में भावुकता की चपल तरंगें नई उमंगों के साथ उभरती-थिरकती रहती हैं। उनके पतले-पतले युग्म-अधरों पर अंकित स्मित-रेखा देखते-ही-देखते नयनों की रसीली कोरों तक तिरने-खेलने लग जाती है। उनकी क्षीण, पर सार्थक, वाणी कुछ कहते-कहते रुकने-थथमने लगती है और पलकें झुक आती हैं। मौन वातावरण मुखर हो उठता है। उनकी चितवन की भाव-भंगिमा की छलांग एक चतुर खिलाड़ी की भाँति अपने निशाने पर जा टिकती है और धीरे-धीरे फैलकर अपना सिक्का जमा लेती है। उन्होंने सरस बसन्त ही नहीं भोगा है, ऋतु-संहार को भी झेला है। उनके धूप-छाँही जीवन ने ताप ही नहीं दिया है, सरसा कर सँवार भी दिया है। उनकी दीर्घजीवी कृतियों में उनके संघर्षशील जीवन की उर्मियों को शब्द-चित्रों में उकेर कर अमर बना दिया है। वे स्वप्नदर्शी (रोमैण्टिक) ही नहीं, पराक्रमी (शिवेलरस) भी हैं।

दो-चार-दस ही नहीं, पूरे साठ साल से मैं 'मधुर' जी को इसी रूप में देखता आ रहा हूँ। दस वर्ष की वय में मैं बलिया शहर में गाँव (जंवही) की पढ़ाई पूरी कर अगरेजी पढ़ने आया था। संयोगवश उनके निवास-स्थान के पड़ोस वाली गली में रहकर अग्रज श्री आचार्य परशुराम चतुर्वेदी वकालत करने लगे थे। धीरे-धीरे मैं एक ऐसे बुद्धिजीवी वर्ग के सम्पर्क में आ गया जो 'साहित्यकार' कहलाकर प्रसिद्ध था। गुरुभक्त सिंह 'भक्त', रामसिंहासन सहाय 'मधुर' तथा जगदीश ओझा 'सुन्दर'—जैसे कवि, सीताराम गुप्त 'विनोद'—जैसे नाटककार, रामअनन्त पाण्डेय 'वीतराग'—जैसे कहानीकार, वसिष्ठ नारायण 'निर्बल'—जैसे पत्रकार, शिवप्रसाद सिंह, हरिकृष्णराय, विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह—जैसे हिन्दी-सेवी; शिव दर्शन सिंह, जगदेव उपाध्याय, जानकी प्रसाद—जैसे समाज-सेवी, बृजविहारी सहाय, नवाब'लाल, भीखी प्रसाद, मुरलीमनोहर, रामदहिन सिंह—जैसे शिक्षा-प्रेमी, चित्तू पाण्डेय, जगन्नाथ सिंह—जैसे राजनेता आज बरबस याद आ रहे हैं। ठाकुर जगन्नाथ सिंह सशक्त लेखक भी थे। उनके 'पिंजरे का व्याघ्र' को पढ़कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant

उसे कौन भुला सका है ? छोटे-बड़े साहित्य-सेवियों और देशभक्तों की मंडलियाँ जाने आज कहाँ विलीन हो गईं। तब राष्ट्रीय जागरण का युग था। आदर्श तथा सिद्धान्त की लड़ाई थी। अब सत्ता और सम्पत्ति के लिये होड़ लगी है। कहते हैं, हम प्रगति-पथ पर द्रुतगति से अग्रसर हो रहे हैं। साहित्य और राजनीति का गठबन्धन हो गया है तथा अर्थनीति उसका संचालन कर रही है। राष्ट्रीयता मात्र नारा रह गई है। जनता की लड़ाई पैंतरे बदल-बदल कर आत्म-रक्षा में सिमट आई है। आत्म-कल्याण में ही लोकहित देखा—समझा जाने लगा है। संभवतः 'समाजवाद' का यह एक नया संस्करण तैयार हो रहा है।

'मधुर' जी की रोमांटिक रचनाओं की ध्वनि आज भी कानों में गूँज रही है—

"कैसे खेलूँ खुलकर, छिपकर करता हूँ जब प्यार ?
जाने मत संसार दूर ही दूर रहो दिलदार।"

फिर,

बहुत देर तक हुई प्रतीक्षा अब रूखा व्यवहार न हो।
अजी बोल तो लिया करो तुम चाहे दिल में प्यार न हो॥

परन्तु, युगानुरूप रचना की ध्वनि आज भी अधिक मुखर है—

पताके ! इतने क्यों चंचल हो ?
तुम स्वराज्य की दीपशिखा पर
माता के अञ्चल हो !

यही नहीं, बापू के स्वागत-गान और डोम-डोमिन वाली रचनाएँ उनकी अमर कृतियाँ हैं।

साहित्यिक संस्थाओं से 'मधुर' जी का निकट सम्पर्क और सम्बन्ध रहता आया है। उन्हें गति और दिशा देने में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहता आया है। उनकी कीर्ति-पताका प्रादेशिक सीमोल्लंघन कर बिहार तथा मध्य-प्रदेश तक लहराती पायी जाती है। माखनलाल जी चतुर्वेदी, दिनकर जी तथा महादेवी जी जैसे साहित्य-मनीषियों के वे स्नेह-भाजन रहे हैं और हैं। समस्त हिन्दी जगत उनका आदर करता है। बाल-साहित्य के इतिहास के तो वे सशक्त हस्ताक्षर हैं ही। उनका अगाध स्नेह मुझे सहज ही सुलभ हो गया है। उनका मसृण एवं मोहक व्यक्तित्व अनुकरणीय तथा वन्दनीय है।

२१६, चक,
इलाहाबाद–३.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मधुर'-स्तोत्र

—डॉ० श्रीपाल सिंह 'क्षेम'

राष्ट्रभारती के विदग्ध रचनाकार तथा हिन्दी में बालसाहित्य के प्रमुख उन्नायक पूज्य श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' की रचनाधर्मिता के सम्मानार्थ पूर्वांचल के बलिया-जैसे सम्प्राण-जनपद और साहित्य तथा स्वातंत्र्य-संघर्ष में सदैव अग्रणी सर्जक भूमि से सेवा-सम्वद्ध नागरिकों का यह पुनीत कार्य है कि एक ऐसी जागरूक प्रणयिनी प्रतिभा को, जो अपने पूरे जीवन-इतिहास में लेखनी के साथ निष्ठापूर्वक संलग्न एवं हिन्दी के प्रचार-प्रचार ही नहीं अपितु उसकी समृद्धि-सम्वर्द्धना में अहरह आत्मा-समर्पित रही हैं, जनमानस में सुसम्मानित कर अगली रचनात्मक पीढ़ी के लिए एक चिर प्रेरणा-स्रोत के रूप में उपस्थापित किया जाय।

आदर्य्य श्री 'मधुर' जी सच्चे अर्थों में अभिनन्द्य हैं। उनका रचना तप इतना और इस कोटि का रहा है कि उसका अभिनन्दन न करना ही हमारे लिए एक विगर्हणीय चूक होती। वे जनपद और पूर्वांचल के न केवल एक सुप्रष्ठि अधिवक्ता-अभिवाचक हैं, अपितु एक मौलिक प्रतिभा के सर्जक साहित्यकार और स्वनामधन्य कविवर के रूपमें प्रख्यात हैं। अपनी कविता के कौमार्य्य एवं कैशोर्य्य-काल में, मैं भी उनके प्रेरक रचना-धर्म सम्पर्क में आ चुका हूँ। महाकवि गुरुभक्त सिंह जी 'भक्त' से भी उनकी बड़ी आत्मीयता रही है। मैं उनके द्वारा आयोजित-प्रेरित काव्य-समारोहों में भी उस समय आया हूँ, जब उनकी प्रतिभा अपनी पूर्ण प्रौढ़ता के शिखर का आरोहण कर रही थी।

उनकी प्रसिद्ध 'डोमिन' कविता उनके हीरक-हस्ताक्षर के रूप में बहुचर्चित रही है। वे राष्ट्रपिता बापू, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, स्व० गणेश शंकर विद्यार्थी-जैसी महानात्माओं के विचार-भावों से न केवल प्रेरित-उन्मेषित रहे हैं, अपिच उनके निकट सम्पर्क में भी रहे हैं।

'मधुर' जी हिन्दी-भारती के निस्पृह सेवक हैं। उर्दू विधा में भी उन्हें सहज प्रभुत्व प्राप्त है। वैसे ही उन्होंने अंग्रेजी और मलयालम से भी प्रशंस्य अनुवाद प्रस्तुत किये हैं। हिन्दी में यथार्थोन्मुख आयाम पर तो वे अपने रचना पथ पर सजग रहे ही, राष्ट्र की थाती के रूप में पलने वाली बाल-पीढ़ी के लिए अभिप्रेरक रचनाओं के प्रणयन की ओर तन्मनस्क रहे हैं। हिन्दी में बालसाहित्य की रचना की ओर बहुत दिनों तक पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता रहा। उनकी दृष्टि इस ओर गयी और उनकी लेखनी से ऐसी रचनाएं और कृतियाँ निःसृत हुई जो बाल-साहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

के पुस्तकालय-खण्डों में समाहृत एवं पाठ्यक्रमों में सम्मानित भी होती रही है।

'मधुर लहरी' उनकी प्रथम प्रकाशित काव्य कृति है जिसने हिन्दी जगत् को अपनी ओर प्रथम बार आकृष्ट किया था। 'मधुविन्दु' उनकी दूसरी प्रकाशित रचना कृति है जिसमें राष्ट्रीय संदर्भों एवं सामाजिक क्रांति की नयी विचार-धाराओं से उत्प्रेरित कविताओं का संग्रथन हुआ है। 'मधुविन्दु' की रचनाएँ तो स्वयं राष्ट्रकवि दिनकर द्वारा चयनित और पटना से प्रकाशनव्यवस्थित हुईं। गीत-गज़लों में उनकी सहज गति-प्रगति रही है। बच्चों के लिए उनकी 'बच्चों के गीत', 'बच्चों के मधुर गीत', 'सुबाहु-वध' एवं 'ऐतिहासिक कथाएं'—कृतियाँ बहु-प्रशसित तथा सहृदय-प्रशस्य रही हैं। स्फुट विषयों से बाल-कल्पना और सुरुचि को तो उन्होंने कवितायित किया ही, कथाओं के माध्यम से भी उन्हें प्रेरित और सुसंस्कारित करने की दिशा मे भी वे प्रभूत सफल हुए हैं।

अपना प्रौढ़ प्रतिभा के 'गरल-सुधा' सज्ञक प्रबंध काव्य की रचना द्वारा उन्होंने भारतीय जीवन-साधना तथा चिन्ता के उस पक्ष को रेखांकित किया जो इतिहास चक्र के नाना घार्णविघूर्णनो एवं चैतन्य-संघषणा के घात-प्रतिघातों से उद्भूत ऐति-हासिक गरल-अमृत (सत्-असत्, शिव-अशिव एवं सुन्दर-असुन्दर) के ग्राह्य और त्याग की उज्जवल दृष्टि प्रदान करती है। राम-कथा और राम-चरित्र के भी वे मर्मी अनुभावक–विभावक रहे हैं। 'सुबाहु-वध' में ब्रह्मर्षि विश्वामित्र के आश्रम मे यज्ञ-रक्षा के कथावृत्त को सुसहज एवं प्रभावक रूप में समेटा गया है। 'श्रीराम की पुष्पक-यात्रा' शीर्षक से जो प्रख्यात पौराणिक संदर्भ संप्रति कविवर के रचनाधीन है वह लंका-विजय के पश्चात के राम-कृतित्व को लेकर चलने वाले प्रबंध काव्य के उदात्त रूपमें शीघ्र ही हिन्दी-जगत् के सम्मुख अपना तेजस् विकीर्ण करने में पूर्ण समथ होगा, ऐसा मेरा अडिग विश्वास है।

कविवर 'मधुर' जी की रचना-यात्रा महनीय और अभिनंदनीय रही है, इसमें रंच मात्र भी सदेह नहीं है। वे अपनी पीढ़ी के रचना-धर्मियों में सुर्चचित रहे हैं और परवर्ती पीढ़ी के लिए प्रेरणा-स्रोत रहेंगे। उनके जीवन के ८२ वें वर्ष में उनका नागरिक अभिनन्दन एक गौरव तथा महत्व की बात है। ऐसी सुदीर्घ-स्वस्थ जीवनायु किसी पुण्यात्मा को ही विधिप्रदत्त होती है। इस अभिनन्दन-पर्व पर मैं उनको शिरसा नमन करता हूँ और विश्वास करता हूँ कि यह अभिनन्दन ग्रंथ उनके व्यक्तित्व, कृतित्व एवं रचना-गौरव के सर्वथा अनुकूल तथा हिन्दी संसार के लिए पुष्कल रूप से उपयोगी होगा।

क्षेम–सदन
१५४, शेषपुरा
जौनपुर-२२२००२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमती सुदामा देवी

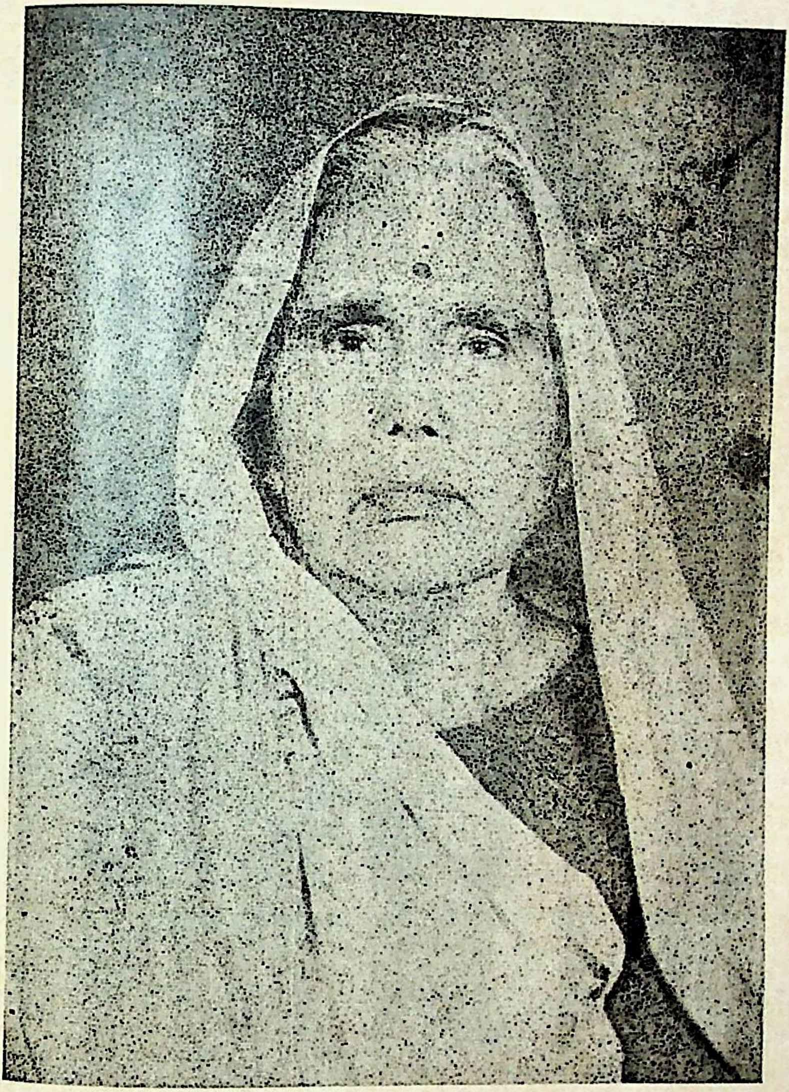

सहधर्मिणी : परिणय– १९२७ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामनस्वी 'मधुर' जी

—श्रीराम सिंह 'उदय'

हिन्दी साहित्य के गौरव तथा युग-प्रतिनिधि कवि श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' का नाम लेते ही, उनसे जुड़ी निकट-दूर की अनेक सुखद स्मृतियां मानस-पटल पर झलमला उठती हैं।

आज़ादी के बहुत पूर्व बाँसडीह (बलिया) में क्रांतिकारी नेताओं एवं कवियों का आना-जाना लगा रहता था। गांधी विद्यापीठ, भ्रातृमण्डल पुस्तकालय उनकी बैठकों, सभाओं, योजनाओं के केन्द्र थे। यहां बड़े-बड़े कवि सम्मेलन भी हुआ करते थे। उनमें बलिया जनपद के सर्वश्री महिपाल बहादुर सिंह 'बहादुर', विपिन बिहारीलाल 'विपिन', जगदीश पाण्डेय 'सुबास', चन्द्रदीप पाण्डेय 'पुलकित', गौरीशंकर राम, रामसिंहासन सहाय 'मधुर', जगदीश ओझा 'सुन्दर', प्रभुनाथ मिश्र, प्रसिद्ध नारायण सिंह, डा० रामविचार पाण्डेय आदि सम्मिलित होते थे। कविसम्मेलनों में स्वागत से लेकर मंच संचालन तक का दायित्व प्रायः मधुर जी को ही बहन करना पड़ता था।

कविसम्मेलनों में उमड़ी अपार जनता मधुर जी की मर्मस्पर्शी एवं ओजस्वी कविताओं को सुनने के लिए व्यग्र रहती थी। उनकी देशभक्ति की कविताओं को सुनकर लोग भाव-विभोर हो जाते थे; बनिहार-बनिहारिन, कृषक, दलित-पीड़ित, शोषित-तिरस्कृतजन, अभाव एवं बेबसी से दंशित लोग उनके काव्य-पात्र एवं विषय होते थे। सामन्तों के अत्याचार, अंग्रेज नौकरशाही की मनमानी, पूँजीपतियों के राष्ट्रद्रोह के विरुद्ध उनकी देशभक्तिपूर्ण विप्लवी, बलिदानी भावनाओं को उद्दीप्त करने वाली कविताओं की हुंकृति घहरने लगती थी। उनकी काव्य-गर्जना से जन-जन उद्वेलित, उत्तेजित एवं उत्साहित हो उठते थे। कविसम्मेलन, मधुर जी के कारण खूब जमते थे तथा उनका जादुई स्वर सबको विमोहित किये रहता था।

ऐसे काव्यमय वातावरण में बचपन से ही मेरे अन्दर काव्य-रचना के बीज अंकुरित हो चले थे। मधुर जी तथा जगदीश पाण्डेय 'सुबास' की कविताओं से मैं प्रेरित और अनुप्राणित होता रहा। दुबले-पतले इकहरे बदन के, सीधे-सादे, विनीत, सौम्य-सस्मित चेहरे वाले मधुर जी स्वाभिमान, साहस, शौर्य के ज्वलन्त प्रतिभा दीख पड़ते थे। उन्होंने सदा निर्भय राष्ट्रीय जनजागरण का मंच फूंका। मैं उनके व्यवहार तथा गुणों से काफी प्रभावित हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS MoE Grant

वैसे उनकी पठित एवं प्रकाशित कविताओं में से मुझे कुछ ही स्मरण परन्तु ये कविताएँ उस जमाने में लोगों का कण्ठहार बनी हुई थीं। उनका चिरस्थाई है। 'इतिहासों के पन्नों पर उड़ते हैं राजा-रानी', 'हल के खींच रहे हो कैसी किस्मत की रेखा' तथा 'रंग है परवाह क्या है, पास नहीं है, भंग है परवाह क्या है, पेट में रोटी नहीं है' खूब चर्चित कविताएँ थीं।

मुझे याद है देश के सभी प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में उनकी रच छपती थीं। देश के सभी बड़े साहित्यकारों, संपादकों से उनका परिचय था। सभी उनका सम्मान करते थे। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मुझे १९३ मिल्की (बलिया) में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में आयो निखिल राष्ट्रीय हिन्दी कवि सम्मेलन में देखने को मिला।

उस ऐतिहासिक कविसम्मेलन में छोटे-बड़े सैकड़ों कवि एकत्र थे। रसावतार श्री श्यामनारायण पाण्डेय अभी नौजवान थे। उन्होंने 'हल्दी- की अप्रकाशित पाण्डुलिपि से कई जोशीले प्रसंगों का पाठ किया। शिव शास्त्री के साथ अकस्मात पहुँचने वाले आशुकवि जगमोहननाथ अवस्थी (लख अध्यक्ष बनाये गये थे। संचालन जानकी वल्लभ शास्त्री कर रहे थे। स्वा ध्यक्ष मधुर जी ही थे। उन्होंने अपने स्वागत-भाषण में कवि कर्म, कवित शक्ति एवं युग संदर्भ पर इतना उच्च स्तरीय भाव व्यक्त किया कि समुप लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। (इसी प्रसंग का उल्लेख पं० माखनलाल च ने अपने एक पत्र में भी किया है।)

मधुर जी उक्त मंच के नीचे दरी पर श्रोताओं की पंक्ति में बैठे थे। क को वे बहुत शाबाशी देते और प्रोत्साहित करते थे। मैं तो अभी छात्र ह मथुरा जी अग्रवाल तथा रामेश्वर शर्मा के साथ वहां गया था। मेरा लिखकर मधुर जी को दे दिया गया। नाम पुकारा गया। मेरा दिल लगा। इतने बड़े श्रोताओं के सम्मुख उपस्थित होने का मेरा यह पहला था। मधुर जी ने मुझे प्रोत्साहित किया—खूब डटकर कविता सुनाइये। ओर मधुर जी मुझे शाबाशी दे रहे थे, दूसरी ओर मेरी दमहीन कवित बालदुस्साहस को लक्ष्य करते हुए अध्यक्ष जी ने बीच में ही टोका— आपकी कविता बहुत अच्छी है, अब रहने दें, कल दिन में ठीक से सुनूँगा। जी के प्रोत्साहक व्यवहार से मुझमें आत्मशक्ति जगी, चेतना उठी और मैं सृजन में संलग्न हो गया।

मिल्की कविसम्मेलन की एक अन्य घटना मुझे और याद आ रही है। संत बाबा राघवदास (बरहज वाले) श्रोताओं के बीच नीचे दरी पर बै

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुर जी कि निगाह उधर पड़ गई। मंच पर विराजमान होने का आग्रह किया। बाबा ने खड़े होकर कहा—'मुझे यहीं श्रोताओं के बीच रहने दीजिए। यह मंच कवियों का है। कवि देश के गौरव हैं। हमें बैठकर काव्यसुधा का पान कर इनके प्रति सम्मान प्रगट करना है।' उस महापुरुष का कवियों के प्रति ऐसा श्रद्धा भाव था। मगर आज के अहं में डूबे अधकचरे नेता, अधिकारी तो कवियों का घास-पात समझ रहे हैं। कैसी विडम्बना है।

उस कविसम्मेलन में बहुत-से कवि उखड़ गये। किन्तु, मधुर जी खूब जमे। कदाचित् एक कविता 'वनिहारिन' जिसकी पंक्ति थी—'हँसी सुनहली किरणें नभ में दसों दिशाएँ लाल हुईं' मधुर जी ने सुनाईं। मार्मिक चित्रण पर तालियां बजती रहीं तथा लोगों के नेत्र साश्रु भी हो गये। यह कविता नहीं, भारत माता की कराहट थी। आज सोचता हूँ—मुझे जान पड़ता है कि मधुर जी एक ओर क्रांति एवं देशभक्ति के काव्य के प्रणेता रहे तो दूसरी ओर शोषितों-दलितों की दबी भावनाओं को मुखरित कर उनमें शक्ति एवं चेतना जगाने वाले मसीहा भी रहे हैं।

'विश्ववन्धु' पत्र दैनिक था, किन्तु उसका साप्ताहिक अंक बड़ी सजधज से निकलता था। उसके संपादक इसी जनपद के श्री रघुनाथ पाण्डेय 'प्रदीप' मीनापुरी थे। मधुर जी की कविताएं खूब छापते थे। मैं उन्हें विशेष चाव से पढ़ा करता था। बाद में 'विश्ववन्धु' कार्यालय से ही १९४५ में 'प्रदीप' जी के संपादन में एक अलग साप्ताहिक पत्र 'आदर्श' निकलने लगा। उस समय तक 'धर्मयुग' का अस्तित्व नहीं था। साप्ताहिक आदर्श में निराला, पंत, दिनकर, बच्चन, महादेवी वर्मा, सुमन, आरसी प्रसाद सिंह प्रभृति रचनाकारों की रचनाएं छपा करतीं। उन्हीं महारथियों में मधुर जी भी थे। १९४७ में जब मैं बांसडीह आ गया, मेरी रचनाएं भी उसमें छपती रहीं। मधुर जी की रचनाओं का उसी के माध्यम से मैं रसास्वादन करता रहा। मधुर जी ने गद्य बहुत कम लिखा है। एक कवि—कालजयी कवि की अमरवाणी का महत्व बहुत अधिक है। मधुर जी उसी ज्योतित मार्ग के गतिशील पथिक हैं। वे ठोस सृजन-कार्य, पुस्तक-प्रकाशन में लगे रहने वाले साहित्यकार हैं, पत्र-पत्रिकाओं में छपने तथा प्रचार से वे कतराते भी हैं।

मधुर जी एक रससिद्ध, सक्षम एवं प्रतिभाशाली कवि हैं। युग द्रष्टा हैं। साहस, बहादुरी से भरे कवि हैं। मृदुल स्वभाव के, मितभाषी, व्यवहारकुशल, दूरदर्शी हैं। उनकी वकालत भी खूब चलती है। सच्चे मुकदमों की पैरवी, उनकी विशेषता है। गरीबों से फीस तक नहीं लेते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके साहित्य में जो रस, भाव, प्रवाह, सौष्ठव, माधुर्य है, वह सब वे है, अप्रतिम है। सरल सहज शब्दों में भी सुधा-सरोवर लहरा देना, ऊँची भावना को सजीव-सस्वर बना देना, कला है। साभिप्राय एवं ध्वन्यात्मक शब्दों के प्र के भी वे कुशल, मर्मज्ञ शिल्पी हैं। कविता-पाठ की मधुर-मोहक शैली का कहना ही क्या? वे साहित्यकार, कवय: क्रान्तिदर्शिन: के मूर्त रूप हैं। उन्नायक मनीषी हैं। बालसाहित्य के निर्माता हैं। उनके जीवन एवं कर्तृत्व व्यापक पैमाने पर शोधकार्य होना चाहिए।

बाँसडीह
बलिया, उ० प्र०

राष्ट्रभारती के गायक कविवर श्री 'मधुर'

—प्रभुनाथ मिश्र

कविवर श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' की साहित्यिक उपलब्धियों के सम में जब कभी सोचने के अवसर मिलते हैं तो हमारे सामने एक ऐसे व्यक्तित्व तस्वीर खड़ी हो जाती हैं जो 'काम बड़े, नाम थोड़े' की उक्ति को चरितार्थ क है। छरहरा बदन, सलज्ज चेहरा, सूक्ष्मदर्शी नेत्र और गम्भीरता की तह में मुस् भरी आकृति छिपाए मधुर जी का व्यक्तित्व अनुभूतियों के कारुण्य का स्रोत लगता है। यही कारण है कि उनके कण्ठ से प्रस्फुटित पंक्तियाँ सहज ही विभोर कर देती हैं। उनके कवि के दृष्टि-वैभव और ऐश्वर्य की दुनिया पर सरसरी निगाह डालकर खेतों और खलिहानों में टिक जाती है। कवि की सिकता गरीबों के गीतों में सिमट जाती है। वर्तमान में असंगत के प्रति वि और भविष्य के प्रति निर्माण का स्वर मुखरित करता हुआ मधुर जी का राष्ट्रवादी विचारों से ओत-प्रोत है। वे विगत छ: दशकों से लिखते चले आ हैं। इतनी लम्बी अवधि में जो कुछ लिखा है, उसमें कमाल हासिल किया है।

मधुर जी ऐसी विशिष्ट धारा के कवि हैं जो अपनी निराली शैली में आप भरपूर है। 'भारतीय आत्मा' ने अपने युग में काव्य की जो एक नयी प्रवाहित की, उसका स्पर्श तो बहुतों ने किया, किन्तु मधुर जी ने जिस उसमें डुबकी लगाई और उसके प्रवहमान निर्मल जल को अपनी अँजुरी में लिया वैसा शायद दूसरों के लिए सम्भव नहीं हो सका, ऐसा हमारा मत मधुर जी ने कम लिखा है, इसका एक कारण है। उन्होंने कविता लिखने के कभी लेखनी नहीं उठाई, बल्कि स्वयं कविता ने ही अपने को पंक्तिबद्ध करा उनके हाथों में लेखनी थमा दी। जब-जब इस प्रकार के संयोग जुटे तभी मधुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने सृजन-कार्य किया है। वे जिस रूप में अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करते हैं, उसमें कल्पना के पंखों को उछलते शब्दों में समेटना पड़ता है। तब कहीं जाकर सजी-सँवरी पंक्तियाँ मुखर हो पाती हैं। चुने-चुनाए थोड़े से शब्दों में रचना को प्रभावकर बनाने में उन्होंने उर्दू के शायरों की तरह महारत हासिल की है। सीधे-साधे शब्दों में गहन विषयों को भी गूँथ देना आपकी विशेषता है। 'ग्राम-गौरव' शीर्षक कविता इसका सहज सत्यापन है।

कविवर मधुर जी वास्तविक रूप में राष्ट्रभारती के गायक हैं। राष्ट्रीय नव-जागरण-काल में अपनी रचनाओं के द्वारा उन्होंने स्वतन्त्रता-संग्राम के सभी आन्दोलनों को प्रेरित किया। बापू के अछूतोद्धार आन्दोलन के 'डोम-डोमिन' की रचना कर उन्होंने भविष्य की कल्पना रख दी थी। उन्हें डोमिन को अछूत कहना भी सह्य नहीं था। आगे, डोमराज की सामाजिक अवमानना से द्रवित होकर अपने भींगे अन्तर में दीपक राग जगाने के लिए वे बापू से चिनगारी माँगते हैं। ऐसी चिनगारी जो कोटि-कोटि भारतवासियों के बीच सुलग कर छुआछूत को देश से निकाल बाहर कर दे।

अन्तर भींग रहा है, कैसे
दीपक राग जगाऊँ?
बापू अपनी चिनगारी दे
मैं भी आग लगाऊँ।

मधुर जी ने विषमता भरे विश्व के विरुद्ध विद्रोह का स्वर फूंक कर एक नये संसार की कल्पना की है। ऐसा नया संसार जिसमें निर्धन भी धनवान रहें और एक-एक देशवासी पर अपना हिन्दुस्तान गर्वित रहे। कांग्रेस के ऐतिहासिक रामगढ़-अधिवेशन के अवसर पर उन्होंने लिखा था—"आज रामगढ़ में जाती है मेरे भूखों की सेना" जिसमें कांग्रेस को समाजवाद की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया था।

उनकी कल्पना में केन्द्रित नये संसार के निर्माण के लिए वर्तमान व्यवस्था बदलनी होगी, उलट-पलट करना होगा। ऐसा साहस और शक्ति किसमें है? निश्चित रूप से ऐसी शक्ति देश के अन्नदाता किसान में है, जो मधुर जी की रचनाओं का प्रेरणा-स्रोत है। किसान ही प्रत्यक्ष रूप में देश का भाग्य-विधाता है।

तुम दुनिया के भाग्य-विधाता
विधना को किसने देखा?
हल के फल से खींच रहे हो
कैसी किस्मत की रेखा!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रान्ति और करुणा के कोमल कवि मधुर जी के अन्तर में श्रम-देवता किसानों की दीन दशा के प्रति एक कसक है, टीस है, तड़पन है। जहाँ कहीं भी उन्होंने श्रम की चक्की में पिसते किसान और मजदूरों के नित्य-जीवन में आने वाले प्रेम, विरह, मिलन और यातनाओं को अपनी कड़ियों में बाँधा है, वहाँ करुणा की निर्मल धारा प्रवहमान है। ऐसे अवसरों पर राजनीति और शासन व्यवस्था पर भी प्रहार करने से आप चूके नहीं हैं। 'चतुर्मासा' शीर्षक कविता में विरहिणी कृषक-वधू छहराती रसबूँदों को छहरते और बिजली को चमकते देखकर अपने वैसे ही भविष्य की तलाश कर रही है।

छहर - छहर रस बूंदें छहरीं
मैं किस दिन छहरूंगी ऐ सखि !
चमचम - चमचम बिजली चमकी
मैं किस दिन चमकूंगी ऐ सखी !

० ० ०

कलकत्ते मेरा बनमाली
किस कल में पिसता होगा ?
दिल वह चकनाचूर कहाँ है ?
मैं खेतों में भींग रही हूँ
वह मेरा मजदूर कहाँ है ?

बालसाहित्यकार मधुर जी का एक अलग ही स्वरूप है। आपने इस क्षेत्र में भी बड़ी ख्याति अर्जित की है। हिन्दी के गण्यमान समीक्षकों ने आप की बालोपयोगी रचनाओं को खूब सराहा है।

कविवर मधुर जी ने अपनी रचनाओं के द्वारा हिन्दी में जिस विशिष्ट काव्य-धारा का प्रतिनिधित्व किया है, उस पर समीक्षकों का ध्यान आवश्यक है, क्योंकि 'भारतीय आत्मा' के तिरोधान के बाद उनकी विधा को ग्रहण करने वाले कवियों में एकमात्र मधुर जी ही परम्परा को जीवित रखे हुए हैं। आपने अपनी कृतियों द्वारा क्रान्ति और करुणा का समन्वित स्वर मुखरित कर हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा को पुष्ट किया है। प्रचार और प्रसिद्धि के लोभ से विरत एकान्त साधना करने वाले मधुर जी आज के रचनाकारों के प्रेरणा-स्रोत हैं। हम मधुर जी के स्वस्थ दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।

सम्पादक, 'विहान'
दोकटी भवन, बलिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मधुर' जी के साथ एक भेंट

—भगवती प्रसाद द्विवेदी

उत्तर-प्रदेश के बलिया शहर का जगदीशपुर मोहल्ला। समर्थ बाल साहित्यकार डॉ० शोभनाथ 'लाल' के साथ, जब एक मकान के बरामदे में दाखिल होता है तो एक वयोवृद्ध को ढेर-सारे गंवई-शहरी लोगों के बीच घिरा हुआ पाता हूँ। यह समझते देर नहीं लगती कि वो ही श्री रामसिंहासनसहाय 'मधुर' हैं, जो चर्चित बाल साहित्यकार होने के साथ ही एक लोकप्रिय ऐडवोकेट भी हैं। ज्योंही डॉ० लाल उनसे परिचय कराते हैं, श्रद्धेय मधुरजी तमाम ताम-झाम छोड़-छाड़, हमें ड्राइंग रूम में ले जाकर साहित्यिक बातों में इस कदर मशगूल हो जाते हैं जैसे उन्हें अब कोई आवश्यक काम ही न हो। साहित्य और साहित्यकारों के प्रति उनके समर्पणभाव की अब तक मैंने सिर्फ चर्चा ही सुनी थी, आज आंखों के सामने स्वयं देख रहा हूँ।

श्री राम सिंहासन सहाय 'मधुर' की बाल रचनाओं को बचपन से ही पढ़ने का सौभाग्य मिलता रहा है। आप का पहला बालगीत सन् 1936 में 'चने के खेत में' शीर्षक से 'बालसखा' में प्रकाशित हुआ था। फिर स्वाधीनता के बाद तो आप ने अपने आप को सिर्फ बाल-साहित्य के लिए ही समर्पित कर दिया। आप की प्रकाशित पुस्तक 'गरल-सुधा' (प्रौढ़ काव्य) है। संकलन 'मधुविन्दु' को राष्ट्रकवि स्वर्गीय रामधारी सिंह 'दिनकर' ने स्वयं आप की राष्ट्रीय कविताओं का चयनकर अजन्ता प्रकाशन, पटना से प्रकाशित कराया था। 1946 में 'मधुर' जी की पुस्तक 'ऐतिहासिक कथाएं' छपी जिसमें 9 भूली-बिसरी ऐतिहासिक कथाएं संकलित हैं। पूरी पुस्तक में ऐसे ही शब्दों का प्रयोग हुआ था, जो एक दूसरे से सटने न पाएं। आपकी इस पुस्तक को मुन्शी प्रेमचन्द ने भी पढ़कर अपनी सम्मति दी थी। आप एक प्रयोगधर्मी कवि रहे हैं और आप के बालगीतों के संकलन 'बच्चों के गीत' तथा 'बच्चों के मधुर गीत' बेहद चर्चित-प्रशंसित हुए थे। 'सुबाहुवध' (बाल खण्ड काव्य) में रामचन्द्र के बक्सर के युद्ध का वर्णन है। यह असभ्यताओं का युद्ध बक्सर में आरम्भ होकर लंका में समाप्त हुआ था।

श्री राम सिंहासन सहाय 'मधुर' के स्वभाव की विनम्रता और वाणी की मधुरता अनुकरणीय है। आज भी आप की चुस्ती और फुर्ती देखकर हैरत होती है। पहले सुबह चार बजे ही आप बिस्तर छोड़ देते थे और गंगा-स्नान के लिए चल पड़ते थे। नित्य कर्मों से निवृत होकर साढ़े सात बजे वकालत की सीट पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैठ जाना और साढ़े दस बजे से सायं पाँच बजे तक कचहरी में कार्यरत रहना आप की दिनचर्या है। अक्सर भोर की बेला में ही आप का लेखन होता है। कविताएं गुनगुनाने के बाद ही लिखते हैं। इसके लिए एक ही बैठक आवश्यक नहीं है। यह आप के मनोभाव पर निर्भर करता है। जब अनुभूति की मुद्रा गहनतम होती है, तभी आप लिखते हैं। आप की आँखें आज भी बिलकुल स्वस्थ हैं।

चाय की ट्रे आ गयी है। चाय की चुस्की लेते हुए बातों का सिलसिला आरम्भ होता है ...

"आप के लेखन की शुरूआत तो प्रौढ़ साहित्य से हुई थी, फिर बाल-साहित्य की ओर आप का झुकाव कैसे हुआ ?" मेरे सवाल को सुनकर मधुर जी मुस्कुराते कहते हैं—"जब 1947 में देश स्वतन्त्र हो गया तो मैंने अनुभव किया कि विद्रोही और आक्रामक कविताओं की आवश्यकता अब नहीं रही। अब निर्माणकारी साहित्य लिखा जाना चाहिए। अंग्रेजी राज्य से संघर्ष की कविताएं लिखते हुए मेरा मन थक भी गया था। प्रिंसिपल मनोरंजन ने और काशी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस दिशा में आने के लिए आमंत्रित किया और मैं बाल साहित्य की सेवा में ही तल्लीन हो गया।"

"आजकल लिखे जा रहे बाल साहित्य के संदर्भ में आपके क्या विचार हैं? क्या कोई बदलाव आया है ?" मेरा अगला प्रश्न होता है।

मधुरजी पुनः मुखरित होते हैं—"पहले के बाल साहित्य में यद्यपि कला और विज्ञान दोनों सम्मिलित रहते थे, पर आधार कला ही रहती थी। आजकल विज्ञान तो आगे जा रहा है, मगर कल्पना पीछे छूट रही है। अकेले विज्ञान तो निर्जीव यंत्र हो जाएगा। अतः कल्पना और जिज्ञासा का आधार रूप में होना भी आवश्यक है। हमें धरती के पौधे चाहिए, गमले के पौधे नहीं। आजकल तो कंठ से लिखा जा रहा है, कलेजे से नहीं। कुछ लोग तो बच्चों के लिए अतुकान्त कविताएँ लिखने लगे हैं, जो सर्वथा अनुचित है। बच्चा पैदा होता है तो वह छन्दाकार रोता है, वह हँसता-मुस्कुराता भी छन्दाकार ही है - "

"अन्य भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी बाल साहित्य और बाल साहित्यकार उपेक्षित क्यों हैं ?" मैं सादर सवाल करता हूँ।

"द्विवेदी !" श्रद्धेय मधुरजी उत्तर देते हैं—"बालसाहित्य के यथोचित विकास के लिए सम्पन्नता भी आवश्यक है। अंग्रेजी और बंगला के बालसाहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थिति बेहतर है, क्योंकि उनका जीवन-स्तर ऊँचा है। इसमें हमारे अभिभावकों की भी उदासीनता है। हालांकि बालसाहित्य बीज रूप में होता है, पर हम अपने लिए पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों पर जितना खर्च करते हैं, उतना बच्चों के लिए नहीं करते। इस संदर्भ में सरकार भी उदासीन है। पं० जवाहरलाल नेहरू को छोड़कर अन्य शासकों ने उतनी दिलचस्पी नहीं ली। इसमें बाल लेखकों का भी दोष है। हमें सारे संसार के साथ चलना है, पर हम देश की समानान्तर दौड़ में पीछे जा रहे हैं। पहले साहित्यकार नदी के किनारे, जंगलों में मिलते थे, पर आजकल सभी पदक और प्रतिष्ठा के पीछे भाग रहे हैं। प्रकाशक व्यापारी हो गये हैं। वे अधिकाधिक मुनाफा चाहते हैं। त्याग और तपस्या का सबमें अभाव दिख रहा है। निराला जी की 'अर्चना' को भी प्रकाशक ने सखेद लौटा दिया था। पुरस्कृत लोगों की रचनाएँ पढ़नेवाले भी कितने लोग हैं? बच्चों पर हमारा कितना ध्यान है, इसका अन्दाजा आपको इसी से मिल जायेगा कि बलिया जैसे शहर में एक भी ऐसा पार्क नहीं है जहां बच्चे खेल सकें।"

"बालसाहित्य के प्रति बच्चों की अभिरुचि के संदर्भ में आपकी क्या राय है?" मैं बात को दूसरी ओर मोड़ता हूँ।

"बच्चों की अभिरुचि के लिए भी हम लोग ही जिम्मेदार हैं। जो हम लिखेंगे, बच्चे वही न पढ़ेंगे? आजकल 'कॉमिक्स' की बच्चों में बेहद चर्चा है। यह कॉमिक्स बच्चों के मस्तिष्क को विकृत करता है। इसकी भूमिका सिनेमा की तरह होती है। इससे हमें बच्चों को बचाना चाहिए।"

बाल पत्रिकाओं की चर्चा छिड़ने पर मधुरजी कह उठते हैं—"आजकल बच्चों के लिए कई अच्छी पत्रिकाएं हैं, पर वे ही पर्याप्त नहीं हैं। छोटे बच्चों के लिए 'किलकारी' 'चंपक', 'बालभारती' बड़े बच्चों, किशोरों के लिए 'पराग', 'नंदन', 'सुमन सौरभ' जैसी अच्छी पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। ये पत्रिकाए बच्चों के चरित्र-निर्माण में अहम भूमिका अदा करती हैं।

"राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' से तो आपकी काफी घनिष्टता थी। उनका कोई संस्मरण ... ?"

"कई संस्मरण तो उनके जीवनकाल में ही मैंने लिख दिये थे।" 11 फरवरी, 1959 को मैं पटना में दिनकर जी के आवास पर गया था। दरवाजे पर पहुँचा तो नौकर ने जवाब दिया—'साहब आज बन्द हैं। आज किसी से नहीं मिलेंगे।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अरे भई, दिनकर को साहब किसने बनाया ?' मैंने मजाकिया लहजे में कहा, 'उन्हें किसने बन्द कर रखा है ? बताओ तो !' दिनकर ने अन्दर से मेरी आवाज सुन ली थी और वह मुस्कुराते हुए स्वयं बाहर निकल आये। दरअसल उस वक्त वह 'उर्वशी' की प्रेस कापी तैयार कर रहे थे। जब उन्होंने पूरी पुस्तक मुझे सुनाई तो मैंने कहा, 'अगर प्रथम सर्ग से उस प्रारम्भिक अंश को जिसमें आपने उर्वशी के बचपन का वर्णन किया है, हटा देते तो बेहतर होता, क्योंकि वेश्या का कोई बचपन नहीं होता।'

दिनकर जी ने मेरी बात पर गौर किया और कहा—'ठीक कह रहे हैं आप। अब इसे दूसरी जगह ले जाऊंगा।' और उन्होंने यही किया भी। उनकी गुण-ग्राहकता, भ्रमणशीलता और सबकी राय लेने वाली प्रवृत्ति मुझे बहुत अच्छी लगती थी।'

आदरणीय मधुर जी, चलते-चलते एक प्रश्न और। "बालसाहित्यकारों को आप क्या सन्देश देना चाहेंगे ?" मेरा आखिरी सवाल सुनकर वह तत्काल कह उठते हैं, 'बस, लेखन में लगे रहें। उसी में कोई प्रभावोत्पादक बात निकल आएगी। हमें यह सोच समझकर कदम रखना है कि बाजी सिर्फ अपने घर में ही नहीं है, बल्कि देश-विदेश में भी है। हमें क्षितिज के उस पार जाना है।"

कार्यालय जिला प्रबन्धक दूरभाष,
निर्देशिका अनुभाग, पटना–८००००१

सफल बाल साहित्यकार : 'मधुर' जी

—सुरेन्द्र विक्रम

साहित्य को परिभाषित करते हुये किसी विद्वान ने लिखा है—'हितेन सहितम् सहितम् सहितस्य भाव: साहित्यम्' अर्थात जिसमें हित की भावनायें सन्निहित हों वही सार्थक साहित्य है। यह परिभाषा बच्चों के साहित्य पर शब्दश: ठीक बैठती है अर्थात जिस साहित्य से बच्चों का अपना हित हो, वे उससे प्रेरणा ग्रहण करें तथा उन्हें आगे बढ़ने की दिशा मिले, वही साहित्य सही माने में सार्थक बाल साहित्य होता है।

सार्थक बाल साहित्य लिखना सबके बस की बात नहीं है। बाल साहित्य के इतिहास में जिन साहित्यकारों ने सार्थक बाल साहित्य का सृजन किया है उनमें श्री राम सिंहासन सहाय 'मधुर' का महत्वपूर्ण योगदान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुर जी ने अपने लेखन का प्रारंभ सन् १९२१ ई० से किया। तब से आप एक लम्बी अवधि तक इस क्षेत्र में कार्य करते रहे और ८२ वर्ष की वृद्धावस्था में भी साहित्य से जुड़े हैं। मधुर जी ने वात्सल्य भाव को चित्रित करते हुये अनेक प्रेरक बाल गीत लिखे हैं। उनके दो बाल काव्य संकलन 'बच्चों के गीत' तथा 'बच्चों के मधुर गीत' इस बात के प्रमाण हैं। आपके बाल गीतों की प्रशंसा करते हुए प्रसिद्ध कवि श्री माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा था—

"आपकी रचायें खूब अच्छी बन पड़ी हैं। कला और कलेजा दोनों साथ-साथ चले हैं। आशा है किलकारी नरेशों उपद्रवी धीरों और घर जहान को सर पर लिये घूमने वाले Little-tyrants नन्हें-मुन्ने जालिम राजा बेटों को खूब पसंन्द आयेगी।"

(श्री मा० ला० चतुर्वेदी द्वारा मधुर जी को लिखे गये २८-८-५४ के पत्र से उद्धृत)

मधुर जी का बाल खण्ड काव्य 'सुबाहु वध' भी काफी लोकप्रिय रहा है। आपकी गद्य पुस्तक 'ऐतिहासिक कथायें' बालकों के बीच में साक्षरता प्रचार के विचार से सरल भाषा में लिखी गई एक सफल कृति है।

मधुरजी की रचानाओं में बाल मनोविज्ञान की अच्छी पकड़ है। एक बच्चे की आकांक्षा को कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों मे बहुत सफलतापूर्वक बाँधा है—

अम्मा अब मैं बड़ा हो गया,
सब अक्षर मैं पढ़ लेता हूँ।
चाचा के कन्धे पर अब मैं
अपने बल से चढ़ लेता हूँ॥

मुझे मँगा दो नीलम घोड़ा।
सन् सन् सन् दिल्ली पहुंचूँगा॥

बापू का ललाट छू लूँगा।
वहाँ जवाहर लाल बनूँगा॥

'बच्चों के गीत' से उद्धृत

झूला झूलना हर छोटे बच्चे को अच्छा लगता है। झूले को लेकर बच्चे के मन में उठ रही भाँति-भाति की कल्पनाओं को कवि ने बखूबी चित्रित किया है:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अम्मा आज लगा दे झूला
इस झूले पर मैं झूलूंगा।
इस पर चढ़कर, ऊपर बढ़कर
आसमान को मैं छू लूंगा॥
झूला झूल रही है डाली।
झूल रहा है पत्ता पत्ता॥
इस झूले पर बड़ा मजा है।
चल दिल्ली, ले चल कलकत्ता॥

('बच्चों के गीत' से उद्धृत)

स्वाधीनता-पूर्वकाल में उन्होंने राष्ट्रीय जनजागरण के गीत लिखे। 'कर्मवीर' में उन्हें पढ़कर 'दिनकर' उनके सम्पर्क में आये। मधुर जी की रचनायें समय के साथ जुड़ी हैं उनकी रचनाओं की प्रशंसा राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ने इन शब्दों में की है—

"मैं तो आपकी हाल की कविताओं पर दंग हूँ। सच पूछिए तो ये कवितायें मेरी मनोदशाओं को ही व्यञ्जित करती हैं और जी चाहता है कि काश, इनमें से कई के नीचे रचयिता की जगह पर मेरा नाम होता। इन्हें कई मित्रों को सुना चुका हूँ।"

(श्री दिनकर द्वारा मधुर जी को लिखे गये १०—६—१९४८ के पत्र से उद्धृत)

मधुर जी दो युगों को जोड़ने वाली कड़ी रहे हैं। ये दो युग हैं—स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद। मधुरजी की स्वतन्त्रता संग्राम में प्रबल आस्था रही है जिसका प्रमाण अनुभूति की अभिव्यक्ति में उनकी कुछ राष्ट्रीय रचनायें हैं।

आज जो बाल साहित्य लिखा जा रहा है उसके बारे में आपकी धारणा है—

"इस समय बाल साहित्य की बाढ़ आ गई है। इसमें व्यवसाय अधिक साहित्यिक धर्म कम है। कई साहित्यकार बच्चों के अनुरूप साहित्य दे रहे हैं। उनकी सेवा का सदावर्त जारी रहे यही हमारी शुभ कामना है।"

(श्री मधुर द्वारा लेखक को लिखे गये २५—८—८१ के पत्र से उद्धृत)

मधुर जी दीर्घायु हों एवं अपनी रचनाओं से बाल साहित्य के भण्डार को भरते रहें, यही हमारी शुभाकांक्षा है।

महानगर ब्वायज कालेज
महानगर, लखनऊ—२२६००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मधुर जी' की मधुरता

—नरेन्द्र शास्त्री

कविवर श्री रामसिहासन सहाय मधुर। यह नाम मैंने बहुत बाद में जाना, जब साहित्य की दहलीज पर कदम रखने लगा था। लेकिन, पहले बचपन की एक घटना !

शायद तब मैं दस बरस का रहा होऊं! स्मृति के झरोखे में एक छोटी सी याद कुलबुला रही है। मेरे बड़े चाचा, जिन्हें हम बच्चे 'बड़का बाबूजी' कहते थे–श्री मधुर जी के अन्तरंग मित्र थे, भाई सरीखे! ··· ··· बड़का बाबू जी, अर्थात् स्व० विपिन बिहारी लाल 'विपिन'। बाद में 'प्रकाश पुंज' के उपनाम से लिखने लगे थे, लेकिन प्यार से सभी उन्हें 'विपिन जी' ही कहते थे। मैं तब दस साल की उम्र में पहली बार श्री मधुर जी के दरवाजे पर गया था, अपने बड़का बाबू जी के साथ! लंबा, छरहरा, साँवला सुदर्शन व्यक्तित्व। बात-चीत में शहद की मिठास! बड़का बाबू जी के साथ घंटों काव्यचर्चा! मुझ बच्चे को उस सांवले सुदर्शन आदमी ने मिठाई खिलायी थी।

लौटते समय बड़का बाबू जी ने समझाया–'यही हैं श्री मधुर जी। बड़े अच्छे कवि!'

'बड़े अच्छे कवि' का मतलब, शायद उन दिनों मैं समझ नहीं पाया था। वह तो, बहुत समय के बाद मैंने मधुर जी की महानता का परिचय पाया।

सन् १९७१ में बलिया आने पर मधुर जी की मधुरता का परिचय मिला। काव्य गोष्ठियों में भेंट होती। कभी घर पर भी मिलता। मिलते ही सहज मुसकान के साथ अपनत्व भरा स्वागत। साहित्य साधना के लिये प्रेरित करना। साहित्यिकों के संस्मरणों को रस लेकर सुनाना। अक्सर कहते—'मेज पर काम करते रहो अर्थात् लिखते रहो; पता नहीं कौन सी कृति कालजयी बन जाये।' एक गोष्ठी में उन्होंने कहा था—'कवि के पास कण्ठ और कलेजा चाहिये।'

कण्ठ और कलेजा का अर्थ मैंने अपने स्तर से समझा था 'कण्ठ' अर्थात वाणी या इसे भाषा पर अधिकार भी कह सकते हैं। और 'कलेजा'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थात् साहस। कवि को विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिये।

और यह 'कण्ठ और कलेजा' श्री मधुर जी में है। वे दिन थे विप्लव के! पराधीन भारत आजादी की आग कलेजे में लिये तड़प रहा था। उधर पं० माखनलाल जी चतुर्वेदी शंखनाद कर रहे थे और दूसरी ओर महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन जन-जन में व्याप्त हो गया था। गांधी जी बलिया आये थे। मधुर जी का काव्य पाठ हुआ था और महात्मा गांधी जैसा युग पुरुष आत्म-विभोर हो उठा था। मधुर जी के मन में देश की माटी और गरीब किसान के लिये तड़प थी। अपने प्रयाग प्रवास के दिनों में तब किसी पत्रिका में वे संपादक थे। मधुर जी के यहाँ श्रीमती महादेवी वर्मा, पंत, बच्चन आदि कवि आया करते थे और ये सभी साहित्यिक-महारथी उनके आत्मीय थे!

शायद १९७३-७४ की बात है। मुझे साहित्यिकों पर लिखने का झक सवार था। स्व० फणीश्वर नाथ रेणु से मिलकर पटना से लौटा था। इसी समय एक रात मधुर जी के यहाँ गया और उन पर कुछ लिखने की इच्छा जाहिर की। मुझे लगा कि श्री मधुर जी अपने प्रचार के बारे में बहुत मुखर नहीं है। काफी देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं। दिनकर जी की चर्चा हुयी। जब दिनकर बलिया आये थे और मधुर जी के यहाँ ठहरे थे। हँसते हुये, संकोच के साथ मधुर जी ने बताया -- आते ही दिनकर बोले, 'क्या खाकर लिखते हैं-यही देखने चला आया।'

संभवतः तब दिनकर जी उर्वशी महाकाव्य लिख रहे थे। पटना में जब मधुर जी गये, दिनकर जी ने उर्वशी के कुछ अंश सुनाये। एक बाधा थी। रूपसी उर्वशी के बचपन और वृद्धावस्था का चित्रण किया जाय या नहीं। दिनकर जी ऊहापोह में थे। मधुर जी ने समाधान किया—'अप्सरा केवल यौवन को जीती है। उसका कोई बचपन नहीं होता।' जैसे दिनकर जी को राह मिल गयी। उर्वशी महाकाव्य अपने कथ्य, शिल्प, चिंतन और बनावट के लिए हिन्दी काव्य साहित्य में अमर है।

अब पीछे लौटना होगा। उस रात को जब मैं मधुर जी के यहाँ कुछ खोजबीन करने पहुँचा था। बातचीत में रात के दस बज गये। उनके पुराने कागज पत्रों में मैं दिनकर जी के उन पत्रों को ढूंढ़ रहा था, जिन्हें समय-समय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर उन्होंने मधुर जी को लिखा था। एक पत्र का अंश आज भी याद है। शायद सन् १९३७ में दिनकर जी ने लिखा था वह पत्र ! स्मृति में कुछ पंक्तियाँ अब भी सुरक्षित हैं—'प्रिय मधुर जी ! आपकी कविताओं की पांडुलिपि पढ़ गया हूँ। शाम को जयप्रकाश जी (बाद के लोकनायक) को सुनाया। वे बहुत प्रभावित हुये और आपसे मिलना चाहते हैं। आपकी कविताओं को पढ़कर मुझे आश्चर्य होता है। कितनी अच्छी कवितायें हैं ये ! मुझे सात्विक डाह होती है। मन में आता है कि काश, इन कविताओं के नीचे मेरा नाम होता।' (पत्र का भाव यही था—लेखक)

अपने निबंध 'कविवर मधुर' में दिनकर जी ने यह स्वीकार किया है कि 'जिन दिनों मैं छायावाद के धुंध भरे वातावरण में अपने लिये काव्य क्षेत्र में रास्ता तलाश रहा था और असमंजस की स्थिति में पड़ा हुआ था, उन्हीं दिनों श्री मधुरजी की कविताओं ने मुझे नया रास्ता दिखाया। उनकी कवितायें क्षितिज से उतरकर धरती पर आती दिखाई पड़ीं और मुझे नया रास्ता मिल गया। मैं अक्सर अज्ञातावस्था में मधुरजी की कवितायें गुनगुनाया करता था।'

पाठक मुझे क्षमा करेंगे। शायद अक्षरशः दिनकरजी का वाक्य नहीं लिख पाया हूँ, लेकिन उनका भाव उपरोक्त पंक्तियों में निहित है।

श्रीराम सिंह उदय से लेकर एकांत में 'उर्वशी' महाकाव्य पढ़ रहा था। पढ़ते-पढ़ते कभी आँखें भर आती थीं और भरी आँखों में कभी दिनकर तो कभी मधुर तैर आते थे। दिनकर जी ने कहीं लिखा है—'मधुरजी मेरे गुरु हैं।'

डॉ० शोभनाथ लाल का मधुरजी के बारे में कुछ लिखने के लिये पत्र मिला तो मन बड़ा उदास हो गया। यह उदासी भीतर से आह्लादकारी थी। उदास इसलिये हो गया कि अबतक मधुरजी के व्यक्तित्व और काव्य का सही मूल्यांकन हमलोगों ने नहीं किया और आह्लाद इसलिये हुआ कि शोभनाथ जी ने यह पुनीत कार्य अपने कंधों पर उठा लिया।

जैसा कि हर नगर की हालत है, अधकचरे और संकीर्ण लेखन को लेकर स्थानीय साहित्यकारों में 'तू-तू, मैं-मैं' की स्थिति बनी ही रहती है। बलिया नगर भी इससे अछूता नहीं रहा। लेकिन मैंने मधुरजी को हमेशा—ऐसे वातावरण के बीच भी तटस्थ पाया। किसी से कोई द्वेष नहीं। सबके प्रति सहज अनुराग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज के प्रचारात्मक युग में यह बहुत बड़ी बात है। और यही व्यक्तित्व उन्हें एक साहित्य साधक के रूप में स्थापित करती है।

बच्चों के लिये श्री मधुरजी ने बड़ी प्यारी-प्यारी और प्रेरक कवितायें लिखी हैं। कृषकों और मजदूरों तथा हरिजनों के लिये लिखी उनकी कवितायें अमर हैं, लेकिन एक बात मैं जरूर कहना चाहूँगा कि श्री मधुरजी साहित्य को बहुत कुछ दे सकते थे। लेकिन शायद जीवन संघर्ष ने उन्हें साहित्य रचना के लिये बहुत समय नहीं दिया। मधुरजी की कविताओं से प्रेरणा लेकर न जाने कितने साहित्यकारों ने अपनी कालजयी कृतियां लिखीं।

अक्सर कृति से कृतिकार को जोड़कर अमरता की बात की जाती है। यहां थोड़ा मेरा मतभेद है। रचना की महानता, बेशक एक चीज़ है, लेकिन रचनाकार का व्यक्तित्व भी कम महत्व नहीं रखता। महाकवि निराला अपनी रचनाओं में महान थे। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी महान था। ये महानतायें उन्हें हमेशा के लिये अमर बना गयीं।

मधुरजी को इस अर्थ में भी जांचना जरूरी होगा। मगर यह जाँच तो समय करेगा।

अपने विचारों को समेटते हुये, इतना जोड़ देना चाहूँगा कि मधुरजी जवान हैं। चौंकिये मत, जवानी की ओज का उम्र से क्या संबंध? श्री मधुरजी को किसी काव्य-गोष्ठी में मैंने 'बुजुर्ग' कहने की धृष्टता की थी। जब उनकी बारी आयी तो बोले—'अभी तो मैं पचहत्तर साल का जवान हूँ। (तब उनकी आयु पचहत्तर साल थी शायद) ... ... पं० बनारसीदास चतुर्वेदी भी अपने को बूढ़ा नहीं मानते। सच्चाई भी यही है। जिनके विचारों में ओज है, नवीनता है, प्रेम है—वे बूढ़े कैसे हुये?

श्री मधुर जी मेरे जैसे लोगों के सच्चे मार्गदर्शक हैं, प्रेरक हैं, इसलिये कामना यही है कि वे स्वस्थ रहें, दीर्घजीवी हों—ताकि उनके कण्ठ और कलेजे से निकली मधुर प्रेरणादायिनी बातें हम सुनते रहें।

बांसडीह,
बलिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधिवक्ता 'मधुर' जी की सूझ-बूझ

—शिवकुमार राय, ऐडवोकेट

श्री रामसिहासन सहाय, ऐडवोकेट, जिन्हें हम लोग प्रायः 'मधुर' जी के नाम से ही जानते-पुकारते हैं, के साथ अथवा विपक्ष में मुझे अनेक बार काम करने का अवसर मिला है। उनकी वाक्पटुता तथा कानूनी सूझ-बूझ का लोहा सभी मानते हैं। यहाँ दो-एक संस्मरण प्रस्तुत हैं।

स्वर्गीय श्री हितनारायण सिंह वकील का एक निजी मुकदमा चकबन्दी अधिकारी, बैरिया (बलिया) के न्यायालय में था। उस मुकदमे में 'मधुर' जी हितनारायण सिंह की ओर से वकील थे। विवादित भूमि पर पहले विपक्षी का नाम था। बाद में उसी भूमि पर अधिवासी से सीरदार होकर हितनारायण का नाम दर्ज हो गया था जिसके विरुद्ध विपक्षी ने मुकदमा दायर किया था। अस्वस्थता के बावजूद 'मधुर' जी हमारे साथ ही बैरिया पहुँचे। चकबन्दी अफसर का न्यायालय एक बागीचे में लगा हुआ था। उन्होंने इजलास के सामने से वकीलों के बेंच तथा टेबुल बहुत पहले से हटवा दिये थे। कारण, वकील-मुख्तारों का उनके सामने कुर्सियों पर बैठकर बहस करना उन्हें पसन्द नहीं था।

'मधुर' जी को यह बात मालूम थी। उन्होंने चकबन्दी अधिकारी से बड़ी शालीनता से निवेदन किया, "वकील-मुख्तार का हाकिम से गुरु-शिष्य का सम्बन्ध होता है। वकील आचार्य और हाकिम शिष्य। श्रीमान् जी काफी विद्वान आदमी हैं। आपने देखा ही होगा, कक्षाओं में गुरु खड़ा होकर पढ़ाता है और शिष्यगण कुर्सी-मेज पर विराजमान रहते हैं। परन्तु जमाना बदल गया है और शिष्य भी नासमझ हो गये हैं। वे अब यह समझने लगे हैं कि उनके समक्ष गुरु को कुर्सी-बेंच पर बैठने का अधिकार ही नहीं है। इसीलिए गुरु खड़ा होकर पढ़ाता है।" 'मधुर' जी की ये बातें सुनकर उक्त चकबन्दी अधिकारी मन-ही-मन बहुत लज्जित हुए।

उस मुकदमे का फैसला भी 'मधुर' जी के मुवक्किल के पक्ष में ही हुआ। 'मधुर' जी का तर्क था—विपक्षी ने उत्तर प्रदेश सरकार को फरीक नहीं बनाया है। हमारा मुवक्किल उत्तर प्रदेश सरकार को विपक्षी से अधिक राजस्व अदा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करता है। क्योंकि बढ़ी हुई मालगुजारी पर ही उसका नाम दर्ज हुआ था। यदि पहले की भांति विपक्षी का ही नाम उक्त विवादित भूमि पर अंकित कराने का आदेश पारित किया गया तो सरकार के राजस्व की क्षति होगी। इसी तर्क पर वे मुकदमा जीत गये और आगे भी यही फैसला बहाल रहा।

एक और घटना। जिले में एक परगनाधिकारी (डिप्टी कलेक्टर) आये थे। वह एम० ए० थे। एक मुकदमे का फैसला उन्होंने अंग्रेजी में लिखा। फैसले में वर्तनी की अनेक गलतियाँ, व्याकरणिक त्रुटियाँ और भाषागत दोष थे। फैसले की अपील जिलाधिकारी के यहाँ की गई थी। 'मधुर' जी अपीलकर्ता के वकील थे। बहस में उन्होंने जिलाधिकारी से निवेदन किया—"श्रीमान्, लगता है, अब हमें वकालत छोड़ देनी पड़ेगी। पहले के हाकिम इण्टर–बी० ए० हुआ करते थे जिनकी अंग्रेजी हम कम पढ़े-लिखे लोग भी समझ लेते थे। लेकिन इस फैसले में तो ऐसे-ऐसे शब्द हैं जो डिक्शनरी में भी ढूँढ़े नहीं मिलते। कुछ वाक्यों का तो कुछ अर्थ ही समझ में नहीं आता। फैसले में यदि एक भी वाक्य पूर्णतः सही हो तो हमें अपील के बारे में कुछ नहीं कहना है अन्यथा फैसला तोड़ दिया जाय।" बात भी सही थी। जिलाधिकारी ने त्रुटिपूर्ण भाषा में लिखे गये फैसले को निरस्त कर अधीनस्थ न्यायालय को पुनः फैसला लिखने का आदेश दिया। उन्होंने यह भी लिखा कि आगे फैसला शुद्ध सही भाषा में लिखा जाय जिसमें हर एक वाक्य का सही-सही अर्थ निकले। फैसला तो टूट ही गया।

उन दिनों बलिया में बिजली नहीं थी। एक अन्य मुकदमे में एक पक्ष की गवाही होते-होते पेट्रोमैक्स की रोशनी में शाम के पाँच बज गये। मैं 'मधुर' जी के साथ काम कर रहा था। हाकिम ने हम लोगों से दूसरे दिन गवाह पेश करने को कहा। बरसात के दिन थे। सभी ट्रेनें जा चुकी थीं। किसी भी तरह गवाह को अगले दिन सुदूर देहात से लाकर पेश कर पाना असंभव था। 'मधुर' जी ने हाकिम से कहा—"श्रीमान ! हमारा वृद्ध मुवक्किल आप से एक बात पूछने को कह रहा है। कहता है, पुराने जमाने में ऐसे लोग डिप्टी कलक्टर होते थे जिनके बाप-दादे बग्घियों पर चला करते थे, परन्तु वे गरीबों की कठिनाइयाँ समझते थे। अब हमीं लोगों में से होने वाले हाकिम गरीबों की कठिनाई क्यों नहीं समझते ?" सुनकर पीठासीन अधिकारी बहुत शर्मिन्दा हुए और मुकदमे की अगली सुनवाई के लिए एक हफ्ते बाद की तारीख दे दी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक और पुरानी घटना।

बात उन दिनों की है जब स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद एक-एक कर अंग्रेज भारत छोड़ रहे थे। मिस्टर एच० टी० लेन बलिया के आखिरी अंग्रेज कलेक्टर थे। न्यायालय में बैठने का वह उनका अन्तिम दिन था। शाम के साढ़े तीन बज रहे थे। 'मधुर' जी का एक पटवारी मुवक्किल नौकरी से बरखास्त कर दिया गया था। अपील एच० टी० लेन के सामने थी। उधर कलेक्टर के उठने का समय नज़दीक आ रहा था और इधर बरखास्त पटवारी की सांस टंगी हुई थी। विपक्ष में 'मधुर' जी के सामने श्री बलदेव उपाध्याय, अधिवक्ता खड़े थे। पौने चार बजे कलेक्टर ने निगाह ऊपर उठाई। 'मधुर' जी ने बहस में कहा—"श्रीमान् ! हमारे मुवक्किल को चार्जशीट एक ऐसी भाषा (अंग्रेजी) में दी गई जिसे वह पढ़-समझ नहीं सकता।" विपक्षी अधिवक्ता के लाख बहस करने के बावजूद एक भी नहीं सुनी गयी। एच० टी० लेन ने फैसले में अधीनस्थ न्यायालय का आदेश निरस्त करते हुए यह निर्देश दिया कि चार्जशीट वर्नाक्युलर (हिन्दी) में दी जाय जिसे मुवक्किल खुद समझ कर जवाब दे सके। चार बजते-बजते कलेक्टर एच० टी० लेन न्यायालय से उठा और पहले से तैयार कार पर सवार होकर वाराणसी चला गया। कलेक्टर का आदेश परगनाधिकारी के न्यायालय में पहुँचा। वहाँ समुचित स्पष्टीकरण और बहस के बाद नियमानुसार पटवारी पुनः नौकरी पर बहाल हो गया।

'मधुर' जी की वाक्पटुता, बुद्धिकौशल, कानूनी सूझ-बूझ तथा सूक्ष्म तर्क के ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें अत्यन्त मधुर भाषा में तीखा प्रहार कर उन्होंने अपने वकालत के पिछले साठ वर्षों में बराबर हाकिमों से लोहा मनवा लेने में सफलता पायी है। माल के मुकदमों में उनकी गहन पैठ का कोई सानी नहीं।

हॉस्पिटल रोड,
बलिया—277001.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसे हैं बाबू जी!

—डॉ० श्रीमती शशिबाला

हिन्दू समाज का जीवन मुख्य रूपसे परम्परा की शक्ति से अनुप्राणित-संचालित होता है। जो प्राचीन है, वह नित्य नई शक्ति से नवीन के साथ मिलकर उसका पथ-प्रदर्शन करता है। इस परम्परा का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। ऐसा कुछ नहीं जो इसके अन्तर्गत न आता हो। नीति, धर्म, दर्शन, विचार, ज्ञान, भक्ति, पुण्य, दान, कथा-वार्ता, व्रत-पर्व, उत्सव, संस्कार, दया, उदारता आदि जितने जीवन में मूल्यवान तत्व हैं, वे सब परम्परा के रूप में हमें अनायास ही सुलभ होते हैं। बाबूजी को अपने पितामहों से विरासत में साहित्य और माता से असीम करुणा प्राप्त हुई थी। हमें मिल रहा है बाबूजी का निश्छल स्निग्ध स्नेह और सार्वभौम व्यवहार माधुर्य।

बाबूजी का साहित्येतर रूप एक कलाकार का भी है। घर-आंगन के घेरे में उनका कला-पक्ष पदे-पदे रूपायित होता रहता है। परिवार से उनका घनिष्ठ रागात्मक संबंध है। गांव और गांव-वालों को भी कैसे भूल सकते हैं? 'मधुबिन्दु' की एक कविता 'मेरा घर' गवाही देती है :

पूरब मुसलमान का घर है, करता है गाड़ीवानी।
पुरखों की तलवार छोड़कर भूल गया है पठानी।
कर्जे में हैं मियाँ, बीवियों की आदत सुल्तानी है।
कानों में पीतल की बाली, अब तक नूरजहानी है।

इसी बीच की पुण्य-भूमि पर नन्हा-सा मेरा घर है।
महलों की परवाह नहीं है, कवि का रैन-बसेरा है।
बाहर नन्हीं सी फुलवारी, गमक रहीं मेरी गलियाँ :
पथिक इसी पथ-से आते हैं, स्वागत में खिलतीं कलियाँ।

इस घर में बचपन बीता है, अब तक प्यार बरसता है।
मेरे बच्चों में मेरा प्रभु हँसता और विहँसता है।
सुखी रहें श्रीधर, गिरधर, यह सुखी रहे उर्मिल बिटिया।
पथिक तुम्हारा स्वागत हो, आबाद रहे मेरी कुटिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्या, कला, कविता, धन और राजत्व से भी आचरण की शिष्टता अधिक ज्योतिर्मयी है। इसे प्राप्त करके एक रंक भी राजाओं के दिल पर अपना प्रभुत्व जमा सकता है। पूज्य बाबूजी के शिष्ट आचरण की भाषा प्रायः मौन रहती है। शिष्ट आचरण करते हुए भी मौन हैं, व्याख्यान देते हुए भी व्याख्यान के पीछे छिपे हैं, राग-रत रहते हुए भी राग के सुर में समाहित हैं। उनके मृदु-वचनों की मिठास में आचरण की शिष्टता मौन रूप से खुली हुई है। बेटी-बेटे, नाती-पोते सभी उनके मुंह से निकले स्वर की बाट जोहते रहते हैं।

मनुष्य के जीवन पर मौन व्याख्यान का प्रभाव चिरस्थाई होता है। 'मधुर' उपनाम उनके आचरण की कसौटी है। जगत में कसौटी पर सोना कसा जाता है। परन्तु यहां एक विपर्यय है। सोना से ही कसौटी बना है—सोने पर ही कसौटी का खरापन सही देखा गया है। रामसिंहासन सहाय पर 'मधुर' नाम ठीक जांचा-परखा गया है। बिलकुल सही, शुद्ध। मौन भाषा किस देश में, किस जाति में, किस काल में कौन नहीं समझता? प्रेम का आचरण, उदारता का व्यवहार, दया का आचरण क्या पशु, क्या मनुष्य सभी चराचर स्वयं समझ लेते हैं। परिवार में पत्नी, (हमारी सासुजी), पुत्र-पुत्रियां, पुत्र-वधुएँ, यहां तक कि नन्हें-मुन्नों से भरा-पूरा परिवार इनके प्रेममय शिष्ट व्यवहार से प्रभावित रहता है। रोष तो कभी किसी ने देखा ही नहीं। जो बात इनके सिद्धान्त या भावना के प्रतिकूल होती है, उसे ऐसे मनोवैज्ञानिक ढंग से समझा देते हैं कि पुनः उसे दुहराने की कल्पना तक कोई नहीं कर सकता। खण्डवा (मध्य प्रदेश) में बैठे-बैठे न जाने कैसे 'भारतीय आत्मा' पं० माखन लाल चतुर्वेदी ने हमारे बाबूजी के सद्गुणों का अनुवाद 'मधुर' उपनाम में कर दिया था!

आध्यात्मिक स्वप्नों की शोभा तभी भली लगती है जब आदमी अपने जीवन-धर्म का अनुपालन करे। खुले समुद्र में जहाज पर बैठकर ही समुद्र की आध्यात्मिक शोभा का चिन्तन होता है। बाबूजी ने दिखावटी धर्माचरण में कभी विश्वास नहीं किया। तथाकथित छली वेश-भूषा वाले साधुओं से वह सदा भय खाते रहे और ऐसे साधुओं का दिया हुआ प्रसाद तक वे लेने से घबड़ाते रहे हैं। ईश्वर में उनकी गाढ़ निष्ठा है। अब तो वह 'नाम-स्मरण' भी करने लगे हैं। परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि बाबूजी ने अपने जीवन-धर्म का दृढ़तापूर्वक पालन किया है। इस दृष्टि से वे कर्मयोगी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिर्फ बाबू जी के साथ दाम्पत्य-संबंधों के कारण ही नहीं बल्कि अपने आंतरि सद्गुणों और निष्ठा के कारण भी माताजी उनकी सच्ची सहधर्मिणी हैं। इसके भी विशेष बात यह है कि बड़ी तेजी से बदलते हुए आजके भौतिक युग में सती स्त्री का जो आदर्श भारत ने अपने मूलभावों में कायम रखा है, उस आद की जीवंत प्रतिमा के रूप में परिवार पूज्या माताजी को पहचानता है। उन भाषा-ज्ञान सामान्य से अधिक नहीं है फिर भी परिवार-संचालन की पटुता श्ला है। जब बाबूजी अपने जीवन के प्रारंभिक मोड़ पर थे, उन दिनों बलिया शहर टाउन हाल रोड-स्थित एक किराये के मकान में रहा करते थे। मकान मालि किराया बढ़ाने के लिए उत्सुक था। उसने कहा—"अगर आप किराया बढ़ाने लिए तैयार नहीं हैं तो दूसरा मकान देख लीजिए।" उसका यह वाक्य माता को बहुत लगा। उसी मुहूर्त उन्होंने बाबूजीसे कहा —"बलुगड़ अपने मँड़ई हम किराया के मकान में ना रहबि।" उसी सप्ताह जमीन खरीदकर उन्होंने संकल्प को पूरा कराया। जगदीशपुर स्थित मधुर-स्वागत-सदन बना एक-से-एक दिग्गज हिन्दी साहित्य के महारथी समय-समय पर पधारे हमलोगों को स्वागत का अवसर दिया। माता का स्नेह तो पुत्रियों पर अ होता ही है। कभी-कभी माताजी बाबूजी से कह भी देती हैं—"रउवां लरिक ढेर मानेलीं, लरिकियन के किछु ना बूझेलीं।" मधुर मुस्कान के साथ, व्यवह माधुर्य के साथ बाबूजी, माताजी को 'हीरा चमके, मोती चमके' के भावों समाधान दे देते हैं। माता जी खुश और चुप अपने काम में लग जाती हैं।

बाबूजी और माताजी—दोनों ही जनों ने अभी हाल तक गंगा-स्नान प्रतिदिन लाभ उठाया है। वार्धक्य के चलते अब वे इस लाभ से वंचित हो गये

बाबूजी अन्नाहार की अपेक्षा दुग्धाहार तथा फलाहार ही अधिक पसंद हैं। आधुनिक टीम-टाम और 'फोकस' उन्हें पसंद नहीं हैं। सदा स्वच्छ पो इनकी सौम्यता का परिचायक है। हाँ, अतिथियों के आने पर उनके अनु सत्कार इनका लक्ष्य रहता है। बात १९७२ की है। इनके बचपन के सह प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ० उदयनारायण तिवारी ने हमारे घर आतिथ्य ग्रहण कि था। उन्हें किसी आयोजन का सभापतित्व करने जाना था। हम सभी उन सेवा में संलग्न थे। भोजन में विलम्ब देखकर बाबूजीने हमें रसोईं घर से बुला और कहा "व्यंजन की अपेक्षा समय का अधिक ख्याल करना चाहिए। समय महत्वपूर्ण है, असमय हो जानेपर व्यंजन कोई महत्व नहीं रखता। समय से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी बन जाय, अतिथि के सामने सप्रेम रख देना चाहिए।" फिर जो भी बना था, मैंने जल्दी-जल्दी उनके सामने भिजवाया। यह मूलमंत्र अभी भी हमारे सामने रहता है। अतिथि-सत्कार के ऐसे अनेक अवसर देशी एवं विदेशी विद्वानों के संबन्ध में आये जिनमें सहज स्नेह का महत्व व्यंजन की अपेक्षा अधिक रहा।

एक बार एक अमरीकी शोधार्थी सज्जन डॉ० आर्थर डी० लाप्टिन बाबूजी के यहाँ पधारे। बातचीत की और खाना भी खाया। चलने के पूर्व वे अमरीकी संस्कृति के अनुसार बाबूजी को कुछ 'फीस' देना चाहते थे। बड़ा आग्रह किया, देने के लिए हठ भी किया। बाबूजी लेने को तैयार नहीं हुए। उन्हें विनम्रता पूर्वक यहाँ तक कहना पड़ा—"America is not rich enough to purchase our culture." सुनकर अमरीकी सज्जन दंग रह गये, झेंपे भी। यहाँ बाबूजी का सांस्कृतिक स्वाभिमान बोल उठा था। क्या-क्या लिखें, क्या-क्या गिनायें। विस्तार भय से कलम रुकती है।

मधुर-स्वागत-सदन
जगदीशपुर, बलिया,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब कुछ मधुर-मधुर

—हरिशंकर चतुर्वेदी

दुर्बल देहयष्ठि, बदनमंडल से ज्ञानप्रभा का निरन्तर प्रसार, मुद्रा से स्नेह और श्रद्धा का अविरल प्रवाह, शान्त नेत्रों में विद्वत्ता का अपरिमित तेज, हृदय और वाणी में मधु-मैत्री का मणि-कांचन योग, साक्षात्कार में शिवत्व का साक्षात् दर्शन, व्यक्तित्व में गरिमामयी महिमा का स्वरूप, सुहृदों के लिए सहृदय माधुर्य का अजस्र स्रोत, यदि यह सब कुछ संपृक्त, समन्वित और साकार देख पाएँ तो वह स्वरूप निश्चय ही 'मधुर' होगा और वह इतना मधुर इतना विशाल और इतना स्पृहणीय कि छकते रहें, अतृप्त रहेंगे, मापते रहें, मपते रहेंगे, आंकते रहें अंके रहेंगे, क्षणभर के साक्षात्कार का स्वीकार अपरिमेय सन्तोष का आकार बनकर सब कुछ मधुर-मधुर कर जायेगा।

और इस प्रकार सब कुछ मधुर-मधुर कर जाने वाले महान व्यक्तित्व का अभिधान है राम सिंहासन सहाय 'मधुर'। बलियावासी मधुरजी साहित्यानुरागियों, साहित्यकारों और काव्यकारों की दृष्टि में प्रदेश और देश ही नहीं फ्रांस और इंगलैण्ड के अपने प्रशंसक विद्वानों की दृष्टि में सशक्त साहित्यकार के रूप में हृदयवासी हैं।

साहित्य और साहित्यकार हितैषी साहित्यकार

१९२० से ही साहित्य की श्री वृद्धि करने वाले मधुर जी जहाँ समकालीन भारतीय एवं विदेशी हिन्दी साहित्यानुरागियों और रचनाकारों का यथोचित स्नेह और श्रद्धा अर्जित करते रहे हैं वहीं अनुज साहित्य साधकों, विशेषकर कवियों के लिए, साहित्य और साहित्यकार के लिए वरेण्य, शुभचिन्तक, मार्गदर्शक और स्नेह पूर्ण प्रोत्साहन प्रदाता के रूपमें प्रतिष्ठित है। इस सन्दर्भ में उनकी सूक्ष्म और तथ्यग्राही दृष्टि और उत्साहवर्धक किन्तु वेमुरोव्वत मार्ग निर्देश निश्चय ही साहित्यसाधकों के लिए अमूल्य निधि हैं। भोजपुरी रत्न और आयु में मधुर जी से ज्येष्ठ डॉ० राम विचार पाण्डेय द्वारा इस सम्बन्ध में प्रशंसा मधुर जी की गरिमा की ओर गौरवपूर्ण इंगित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृद्ध बालक

जहाँ कवि के रूप में मधुर जी उच्च कोटि की राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीयता प्रेरक बाल कविताओं के कारण विद्वज्जन के साथ ही भावी नागरिकों के लिए संभ्रम और श्रद्धा के पात्र हैं वहीं चिन्तन और विचारों की प्रौढ़ता के कारण वयोवृद्ध एवं बाल सुलभ निश्छलता तथा बाल-भावों की अभिव्यक्ति के कारण सरल हृदयता के प्रतीक भी हैं।

शिवत्व के प्रतीक

बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा के संस्थापक सदस्य किन्तु निस्संकोच कार्यकर्ता मधुर जी अस्सी से ऊपर पहुँच कर भी सम्पूर्ण शील, सौजन्य, समर्पणभाव से अब भी साहित्यिक समारोहों के सौभाग्यपूर्ण सौहार्द्र हैं। सत्साहित्य और सहृदय साहित्यकार समूह को मधुर जी के सुदीर्घ और सकुशल सानिध्य की अभिलाषा है।

शिक्षा अधीक्षक,
नगरपालिका, बलिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बच्चों के कवि के प्रति हमारा दायित्व

—डॉ० राष्ट्रबन्धु

श्रद्धेय श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' बालगीतों के सुप्रसिद्ध कवि हैं। 'बालसखा', 'बालक', 'शिशु' तथा 'हल'—जैसी पुरानी बाल-पत्रिकाओं में बिखरा हुआ उनका प्रचुर बालसाहित्य कई संकलनों मे प्रकाशन की अपेक्षा में प्रतीक्षारत है। विज्ञान के अधुनातन प्रयोगों ने मुद्रण और प्रकाशन की दिशा में भले ही नये आयाम बनाये हों, लेकिन बालसाहित्य के प्रकाशन की दिशा में कोई प्रगति नहीं है। श्री मधुरजी जैसे बहुत-से बच्चों के कवियों की अच्छी रचनाओं को प्रकाशन का वरदान मिल ही नहीं पाता—संकलन छप नहीं पाते और जो संकलन हैं भी वे इतने महंगे हैं कि वे 'दर्शिनी' (शो-पीस) बनकर बच्चों के लिए दुर्लभ बना दिये जाते हैं।

इस कमी को पूरा करने में अगर हम लगें तो निश्चित ही मधुरजी की समस्त बालसाहित्यिक कृतियों का उपहार बच्चों को दिया जा सकने योग्य होगा और बच्चे उसे पाकर प्रसन्न भी होंगे और प्रोत्साहित भी।

पराधीन भारत में बालसाहित्य के विकास की जैसी ललक, स्वाधीन भारत में नहीं रही। जनसंख्या के अनुपात में हिन्दी की पत्रिकाएं नहीं बढ़ीं, पुस्तकें नहीं बढ़ीं, बच्चों के रचनाकारों की संख्या नहीं बढ़ी। साक्षरता और शिक्षा की आवश्यकता में बालसाहित्य का ही जब मूल्यांकन सही-सही नहीं हुआ, तो मधुरजी—जैसे सरल स्वाभिमानी बालसाहित्यकारों को पीछे ढकेलकर लोग आगे बढ़ गये। मधुरजी का कृतित्व दृष्टि-ओझल किया गया। आवश्यकता इस बात की है कि हम मधुरजी के बालसाहित्य का संकलन और संपादन उनके जीते जी उनकी सहायता से करें, उनके सामयिक प्रसंगों और समकालीन बालसाहित्यकारों के संस्मरणों से पुराने इतिहास को सुरक्षित रखें। वरना समय इसके लिए हमें जितना भी समय दे चुका, अब मिलने वाला नहीं।

संपादक

बालसाहित्य समीक्षा

१०६/३०६, रामकृष्णनगर,

कानपुर-२०८०१२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशिष्ट साहित्यकारों के चुने हुए पत्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिरगाँव
७. ७. २००६ वि०

प्रिय महाशय,

खेद है, मैं उपस्थित होने में असमर्थ हूँ। इधर चार महीने से शारीरिक कष्ट में हूँ। मन भी व्यग्र रहता है। यों भी ऐसे कार्यभार वहन करने में असमर्थ रहा हूँ : क्षमा कीजियेगा।

मेरी शुभकामनाएँ आपको समर्पित हैं।

भवदीय
मैथिली शरण गुप्त

(बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा के वार्षिकोत्सव में भाग लेने हेतु आमन्त्रण-पत्र के उत्तर में असमर्थता का यह पत्र आया था।)

दिनकर के पत्र

मुजफ्फर पुर
२४. ४. ४१

प्रिय मधुर जी !

जल्दी में बतलाने को पत्र लिख रहा हूँ कि मेरे निशानों पर ही मत जाइएगा। अपनी पसन्द की प्रत्येक रचना को संग्रह में स्थान दे दीजिये : आप की ओर से जो वक्तव्य रहे, उसमें रचनाओं का छोटा-सा इतिहास ही रहना चाहिए। मेरी भूमिका तो जाएगी ही !

आपका
दिनकर

कनलाल रोड,
पटना।
३१. ७. ४८

प्रिय मधुर जी !

कृपा-पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। न जाने आपको मेरा पत्र क्यों नहीं मिला। कृपया 'मधुर लहरी' की एक प्रति भिजवाइये या उसकी नकल ही भेज दीजिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन दिनों बहुत ही व्यस्त हूँ। कुछ लिखा नहीं है कि भेज सकूँ।

बलिया आकर दर्शन कर सकूँ तो यह मेरा परम सौभाग्य होगा।

आपका

दिनकर

कन्नूलाल रोड,

पटना।

१०-६-४८

प्रिय मधुरजी,

जयशंकर !

पत्र मिला। कविता की कॉपी भी मिली। मैं तो आपकी हाल की कविताओं पर दंग हूँ। सच पूछिये तो ये कविताएं मेरी अपनी मनोदशाओं को ही व्यंजित करती हैं और जी चाहता है कि काश, इनमें से कई के नीचे रचयिता की जगह पर मेरा नाम होता। इन्हें कई मित्रों को सुना चुका हूँ। कल शाम को पूरी कॉपी जयप्रकाशजी के यहाँ ले गया था और उन्हें तथा अन्य मित्रों को कोई पन्द्रह कविताएँ सुनाईं। सभी लोग बड़े ही चमत्कृत हुए। इधर बिहार में इनका अच्छा स्वागत होगा, ऐसी मेरी आशा है। इनके प्रकाशन की व्यवस्था कर रहा हूँ। अगर आप की ओर से कोई शर्त हो तो निःसंकोच भाव से लिखें कि मैं कहीं पक्का इन्तजाम कर सकूँ।

संग्रह में से तीन-चार कविताएं मैंने बिहार (मुंगेर) से प्रकाशित होने वाले "श्रीकृष्ण अभिनन्दन-ग्रन्थ" में दे दी हैं। अगर आपका चित्र पाँच-सात दिनों में मिल जाता तो और भी अच्छा होता।* ग्रन्थ-समिति की ओर से ४०) चालीस रुपये की क्षुद्र भेंट एक चेक के द्वारा भेजी जा रही हैं। इसे स्वीकार करेंगे।

आपका

रामधारी सिंह 'दिनकर'

(*इनका चित्र नहीं ही गया होगा क्योंकि मधुरजी कहते हैं—'मैंने अपने आप न तो कभी फोटो खिचवाया, न सिनेमा देखा।' परन्तु मित्रों के आग्रह को इन्होंने कभी ठुकराया भी नहीं। कई दशकों के बाद इन्होंने बड़े आग्रह पर 'गांधी' फिल्म देखा।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(साम्यवादी प्रगतिशील लेखक संघ के जवाब में जे० पी० ने 'नव संस्कृति लेखक संघ' गठित किया था। इस संघ के Convention के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में 'दिनकर' ने इन्हें आमंत्रित किया था। पत्र इस प्रकार है)—

सोशलिस्ट पार्टी (अखिल भारतीय) कान्फ्रेन्स

७वाँ वार्षिक अधिवेशन, पटना

२४-२-४६

प्रिय मधुरजी !

आपका पत्र मिला। पुस्तकें यों ही पड़ी हैं। अवकाश की प्रतीक्षा में हूँ जो समय पर मिलेगा ही।

तब तक एक निवेदन है। यहाँ १० मार्च को एक कवि-सभा होने जा रही है जिसमें हम लोग बहुत-से कवियों को एकत्र करना चाह रहे हैं। पंतजी भी पधारेंगे, ऐसी मुझे आशा है। अतएव, आप उस दिन अपने अवश्य पधारें और मुझे अपने घर अपना स्वागत करने का सुयोग दें।

आपका

दिनकर

दिनकर शोध संस्थान

82/2 ई, विधान सरणी ● पहलातल्ला

कलकत्ता—700004

13–9–80

आदरणीय मधुर जी,

प्रणाम;

आशा है आप सानन्द होंगे। इसके पूर्व भी आप को दो पत्र दिये जा चुके हैं। "दिनकर के पत्र" पुस्तक प्रेस में हैं। आपने हमारे चाहने पर दिनकर जी के 10–9–48 के पत्र की फोटो स्टेट कॉपी भिजवायी थी, जिसके लिए हम आप के आभारी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनकर शोध संस्थान ने यह तय किया है कि "दिनकर के पत्र" पुस्तक में जो पत्र प्रकाशित हों, उनकी फोटोस्टेट कापी, या मूल पत्र-संस्थान में रहने चाहिये। आप के कुछ पत्र ग्रन्थ में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है। आप विशेष कृपा कर के दिनकर के सारे पत्रों की फोटो स्टेट कापी हमें अविलम्ब भिजवा दीजिये। ग्रन्थ इस वर्ष के शेष में छप जायेगा। कीमत होगी 30/ रुपया, पृष्ठ 275 डिमाई साइज। आप के पत्र छपने पर संस्थान आप को एक प्रति सादर भेंट रजिस्टर्ड डाक से भिजवा देगा। आशा है शीघ्र ही इस कार्य को कर देंगे।

योग्य सेवा !

विनत

कन्हैयालाल फलफगर

श्री सोहनलाल द्विवेदी के पत्र

पो० बिन्दको, यू० पी०

27. 2. 51

प्रिय मधुर जी,

आपका मधुर पत्र तथा सुन्दर कविता मिली। धन्यवाद दूंगा। क्योंकि अभी तो आप से बहुत काम लेना है।

आपको क्या पता, आप हैं क्या ? आपका यह "अक्षयवसु" बाल-साहित्य में अमर रहेगा। यद्यपि आपने कम रचनाएँ लिखी हैं, किन्तु वे लाजवाब हैं। मेरा ध्यान पहले ही उनकी ओर आकर्षित हुआ था।

अतः मैं तो आपसे ऐसी मधुर रचनाएँ लिखवा कर बालसखा में छापना चाहूँगा। आपने 'होली पर' तथा अन्य सामग्री प्रेस के पते पर भेजने का शुभ समाचार भेजा था। मिलने पर, प्राप्ति सूचना दूँगा।

और आशा करूँगा कि बच्चों के लिए कविताएँ लिखना न छोड़ें। यह साहित्यिक सदावर्त आपके नाम को सदैव जीवन्त रखेगा।

शुभकामनाओं के साथ सस्नेह

सोहन लाल द्विवेदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पो० बिन्दकी, यू० पी०
6. 12. 58

प्रिय मधुर जी;

आज बहुत दिनों में आपको पत्र लिख रहा हूँ। 'बालसखा' का नव वर्षांक प्रकाशित होने जा रहा है। उसमें आपकी कोई मधुर कविता न जा सकी तो मुझे तो वह सूनासूना लगेगा। नववर्ष पर क्या नई कविता भेजना संभव नहीं सहोकेगा ?

एक बात कहना चाहता हूँ, आप बच्चों के लिए इतनी सफल रचनाएँ लिखते हैं कि मेरा वश होता तो मैं आपको १००० रु० प्रतिमास देता और कहता कि सब काम छोड़कर 'बालसाहित्य' में लग जाइए। इससे आपका अमर नाम ही न होता बड़ा महान कार्य होता; और अच्छी आय भी। वकालत तो सभी कर सकते हैं रुपया भी कमा सकते हैं; किन्तु यह प्रतिभा; यह मन, यह लगन है कहाँ किसमें ?

'बालसखा' के माध्यम से ही सही, मेरे अनुरोध पर ही सही, अपनी शक्ति का सर्वोत्तम उपयोग कीजिए। सदासर्वदा नहीं तो यदाकदा कविताएँ अवश्य लिखिए, और प्रकाशनार्थ भेजिए। उस रस के स्रोत के बन्द होने से तो सभी आनन्द का स्रोत बन्द हो जायगा। कविता सीधे इं० प्रेस भेज दीजिए। जितना शीघ्र भेज सकें, हमें सजाने सँवारने में सुविधा होगी।

आप पर लेख मैं अभी पढ़ रहा था। उसे ठीक कर रहा हूँ। जैसा चाहिए लगता है मुझे स्वयं लिखना होगा। नववर्षांक में नहीं तो उसे होलीकांक में प्रकाशित करूँगा।

मधुर लहरी तो भेजिए। आशा है आप स्वस्थ तथा प्रसन्न हैं। पत्रोत्तर दें।

स्नेही
सोहन लाल द्विवेदी

बिन्दकी, यू० पो०
24. 2. 59

प्रियवर,

आपने 'खेलें भारत के नौनिहाल' कविता भेज दी। मैंने उसे 'खेलो भारत के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नौनिहाल' कर दिया है। छाप रहा हूँ। जल्दी में लिखा है लगता है मेरे स्नेहानुरोध की रक्षा करने के लिए।

बहुत–बहुत कृतज्ञ हूँ।

'मधुविन्दु'–पढ़ते-पढ़ते रस विभोर हो उठा। बुढ़ापे में जवानी आ गई। मेरी बात की ही पुष्टि, दिनकर जी ने की है। बधाई देता हूँ, मैं अपने निर्णय पर। आप पर लेख तो मैं स्वयं ही अब लिखूंगा। दिनकर जी का लेख पढ़कर खुद लिखने की इच्छा हो आई। इधर जो अप्रकाशित रचनाएँ आपके पास हों मुझे प्रकाशित करने का गौरव प्रदान करें। मैं 'मधुविन्दु' से बहुत उत्कृष्ट रूप में उन्हें छपवा दूंगा। यथा सुविधा भेजिए। कुछ शीघ्रता नहीं है।

सस्नेह

सोहन लाल द्विवेदी

पं० माखन लाल चतुर्वेदी के पत्र

खण्डवा, ता० 9–11–1931

प्रिय महोदय,

पुनः बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि कई महीनों से आपने "कर्मवीर" की कोई खबर न ली। पू० चतुर्वेदी जी ने तो कहा कि क्या कवियों में जवानी आती ही नहीं। बालपन की सीमा समाप्त होते ही क्या बुढ़ापे की सीमा आरम्भ हो जाती है? खैर आपकी यह चुप्पी बहुत अधिक लम्बी है। आशा है कि इस उलाहने को प्रार्थना समझकर आप बराबर कविता भेजना आरम्भ कर देंगे।

भवदीय

श्री० बा० हर्डीकर

सम्पादक "कर्मवीर" खण्डवा (सी० पी०)

8–11–47

श्री प्रियवर,

आपका 1–11 का कृपा पत्र मिला। आपके पत्र ने सब स्मृतियाँ ताजी कर दीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धन्यवाद !

आप की कविताओं का संग्रह कृपया भिजवा दीजिएगा, देखकर लौटा दूंगा। उसके साथ ही कृपया "मधुर लहरी" की एक प्रति भी भिजवा दीजियेगा। आपकी कविताएँ मुझे बहुत अच्छी लगती थीं। शायद अभी भी उनका मूल्य घटा न होगा।

रही मुझे समर्पित करने की बात, सो यों आप जो चाहे करें, किन्तु आजकल तो बिना समर्पण के भी खूब पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं।

कृपा रखें।

आपका—
माखन लाल चतुर्वेदी

लिखिये 42 के संग्राम में आप ने क्या-क्या कष्ट उठाये। उस समय बलिया का कष्ट-कहानियों का यथार्थ रूप क्या था? मेरी इच्छा उस कहानी को जानने की बहुत है।

विनम्र—
माखन लाल चतुर्वेदी

सम्पादक, "कर्मवीर"

खण्डवा
21–7–49

प्यारे मधुरजी,

आपका कृपा-कार्ड मिला। कृतज्ञ हूँ। हर्ष है दिनकरजी की कृपा से पुस्तक आ रही है। आपके कार्ड के उत्तर की स्वीकृति क्या दूं मेरी "स्वीकृति" तो दिनकर की इच्छा का ही दूसरा नाम है। मैंने तो अपने "मधुर" को उपेक्षा से भुलाया ही होगा। दुलराया कब, जो इसका अधिकारी होगा।

कृपा रखें। मेरा स्वास्थ्य गत छः महीनों से गड़बड़ है। ताजे जमे गाय के मट्ठे पर हूँ। अतः विस्तृत पत्र लिखने में असमर्थ हूँ।

पुस्तक छपते ही तुरन्त भिजवा दें।

आपका अपना
मा० ला० चतुर्वेदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कर्मवीर" खण्डवा
26-9-1952

प्यारे मधुरजी,

सप्रेम नमन !

कृपा कार्ड और "मधुविन्दु" की प्रति दोनों मिल गई। उलट-पुलट कर पढ़ भी गया। यूं आपकी पाण्डुलिपि में कितनी ही रचनायें पढ़ चुका था। जुलाई मास के अन्त में जब दिनकर खण्डवा आये तब उन्होंने आपकी और आपके संग्रह की चर्चा की थी। आप के कितने ही मधुर छन्द उन्हें याद थे "मुकुट बेच दो राजा यह महल बेच दो रानी" वाली पंक्ति को उन्होंने एक सभा में दुहराई भी थी। यहाँ के साहित्यिक मित्रों ने "मधुर" का नवीन परिचय उस दिन दिनकरजी से पाया।

आपके पेट के रोग की बात सुनकर चिन्ता हुई। कृपया लिखें कि पटना में कौन सा इलाज हो रहा है।

इधर आप क्या लिख रहे हैं ? दिनकर जी द्वारा आप को खोज निकालने की शोभा तो तब और भी बढ़े जब आप इसके पश्चात जीवन को बहुत निकट से छूने वाली कोई और रचना भी पीढ़ी को दें। और यह समर्पण किस को ? दु... को ? देरी को ? दारिद्र को ? घिसे पैसे की यह कैसी बाजार दर ?

आपका अपना
माखन लाल चतुर्वेदी

माखनलाल चतुर्वेदी
संपादक, कर्मवीर

खण्डवा, (म० प्र०)
२८-८-५४

प्यारे मधुर जी,

सस्नेह नमन। लगता है, यह बालकों पर लिखी कविताओं वाली पुस्तक ... पास कोई छै महीने पड़ी रही। इस देरी के लिए, मानव-सभ्यता जाने कब ... क्षमा माँगती रही है, सो मैं भी माँगता हूं। यथार्थ में तो 'लहर-बहर का ... पर जीने वाले मेरे जैसे भाग्य से रूठे हुए लोग, देरी ही लगा सकते हैं। इतना ... उनके हाथ में होता है। अस्तु।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपकी रचनाएँ खूब अच्छी बन पड़ी हैं। कला और कलेजा दोनों साथ-साथ चले हैं। आशा है, ये रचनाएँ किलकारी-नरेशों, उपद्रव-धीरों और घर क्यों जहान को सर पर लिये घूमने वाले (Little tyrants) नन्हें-मुन्ने जालिम राजा-बेटों को खूब पसन्द आयेंगी। मैं उन लोगों को ये गीत सुना चुका हूँ, जिनकी जागीर में सोते और जागते मेरी दाहिनी और बायीं दोनों भुजाएँ दिन और रात रहती हैं, पढ़ने और खेलने के लिए और सरहाना बनाकर सोने के लिए।

कृपा रखें।

विनम्र—

माखन लाल चतुर्वेदी

श्री रामसिंहासन सहाय मधुर

मुख्तार

मधुर स्वागत सदन

बलिया (उत्तर प्रदेश)

माखन लाल चतुर्वेदी

संपादक

कर्मवीर, खण्डवा, म० प्र०

२५–१०–५७

प्यारे मधुर जी,

सप्रेम नमन। कार्ड बहुत दिनों में दे रहा हूँ, क्षमा करें। आप को मुझसे पहिले बूढ़े होने का हक नहीं है, अतः आप पुनः लिखें; कर्मवीर में भी लिखें। यदि आप के कालेज में पढ़ने वाले चिरंजीव कुछ लिखते हों तो उन्हें प्रोत्साहित करें। अमीरी यदि अपनी शक्ति और सुविधा जुटाने में नहीं थकती तो सूझ अपने बलिदानपूर्ण निर्माणकारी वातावरण को जन्म देते रहने में क्यों थके ?

कुशल संवाद दें। कृपा रखें। बच्चों को वात्सल्य।

विनम्र

मा० ला० चतुर्वेदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्डवा (म० प्र०)
२०-४-५९

माखन लाल चतुर्वेदी
'संपादक, कर्मवीर

प्यारे मधुरजी,

सप्रेम नमन। १४-४ का कृपा-पत्र मिल गया। आपके गौरव का ही तो सब पसारा है। आप मेरे निकट रहे हैं। बलिया में 'कविता' के विषय में आपने जो समीक्षा दी, वह देखने को कैसे मिले ?

मुझे आपकी बात स्वीकार है। कृपया पूरे प्रश्न लिखकर मेरे पास भेजवा दें, मैं किन-किन प्रश्नों पर लिखूं या बोलूं। चाहे असफल होऊँ, पर प्रयत्न कर देखूंगा। पत्र आपके पास मैं भेजवा दूंगा। आपका हक मेरे सर आँखों पर।

आप समय की धाराओं को पकड़ने में न अपने को छोटा अनुभव करें, न संकोच करें। और लिखना प्रारम्भ करें—किसी भी विषय पर। जिस विषय पर आप लिख देंगे, वही कविता का expression बन जायेगा। भारत के स्वतंत्र हो जाने के पश्चात् लोगों की समझ की भूख जागी है। शताब्दियों बाद की किसी देश की प्रतिभा की इस मांग को भोजन दें। आलोचना के पत्थर फेंकने वाले मित्रों की ओर स्नेह से, किन्तु जरा उपेक्षा से भी देखें। जो लोग बन्दरों के बच्चों के खेलने और कुलांटें खाने पर प्रमुदित होते हैं, वे अपने बच्चों का रूठना, मचलना और थिरकना आदि सूझों में नहीं समझ सकते, या नहीं समझना चाहते—ऐसी बात अधिक दिनों तक नहीं होगी, आप मानें। विरोध, उपेक्षा, मौन और प्रशंसा—मनोविज्ञान की इन चार स्थितियों में से गुजरते साहित्य का बुढ़ापा न आ जाय। अतः खूब तरुण और बच्चे बनकर लिखें, यही निवेदन है। बड़े बच्चे और सब बच्चों को मैं देखना चाहता हूँ। कैसे बने ?

विनम्र
माखन लाल चतुर्वेदी

कर्मवीर-खण्डवा
१२-८-५७

आदरणीय श्री मधुरजी : सादर नमस्कार

पूज्य दादा (मा० ला० चतुर्वेदी) को श्री विद्यार्थी जी द्वारा भिजवाई गई आपकी सभी पुस्तकें यथासमय प्राप्त हुई। बहुत समय हो गया। अस्वस्थता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारण वे आपको पत्र नहीं लिख सके। आज मुझे आदेश दिया है कि मैं 'प्राप्ति स्वीकार' उनकी ओर से भेजूं। साथ ही उन्हीं के शब्दों में Leader Press Allahabad से जैसे ही पुस्तकें प्राप्त होंगी वे उनका एक set आपकी सेवा में निश्चय ही भिजवा देंगे। कृपया उन्हें लिखें कि इधर आप क्या लिख रहे हैं— कर्मवीर में बहुत समय से आपकी रचनाएँ प्राप्त नहीं हुई हैं। अपने कुशल समाचार भी उन्हें कृपया समय-समय पर देते रहा करें। आशा है आप सानंद होंगे। प्रोफेसर श्री विद्यार्थीजी सकुशल हैं।

विनम्र

श्री कान्त जोशी

श्री गुरुभक्त सिंह 'भक्त' के पत्र

आजमगढ़

विक्रमी सम्वत् चैत्र मास

प्रिय मधुर जी,

वसंत आगमन एवं नवीन सम्वत की बधाई व शुभकामनायें ! बौराये रसालों में गदराये टिकोरों की तलाश में आप नित्य प्रातः सरि-संगम की ओर आजकल अवश्य जाते होंगे।

आया वसंत फूल खिलाता चला गया।
यौवन उछाल नभ से मिलाता चला गया।
गदरा गई है ऊख, हैं रस पोर-पोर में।
आँखों में रस वह डाल, पिलाता चला गया।
है काम आम में छिपा, बरसाता पंच बाण।
शिव, ध्यान, ज्ञान मान डिगाता चला गया।
सोने से खेत भर गये, हँसती सुनारियां।
जौमाला, कनकफूल, पिन्हाता चला गया।
ये ताल स्वर में राग हमारे बंधे हुए।
प्रिय के स्वरों में, राग मिलाता चला गया।
सयम से आँख मूंद ली, होली को आते देख।
भूलें हजारों, सब को छिपाता चला गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है लाख बहाने, नहीं आने के किसी के।
उनको दिखाता आँख, लुभाता चला गया।
हमजोली भोलियों को मेरे घर का पथ दिखा।
मधुवन में उनको, मुझसे मिलाता चला गया।

गुरुभक्त सिंह 'भक्त'
३१-३-८०

आजमगढ़
२०-५-१९८०

प्रिय मधुरजी,

आशीर्वाद

कुछ समय पूर्व आपके पुत्र द्वारा आपका शुभ समाचार मिला था। पहली जून से दीवानी में लम्बी छुट्टी हो रही है। यही अवसर है कि हम आप बैठकर कुछ साहित्यिक परिचर्चा कर सकेंगे। आपको यह जानकर हर्ष होगा कि मैंने अपनी "आत्मकथा" नामक पुस्तक पूरी कर ली है। उसमें विशेषत: बलिया की घटनाओं की ही चर्चा है, क्योंकि मेरे पिताजी का विशेष चिकित्सालय का कार्यकाल अपने ही जिले में बीता, अतः मेरा यौवनकाल का पूरा जीवन उसी काल से सम्बन्धित है। आप उसे पढ़कर, मेरे अनुसंधानों तथा पुरातात्विक खोजों की कथा पढ़कर चकित रह जायेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि आप कहीं बाहर न जांय। मैं ३१ मई को आ रहा हूँ।

सबको यथा योग्य।

गुरुभक्त सिंह 'भक्त'

आजमगढ़
20. 10. 1981

प्रिय मधुर जी, आशीर्वाद,

भावी लक्ष्मी पूजा दीपावली पर मेरी बधाई व शुभकामनायें। लगता है सुपुत्रों के वकालत की व्यवस्था के कारण आप को भी पत्र भेजने का अवकाश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं मिलता। हर्ष की बात है मुझे भी आप लोगों ने यात्रा वर्जित कर दिया है, यों जी आप लोगों से मिलने को छटपटाता है।

जैसा मैं आप को पूर्व सूचना दे चुका हूँ, कविता की सभी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और अंतिम खेप "कुसुमाकर" के साथ आदर और सम्मान पा चुकी हैं जिसका सूत्रपात आपने प्रयाग के "गृहलक्ष्मी" पत्रिका में अपने सम्पादन-काल में किया था। बधाई।

बलिया-निवास–समय में स्व० ठाकुर विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह ने मुझे कुछ गद्य लेखों के लिए भी प्रेरित किया परन्तु पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' सम्पादक ने मेरे हृदय में पद्य का बिरवा बो दिया जो आज कल्पवृक्ष बन देश पर छा गया।

इसी की गद्य उपशाखा "गद्य कल्पद्रुम" चार नाटक और कहानियों का संग्रह, मैंने प्रकाशन हेतु "किताब महल" पुराने प्रकाशक, प्रयाग के यहाँ भेज चुका हूँ। पं० नर्मदेश्वर चतुर्वेदी द्वारा जहां तक पता चला है उनकी समीक्षा में खरी उतरी हैं परन्तु अभी तक उत्तर का इन्तजार है। दीपावली में बलिया जायेगें, उनसे मिठाई खाने का प्रयास अवश्य कीजियेगा। शुभ पर्व।

गुरुभक्त सिंह 'भक्त'

डा० भगवत शरण उपाध्याय के पत्र

9, प्रीतम रोड, देहरादून,
22. 7. 75.

प्रिय भाई,

कल मेरा ग्रन्थ-'भारतीय कला का इतिहास' ४५ दिनों के अथक परिश्रम से प्राय: ५०० पृष्ठों में समाप्त हो गया। आज आपका दिन था। प्रातः ही उठकर दोनों विषयों की रूपरेखाएँ आठ बजे तक समाप्त कर दीं और आपको लिखने बैठा। इन्हे डाक से अभी भेजकर द्विवेदी जी का काम भी करना है। आज नहीं तो कल तक उनके कागजात भी रवाना कर दूँगा।

क्या करूँ रिटायर्ड जीवन है, आना जाना कठिन हो गया है। फर्स्ट क्लास से नीचे यात्रा नहीं कर सकता, कुछ तो व्यस्तता, विशेष कर अपनी क्षमता की असुविधा के कारण ऐसा भी नहीं कि बलिया की कोई संस्था किसी आयोजन मे निमन्त्रित कर ले।

भगवत शरण उपाध्याय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Ujjain, M. P.
5. 7. 80

प्रिय भाई,

आपकी चिट्ठियाँ मिली। मसूरी से अभी लौटा और आपकी तीसरी चिट्ठी भी मिली। मैंने डॉ० जयमल राय को आज ही लिख दिया है। आशा है सब ठीक हो जायगा।

'भक्त' जी काम कर रहे हैं जान कर बड़ी खुशी हुई। उनसे मेरा नमस्कार कहें। मैं अपनी आत्म-कथा लिखने की सोच रहा हूँ। सुना है, उनकी 'नूरजहाँ' गोरखपुर के कोर्स में लग गयी है। उस पर मेरी एक समूची पुस्तक 'नूरजहाँ' ही नाम से प्रकाशित है जो अब बहुत दिनों से अप्रकाशित पड़ी है। उनकी कोर्स में लग जाने से शायद मेरी पुस्तक की भी विद्यार्थियों को जरूरत पड़े। अगर कोई गोरखपुर का प्रकाशक उसे फिर छापे तो एक मेरे पास पड़ी है, भेज दूँ।

आप सपरिवार सानन्द होंगे।

आपका ही सादर
भगवत शरण उपाध्याय

डा० उदयनारारायण तिवारी के पत्र

डेकेन कालेज, पूना-६
१५-६-५६

प्रियवर मधुरजी,

सस्नेह नमस्कार

गत ३० अप्रैल से मैं पूने के Summer School of Linguistics में हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक व्याकरण के सम्बन्ध में भाषण देने के लिए आया हूँ। यहाँ लगभग १०० छात्र हैं जो देश के विभिन्न भागों से भाषा शास्त्र का अध्ययन करने के लिए आए हैं। इन्हें लेक्चर देने वाले १४ प्रोफेसर हैं जिनमें एक मैं भी हूँ। ४ अमेरिकन प्रोफेसर हैं। छात्रों में से अधिकांश देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के वे प्रोफेसर हैं जो भाषा पढ़ाते हैं। यहाँ का माध्यम अंग्रेजी है क्योंकि तमिल, तेलुगु, मलयायम, कन्नड़ तथा कुछ क्षेत्र के लोग अंग्रेजी ही समझते हैं। २३ जून को यहाँ का कार्य सम्पन्न हो जायगा। २४ जून से २८ जून तक बम्बई में रहूँगा और ३० जून को प्रयाग पहुँच जाऊँगा।

आपका
उदय नारायण तिवारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इलाहाबाद-६
५-१२-८१

प्रियवर भाई मधुर जी,

सस्नेह नमस्कार,

मैं 78 वर्ष 6 महीने का हुआ। जब से 79 वें वर्ष में प्रवेश किया है नितान्त निर्बलता का अनुभव करता हूँ। शरीर की गाँठों में दर्द रहता है। मुश्किल से एक मील टहल कर घर लौट आता हूं। जब भगवान बुद्ध अस्सी वर्ष के हुए तब उनके शिष्य आनन्द ने पूछा—भगवान् कैसा लगता है? इस पर बुद्ध ने उत्तर दिया—क्या पूछते हो आनन्द? इस शरीर रूपी रथ के पुर्जे-पुर्जे ढीले हो गये हैं। यही हम लोगों के शरीर की हालत है। नदी किनारे के वृक्ष की तरह हैं। पता नहीं कब ढह जाएँ। अब सँभल कर रहने की जरूरत है क्योंकि बुढ़ापे में टूटी हूई हड्डी जुटती नहीं।

उदय नारायण तिवारी

बरेली, उ० प्र०
18. 3. 61

प्रिय श्री मधुर जी,

मैंने पत्र इससे पूर्व भी आपको लिखे पर उत्तर से वंचित रहा। अपना छोटा भाई समझकर इतनी कृपा तो मुझपर करते ही। बालगीतों के जिस संकलन का कार्य हम लोग कर रहे थे, उसे पूरा कर लिया है और अब उसे प्रेस में देने वाले हैं। कुछ विशिष्ट कवियों के चित्र भी उसके लिए अवश्य चाहते हैं। अतएव आप से करबद्ध प्रार्थना है कि अपना एक चित्र उसके लिए जितना शीघ्र हो सके अवश्य मेरे पास भेजने का कष्ट करें। यदि आप चाहेंगे तो ब्लाक बनवा कर उसे वापिस भी कर दूँगा। आपका चित्र उस संकलन में होना नितान्त आवश्यक है जिससे बच्चों के अन्य कवियों का और स्वयं बच्चों का उत्साह बढ़े।

आशा है कृपा करेंगे।

आपका ही
निरंकार देव सेवक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इलाहाबाद
25. 6. 1953

प्रिय मधुर जी,

कल आपका 20 तारीख का पत्र "शेर का शिकार" के साथ मिला। कृपा के लिए धन्यवाद। क्या भाषा और क्या भाव, दोनों ही आपके अनूठे होते हैं।

कल ही सोचा था कि आपको पत्र लिखूं, किन्तु इससे पहले ही आपने कृपा कर दी। आशा है आप सपरिवार सानन्द होंगे।

भवदीय
व्लली प्रसाद पाण्डेय
सम्पादक, बालसखा

भोजपुरी कवि, प्रिंसिपल मनोरंजन बाबू का एक पत्र

मधुर जी, राउर मधुर प्रसाद
ठीक दिवाली के दिन पवलीं
भइल बड़ा अहलाद।
मधुर जी,

चित्रगुप्त पूजा के दिन
भेजत बानी संवाद
सबके कुल में कुसल रहे,
मनके मिट जाय विषाद
मधुर जी,

धन्य हमार भाग्य हऽ
पवलीं राउर आशीर्वाद
स्नेह अइसहीं बनल रहो,
मिट जाय सकल अवसाद
मधुर जी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा हरदम याद रहेला
अपने के ऊ बानी
"इतिहासों के पन्नों पर
उड़ते हैं राजा रानी" ।।
हऽ ई देह जगत के खाद,
मधुर जी,

खबर देब कहवाँ बाड़े
पाँड़े श्री राम विचार
बड़ा अंदेशा बा मनमें,
मिट जाय हमार प्रमाद,
मधुर जी,

राम बइठलें सिंहासन पर
हरदम उहे सहाय,
उनके सदा आसरा हमरा,
झूठे सब बकवाद
मधुर जी,

पत्ररूप में सदा अइसहीं
देत रहब दरसन,
रामसिंहासन के किंकर हऽ
दास मनोरंजन ।
मधुर जी,

—मनोरंजन प्रसाद सिन्हा
२० अक्टूबर, १९७१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रीवाँ (म० प्र०) 3. 9. 57

प्रियवर,

सादर वन्दे। आपको मैं यह पत्र कुछ कष्ट देने के लिए लिख रहा हूँ। किन्तु मेरे सहयोगी और साथी होने के नाते मुझे विश्वास है कि आप क्षमा करेंगे।

मैंने "ये हैं बच्चों के कवि' शीर्षक एक परिचयात्मक निबन्ध लिखने की योजना बनाई है जिसमें हिन्दी के उन सभी कवियों (जो कि बाल कविताएँ लिखते हैं) का परिचय व उनकी कविताओं के उद्धरणों के साथ-साथ "बाल कविताओं" पर उनके विचारों का अभिव्यक्तिकरण होगा। अपने बच्चों को उनके कवियों से तथा उन कवियों के विचारों से उन्हें परिचित कराना हीं इसका उद्देश्य है। अपने इस निबन्ध में मैं आपका उल्लेख अत्यावश्यक समझता हूँ। अतः आपसे अनुरोध है कि आप अपना परिचय, एक फोटो- कुछ कविताओं के उद्धरणों के साथ-साथ अपने विचार बालकविताओं पर लिखें। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपका सहयोग मुझे निश्चय मिलेगा। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

भवदीय
हरिकृष्ण देवसरे

श्रद्धेय मधुर जी,
सप्रेम नमस्कार,

नरहीं, चितबड़ा गाँव
बलिया 18.7.67

मैं कई दिन आप से भेंट करने गया किन्तु आप इतने व्यस्त रहते हैं कि भेंट करने का साहस ही नहीं होता।

आपकी "बच्चों के गीत" रचना को पढ़ा। बहुत ही सशक्त ओजस्वी एवं मधुर मनमोहक है। अपने परिवेश में यह कृति बेजोड़ है। मधुरिमा लय, प्रवाह एवं शब्द चयन जैसे एक ही में पिरो दिये गये हैं और उस गुम्फन में कोई कृत्रिमता नहीं आने पाई है। "हीरा चमके, मोती चमके, चमके चाँदी सोना"" मेरा श्याम सलोना।" किस माता का हृदय नहीं है ? कहीं बहिन बोली सिखलाती है तो कहीं बच्चा कश्मीर जाने के लिए मचलता है तो कहीं "भारत के नैनिहाल" सीमा रक्षा के लिए कटिबद्ध पाये जाते हैं। फिर तो संसार को ही हथेली पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उछाल डालते हैं। बाघ इक्कीस ही फँदा किन्तु आपके सिपाही दूना बयालीस फाँद गये।... ... . प्राथमिक विद्यालयों की प्रतियोगिता एवं काव्य नाटक योग्य है। बहुत सुन्दर।

अर्थात् यह पुस्तक साज-सज्जा एवं काव्य व कलेवर से पूर्ण रूपेण सशक्त है। आपकी मधुरता सर्वत्र एक-सी दर्शनीय है।

मिलने पर शेष बातें होगीं। आशा है स्वस्थ हैं।

भवदीय
लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी

सोनवानी, गाजीपुर (उ० प्र०) '.7 61

आदरणीय मधुर जी,

नमस्कार,

"सुबाहु वध" की प्रति मिली। कृतज्ञ हुआ। इतने सशक्त-सुबोध, सही अर्थ में बाल-साहित्य प्रस्तुत करने के लिए बधाई। मेरे कक्षा ३ में पढ़ने वाले पुत्र ज्ञानेश्वर जी ने इसे हथिया लिया है और बगइचा-बगइचा आम खाते पढ़ते फिरते हैं। अनेक छन्द याद हो गये। कहते हैं, अन्त्याक्षरी में काम करेगी। पुनः बधाई। आशा है, आप सानन्द हैं। शीघ्र ही मुलाकात करूँगा। गिरिधर बाबू को नमस्कार।

आपका—विवेकी राय

विधान भवन, लखनऊ
दिनांक 19.4.76

ठाकुर प्रसाद सिंह
उप सचिव, मुख्य मंत्री

प्रिय मधुर जी,

प्रसन्न होंगे।

आपका पत्र मिला, आभारी हूँ। आपका बहुत पुराना परिचित हूँ, छोटा भाई हूँ, मित्र हूँ। मेरे लिये आपके मन में अपनापन होना स्वाभाविक ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपकी रचनाओं का शुरू से ही प्रशंसक रहा हूँ। जब भी कभी अवसर आता है, ध्यान से उन्हें पढ़ता हूँ और उनसे प्रेरणा भी लेता हूँ। कभी अवसर मिलेगा तो दर्शन भी करूँगा

मित्रों को स्नेह,

आपका,

ठाकुर प्रसाद सिंह

रामकृष्ण एवन्यू, राजेन्द्रनगर-पटना-16

30.9.72

मान्यवर मधुर जी,

सादर अभिवादन। 25/9 का कृपा पत्र। आपने बधाई भेजी। उसे मैंने आशीर्वाद के रूप में ग्रहण किया। आप अग्रज हैं। 27-28-29 में, जब मैं विद्यार्थी था आपकी कविताएँ पढ़-पढ़कर प्रफुल्लित हुआ करता था : मेरे 66 वें जन्म दिन के अवसर पर पत्र भेज कर आपने आत्मीयता का परिचय दिया है। मैं भावविभोर हूँ। आपने अखिल भारतीय स्तर पर सम्मान की बात लिखी है। मैं अपनी बात लिखूं। नहीं जानता, कौन-सी धूल वज्र है, नहीं जानता, कौन-सी धूल शांति। नहीं जानता, कौन-सा सूर्योदय अभिषक है—कौन सा सूर्यास्त संक्रान्ति। सांस पर सांस मैं काट रहा हूँ। आयु की फसल प्रार्थना का भाव अभी खेत नहीं हुआ है। शब्दों में निःस्वर दिगंत नहीं हुआ है।

मेरे प्रकाशक हैं—नवारत प्रकाशन, खजांची रोड, पटना—4

शीघ्र प्रकाश्य साहित्यपर अगले पत्र में लिखूंगा। आशा है प्रसन्न और सुखी होवें।

स्नेहाधीन

केदार नाथ मिश्र 'प्रभात'

30.9.72

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाँसडीह--बलिया
२४-१२-७२

परम मान्यवर श्री मधुर जी,

सादर प्रणाम

आप की ७०वीं वर्षगाँठ जनपद के साहित्यकारों एवं चिन्तकों द्वारा सोल्लास एवं सोत्साह मनाई गई, यह जानकर बहुत ही हर्ष हुआ। ऐसा होना ही उचित है।

मैं भी आप के ७०वें जन्म-दिवस पर आप के दीर्घ जीवन एवं स्वास्थ्य की हार्दिक मंगल कामना करता हूँ।

इसे झुठलाया नहीं जा सकता कि आप सच्चे युग-प्रतिनिधि कवि हैं। यों तो आप राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख कवि हैं, लेकिन इस बलिया जनपद को आपने अपनी प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी कविताओं से अनुप्राणित कर निश्चय ही नया मोड़ दिया है। मुझे आपसे तथा श्री जगदीश पाण्डेय 'सुबास' से प्रभूत प्रेरणाएँ प्राप्त हुई हैं।

आप जनपद के कीर्ति-स्तम्भ हैं—ज्योति शिखर हैं। सरलता, सादगी, सौम्यभाव तो आप की जन्मजात प्रकृति है। ये सब मैं प्रशस्ति की बातें नहीं लिख रहा हूँ, यथार्थ चित्र का अंकन है।

मैं भी आप के साहित्यिक जीवन पर भविष्य में पत्रों में लेख लिखना चाहता हूँ। आप से मिलकर सामग्री तैयार करूँगा। आप का पूरे जनपद की ओर से व्यापक अभिनन्दन होना चाहिए तथा एक विशाल अभिनन्दन-ग्रन्थ निकलना चाहिए। ··· — - यह सब आप से कहना शोभा नहीं देता, परन्तु, अपनों से समय पर सब कुछ कहा जाता ही है। कष्ट हेतु क्षमा।

आपका ही
श्रीराम सिंह 'उदय'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यारपुर, पटना-१
21-5-74

पूज्यवर,

सादर नमन

आपके आशीर्वादात्मक पत्र का आभार स्वीकार 15 दिनों के बाद भेजते हुए लज्जित हूँ। आपने 'कौशिकायन' को देखने की कृपा की, उस पर अपने उदार विचारों से मुझे अनुगृहीत किया इसे मैं अपना ही नहीं, सारे भोजपुरी नवोदित साहित्य-सेवियों का सहारा समझ रहा हूँ। खड़ी बोली—हिन्दी में प्राण फूंकने वाले आप जैसे महानुभाव से अपनी मातृभाषा की 'रूखर आखर' अभिव्यक्ति की सराहना मेरी अनगढ़ मानस-मूर्ति का संस्कार परिष्कार करे, इसी आकांक्षा के साथ आप की शुभ कामना शिरोधार्य है।

बन्धुवर कपिल जी से आप के संदेश सुना दिये। वह अलग से अपने आभार सेवार्पित करेंगे।

शुभ संयोग से यदि कभी बलिया आऊँगा तो दर्शन-लाभ होगा।

स्नेहाधीन
अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

हरदोई (उ० प्र०)
31. 1 77

आदरणीय "मधुर" जी

सादर अभिवादन

आपका कृपा पत्र मिला। किन शब्दों में आपकी सहृदयता का वर्णन करूँ समझ में नहीं आता। रचनाएँ, फोटो, परिचय, सभी कुछ प्राप्त कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

मैं सम्पूर्ण लगन व परिश्रम से इस संकलन की पूर्णता में तत्पर हूँ। आप सबका आशीर्वाद ही मेरा संबल है। भविष्य में भी आपकी कृपा की आकांक्षी हूँ। शेष शुभ है। मेरा गीत संकलन "अन्तर्ध्वनि" भी छप गया है। बच्चों के लिए "त्योहारों के गीत" नामक संकलन छप रहा है।

नवीन रश्मि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाराणसी
10. 4. 78

आदरणीय भाई !

सादर प्रणाम

आशा है सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं। आप का कृपा-पत्र मिला। 'बाल-गीत-संग्रह' आपको रुचिकर प्रतीत हुआ, यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। 'जीवन-शिक्षा' में तरुण भाई के स्नेह वश लिखता रहता हूँ। अब आपका स्नेह भी लिखते रहने की प्रेरणा दे रहा है। अवश्य लिखता रहूंगा। काशी से एक बालपत्रिका 'आदर्श-बालसखा' भी प्रकाशित होने लगी है। कभी-कभी उसमें भी रचनाएं निकल जाती हैं।

बहुत दिनों आपका दर्शन नहीं हुआ। काशी आने पर अवश्य कृतार्थ करें। पता पुराना ही है। मकान के सामने वाले मैदान में ही चारों भाइयों का एक-एक फ्लैट बन गया है।

आपकी नव प्रकाशित पुस्तक का कुछ अंश देखने को मिला। काव्य के साथ चित्र-योजना और मुद्रण सभी कुछ सराहनीय है। बधाई स्वीकार करें।

सबको यथायोग्य कहें।

आपका
श्यामला कांत वर्मा
सहायक निदेशक,
राज्य हिन्दी संस्थान, उ० प्र०
वाराणसी।

53, छोटा चांद गंज, लखनऊ-२२६००७
14. 8. 78

परम श्रद्धेय,

सादर अभिवादन

आपके दर्शनों तथा सानिध्य का सौभाग्य बहुत ही थोड़े समय के लिए मिल पाया था फिर भी आपकी विद्वत्ता तथा आशीर्वाद मेरे लिए सदैव मार्ग-दर्शक प्रेरणा-स्रोत रहेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी बालगीतों को आपने जिस शैशवावस्था से सजाया-संवारा है, वही आज फल-फूल कर परिमार्जन की ओर अग्रसर है।

इस वर्ष उ० प्र० हिन्दी संस्थान का बालसाहित्य पुरस्कार श्री स्वर्ण सहोदर जी को मिला है।

पत्र लिखने में विलम्ब की क्षमा याचना सहित आपका आशीर्वाद चाहूंगा।

सूर्यकुमार पाण्डेय

गाजीपुर
24. 11. 79

आदरणीय मधुर जी !

आज आपका जन्म दिन है, और आप 76 वर्ष के हो गए। यह 'जनवार्ता' में प्रकाशित डा० शोभनाथ लाल के लेख से ज्ञात हुआ। ईश्वर से प्रार्थना है—आप स्वस्थ रहें और शतायु हों।

जन्म-दिवस की हार्दिक बधाई स्वीकारें।

अपना ही
श्री कृष्ण राय 'हृदयेश'

बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा

चलता पुस्तकालय भवन, टाउनहॉल, बलिया

23. 11. 79

आदरणीयेषु,

आपकी 76 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सभा की ओर से आपका साहित्यिक सम्मान करने का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम की एक प्रति संलग्न है। आप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से हमारा साग्रह अनुरोध है कि निर्धारित समय पर उपस्थित होकर मंगल कामना प्रकट करने का सुअवसर हमें प्रदान करें।

आपका विश्वासपात्र
नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
अध्यक्ष

सेवा में,

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर'
जगदीशपुर, बलिया।

रोहिताश्व अस्थाना
8. 10. 81

770 सराय थोक पश्चिमी
हरदोई (उ० प्र०) 241001

आदरणीय मधुर जी !

सादर नमन्

विनम्र निवेदन है कि लखनऊ के एक प्रकाशक से हम "हिन्दी के लोक प्रिय बाल गीत" नामक बाल गीत संकलन अपने सम्पादन में प्रकाशित करा रहे हैं। यह संकलन भारतेन्दु युग से आज तक के बालगीतों का प्रतिनिधित्व करेगा।

अतः आपसे निवेदन है कि कृपया वापसी डाक से अपने दो नवीनतम बालगीत संक्षिप्त परिचय तथा नवीनतम चित्र उक्त संकलन में प्रकाशनार्थ प्रेषित करने की कृपा करें।

आपकी कुछ रचनाएँ पहले की हमारे पास हैं किन्तु सम्भव है वह छप चुकी हों। अतः कृपया रचनाएँ नई, संक्षिप्त परिचय तथा चित्र शीघ्र ही भिजवाने की उदारता पूर्ण कृपा करें।

पुस्तक प्रकाशित होते ही आपको पुस्तक की एक प्रति सादर समर्पित की जायगी। कृपया प्रथम वरीयता प्रदान करके अपनी सामग्री हमें भिजवाने की उदारता बरतें तथा अपनी अवस्था के ही अन्य परिचित बाल गीतकारों के पते भी दें ताकि भारत के सभी बालसाहित्यकारों को इसमें शामिल किया जा सके। और यह ग्रन्थ बालगीत साहित्य के शोधार्थियों का मार्ग दर्शन कर सके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशेष रूप से डा० श्रीनाथ सिंह, आरसी प्रसाद सिंह आदि के पते हों तो कृपया लिखें। आभारी हूंगा।

विश्वास है आपकी सामग्री शीघ्र ही प्राप्त होगी। दीवाली की मंगल कामनाओं सहित सधन्यवाद।

आपका ही
रोहिताश्व अस्थाना

पटना
18. 10. 84

श्रद्धेयवर !

सादर प्रणाम

आपका दिनांक 11. 10. 84 का कृपा-पत्र मिला। साथ ही संलग्न तीन गीत भी हस्तगत हुए। स्नेह-स्मरण के लिए आभारी हूं। अपनी अति व्यस्तता के बावजूद आपने मेरे लिए जो अमूल्य समय दिया, उसके लिए आभार-प्रदर्शन मात्र औपचारिकता होगी। विश्वास है, आपका स्नेह सदा मिलता रहेगा। साक्षात्कार प्रकाशित होते ही अंक भिजवाऊंगा।

आदरणीय डॉ० शोभनाथ लाल को मेरा सादर अभिवादन कहेंगे। उनकी दोनों पुस्तकों पर मेरी समीक्षा "बाल भारती" में स्वीकृत है। "गरिमा-भारती" में भी समीक्षा आ रही है।

कृपा-भाव बनाये रखें।

स्नेहाकांक्षी;
भगवती प्रसाद द्विवेदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मृति-
शेष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रकवि स्वर्गीय रामधारी सिंह 'दिनकर'

—डॉ॰ 'सौमित्र'

मार्तण्ड की उठान : अप्रतिहत अम्लान

राज्यसभा का सदस्य नामित किये जाने, भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार नियुक्त किये जाने और अन्ततोगत्वा श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' को राष्ट्रकवि घोषित किये जाने के उपरान्त राजनीतिक तथा साहित्यिक हलकों में उनके विरुद्ध बहुत कानाफूसी हुई थी। उन्हें कदम-कदम पर अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा। अंग्रेज कवि "बायरन की तरह दिनकर को यह सुविधा नहीं रही कि वह एक दिन नींद से जागे और अपने को प्रसिद्ध पाया, उनको हर इंच जमीन के लिए कई-कई मोर्चे लेने पड़े। दिनकर ब्रिटिश सरकार के नौकर थे। इसपर उनके विरुद्ध तूफान वर्षा किया गया। 'बन्देमातरम्' के कवि बंकिमचन्द सरकारी नौकर थे, पर इस कारण मेरी जानकारी में कभी किसी निन्दक को यह जुर्रत नहीं हुई कि उन्हें ऋषि के अलावा कुछ कहे। राष्ट्रीय उपन्यासकार रमेशचन्द्र दत्त आई॰ सी॰ एस॰ रहे, नाटककार डी॰ एल॰ रॉय भी सरकारी नौकर रहे। आशुतोष मुखर्जी जज थे। समाज-सुधारक रानाडे भी जज थे, इत्यादि-इत्यादि। — — – हिन्दी वालों ने दिनकर की नौकरी पर इस कारण बावेला मचाया वह छोटे नौकर थे। कहना न होगा कि यह कोई प्रशंसा की बात नहीं है।"

दिनकर का जन्म बिहार प्रदेश के बेगू सराय जिलान्तर्गत सिमरिया गाँव के एक मध्यम भूमिहार ब्राह्मण परिवार मे १३ सितम्बर, १६०८ ई॰ को हुआ था। उस समय किसी को क्या मालूम कि यह साधारण शिशु एक रोज अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का व्यक्ति हो जायेगा। उनके पिता का नाम बाबू रवि सिंह और माता का नाम श्रीमती मनरूप देवी था। तीन भाइयों में ये मझले थे। इनके अग्रज का नाम बसन्त सिंह और अनुज का नाम सत्यनारायण सिंह था। दिनकर का विवाह टमका, जिला समस्तीपुर के श्री रक्षा ठाकुर की पुत्री श्यामादेवी के साथ १६२१ में हुआ। उनकी चार सन्ततियों पुत्रद्वय रामसेवक सिंह तथा केदारनाथ सिंह और दो पुत्रियों विनता तथा विभादेवी में से ज्येष्ठ पुत्र रामसेवक उनके सामने ही १२ अप्रैल, १६६७ को स्वर्गवासी हो गये थे।

उपनाम 'दिनकर' उन्होंने अपने पिता के नाम से शब्दान्तर कर ग्रहण किया था। प्रारम्भ से ही उनकी शैक्षिक प्रतिभा विलक्षण थी। सन् १६२८ ई॰ मे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्होंने सम्पूर्ण बिहार प्रदेश में मैट्रिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर इसका परिचय दे दिया था। इस उपलक्ष्य में उन्हें भूदेव-स्वर्णपदक प्रदान किया गया। इसी वर्ष २० साल की अल्पायु में उनकी 'बारदोली-विजय' नामक कविता की पुस्तक प्रकाशित हुई। तभी से साहित्यिक अभिरुचि के कारण वह खण्डवा (म० प्र०) से प्रकाशित श्री माखन लाल चतुर्वेदी के 'कर्मवीर' के नियमित पाठक रहे। १९२८–२९ में ही वह 'कर्मवीर' के माध्यम से कविवर रामसिंहासन सहाय 'मधुर' और उनकी ओजस्वी रचनाओं से प्रभावित हो गये थे, जिसका उल्लेख उन्होंने बड़ी ईमानदारी से अपने साहित्य में कम से कम चौदह स्थलों पर किया है।

पटना कालेज से १९३२ में बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वह एच० ई० स्कूल बरबीघा में प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए। इस पद पर उन्हें मात्र दो ही वर्ष सेवा करने का अवसर मिला और १९३४ में उनकी नियुक्ति सब-रजिस्ट्रार पद पर कर दी गयी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान १९४३–४५ तक उन्हें युद्ध-प्रचार-विभाग में कार्य करने का गुरुतर भार सौंपा गया। इन्हीं दिनों गाँधी जी के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की लपट तेज होती जा रही थी। इनके सिर पर पारिवारिक दायित्वों का बोझ इतना जबरदस्त था कि स्वातन्त्र्य-आन्दोलन में अपनी हार्दिक सहानुभूति रखते हुए भी सरकारी सेवा से स्वयं को पृथक् नहीं कर सके। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् १९४७ में उन्हें जन-सम्पर्क विभाग, बिहार का डिप्टी डाइरेक्टर बना दिया गया। इस मध्य उनकी लेखनी निर्बाध यात्रा करती रही। १९२८ में 'बारदोली विजय' की रचना से लेकर १९४७ में 'बापू' के प्रणयन तक उन्होंने कुल ग्यारह पुस्तकें लिख डाली थीं जिनमें मात्र एक 'मिट्टी की ओर' गद्य की पुस्तक थी। उनके उन्मेषपूर्ण साहित्यिक चिद्विलास का उत्कर्ष तब देखने को मिला जब इस स्नातक उपाधिकारी रामधारी को बिहार विश्वविद्यालय के हिन्दी-प्रोफेसर पद पर नियुक्त कर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्यामसुन्दर दास और लाला भगवानदीन 'दीन' आदि हिन्दी-मनीषियों की परम्परा का अनुसरण करके बिहार सरकार ने गौरव का अनुभव किया। इस पद पर वह १९५२ तक ही रह पाये। क्योंकि १९५२ में ही उन्हें राज्यसभा का सदस्य नामित कर दिया गया। लगातार बारह वर्षों तक वह राज्यसभा के सदस्य रहे। यद्यपि राज्य-सभा में उन दिनों कोई हिन्दी सुनने को तैयार नहीं होता था फिर भी वह अपने मन की पंक्तियाँ सुनाकर आत्म सन्तोष कर लेते थे। एक बार उन्होंने मधुर जी की इन पंक्तियों को सुनाकर सबको हैरत में डाल दिया था—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज देश स्वाधीन हो गया हम किसान मजदूर।
दिल्ली में ही पूछ रहे हैं दिल्ली कितनी दूर?

सन् १९६४ में दिनकर भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बने। तदनन्तर १९६५ में उन्हें भारत सरकार का हिन्दी सलाहकार नियुक्त कर दिया गया। उनके इस कार्यकाल में यद्यपि भारत-सरकार उनकी हिन्दी-नीति से एकदम सन्तुष्ट नहीं थी, तथापि सरकार को उनसे अधिक सक्षम सलाहकार मिल भी नहीं सकता था। इसका संकेत उनके कतिपय पत्रों से मिला है। मध्य-प्रदेश के कई विश्वविद्यालयों के कुलपतित्व के लिए उनसे आग्रह किया गया परन्तु स्वास्थ्य को देखते हुए उन्होंने सबको अस्वीकार कर दिया। अनेक मानद उपाधियों, अलंकारों और पुरस्कारों से विभूषित हिन्दी-जगत के इस प्रखर दिनकर का अवसान २४ अप्रैल, १९७४ को मद्रास में हृदयगति रुक जाने के कारण हो गया।

साहित्यिक अवदान-मान-सम्मान

संघर्षों का साहसपूर्वक दिलेर की भाँति सामना करते रहने के कारण दिनकर एक अदने हेडमास्टर के पद से उठते-उठते राष्ट्रकवि भी बने। वह एक "प्राणवान कवि, ओजस्वी वक्ता, प्रखर लेखक, मौलिक चिन्तक एवं सहृदय मित्र थे।" परन्तु एक टूटे हुए इन्सान भी, जिसका संकेत मात्र भी उन्होंने अपने समग्र साहित्य में कहीं नहीं होने दिया है। इन सबके बावजूद दिनकर मूलतः एक कवि थे और कविता का दामन पकड़कर ही वह विश्व-विश्रुत हुए। उनकी साहित्यिक यात्रा जो १९२८ में 'बारदोली-विजय' से प्रारम्भ हुई थी, १९७२ में 'उर्वशी' तक पहुँची जबकि उन्हें एक लाख रुपये का ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। दिनकर ने १९७४ तक कुल ६० ग्रंथ लिखे। जिनमें ३३ काव्य और २७ गद्यग्रन्थ हैं। उनके गद्यग्रन्थों में निबन्ध, कहानी, संस्कृति, संस्मरण, दैनिकी, समीक्षा, यात्रा-विवरण तथा बाल-साहित्यादि का समावेश हुआ है। सात कृतियों का अंग्रेजी, रूसी, स्पेनिश, जापानी, कन्नड़, तेलुगु और उड़िया में अनुवाद हो चुका है।

दिनकर कविसम्मेलनों में प्रायः भाग नहीं लेते थे परन्तु कभी-कभी आग्रह और अवसर उपस्थित हो जाने पर सिंह की दहाड़ के साथ कविता-पाठ करते थे। गोष्ठियों में मित्रों की रचनाएँ भी सुना दिया करते थे। मधुरजी की 'दिल्ली कितनी दूर?' कविता की उपर्युक्त पंक्तियों को उन्होंने दूसरी बार 'सरस्वती' के हीरक जयन्ती समारोह में, जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रकवि मैथिली-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरण गुप्त ने की थी, १२ जनवरी, १९६२ को सगर्व सुनाया था। इसकी रिपोर्टिंग १४ जनवरी के 'आज' में सुर्खियों में प्रकाशित हुई। देहावसान के एक दिन पूर्व तिरुपति के मन्दिर में उन्होंने बड़े उत्साह के साथ बुलन्द आवाज में 'कृष्ण का विराट रूप' कविता का पाठ किया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार कविता-पाठ के समय उनका चेहरा जितना तेजोमय था, उतना पिछले ४० वर्षों में कभी नहीं देखा गया। चिराग की अन्तिम लौ उनके मुख-मण्डल पर दमक रही थी। रुद्र और शान्त दोनों मुद्राओं में वह कविता पाठ करते थे। महर्षि रमण अथवा रामकृष्ण परमहंस को पढ़ते समय उनके नेत्र-कोर भर आते थे। पांडिचेरी की 'माँ' पर उनकी अपार श्रद्धा थी।

दिनकर की तरह साहित्य जगत् में शायद ही कोई ऐसा कवि-साहित्यकार हुआ हो जिसने अपने जीवनकाल में ही इतना बहु-आयामी शोध-क्षेत्र प्रस्तुत किया हो! दिनकर के जीवनकाल में ही उनके साहित्य पर लगभग पचास शोधकार्य सम्पन्न हुए और इसका सिलसिला निरन्तर जारी है। श्रीमती स्वेतलाना ने लेनिनग्राड विश्वविद्यालय से रूसी भाषा में उनके ऊपर डॉक्ट्रेट प्राप्त किया। रूस के हिन्दी विद्वान श्री प्योत्र अलेक्सीविच बारान्निकोव और जापान के श्री के० दोई उनसे बहुत प्रभावित हुए। श्री दोई ने उनके 'संस्कृति के चार अध्याय' का जापानी भाषा में अनुवाद भी किया। श्री बारान्निकोव ने २३ सितम्बर, १९७८ को दिनकर के जन्म दिवस पर दिल्ली में भावविह्वल होकर कहा था, "भारतीय और रूसी साहित्यकारों के सहयोग से 'दिनकर-स्मारक-संग्रहालय' की स्थापना होनी चाहिए।" दिनकर जी पर अभी तक ५६ स्वतंत्र ग्रन्थ और एक दर्जन पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं।

इस अवसर पर 'उर्वशी' के प्रकाशन-पूर्व की एक घटना का उल्लेख कर देना अप्रासंगिक न होगा। कविवर रामसिंहासन सहाय 'मधुर' से उनका बड़ा आत्मीय संबंध था। एक बार मधुरजी उनसे मिलने पटना उनके निवास पर पहुँचे। नौकर ने बताया, "साहब अन्दर बन्द हैं, किसी से नहीं मिलेंगे।" वास्तव में वह उस समय कमरे में बैठकर 'उर्वशी' की प्रेस–पाण्डुलिपि तैयार कर रहे थे। मधुरजी ने पूछा, "दिनकर जी, साहब कबसे हो गये? उन्हें बन्द किसने कर रखा है?" आवाज सुनकर खिलखिलाते हुए वह स्वयं ही बाहर आ गये। उन्होंने कहा, "देखिये न, कैसा संयोग है, 'कुरुक्षेत्र' को पांच महीने में लिख डाला और 'उर्वशी' के पीछे पांच वर्षों से लगा हूँ, प्रकाशन का सुयोग ही नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जुट पा रहा है !" उसी समय, यानी ११ फरवरी, १९५९ को दिनकर ने 'उर्वशी' का वाचन कर मधुरजी को सुनाया। 'उर्वशी' का प्रथम सर्ग उर्वशी के शैशव से सम्बन्धित था। सम्पूर्ण वाचन सुन लेने के पश्चात् मधुरजी ने अपनी पहली प्रतिक्रिया व्यक्त की, "भाई दिनकर ! वेश्या का कोई बचपन नहीं होता और न ही उसे जानने की कोई ख्वाहिश रखता है।" दिनकर ने पूर्व-प्रणीत प्रथम सर्ग के उस हिस्से को निकाल देना स्वीकार कर लिया और प्रारंभ में कुछ नये छंदों को जोड़कर १९६१ में 'उर्वशी' का प्रकाशन हुआ।

प्रेस और प्रकाशकों ने साहित्यकारों का सदा शोषण-दोहन किया है। पूँजीवादी व्यवस्था में लेखक मात्र कलम का मजदूर भर रह जाता है, जिसे श्रम का उचित पारिश्रमिक भी नहीं मिल पाता। दिनकर इस पीड़ा के भोगी थे। प्रेमचन्द और यशपाल ने इसे भोगकर ही निजी प्रकाशन संस्था खोली थीं। दिनकर के सम्मुख भी कोई दूसरा विकल्प नहीं था। संघर्षों से दृढ़तापूर्वक जूझ कर उन्होंने पटने में 'उदयाचल' की स्थापना की जहाँ से बाद में सारा दिनकर-साहित्य प्रकाशित होता रहा। वास्तव में यदि उदयाचल ने दिनकर के ग्रन्थों के प्रकाशन का भार न सँभाला होता तो आज तक उनके अन्यान्य ग्रन्थों की पाण्डु-लिपियां वेठनों में ही बँधी रह जातीं।

दिनकर के जीवन-काल में मान-सम्मान, उपाधियों तथा पुरस्कारों की जो झड़ी लगी रही उससे किसी भी साहित्यिक को स्वस्थ ईर्ष्या होना स्वाभाविक है। १९४८ में उनका 'कुरुक्षेत्र' काव्य साहित्यकार संसद, काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, उत्तर प्रदेश सरकार तथा भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत हुआ था। 'संस्कृति के चार अध्याय' पर उन्हें केन्द्रीय साहित्य अकादमी का ६ नवम्बर १९५६ को पुरस्कार प्राप्त हुआ। तत्कालीन राष्ट्रपति देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने ८ अप्रैल, १९५९ को उन्हें पद्मभूषण के राष्ट्रीय अलंकरण से विभूषित किया। ३ मार्च, १९६२ को भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति राज्यपाल डॉ० जाकिर हुसैन ने उन्हें डाक्टर आफ लिटरेचर की मानद उपाधि प्रदान की। 'सरस्वती' (प्रयाग) के हीरक जयन्ती समारोह के अवसर पर १२ जनवरी, १९६२ को राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने उन्हें मान-पत्र अर्पित किया। १९६५ में गुरुकुल महाविद्यालय द्वारा 'विद्यावाचस्पति' तथा नवम्बर, १९६८ में राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर द्वारा 'साहित्य-चूड़ामणि' की मानद उपाधियों से भी उन्हें सम्मानित किया गया। पुरस्कारों की स्पृहणीय सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१ दिसम्बर, १९७३ को 'उर्वशी' पर उन्हें भारतीय-ज्ञानपीठ-पुरस्कार के रूप में हुई। संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वित किया। दिनकर ने १९५५ में यूरोप की, १९५७ में चीन की, १९६१ में सोवियत संघ की, १९६७ में मारीशस की, १९६८ में पश्चिम जर्मनी की तथा १९७१ में ब्रिटेन की यात्राएँ भी कीं।

जीवट का इन्सान : मुख पर मुस्कान

दिनकर के जीवन का दूसरा पक्ष भी है—टूटते हुए इन्सान का, पारिवारिक बोझ, सामाजिक दायित्व और गृहकलह-जनित मानसिक तनावों के कारण। श्री कन्हैयालाल फूलफगर द्वारा संपादित 'दिनकर के पत्र' ग्रंथ (१९८१) से उनके न केवल आदर्शवादी प्रत्युत व्यावहारिक पक्षों की भी 'अनेक भावअनुभावों के घात-प्रतिघातों की अनोखी झलक मिलती है।' इसमें प्रकाशित पत्रों के अव-लोकन से इस स्थापना की पुष्टि हो जाती है कि दिनकर अत्यन्त स्वच्छ हृदय, स्पष्ट विचार परन्तु उद्‌भट जीवट के इन्सान थे। अन्यथा वह अपनी ही निन्दा पत्रों में मित्रों को खुले दिल से क्यों लिखते। इस ग्रन्थ में दिनकर द्वारा अपने संबंधियों, मित्रों, श्रद्धास्पदों तथा स्नेहास्पदों को समय-समय पर लिखित मात्र ४११ व्यक्तिगत पत्र प्रकाशित हुए हैं। उनके कुछ परम हितैषी सुहृदों ने दिनकर की सम्मान-रक्षा के हित में घरेलू झंझटों से संबन्धित निहायत व्यक्तिगत पत्रों को प्रकाशित करना उचित नहीं समझा। ऐसे बहुत से पत्र मधुर जी, बच्चन जी आदि के पास रह गये हैं।

राष्ट्रकवि का मन बाहर से जितना अदम्य था, तन भीतर से उतना ही जर्जर। वह मधुमेह और रक्तचाप से भी पीड़ित रहा करते थे तिसपर ज्येष्ठ पुत्र द्वारा मकान-दुकान के स्वामित्व और बँटवारे के प्रश्न को लेकर बगावत-खनित मानसिक तनावों का बोझ मुश्किल से ढो पा रहे थे। श्री श्रेयांस प्रसाद जैन (बंबई), कामेश्वर शर्मा 'कमल' (मोकामा) तथा डा० चंद्रदेव सिंह (कलकत्ता) को लिखे गये उनके कतिपय पत्रों में इन बातों का स्पष्ट उल्लेख किया गया मिलता है। पुत्र रामसेवक उनके कहने में नहीं थे। श्रेयांस जी को २८ अगस्त, १९६३ के एक पत्र में वह लिखते हैं, "मेरी छोटी बेटी बी० ए० फाइनल में है। उसकी शादी नहीं कर सका, यह मेरी पहली कमजोरी है। छोटे लड़के का ब्याह इसी साल किया है। पतोहू भी बी० ए० में पढ़ रही हैं। वह अभी बस नहीं पायी है। यह मेरी कमजोरी नम्बर दो है। एक भतीजी अविवाहित है। यह कमजोरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नम्बर तीन है। इन्हीं विवशताओं का लाभ उठाकर बड़े साहब ने बगावत् करने की हिम्मत की। खैरियत की बात यह है कि बेटी और भतीजी के ब्याह के लायक पैसे मेरे पास जमा हैं और हर किताब का कॉपीराइट मेरे पास है। उपाय केवल यह करना है कि प्रकाशन की नयी संस्था कायम कर दूँ और बरस-दो-बरस में उसे कामयाब बना दूँ……।" फिर भी नालायक पुत्र की रुग्णावस्था में पिता के वात्सल्य की विकलता देखते ही बनती है। वह श्रेयांस जी को (६-१-६७) लिखते हैं, "….. जितनी सूझ-बूझ और शक्ति मुझमें है, उसे लेकर मैं उसके रोग से जूझ रहा हूँ।" वह उनसे बंबई से सुयोग्य चिकित्सक भेजवाने का निवेदन करते हुए (२३-१२-६६) लिखते है,"... आज मुझे मालूम हुआ कि इस भयानक रोग के बारे में पं० शिव शर्मा की राय लेना बहुत ही आवश्यक है। ... मैं गरीब आदमी हूँ। शर्मा जी का भार उठाना मेरी शक्ति के बाहर है। लेकिन अगर वे आने को तैयार हों तो वायुमार्ग का किराया उनके चरणों पर रख दूँगा ‥"। श्रेयांसजी को ही लिखे गये एक अन्य पत्र (१८-६-६६) से उनके ऊपर पड़े पारिवारिक बोझ की स्पष्ट झलक मिलती है। वह लिखते हैं, "मेरा अवतार कन्यादान के लिए हुआ है। २५ साल की उम्र से यह सिलसिला शुरु हुआ और अब तक चल रहा है। अपनी कमाई से ९ कन्याओं का विवाह रचवा चुका हूँ। भगवान से मांगता हूँ कि वे कम-से-कम तीन कन्याओं के विवाह रचवाने दें……।" दिनकर जी की अपनी पुत्रियां केवल दो ही थीं।

रामसेवक सिंह ने दिनकर जी को सर्वाधिक मानसिक आघात पहुँचाया और युवावस्था में कालकवलित भी हो गये। कामेश्वर शर्मा 'कमल' को दिनकर जी ने ११ जून, १९६३ को एक पत्र में लिखा, "……रामसेवक बाबू अपनी सास, सरहज, सरहज की दो बच्चियाँ, साले, पत्नी और तीन बेटियों को घर से निकाल कर मारवाड़ी होटल चले गये। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश नहीं की, क्योंकि वे बावले कुत्ते की तरह भूंक रहे थे और मैं अगर समझाने जाता तो वे मेरा अपमान करते, अपमान तो काफी किया, शायद, अपशब्द कहते ……।" पुनः वह २१ मई, १९६३ के पत्र में लिखते हैं, "…… दूसरे दिन रात को रामसेवक बाबू मेरे पास आये और बोले कि अब बँटवारा हो जाना चाहिए। मैंने कहा यह रचनात्मक सुझाव है और मैं इसे स्वीकार करता हूँ। मगर बाँटने को तो एक ही घर है। जैसे पसन्द पड़े बाँट लो।…… उन्होंने कहा, तीन हिस्से लगेगें तो हिस्सा नहीं लूंगा। स्पष्ट ही, वे माँ-बाप को प्रश्रय देना नहीं चाहते थे।" पुत्र के चलते एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओर जहाँ उन्हें मानसिक संताप से अतिशय बेचैनी रही होगी, वहीं उनके क्रोड़ में अपार ममता, करुणा और वात्सल्य का सागर लहरा रहा था।

दिनकर की हिन्दी-नीति भारत सरकार को कितनी पसन्द थी, इसकी एक झलक कमला जी को लिखित एक अन्य पत्र से (१०-५-६२) मिलती है। "...३० को राज्यसभा में मेरा एक भाषण हुआ। ३ को जवाहरलाल जी ने राज्यसभा में उसकी प्रशंसा की। आमि पेयेछि बंधु, राज कंठेर माला। सुना, मेरी हिन्दी-नीति गले के नीचे नहीं उतरी। एक फ्रेज का पता चला है—मच-टू-पोजिटिव, लेकिन, दिनकर पोजिटिव तो रहेगा। इसलिए अब निश्चिन्त हूँ.....।"

अपने जीवन में दिनकर ने कितने उच्च 'ऑफरों' को अस्वीकारा, उनमें से एक उनकी सहृदयता का परिचय देता है। १२ जून, १९७२ के एक पत्र में डा० चन्द्रदेव सिंह (कलकत्ता) को वह लिखते हैं, "......हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के चेयरमैनशिप का 'आफर' सरकार की ओर से आया था। तुम जानते हो कि उस पद पर अभी सुधांशु जी काम कर रहे हैं। वे रुग्ण तो हैं ही, अभी भारी विपत्ति में भी हैं। अपने पद पर वे बने रहें तो उससे उन्हें थोड़ा ढाढ़स रहेगा। यही सोच कर मैंने आफर को स्वीकार नहीं किया। वैसे काम की मुझे जरूरत है। माथे पर अनाथ पोते-पोतियों का बोझ है जो मुझे अब क्षण भर को भी निश्चिन्त नहीं होने देता। क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता है। हम जिस समाज में जी रहे हैं, उसके प्रोप्राइटर राजनीतिज्ञ हैं, मैनेजर अफसर हैं, बुद्धिजीवी मजदूर हैं।' बूढ़ा मजदूर भर पेट मजदूरी नहीं कमा सकता, वही हाल मेरा है।" कितना तीखा और व्यंग्यपूर्ण प्रहार है आज की व्यवस्था पर! हृदय में पीड़ा और मुख पर उल्लास छिटकाये—

पर, इसे नहीं रोने का भी अवकाश मिला,
सारा जीवन कट गया आग सुलगाने में।
आखिर वह भी सो गया जिन्दगी ने जिसको,
था लगा रखा सोतों को छेड़ जगाने में।। —'दिनकर'

पदुमपुर (गाजीपुर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुरजी के अन्यतम मित्र,

विपुल प्रतिभा के धनी, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय

—डॉ० लक्ष्मी शङ्कर त्रिवेदी

श्री राम सिंहासन सहाय 'मधुर' एवं डॉ० भगवतशरण उपाध्याय एक साथ ही राजकीय हायर सेकेण्डरी स्कूल बलिया में पढ़े हैं। डॉ० उपाध्याय सदैव 'मधुर' जी को स्मरण करते रहे। यहाँ तक कि उन्होंने मारिशस के पोर्टलुई से जो अंतिम पत्र भेजा उसमें भी मधुर जी को नहीं भूले। वह पत्र मूलतः निम्नवत है।

भारतीय उच्चायुक्त

पोर्टलुई, मोरिशस
१३.११.८१

सत्यमेव जयते

प्रिय त्रिवेदी जी,

कृपा पत्र और ओझाजी तथा त्रिपाठी के कविता संग्रह मिले। भूमिका और राय लिख दी है जो संलग्न हैं।

आप सब सानन्द हैं जानकर प्रसन्नता हुई। मैं भी यहाँ सुखी और अत्यन्त व्यस्त हूँ नित्य अनवरत आयोजनों में शामिल होना पड़ता है। शरीर की व्याधि व्यवहार की ऊष्मा में पिघल कर बह जाती हैं। कीलों पर काँपने वाले जीवन को अभिराम अवसर मिला है जिसमें सागरवर्ती आकाश रम गया है, यह हरिताम्बरा धरा अविराम जीवन की लालसाओं को पूर देती है, जीने की साध जाग उठी है। पर जीना बहुत नहीं है, सत्तर लाँघ चुका हूँ। दो बरस यहाँ और इतना ही स्वदेश में, बस और चाहिए भी क्या? जीवन है भी तो मृत्युका ही, सो काल के अनन्त प्रसार में एक साल पहले या पीछे अर्थ ही क्या रखता है?

आशा करता हूँ सपरिवार स्वस्थ होंगे। मित्रों से यथायोग्य कहें, विशेषकर रघुवर मधुर जी और प्रभुनाथ जी से।

आपका ही—
भगवतशरण उपाध्याय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

आकर्षक गरिमायुक्त, भव्य व्यक्तित्व, तैल रहित चमकते किंचित घुंघराले, सजे, सँवरे भौरों जैसे बाल, प्रभात-सूर्य सदृश सहज मुस्कान युत मुखमण्डल, प्रशस्त, सरल, शाल-सदृश ताम्बई श्यामाभा युक्त देह-यष्टि, सीधी लम्बी डालियों को ललकारते हुए प्रलम्ब बाहु द्वय, चिन्तन की मुद्राओं को प्रस्फुटित करता हुआ ललाट; और स्निग्ध, मृदु, सुसंस्कृत वाणी में डॉ० भगवतशरण उपाध्याय अपनी मण्डली के श्रद्धास्पद व्यक्ति थे। बचपन से स्वावलम्बी प्ररिश्रमी अध्यवसायी डॉ० उपाध्याय १९१० अक्टूबर को बलिया जनपद के उजियार गाँव में श्री रघुनन्दन उपाध्याय (मुख्तार) के घर जन्म लिए, जो पतित-पावनी गंगा तट पर ठीक ताड़का नाला के पार्श्व में स्थित श्री रामेश्वर महादेव (बक्सर) के सामने इस पार हैं, जिस शंकर की स्थापना स्वयं मर्यादा-पुरुषोत्तम राम ने की थी और क्रान्ति दर्शी ब्रह्मर्षि विश्वामित्रने यहीं इन्हें दीक्षा दी थी।

डॉ० उपाध्याय, मधुर जी के साथ हाई स्कूल में पढ़ते हुए १२ वर्ष की आयु में ही पूज्य बापू के आह्वान पर छात्रों में हड़ताल कराने के आरोप में बलिया जेलसे ११ बेतों एवं डेढ़ वर्ष की कड़ी सजा लेकर वाराणसी स्थानान्तरित हो गये। (उनके हाथ में अन्तिम समय तक ये चिह्न विद्यमान थे)। परन्तु प्रतिभा कहीं आबद्ध नहीं होती। कारा मुक्ति के बाद पुनः एक बार अध्ययन की लालसा जगी और काशी, प्रयाग और लखनऊ विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर विदेश से पी-एच० डी० की उपाधि लेकर स्वयं लेखन, भ्रमण और शिक्षा में लीन हो गए।

पिलानी बिड़ला-विद्यालय में कार्य करते हुए यायावरी प्रवृत्ति ने जोर मारा और वे उसे छोड़कर चलते बने। फिर तो एक प्रसिद्ध घुमक्कड़, पुरातत्ववेत्ता, इतिहासज्ञ और साहित्यकारके रूप में आप विश्वकी छः बार परिक्रमा कर महान् वैज्ञानिकों, पुरातत्ववेत्ताओं, इतिहासज्ञों, साहित्यकारों धार्मिक-राजनीतिक नेताओं और राजनयिकों से मिले और इन यात्राओं का वर्णन ८ पुस्तकों में समेटकर प्रस्तुत किया जिनमें सागर की लहरों पर लालचीन, घूमने का राज आदि अतीव प्रसिद्ध एवं रोचक हैं। इस बीच स्वर्गीय उपाध्याय रूस के लौह-पुरुष स्टालिन, महान वैज्ञानिक आइन्सटीन, पर्लबक, एजरा पाउण्ड, बर्टेण्ड रसल आदि से मिले और विचार विमर्श किया।

युगोस्लाविया में अपनी अद्वितीय प्रतिभा और महत्वपूर्ण भाषणों से विश्व पुरातत्ववेत्ताओं को स्तब्ध करते हुए, वहाँ की सरकार को अपने म्युजियम में आदमकद कांस्य मूर्ति (अपनी) स्थापित करने के लिए विवश कर दिया, जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इनके जीवन काल में ही भव्य-सम्मान था। फ्रांस सरकार के निमंत्रण पर विभिन्न-विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देते हुए, अमेरिका के विश्व पुरातत्व सम्मेलन में, फ्रांस के ही प्रतिनिधि रूप में न्यूयार्क गये परन्तु वियतनाम में अमेरिकी अत्याचार के विरुद्ध निकली बुलेटिन पर सर्वप्रथम हस्ताक्षर होने के कारण वहाँ के राष्ट्रपति ने न्यूयार्क, होटल से ही भारत या फ्रांस वापस जाने का निर्देश देकर सम्मेलन में भाग लेने से रोका। परन्तु सम्मेलन में आये प्रतिनिधियों को जब यह मालूम हुआ, तो सभी-के सभी अपने देश चले जाने को उद्यत हुए और अन्ततः इन्हें सम्मिलत करना पड़ा, जहाँ उपाध्याय जी ने सम्मेलन की सगौरव अध्यक्षता की।

विलक्षण साहित्यिक-प्रतिभा

डॉ० उपाध्याय आजीवन 'कलमजीवी' रहे और अन्त तक लेखन से विरत नहीं हो सके। इसी के फलस्वरूप 'कालिदास का भारत' विश्व की कई भाषाओं में अनुदित हो गया और इनकी प्रतिभा को उजागर किया। अंग्रेजी में विमेन इन ऋग्वेद, एंसेन्ट वर्ल्ड, द इस्ट लाइज टू द वेस्ट आफ वेस्ट आदि बहुचर्चित पुस्तकों के साथ हिन्दी, इतिहास, पुरातत्व आदि सम्बन्धी १७५ पुस्तकों की रचना की। इनमें रेखाचित्र, रिपोर्ताज, स्वैर विधा; नाटक, कहानी, निबन्ध और उपन्यास आदि सम्मिलित हैं। इनमें ठूंठा आम, महापुरुषों का कोश, कालिदास आदि बहुचर्चित हैं। आप बाल-साहित्यके विशेषज्ञ थे। साथ ही कला और संस्कृति पर भी कतिपय पुस्तकों का सृजन किया है।

डॉ० उपाध्याय ने संस्कृत वाङ्मय की बौद्धिक व्याख्या कर अपना स्वतंत्र विचार रखा है। ये परम्परावादी न होकर स्वतंत्र विचारक थे जिसमें वैज्ञानिकता का आधिक्य 'महापुरुषों का कोश' में ऋग्वेद से लेकर महात्मा गाँधी तक महान् पुरुषों का सूक्ष्म महत्वपूर्ण रेखांकन हुआ परन्तु दुर्भाग्य कि उसका एक ही भाग छप पाया है जिसमें रामायण कालतक के महापुरुषों का परिचय आ गया है।

सहज, सलोना—व्यक्तित्व

स्वर्गीय उपाध्याय के लेखन के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में स्व० काशी प्रसाद जायसवाल के साथ मूर्तियों का सूची निर्माण, १९३१ से १९३९ तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रिसर्च जनरल का सम्पादन, १९४० में प्रदेशीय संग्रहालय का अध्यक्षपद, महावैयाकरण पाणिनि के गाँव शालातुर (लाहुर) में युसूफ जई के दर्शन आदि हैं। इसके अतिरिक्त तुर्की और लुक्सर (चाय) की यात्रा, प्राचीन खण्डहरों, मूर्तियों, स्मारकों आदि का अध्ययन कर लिपिबद्ध करना और मिस्री; सुमेरी, बाबुली, अक्कारी, असुरी खत्ती, क्रीतिमिनोई, मिकानी, इरानी सभ्यताओं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का गहन अध्ययन भी सम्मिलित है। जिनपर आधारित 'पुरातत्व का रोमांस' प्रस्तुत कर अपने एक और बहुचर्चित कृति साहित्य जगत को भेंट की।

१९५२ में पिकिंग के निःशस्त्री और विश्व शान्ति-सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व, अमेरिका, यूरोप आदि के पुरातत्व सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व, भारतीय संस्कृति पर विदेशों में महत्वपूर्ण भाषण आदि हैं, इसके अतिरिक्त अपने देश में 'इन्स्टिट्यूट आफ एशियन स्टडीज' हैदराबाद का निदेशक, काशी नागरी प्रचारिणी सभा में विश्वकोष का सम्पादन १९७० से ७३ तक, विक्रम विश्व-विद्यालय उज्जैन में प्रोफेसर, अध्यक्ष, डीन एवं सिण्डीकेट के सदस्य के रूप में काम किया। सोवियत संघ के बृहद कोश निर्माण में मास्को, ताशकन्द तथा लेनिनग्राड की यात्रा की थी।

निच्छल, आडम्बर-विहीन उदार जीवन

डॉ० उपाध्याय विश्व पर्यटक होते हुए भी चौके में प्याज और लहसुन तक भी नहीं प्रवेश करने देते थे। वे शाकाहारी, सात्विक भोजन के पक्षपाती थे। टमाटर, करमकल्ला, कुछ साधारण फल ही उनकी रुचि के अनुरूप थे। वे इतने दयार्द्र थे कि जो भी नौकर उनके साथ रहा उसे कहीं न कहीं आश्रय धरा कर ही दूसरा नौकर रखे, जो आज भी उनका गुणगान करते नहीं अघाते हैं।

विभिन्न विद्यालयों के मेधावी निर्धन छात्रों की सहायता में वेतन का बहुत बड़ाभाग व्यय करने तथा चीनी आक्रमण के समय पं० नेहरू के नाम महीनों तक दान देने वाले, छोटे से लेकर बड़े व्यक्ति के श्रद्धा और आदर के पात्र थे। उपाध्याय जी ने सबका उपकार किया और कितनों को पढ़ाकर नौकरी में लगा दिया। यहाँ तक अपना पैतृक घर भी भाइयों को देकर स्वयं काशी में भूमि लेकर रहने लगे। बाद में उसे भी अपने पुत्रों में वितरित कर स्वयं 'योगी' की भांति जहाँ रहे, वहीं बसे।

उपाध्याय जी थे पूरे मनस्वी और स्वाभिमानी। रंच-मात्र अनादर हुआ कि वे उधर ताकते भी नहीं थे। परन्तु जहाँ आदर मिला, वहीं वे काली मिट्टी की भांति बूंद पड़ते ही गल जाने वाले थे। सीधे तो इतने कि इनसे काम करा कुछ लोग बाद में इन्हें ही फंसा देते थे और वे इनके पीछे पड़ जाते थे परन्तु इनके ऊपर इसका रंचमात्र भी प्रभाव नहीं होता था। वे तो गीता के निष्काम कर्मयोगी थे। और कहा करते थे कि वह अपना काम करता है और मैं अपना करता हूं। अतिथि-सत्कार में तो पूरे पक्के थे। साधारण से साधारण और उच्च से उच्च

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यक्ति भी समान आदर पाता था। एक बार उज्जैन प्रवास में मैं बरसात में वहाँ पहुंचा। रात को पंखा चलाकर सो गया परन्तु वे अपने अलग कमरे में लिखते पढ़ते रहे और आधी रात के बाद मेरा पंखा बन्द कर अपनी स्वच्छ सिरहाने रखी हुई चादर ओढ़ा दिए, सचमुच यदि उस समय नहीं ओढ़ाये होते तो मैं जाड़े से कांप कर बीमार पड़ जाता। प्रातः बतलाए कि यहाँ आधी रात के बाद ठण्डी पड़ती है। उन्हें बलिया के कारखाने वाली चीनी बहुत प्रिय थी। मैं जब जाता तब कुछ ले जाता और वे बहुत शौक से स्वयं खाते और मित्र मण्डली, छात्र-मण्डली को भी उसका स्वाद चखाते। (अब तो बलिया वालों को भी वह दुर्लभ हो गई)।

डॉ० उपाध्याय के दो पुत्र हैं जिनमें बड़ा इस समय उज्जैन में ही डा० भगवत शरण उपाध्याय शोधसंस्थान में संलग्न है जिसकी व्यवस्था मध्यप्रदेश सरकार ने की है। छोटा लडका फॉरेस्ट अधिकारी है। बहन डॉ० पद्मा ने आदर्श महाविद्यालय की स्थापना कर बिना किसी सरकारी सहायता तथा प्रबन्ध समिति के आजीवन शिक्षा का गुरुतर भार उठाया।

डॉ० उपाध्याय ने मृत्यु पर्यन्त अध्ययन और लेखन को ही साथी बनाया। वे साम्यवादी एवं स्वतन्त्र विचारक होने के नाते सदैव विवादास्पद रहे परन्तु अपने आलोचकों को उन्होंने कभी फटकारा नहीं अपितु उनसे भी स्नेह ही करते रहे। पिछली एक भेंट में उन्होंने मुझसे कहा कि लिख देता हूँ। मृत्यु के बाद इसका क्या मूल्य होगा और मैं कहाँ जाऊँगा, इसकी रंच-मात्र भी चिन्ता नहीं है। हाँ, लिखना धर्म बनाया है और ईमानदारी से इसमें जुड़ा हूँ।

मारिशस में अन्तिम समय व्यतीत हुआ और इस नियुक्ति की भी एक विचित्र कहानी रही। १५ माह से रिक्त स्थान पर स्व० इन्दिरा जी किसी उपयुक्त व्यक्ति को रखना चाहती थीं जो भारतीय संस्कृति, हिन्दी, भोजपुरी एवं अंग्रेजी का समान विद्वान हो, और वैसा उपयुक्त व्यक्ति सौभाग्य से उपाध्याय जी उपलब्ध हो ही गये। मारिशस उपाध्याय जी को भी भाया और उपाध्याय जी मारिशस के अपने हो गए। तत्कालीन प्रधानमन्त्री सर शिवराम गुलाम के आग्रह पर उपाध्याय जी ने 'महात्मा गाँधी संस्थान' भारतीय धर्म संस्कृति, कला और इतिहास पर अंग्रेजी में दस व्याख्यान दिये, जिनमें विषय की प्रस्तुति, अर्थवत्ता, वैचारिक गहनता एवं सूक्ष्मदर्शिता ने मारिशस वासियों को मोह लिया और वे इस क्रम को अभी बहुत आगे बढ़ाना चाहते थे परन्तु उच्चायुक्त की व्यस्तता के कारण उपाध्याय जी टाल गए और ये व्याख्यान वहाँ की अमर निधि बन गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्व० उपाध्याय भारत आना चाहते थे परन्तु स्वर्गीया इन्दिरा गाँधी ने २३ अगस्त ८२ को मारिशस यात्रा की स्वीकृति दे दी और उपाध्याय जी ने उस यात्रा की गरिमा को और भी महत्तर बनाने में जुट जाने के कारण १९ जुलाई से अवकाश पर आनेका कार्यक्रम बदल दिया परन्तु विधाता ने उन्हें सम्पूर्ण व्यस्तताओं से ८ अगस्त ८२ को ही हृदयगति अवरुद्ध कर मुक्त कर दिया और मनीषी की अन्तिम इच्छा के अनुसार उनका दाह संस्कार वहीं हुआ, जहाँ पर मारिशस-सरकार ने एक उपवन में उनके स्मारक के लिए भूमि प्रदान की। उनके दाह-संस्कार के अवसर पर सभी उच्च राजनयिक उपस्थित थे। यद्यपि सर रामगुलाम देश में नहीं थे परन्तु आने पर वे उस स्थल पर नमन करने गए। काल कितने चुपके से आता है और अपना काम कर चला जाता है कि लोग आश्चर्य चकित रह जाते हैं।

भगवान ने अवश्य ही उस महापुरुष की आत्मा को शान्ति प्रदान किया होगा और वह आत्मा भी कहीं अवतरित हुआ होगा इसी भारत भूमि पर क्योंकि भारत उनका प्रिय देश था और भारत माता के वे ईमानदार, उदार, मेधावी, कर्मठ सपूत थे। वे पुनः इस राष्ट्र के नये रूप में सृजन हेतु जुट रहे होंगे ऐसा विश्वास है। इस विश्वास को बल मिले यही प्रार्थना है। मधुर जी के अभिनन्दन ग्रन्थ में यह मधुर स्मृति सजीव रहे।

नरही (बलिया)

मधुरजी के अनन्य मित्र
डॉ० उदयनारायण तिवारी

—स्वामी विमलानन्द सरस्वती

हिन्दी साहित्य गगन के देदीप्यमान सूर्य, प्रख्यात् भाषाविद डॉ० उदयनारायण तिवारी का जन्म भृगु क्षेत्र बलिया के निकटवर्ती ग्राम पीपरपाती के कुलीन ब्राह्मण परिवार में सन् १९०३ में हुआ था। आपके पिता पण्डित शिवपूजन तिवारी पुराण, व्याकरण एवं तन्त्रशास्त्र के विद्वान एवं परम भक्त शैव थे। आपके गाँवके पास ही स्व० पण्डित हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा सन्तसाहित्य मर्मज्ञ पं० परशुराम चतुर्वेदी के गाँव हैं। आपकी शिक्षा प्रयाग, आगरा और कलकत्ता में हुई थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुविख्यात भाषाशास्त्री डा० तिवारी ने १९२९ में अर्थशास्त्र विषय लेकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एम० ए० किया था। उस युग में आप सरलता पूर्वक सरकारी नौकरी में जा सकते थे। किन्तु हिन्दी साहित्य के महान संरक्षक राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की प्रेरणा से आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अवैतनिक सेवा करके अपने अपूर्व त्याग एवं साहित्य-प्रेम का परिचय दिया।

काशी के निकट होने के कारण यहाँ के सांस्कृतिक सरस्वती धारा से प्रभावित आपके पूर्वज संस्कृत के पण्डित थे। अतः भारतीय संस्कृति एवं साधना तथा संस्कृत भाषा की ओर आपका पारम्परिक रूप से झुकाव था। १९३० में डॉ० तिवारी प्राच्य विद्या सम्मेलन (ओरियण्टल कान्फ्रेंस) पटना में भारत के प्रसिद्ध भाषा शास्त्री डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी से मिले। डॉ० चटर्जी ने तिवारी जी को संस्कृत, पाली; प्राकृत का गम्भीर अध्ययन करने का सत्परामर्श दिया।

सन् १९३१ से १९३५ के मध्य डॉ० तिवारी ने हिन्दी, पाली से एम० ए० की उपाधियां प्राप्त कीं। पाली भाषा का अध्ययन आपने महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन तथा भदंत आनंद कौशल्यायन से किया था। १९४० में आप कलकत्ता गये और वहाँ के विश्वविद्यालय में तुलनात्मक भाषा विज्ञान का अध्ययन प्रारंभ किया। आपने डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी से ग्रीक तथा डॉ० सुकुमार सेन से पुरानी फारसी तथा अवेस्ता जैसी भाषाओं को पढ़ा था। इसी क्रम में आपने वेद के प्रसिद्ध विद्वान देवेशचन्द्र चट्टोपाध्याय से शतपथ ब्राह्मण आदि का अध्ययन किया था सन् १९४१ में कलकत्ता विश्वविद्यालय से आपने तुलनात्मक भाषा-विज्ञान जैसे चौथे विषय में एम० ए० किया। पहले आप इलाहाबाद के एक स्कूल में गणित के अध्यापक थे। सन् १९४२ में भोजपुरी भाषा का गहन अध्ययन करके आपने 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' नामक अपना प्राण्डित्यपूर्ण अधिनिबंध (थीसिस) प्रस्तुत किया जिसपर १९४४ में आपको इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ही डी० लिट्० की उपाधि मिली। और फिर वहीं आप हिन्दी विभाग के व्याख्याता के पद पर नियुक्त हुए।

सन् १९५८ में अद्भुत प्रतिभाशाली विद्वान डॉ० तिवारी भारत से एक अनुसंधित्सु के रूप में भाषा विज्ञान में उच्च-अध्ययन के लिए अमेरिका गये। वहाँ आप फिलाडेल्फिया तथा कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय आदि से संबधित रहे। शोधयात्रा में आपने इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी एवं रूस के मास्को विश्वविद्यालय में भाषा-विज्ञान के अध्ययन अध्यापन की अधुनातन प्रणालियों की पूर्ण जानकारी प्राप्त की। सन् १९६० में आप भारत लौटे और जबलपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में आपकी नियुक्ति प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जबलपुर विश्वविद्यालय में आपने ३० पी-एच० डी० तथा ८ डी० लिट० की उपाधियाँ अपने शोधार्थी शिष्यों को प्रदान कराई। डॉ० तिवारी भोजपुरी क्षेत्र की एक दिव्य-विभूति और भारतीय संस्कृति की उज्ज्वल प्रतिमूर्ति थे। विद्या, विनय और शील संपन्न अत्यन्त सरल हृदय आप प्राचीन ऋषि महर्षियों की पावन-परम्परा के अनूठे प्रतीक थे। आप सच्चे अर्थों में एक महान कर्मयोगी ऋषि थे। आपका संत हृदय हरिद्वार की गंगाधारा की तरह निर्मल एवं पवित्र था।

डॉ० तिवारी का नाम विश्व के सुविख्यात भाषाशास्त्रियों में अत्यन्त आदर पूर्वक लिया जाता है। उन्होंने अपने विषय के अनेकानेक महत्वशाली ग्रंथ हिन्दी वाङ्मय को दिए हैं। उनकी कोई भी अभिनव कृति जब प्रकाश में आयी तो भाषा-विज्ञान को और भी अधिक विस्तार तथा और भी अधिक गहराई की उपलब्धि हुई; भाषा-शास्त्रियों का पथ और भी अधिक परिष्कृत एवं प्रशस्त हुआ, साथ ही अनुसंधित्सुओं को अपने सर्वेक्षण कार्य और दिशाबोध में और भी अधिक सहायता मिली। जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (१८५१-१९४१) का नाम भाषा शास्त्र के आकाश पर सूर्यवत देदीप्यमान रहेगा। वे संसार की असंख्य भाषाओं और बोलियों का सूक्ष्म अध्ययन एवं सर्वेक्षण कार्य आजीवन करते रहे। ग्रियर्सन को भारत से विशेष प्रेम और लगाव रहा। जिसके कारण ही भारतीय भाषाएं तथा बोलियाँ उनके भाषा शास्त्रीय अध्ययन और विश्लेषण का केन्द्र विन्दु बनीं। डॉ० ग्रियर्सन का यह कार्य लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया के नाम से सत्रह खण्डों में प्रकाशित है जिसकी भाषाशास्त्रीय उपयोगिता सदैव सर्वमान्य रहेगी। डा० तिवारी ने उनके भाषा सर्वेक्षण के महत्वपूर्ण कार्य का अंतिम दिनों में चार वृहत् खंडों में अनुवाद पूरा करके एक अत्यन्त स्मरणीय कार्य किया है जो प्रकाशनाधीन है। यह रहस्य मुझे अपने अंतिम मिलन के समय २७ मार्च ८५ को उनसे उनके अलोपीबाग स्थित निवास पर मालूम हुआ था। इसके अतिरिक्त उन्होंने डॉ० ग्रियर्सन के भाषा सर्वेक्षण की भूमिका का "भारत का भाषा सर्वेक्षण" के नाम से बहुत पहले ही अनुवाद किया था जो उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना विभाग की ओर से प्रकाशित हो चुका है। आपने मैक्समूलर के "साइंस आफ लैंग्वेज" का भी अनुवाद बहुत पहले ही संपन्न किया था जिसे मेसर्स मोतीलाल बनारसी दास ने प्रकाशित किया है। डॉ० तिवारी की निम्नलिखित प्रकाशित रचनाएँ है :—

१. ए डाइलेक्ट आफ भोजपुरी २. ओरिजिन एण्ड डेवलपमेंट आफ भोजपुरी ३. भोजपुरी भाषा और साहित्य, ४. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास ५. भाषाशास्त्र की रूपरेखा ६. पाणिनि के उतराधिकारी ७. हिन्दी भाषा की भूमिका (डा० धीरेन्द्र वर्मा व्याख्यानमाला प्रथम-पुष्प, २,३,४ मई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १६८१). ८. अभिनव भाषा-विज्ञान: सिद्धांत और प्रयोग, ६. भारतीय आर्य भाषाएँ।

संपादित:—१०. रासपंचाध्यायी, ११. वीर-काव्य १२. कवितावली, अनुवाद, १३. ग्रियर्सन भाषा सर्वेक्षण की भूमिका, १४, मैक्समूलर-भाषा-विज्ञान।

आपको हिन्दी सेवा तथा मौलिक रचनाओं के प्रणयन के लिए समय-समय पर अनेक पुरस्कार मिले :

१. मध्यप्रदेश सरकार देवपुरस्कार, २. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद-पुरस्कार तथा ताम्रपत्र, ३. भोजपुरी साहित्य अकादमी-पुरस्कार तथा ताम्रपत्र, ४ उत्तर प्रदेश सरकार-दीर्घकालीन हिन्दी सेवा तथा साहित्य रचना के लिए पुरस्कार तथा ताम्रपत्र, ५. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा साहित्य वाचस्पति मानद उपाधि।

उन्हें विश्व हिन्दी सम्मेलन के दिल्ली अधिवेशन द्वारा भाषा विज्ञान के क्षेत्र में प्रशंसनीय शोधकार्य के लिए सम्मानपत्र एवं सरस्वती की प्रतिमा प्रदान किये गये।

डॉ० तिवारी सन् १६२८ ई० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के स्थायी सदस्य चुने गये और बाद में सम्मेलन के साहित्य मंत्री बने। सन् १६३३ में जब राष्ट्र भाषा समिति वर्धा का गठन हुआ और उसके सभापति महात्मा गांधी जी बने, तो उसमें भी आपने कई वर्षोंतक कार्य किया। आप आजीवन हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य रहे।

उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आप पिछले पन्द्रह वर्षों से सभापति रहे हैं। इसके अतिरिक्त अमेरिका की "लिंग्विस्टिक सोसायटी" के आप कई वर्षों तक सदस्य रहे। भारत की भी "लिंग्विस्टिक-सोसायटी" कार्यालय पूना के आप आजीवन सदस्य थे।

डॉ० तिवारी जीवन के अन्तिम दिनों तक एक नैष्ठिक साधक और महान कर्मयोगी की तरह सतत कार्यरत रहे। आपसे विगत चालीस वर्षों से मेरा अत्यन्त मधुर एवं घनिष्ट सम्पर्क बना रहा। आप मेरे मित्र और प्रेरणादायक सहयोगी थे। आपके दिवंगत हो जाने से हिन्दी भाषा और साहित्य का ऐसा प्रकाण्ड विद्वान उठ गया जिसकी पूर्ति होना निकट भविष्य में सम्भव नहीं है। आपके निधन से भाषाशास्त्र के क्षेत्र में सम्प्रति गहरा अन्धकार छा गया। गहरी चिन्ता का विषय है कि ऐसे संकट के समय ज्ञानोद्यान का शोक-सन्तापहारी कल्पवृक्ष काल प्रभञ्जन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के प्रकोप से धराशायी हो गया। मनीषियों, साधकों का पावन प्रयाग प्राण-हीन शरीर की तरह हो गया है।

कुछ समय पूर्व २७ मार्च, ८४ मंगलवार को मैं अपना भोजपुरी महाकाव्य 'बउधायन' लेकर जब डॉ० तिवारी से मिलने और उन्हें उपहार की प्रति भेंट करने गया तो वे अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में आह्लाद पूर्वक मिले। यद्यपि वे सामान्यत: स्वस्थ दिखाई पड़े किन्तु भीतर से कुछ शिथिलता और थकावट-सी झलक रही थी। आपने भाषा-विज्ञान सम्बन्धी अपनी हाल में प्रकाशित कुछ पुस्तकें मुझे दीं और 'बउधायन' के प्रकाशन से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि डॉ० ग्रियर्सन के प्रमुख खण्डों का मैंने चार खण्डों में अनुवाद पूरा करके प्रकाशक को सूचित कर दिया है। शेष कार्य इन खण्डों के प्रकाशन के बाद होगा। उनसे मेरी यह अन्तिम भेंट थी, इसका मुझे क्या पता था ? मैं डॉ० तिवारी के शील, सौजन्य और विशाल हृदयता का आजीवन ऋणी रहूँगा। उनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से ही मेरा भोजपुरी महाकाव्य 'बउधायन' लिखा गया एवं प्रकाशित होकर ससम्मान उनके करकमलों में अर्पित हुआ। उन्होंने फरवरी, ८४ में भोजपुरी साहित्य अकादमी, बिहार द्वारा प्रकाशित मेरे इस महाकाव्य का प्राक्कथन लिखकर मुझे प्रचुर गौरव प्रदान किया है जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता। इस भेंट में उनके संयमित जीवन और स्वस्थ शरीर को देखकर मुझे इस बात की तनिक भी आशंका नहीं थी कि इतना शीघ्र और अचानक आकस्मिक रूप से वे साथ छोड़कर लोकान्तर को प्रस्थान कर देंगे। महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन एवं महाकवि नागार्जुन सहित उनके जैसे अत्यन्त उदार हृदय विद्वान मेरी साधना के प्रेरणा स्रोत थे। वे हमारे विशाल साहित्यिक परिवार के आदरणीय सदस्य थे। अत: विरक्त संन्यासी होकर भी उनके प्रति अपनी भारी ममता के करते मैं अत्यन्त दु:खी और हतप्रभ हूं। किन्तु यह संसार मृत्युलोक है। यह परदेशियों का नगर है किसी का घर नहीं।

शिवाला (वाराणसी)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ साहित्यिक निबन्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाल साहित्य की चुनौतियाँ और समस्याएँ

—डॉ० रोहिताश्व अस्थाना

बाल साहित्य हिन्दी साहित्य का सर्वाधिक उपेक्षित अंग रहा है। उसका इतिहास अनेक चुनौतियों और समस्याओं से भरा पड़ा है। बड़े-बड़े दिग्गज समालोचकों एवं समीक्षकों ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखते समय बाल साहित्य को उपेक्षित ही छोड़ दिया। चाहे वे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हों, चाहे डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० लक्ष्मीशंकर वार्ष्णेय अथवा डॉ० जगदीश गुप्त हों, सभी ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखते समय कहीं भी बालसाहित्य की चर्चा नहीं की। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय शासन तथा प्रान्तीय शासनों द्वारा साहित्य सेवाओं के लिए जो पुरस्कार निर्धारित किए जाते हैं उनमें भी बाल साहित्य को या तो उपेक्षित समझकर छोड़ दिया जाता रहा है, या उनके लिए बहुत कम पुरस्कार रखा जाता रहा है। आजकल तो सरकारें भी वोटों की राजनीति पर टिकी हुई हैं। सरकारें उन्हें ही पुरस्कृत करती हैं जो बड़ों के लिए लिखते हैं क्योंकि बड़े लोग वोट देते हैं। चूँकि बच्चों को वोट देने का अधिकार नहीं होता, अतः बच्चों के लेखकों को पुरस्कृत करने से सरकार को कोई लाभ नहीं होता। अनेक समालोचक तो बाल साहित्य को बचकाना एवं मात्र तुकबन्दी से युक्त मानते हैं। पर वास्तव में देखा जाए तो बाल मनोभावों, रुचियों, प्रवृत्तियों एवं बालग्राह्यता के अनुरूप बच्चों में बच्चा बनकर बालसाहित्य लिखना प्रौढ़ साहित्य लेखन की अपेक्षा अधिक कठिन है।

इधर आरोपित बालसाहित्य भी रंगीन आवरणों में सजधजकर प्रस्तुत किया जा रहा है जिसका बच्चों के संवेदनशील संसार से कोई सीधा सम्पर्क नहीं है। हमारे अंग्रेजी प्रेमी अभिभावक अपने बच्चों को अंग्रेजी राइम्स 'बा बा ब्लैक शीप' रटाकर उनका उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करना चाहते हैं किन्तु हिन्दी में लिखे जा रहे शिशुगीत उनके गले के नीचे नहीं उतरते। इसी प्रकार पाश्चात्य परम्परा के अन्धानुकरणवश चित्रकथाओं (कॉमिक्स) का भूत हमारे देश के बच्चों पर चढ़ा रहता है। यदि ये चित्रकथाएँ हमारे देश के पूर्वजों एवं वीरों के जीवनवृत्त पर आधारित हों तब तो ये उपयोगी हो सकती हैं, अन्यथा विदेशी कपोल-कल्पित कथाओं पर चित्रित ये कॉमिक्स हमारे बच्चों का तनिक भी भला नहीं कर सकते। बच्चों के लिए मारधाड़ वाली कपोल कथाओं पर आधारित जासूसी या रोमांचक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाल उपन्यास भी उन्हें कोई दिशा देने में समर्थ नहीं हो सकते। अतः बाल साहित्य लेखन से पूर्व बालमनोविज्ञान का भली-भाँति अध्ययन करना आवश्यक है। श्रेष्ठ एवं उपयोगी बालसाहित्य वही हो सकता है जो बच्चों के हृदय से सीधे तादात्म्य स्थापित करके उन्हें प्रभावित कर सके। भाषा की सरलता बाल-साहित्य की प्रमुख विशेषता है।

बालसाहित्य का सृजन आयुवर्ग का ध्यान रखते हुए करना चाहिए। आज-कल अनेक नामधारी बड़े लेखक बाल साहित्य के क्षेत्र में उतर रहे हैं। स्थापित होने के कारण उनकी रचनाएँ प्रकाशकगण छाप भी देते हैं किन्तु बालसाहित्य के शास्त्रीय सिद्धान्तों पर आधारित न होने के कारण ऐसा आरोपित बाल साहित्य पुस्तकालयों की शोभा तो बन सकता है पर बाल-पाठकों में लोकप्रिय नहीं हो सकता। हमें ध्यान रखना होगा कि ३ से ५ वर्ष के शिशुओं के लिए लिखा जाने वाला साहित्य उनकी बुद्धि, रुचि, जिज्ञासा एवं ग्रहणशीलता के अनुरूप होना चाहिए।

हमारे यहाँ बाल रंगमंच अथवा बालथियेटरों का प्राय. अभाव-सा है। इसलिए हिन्दी बालसाहित्य में बाल-एकांकी और बाल-नाटकों की कमी पाई जाती है। बाल-कलाकारों को भी समुचित प्रोत्साहन नहीं मिल पा रहा है।

बाल साहित्य के समक्ष एक अन्य प्रमुख समस्या साधारण मध्यम वर्ग एवं निम्नवर्गीय बाल-पाठकों तक पहुँचाने की है। बालसाहित्य का प्रचार-प्रसार नगरीय परिवेश तक ही सिमटकर रह गया है जबकि ८०% बाल पाठक सुदूर ग्रामीण अंचलों में निवास करते हैं। आधुनिक महँगाई के इस युग में वे 'नन्दन', 'पराग' जैसी पत्रिकाएँ अथवा बहुरंगी कीमती बाल-पुस्तिकायें खरीदकर नहीं पढ़ सकते। अत: शासन की ओर से प्रान्तीय स्तर पर बालसाहित्य अकादमी अथवा वित्त पोषित स्वायत्तशासी बाल-संस्थाओं की स्थापना की जानी चाहिए जिनके माध्यम से रियायती मूल्य के कागज पर उत्कृष्ट बाल साहित्य की पुस्तकें प्रकाशित करके सामान्य बालपाठकों तक सस्ते मूल्य पर उपलब्ध करायी जा सकें। इन संस्थाओं में बालसाहित्यकारों को समुचित प्रतिनिधित्व देना अधिक उपयोगी हो सकता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् बालसाहित्य की उपयोगिता को विशेष महत्व दिया जा रहा है। हिन्दी बालसाहित्य की सार्थकता की ओर सर्वप्रथम सुप्रसिद्ध बाल साहित्य समीक्षक श्री निरंकार देव सेवक की दृष्टि गयी और उन्होंने अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समालोचनात्मक ग्रन्थ 'हिन्दी बालगीत साहित्य' में हिन्दी बालगीतों का न केवल सम्पूर्ण लेखा जोखा प्रस्तुत किया अपितु अंग्रेजी तथा दूसरी भाषाओं में उपलब्ध बालगीत साहित्य से उसका तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् डॉ० हरिकृष्ण देवसरे, डॉ० राष्ट्रबन्धु, डॉ० श्री प्रसाद, डॉ० ज्योतिस्वरूप आदि विद्वानों ने बालसाहित्य पर अपने शोधप्रबन्ध प्रस्तुत करके बालसाहित्य की सार्थकता को परिभाषित किया। आज तो नये प्रयोगों एवं नये प्रतीकों का बाल-साहित्य में बोलबाला है। इसे ध्यान में रखते हुए डॉ० कुसुम डोभाल ने अभी हाल ही में गढ़वाल विश्वविद्यालय में 'हिन्दी के बालकाव्य में प्रतीक योजना एवं कल्पना तत्व' विषय पर शोधप्रबन्ध प्रस्तुत करके पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की है।

पत्र पत्रिकाओं ने भी बाल साहित्य के प्रसार-प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। 'बालक', 'बाल-सखा', 'खिलौना', 'लल्ला', 'कुमार', 'वानर', 'किशोर' आदि बाल पत्रिकाओं की परम्परा को 'बालक', 'नन्दन', 'पराग', 'बाल-भारती', 'चन्दामामा', 'चम्पक' जैसी पत्र पत्रिकाओं ने आगे बढ़ाया आज 'सुमन सौरभ', 'लोट-पोट', 'नन्हीं मुस्कान', 'किलकारी', 'बाल-साहित्य समीक्षा', 'बाल पताका', 'बाल दर्शन', 'बाल नगर', 'सम्पा' आदि पत्रिकायें बाल साहित्य को वास्तविक पाठकों तक पहुँचा रही हैं। बाल साहित्य के व्यापक प्रचार-प्रसार को देखते हुए 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'अवकाश', 'दैनिक जागरण', 'नवभारत टाइम्स', 'आज' आदि पत्र पत्रिकाओं ने 'बालस्तम्भ' का प्रकाशन आरम्भ किया। अनेक पत्र पत्रिकाओं ने बाल साहित्य विशेषांक भी प्रस्तुत किये। वर्ष १९८३–८४ में 'हिन्दी बाल पत्रिकाओं का इतिहास' विषय पर श्री सुरेन्द्र विक्रम ने लखनऊ विश्वविद्यालय को अपना लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया। बाल साहित्य को पुरस्कृत करने में शासन की उदासीनता को ध्यान में रखते हुए डॉ० राष्ट्रबन्धु ने अपने संगठनात्मक प्रयासों से अनेक बाल साहित्य सम्बन्धी पुरस्कारों का शुभारम्भ किया। इसी प्रकार इलाहाबाद से श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया पुरस्कार का शुभारम्भ वहाँ की एक संस्था के माध्यम से आरम्भ किया गया। हर्ष का विषय है कि इसकी संरक्षिका श्रीमती महादेवी वर्मा जैसी विदुषी एवं महान कवयित्री हैं जो साहित्यकारों के मानस को भली भाँति समझती हैं।

बाल साहित्य की उपेक्षा के विरोध में बाल साहित्यकारों ने संगठित होकर जिस एकता एवं सार्थक लेखन का परिचय दिया है, वह वास्तव में बाल साहित्य की उपलब्धियों एवं सम्भावनाओं को रेखांकित करता है। आज बालसाहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के पास अपना अलग इतिहास, समीक्षा के नये मानदण्ड तथा अपना शिल्प विधान है।

बाल साहित्य का भण्डार अब दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। विज्ञान के इस युग में बाल कथा साहित्य जो पहले कपोल कल्पित एवं परियों के आख्यानों पर आधारित था, यथार्थ एवं वैज्ञानिक तथ्यों के अनुरूप लिखा जा रहा है। इतना ही नहीं बाल पाठकों एवं बाल साहित्य प्रेमियों के लिए डॉ० हरिकृष्ण देवसरे ने अन्तर्राष्ट्रीय बालवर्ष में 'हिन्दी के सौ बाल गीत' 'हिन्दी की सौ बाल कहानियाँ', 'बच्चों के सौ नाटक' नामक ग्रन्थों का सम्पादन किया। इसके अतिरिक्त बाल साहित्य पर अनुसंधित्सुओं की सुविधा के लिए रोहिताश्व अस्थाना ने भी 'हिन्दी के लोकप्रिय बालगीत' नामक ग्रंन्थ का संपादन किया है जिसमें प्रायः समस्त बाल-गीतकारों की रचनायें सचित्र एवं सपरिचय प्रकाशित की गयी हैं। इसी वर्ष हिन्दी संस्थान लखनऊ से श्री निरंकार देव सेवक के 'हिन्दी बालगीत साहित्य' का नवीन संस्करण प्रकाशित हुआ है, जिसमें आज तक बालगीत साहित्य का सम्पूर्ण विवरण उपलब्ध है।

निश्चय ही बाल साहित्य एक सम्भावनाशील विद्या है। आज आवश्यकता इस बात की है कि सच्चा बाल साहित्य बालकों तक पहुँचाया जा सके। इसके लिए आकाशवाणी एवं 'दूरदर्शन' पर बाल साहित्यकारों को आमंत्रित करके बालकथाओं एवं बालगीतों का प्रसारण करना चाहिए। चलचित्र निगम एवं व्यक्तिगत फिल्म निर्माताओं को बालफिल्में बनाने में रूचि लेना चाहिए। आज के दूषित फिल्म संगीत का कुप्रभाव बच्चों पर पड़ता जा रहा है। 'ना तूने सिगनल देखा ... —एक्सीडेन्ट हो गया' अथवा 'हम तुम एक कमरे में बन्द हों' जैसे निरर्थक एवं अश्लील गीतों की ओर बच्चों का रूझान बढ़ता जा रहा है। अतः बच्चों की रुचि को परिष्कृत करने के लिए अच्छे बालगीतों के संगीतबद्ध कैसेट तैयार कराये जाने चाहिएँ। विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं, विद्यालयों एवं शासन द्वारा परिचालित हिन्दी समितियों द्वारा बाल कवि सम्मेलनों का आयोजन किया जाना चहिए जिसमें बाल श्रोता अपने लिए लिखने वालों के मुख से बाल काव्य पाठ सुनकर प्रेरणा ले सकें। विगत दो वर्षों से 'नन्दिनी' छविगृह झांसी के स्वामी एवं बालकाव्य प्रेमी भाई मुकुन्द मेहरोत्रा, श्री श्यामकुमार दास के माध्यम से रामनवमी के अवसर पर बाल कवि सम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं, जो न केवल एक नई परम्परा का प्रवर्तन मात्र है, अपितु बाल साहित्य के उज्ज्वल भविष्य का द्योतक भी है। प्रतिवर्ष १४ नवम्बर को बालदिवस पर सर्वभाषा बाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर किया जाना चाहिए जिससे देश में लिखी जा रही बाल कविताओं का रसास्वादन एवं आकलन किया जा सके।

शासन को प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर बाल साहित्य के लिए अधिक पुरस्कार सुनिश्चित करने चाहिए। पुरस्कारों के अतिरिक्त बाल साहित्यकारों को विदेश यात्रा की सुविधा भी प्रदान की जानी चाहिए जिससे वे दूर देश के बच्चों एवं उनके लिए लिखे जा रहे बाल साहित्य से तादात्म्य स्थापित करके अपनी दृष्टि को व्यापक बना सकें। बाल साहित्यकारों के साथ-साथ बाल चित्रकारों को भी सम्मानित एवं पुरस्कृत करना चाहिए क्योंकि आकर्षक चित्रों के अभाव में बाल साहित्य लोकप्रियता अर्जित नहीं कर सकता। प्रकाशकों की ओर से बाल साहित्यकारों के लिए अच्छी रॉयल्टी एवं पारिश्रमिक राशि की व्यवस्था करनी चाहिए। इससे बाल साहित्य लेखन को यथोचित प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अतिरिक्त शासन की ओर से श्रेष्ठ बाल साहित्य को क्रय करके विद्यालयों में रखवाना चाहिए जिससे वह महलों से लेकर सुदूरवर्ती अंचलों में अवस्थित झोपड़ियों के बच्चों तक समान रूप से पहुंच सके।

अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने तथा इष्ट मित्रों के बच्चों के जन्म दिवस पर मूल्यवान उपहारों के स्थान पर बाल साहित्य की उत्तम कृतियाँ क्रय करके उपहार स्वरुप प्रदान करें। ये रंग बिरंगी सचित्र बाल कृतियां बच्चों के लिए खिलौने का कार्य करने के साथ-साथ उन्हें चरित्र निर्माण की प्रेरणा भी प्रदान करेंगी।

हमारे शिक्षाविदों को चाहिए कि स्नातकोत्तर स्तर के हिन्दी पाठ्यक्रम में बाल साहित्य को एक वैकल्पिक प्रश्न-पत्र के रूप में स्थान दें तथा बालसाहित्य पर शोध कार्य के अवसर उपलब्ध करायें।

निश्चय ही बाल साहित्य की उपलब्धियां किसी अन्य विद्या से कम नहीं हैं। उसकी सम्भावनायें अनन्त हैं। हमें एक होकर बाल साहित्य—लेखन, अध्ययन एवं आकलन के प्रति सजग रहना चाहिए। चूंकि बच्चे ही किसी राष्ट्र की आधारशिला हैं, अतः राष्ट्र के विकास की नींव को सुदृढ़ करने के लिए बाल साहित्य को समृद्धिशाली बनाना चाहिए। हमारे वर्तमान युवा प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी भारत को इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कराने के लिए शिक्षा में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आमूल परिवर्तन के पक्षधर हैं। उन्हें बाल साहित्य के विकास एवं प्रचार-प्रसार के सन्दर्भ में नयी दृष्टि से विचार करके योजनाओं को क्रियान्वित करना चाहिए। निस्संदेह उत्तम बाल साहित्य ही बच्चों की मुस्कान, नई पीढ़ी के निर्माण एवं राष्ट्र की शान के लिए उत्तरदायी हैं।

८३, चौहान थोक,
बाबा मन्दिर,
हरदोई (उ० प्र०)

काव्यानन्द : ब्रह्मानन्द

—काशी प्रसाद 'उन्मेष'

मैं, बचपन से एक मामूली किस्म का विद्यार्थी रहा। घर पर भोर में पिता जी द्वारा सूर-तुलसी के भजन सुनता, खुद गाने की इच्छा होती। भाव-भाषा का ज्ञान नहीं, पर गीतों के रस-बोध का आनन्द अनजाने हृदय में उतरता रहा।

एक लम्बी उम्र गुजरने के बाद भी याद हैं बचपन के वे दिन जब इस शहर में प्लेग की महामारी फैली थी। अपने तोता-मैना, ओखल-मूसल बैलगाड़ी पर लादकर पूरा परिवार गाँव के घर, हनुमानगंज पहुँचा था। उर्दू मिश्रित हिन्दी बोलने वाले चाचाजी का काम था बाहरी दालान में पुआल पड़े बिस्तर पर बच्चों को थपथपा-थपथपा कर सुलाना, भोर में जगाना और 'हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान हमको दीजिए' तथा 'पितु मातु सहायक स्वामि सखा तुम ही एक नाथ हमारे हो' प्रार्थना करवाना।

सन् १९२५–२६। पाँच साल की उम्र। जब आगे कक्षा चार में पहुँचा तो हिन्दी प्रवेशिका हाथों में थी। उसका प्रथम एवं द्वितीय पाठ प्रताप नारायण की कविता का था जिसे मैंने चाचाजी और भाइयों के साथ तब गाया था जब क, ख, ग लिखना शुरू किया था।

पैंसठ साल के बाद जब हिन्दी-चलचित्र-जगत के अमर गायक मुकेश की आवाज पचासों वाद्य-वृन्द के साथ रिकार्ड में प्रतापनारायण मिश्र की उन कविताओं (प्रार्थनाओं) को गाया जाता सुनता हूँ तो सोचता हूँ. शायद मिश्रजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने कल्पना तक नहीं की होगी कि उनकी काव्य-रचना सचमुच ब्रह्मानन्द-सहोदर होगी।

सृष्टि के सृजन में निनादित नाद से उपजा स्वर-ब्रह्म, उसकी दिग्-दिगंत व्याप्ति और अनन्त गूँज-अनुगूँज का एक छोटा-सा उदाहरण मैंने दिया अपने जीवन की आरम्भिक अनुभूतियों की श्रुति-स्मृति से। आज मैं आनन्द और काव्यानन्द की राह पर एक लम्बी यात्रा का पथिक हूँ जहाँ बाँसुरी की टेर मुझे आगे चलाये जा रही है।

एक और अनुभव। रचना, संरचना, सृजन-कार्य, आनन्दमय, मंगलमय हो, मनीषा की तेजस्विता का ओज और ऊर्जा भरी अभिव्यक्ति हो, मधुर हो, माधुर्य से ओत-प्रोत मुखरता छन्द-लय-ताल युक्त जिसमें भी हो, वह कवि है, काव्य का सर्जक। उसका नाम कुछ भी हो सकता है—रामसिंहासन सहाय, रामधारी सिंह, माखन लाल चतुर्वेदी, जगदीश ओझा।

नाम का नहीं, काम का माहात्म्य होता है। नाम की सांसारिक पहचान का अर्थ जो भी हो, काम का महत्व, वह भी काव्यकार के महत्वाकांक्षा रहित कर्म की, जो रवि से भी आगे हो, उसको 'मधुर', 'दिनकर', 'भारतीयआत्मा', 'सुन्दर' आदि कहकर याद रखा जा सकता है।

'मधुर' जी समेत हमें पढ़ाया गया सूर, तुलसी, कबीर, रहीम, बिहारी और रत्नाकर को। श्रीनाथ सिंह, लक्ष्मीधर बाजपेई, मैथिली शरण गुप्त आदि को भी। उस समय काव्य-ज्ञान की कठिनाई झेलनी पड़ती थी। कविता रास नहीं आती थी, किन्तु मानवीय अभिव्यक्ति की नैसर्गिक विधा और उसके रचनाकारों के प्रति चामत्कारिक दैवी शक्ति का साश्चर्य बोध होता था।

मन पर विचार और विवेक पर एक आधार बना आध्यात्मिक, ऐतिहासिक मानवीय जीवन-बोध का। गौरवमय अतीत-ज्ञान ने जीवन को असद् से सद् की ओर मोड़ा। और आज साहित्यिक-साधना के अप्रतिम व्यक्तित्व 'मधुर' जी के दीर्घ जीवन को देखता हूँ तो एक शाश्वत गौरव का अनुभव होता है—बचपन में जिन महाकवियों को देवत्व से भरापूरा जाना-माना उन्हें ही किशोरावस्था में अपने बीच पाया।

मिडिल स्कूल के बाद जब अंग्रेजी स्कूल की शिक्षा शुरू हुई, उस समय से बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा तथा हिन्दी-साहित्यकारों, कवियों के निकट ही आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, रामसिंहासन सहाय 'मधुर', श्यामसुन्दर उपाध्याय,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जानकी प्रसाद, प्रसिद्ध नारायण सिंह, हरिकृष्ण सिंह तथा शिवप्रसाद सिंह आदि की सन्निधि में जीवन छाया रहता था। जनपद के इस मुख्यालय नगर (बलिया) में मातृ-भाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव दिलाने का एक मधुर, मोहक आन्दोलन चल रहा था।

हम विद्यार्थी कवि सम्मेलनों के मंच पर 'मधुर' जी को देखने-सुनने के लिये लालायित रहते थे। साल में दो-तीन कवि सम्मेलनों में बाहर के स्वनामधन्य कवियों के समकक्ष 'मधुर' जी के काव्यपाठ की धूम मची रहती थी। उस समय तक यथार्थ और प्रगतिशील कविताओं के दायरे संभवतः नहीं बने-बँटे थे। था केवल शास्त्रीय छन्द-विधा पर आधृत कविताओं में वर्तमान को जीने-भोगने और व्यक्त करने का दायरा।

लगभग दो दशकों तक भारत-भारती के आँगन में युगधर्म की काव्यसाधना लेकर 'मधुर' जी छाये रहे अपनी कोमलकान्त पदावलियों के सस्वर काव्यपाठ से। स्वतन्त्रता-संग्राम का काल युवकों में अंगड़ाई पैदा करता आया था। मातृभाषा की सुबोधता-कोमलता शक्ति भर रही थी 'मधुर' जी जैसे ओजस्वी कवि की कविताओं से। जवानी थिरक उठती थी। उनकी पंक्तियों को सुनकर सामाजिक भेद-भाव बिखर जाता, कुरीतियों में समाई गुलामी टूट-फूटकर छिन्न-भिन्न हो जाती। एक ऐसी ऊर्जा और शक्ति लहक-दहक उठती कि जल्दी-से-जल्दी भारत और भारत-भारती को कैसे बन्धन-मुक्त किया जाय।

चारण; भक्ति और रीतिकालीन काव्यानन्द के बाद जब छायावादी रचनाओं का युग आया तो उससे असंपृक्त 'मधुर' जी, माखनलाल चतुर्वेदी आदि काव्यकारों ने गाँधी जी के स्वातन्त्र्य-संग्राम के लोकोत्तर निनाद को 'भाषा' में पिरोना शुरु किया। पहले आश्चर्य हुआ महान् कवियों की तरह 'मधुर' जी—जैसे कालजयी कवि को पाकर, फिर श्रद्धा उमड़ी जो आज भी, जितने ही क्षणों के लिये उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है, लहरा उठती है।

आज सचमुच देश आज़ाद है। सुनहली किरणें हँस रही हैं। दसों-दिशाएँ लाल हो उठी हैं। हलवाहा भाग्य-विधाता बन गया है। किसी को विधना का फिक्र नहीं क्योंकि आज़ादी की लड़ाई के समय 'मधुर' जी ने जिस हलवाहे को हल के फल से देश की किस्मत की रेखा खींचते देखा, उसके गौरव के गीत लाखों के बीच गाये, उसने देश के भाग्य को बदल दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मधुर' जी के जीवन के विभिन्न पलों को मुझे जीने-सीने का अवसर मिला है। उन्हें सुनने पर सदैव लगा कि यह महान व्यक्तित्व वकील की हैसियत में भी कवि है। वाणी, कर्म, स्वभाव से सदा मधुर। उनकी साधना अभिनन्दनीय रही है।

जनपद के प्रायः सभी साहित्यकारों का सत्संग-स्नेह मुझे मिलता रहा है। मेरा मत है कि हम सम्मान्य कवि-साहित्यकारों को पढ़-सुनकर अपने भौतिक दुःखों को भूल जाते हैं। हमारी आयु बढ़ जाती है, हम सक्षम और अधिक योग्य सिद्ध होते हैं, सृजन-सृष्टि की मंगलमय परम्परा को आगे बढ़ाने में। सचमुच हमें लगता है कि काव्य का आनन्द पाकर ब्रह्मानन्द प्राप्त करते हैं। हमारा दुःख-पाप कट जाता है। हम असत्य मिथ्या से अलग होकर सत्य, शिव, सुन्दर का साक्षात्कार कर पाते हैं। 'रसो वै सः' की परिव्याप्ति ही तो ब्रह्मानन्द है।

मानव-समाज की विकास-परम्परा में कविवर 'मधुर' जी के महत्व योगदान का मूल्यांकन और अभिनन्दन हो, यह शुभ है।

कृतिकार, काव्यशिल्पी का अभिनन्दन एक अवसर प्रदान करता है, प्रेरणा प्राप्त करने का। लाभ हमारा है, आने वाली पीढ़ी का है। हम उपकृत हैं, कृतज्ञ हैं 'मधुर' जी—जैसे महान काव्यशिल्पी के, जिन्होंने दुःखों को भुलाकर ऐसे आनन्द की ओर आगे बढ़ाया जहाँ पहुँचकर सच्चिदानन्द प्राप्त करते हैं।

संपादक
'क' आंचलिक दैनिक
बलिया–277001

बलिया की विभूति डॉ० गणेश प्रसाद

—स्व० डॉ० उदयनारायण तिवारी

(विश्वविख्यात गणितज्ञ डॉ० गणेश प्रसाद पर डॉ० तिवारी का एक लम्बा लेख बहुत पहले प्राप्त हुआ था। उसका संक्षिप्त रूप हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। —सम्पादक)

डॉ० गणेश प्रसाद बलिया संभाग के श्रीवास्तव कायस्थ थे। उनका जन्म जलालपुर में सं० १९३३ वि० के अगहन मास की अमावस्या तदनुसार १५ नवंबर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१८७६ ई० को हुआ था। उनके पिता का नाम श्री रामगोपाल लाल तथा माता का नाम श्रीमती जूठन देवी था।

बलिया के जिला स्कूल से उन्होंने १५ वर्ष से कम आयु में ही इंट्रेन्स की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की थी। उन्हें ८ रुपये मासिक छात्रवृत्ति मिली। इण्टर की परीक्षा उन्होंने म्योर कालेज, इलाहाबाद से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। प्रसिद्ध है कि उन्होंने परीक्षा के पूर्व पाठ्यक्रम को चालीस बार दुहरा लिया था। १८९५ में उन्होंने गणित से प्रथम श्रेणी में बी० ए०, १८९६ में एम० ए० किया। १८९८ में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डी० एस-सी० की उपाधि प्राप्त की। वे इस विश्वविद्यालय के प्रथम डी० एस-सी० थे। १८९९ से १९०४ तक वे छात्रवृत्ति प्राप्तकर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन-रत रहे। छुट्टियों में वे जर्मनी के गाटिंगन विश्वविद्यालय चले जाते थे। यहाँ उन्होंने अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच और इटालियन भाषाओं का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया।

१९०४ में डॉ० प्रसाद स्वदेश वापस लौट आये। विदेश-यात्रा के कारण उन्हें जातिच्युत भी कर दिया गया। इसका प्रभाव उस महान गणितज्ञ के मन पर क्या पड़ा होगा, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। फिर भी उन्होंने अपने जाति-जवार के लोगों के उत्थान की ओर बराबर ध्यान किया।

उन्होंने स्वदेश लौटकर म्योर सेण्ट्रल कालेज, इलाहाबाद में गणित के अतिरिक्त प्राध्यापक के रूप में अध्यापन शुरू किया। अध्यापन करते समय वे अपने को बिलकुल भूल जाते थे। डस्टर न मिलने पर कभी-कभी अपनी कोट से ही बोर्ड साफ कर लेते थे। उन्हें अपने वस्त्रादि के औचित्य-उपयुक्तता का रंच ख्याल नहीं रहता था। १९०५ में उनका स्थानान्तरण वाराणसी के क्वींस कालेज में हो गया। यहाँ वे प्रायः १९१४ तक रहे। यहाँ उन्होंने गणित-शिक्षण की उच्च परम्परा स्थापित की। अब तक वे गणितज्ञ के रूप में देश-विदेश में चर्चित हो चुके थे। कुलपति आशुतोष मुखोपाध्याय उन्हें कलकत्ते ले गये जहाँ उन्हें घोष-चेयर का प्रधान बनाया गया।

डॉ० गणेश प्रसाद १९१८ में कलकत्ते से बनारस आ गये। उन्हे हिन्दू विश्वविद्यालय का प्रिंसिपल बनाया गया। विश्वविद्यालय का शिक्षण-कार्य तब कमच्छा स्थित हिन्दू कालेज में होता था। इस समय उनके सामने एक ओर एक हजार छात्रों के शिक्षण का भार था तो दूसरी ओर विश्वविद्यालय के विविध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकायों को परिचालित एवं व्यवस्थित भी करना था। उन्होंने धैर्यपूर्वक स्थितियों का सामना किया और बड़ी कुशलता से विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाया। उन्होंने कुलपति तथा प्रिंसिपल दोनों दायित्वों का निर्वाह करते हुए मात्र प्रिंसिपल-पद का वेतन लिया।

प्रो० आशुतोष मुखोपाध्याय ला-कालेज की नींव रखने हेतु बनारस आये हुए थे। उन्होंने डा० प्रसाद के सामने कलकत्ते में गणित के हार्डिंग्स चेयर का प्रोफेसर बनाने का प्रस्ताव रखा। डा० प्रसाद की निम्न शर्तों पर उन्हें कलकत्ते बुला लिया गया :

१. अपने पद पर निर्धारित आयु तक बना रहूँगा, इस बीच मुझे कोई हटा नहीं सकेगा।

२. मेरे लिये अवकाश लेने का कोई नियम नहीं रहेगा।

३. विश्वविद्यालय में प्रतिवर्ष केवल बीस व्याख्यान ही दूँगा। शेष समय शोध छात्रों में लगाऊँगा।

कलकत्ते में रहते हुए उन्होंने गणित-शोध पर बहुत कार्य करवाया। हिन्दू विश्वविद्यालय, आगरा वि० वि० तथा इलाहाबाद वि० वि० की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। १९२४ से १९२७ तक वे उ० प्र० विधानसभा के भी सदस्य रहे। १९३२ में वे इंडियन साइंस कांग्रेस के गणित एवं भौतिक विज्ञान शाखा के सभापति थे।

डा० प्रसाद का निधन ९ मार्च, १९३५ को साढ़े सात बजे आगरे के एक अस्पताल में हुआ। उनके सिर की नस फट गयी थी। बेहोश होकर कुर्सी पर लुढ़क गये। लोगों ने समझा, विश्राम की मुद्रा में हैं। पर वह तो चिर निद्रा में सो चुके थे।

डा० प्रसाद विश्वविख्यात गणितज्ञ थे। एक गणितज्ञ निष्ठा तथा दृढ़संकल्प का व्यक्ति होता है। उसमें स्वाभिमान की भावना कूट-कूटकर भरी होती है। किसी ने उनसे कहा था, "समुद्र यात्रा के बाद आप प्रायश्चित कर लेते, इसमें हर्ज ही क्या था?" उन्होंने तत्काल उत्तर दिया था, "बहुत बड़ा हर्ज था, आत्म-प्रवंचना होती, जैसे मुझमें आत्मविश्वास नहीं है।" बिरादरी ने उन्हें छोड़ दिया था किन्तु उन्होंने बिरादरी को कभी नहीं छोड़ा। उन्हें विश्वास था, लोग एक दिन अपनी भूल अवश्य महसूस करेंगे और सही रास्ते पर लौटेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके एकमात्र कन्या थी–कृष्ण कुमारी। पत्नी का स्वर्गवास पहले ही हो गया था। क्षयरोग से ग्रस्त कन्या भी १६ वर्ष की आयु में १९०६ में चल बसी। इस घटना ने इन्हें अत्यन्त मर्माहत कर दिया। वे तीन माह तक शोक से व्याकुल रहे। १६१० में कलकत्ते में गणित पर एक व्याख्यान देना था। उसकी तैयारी में शोक भूलता रहा। कन्या के निधन के उपरान्त उनके व्यवहार में एक मोड़ आया। स्वभाव परिवर्तित हो गया। एकान्तनिष्ठ अध्ययन की सीमा से निकलकर वे सामाजिक-कार्यकलापों में भाग लेने लगे। वे अब पहले की तरह न उतने कठोर रह गये, न उतने तीखे। लेकिन समय का मूल्य उनके लिये अभी भी वैसा ही था। उनकी चारपाई के चारों ओर पुस्तकें पड़ी रहती थीं और वही तकिया का काम देती थीं। कभी-कभी बिछौना भी नदारद होता था। तब वे बिखरे स्टेट्समैन समाचार पत्रों पर ही सो जाया करते थे।

डॉ॰ गणेश प्रसाद हिन्दी के प्रबल पोषक थे। १६२६ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में जब सुधार कमेटी गठित की गयी तो उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि ऊंची से ऊंची पढ़ाई हिन्दी के माध्यम से हो। उन्होंने विदेशों के संदर्भ से कहा कि विदेशी भाषा में शिक्षा देना अस्वाभाविक, विषम, हानिकर एवं अपमानजनक है। इस प्रस्ताव का गुजराती, मराठी एवं बंगाली भाषी सदस्यों ने भी समर्थन किया। डॉ॰ प्रसाद अपनी गणित की पुस्तकों को स्वयं हिन्दी में अनूदित कर प्रकाशित कराना चाहते थे। इसके लिए वह एक प्रेस खोलना चाहते थे किन्तु काल ने स्वप्न को साकार नहीं होने दिया।

इस विश्वविख्यात गणितज्ञ के प्रति बलियावासियों का व्यवहार प्रायः उपेक्षा का ही रहा। उनके निधन के बाद भले ही जनपद में शोकसभा हुई हो मगर आज हम उनको एकदम भूल गये हैं। हमारे बच्चों को उनके बारे में कोई जानकारी तक नहीं है। अंग्रेजी के विश्वकोष में बलिया के केवल एक ही व्यक्ति का नाम है—डॉ॰ गणेश प्रसाद का। उनके स्वर्गवासी हुए आधी शताब्दी बीतने वाली है, हम उनकी स्मृति में न कोई स्मारक बना सके, न कोई वाचनालय-पुस्तकालय बना सके, न कोई शिक्षण संस्था ही स्थापित कर सके। उनकी स्मृति-रक्षा के लिये क्या हमारा कोई दायित्व नहीं है?

६, अलोपीबाग,
इलाहाबाद–२११००६,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

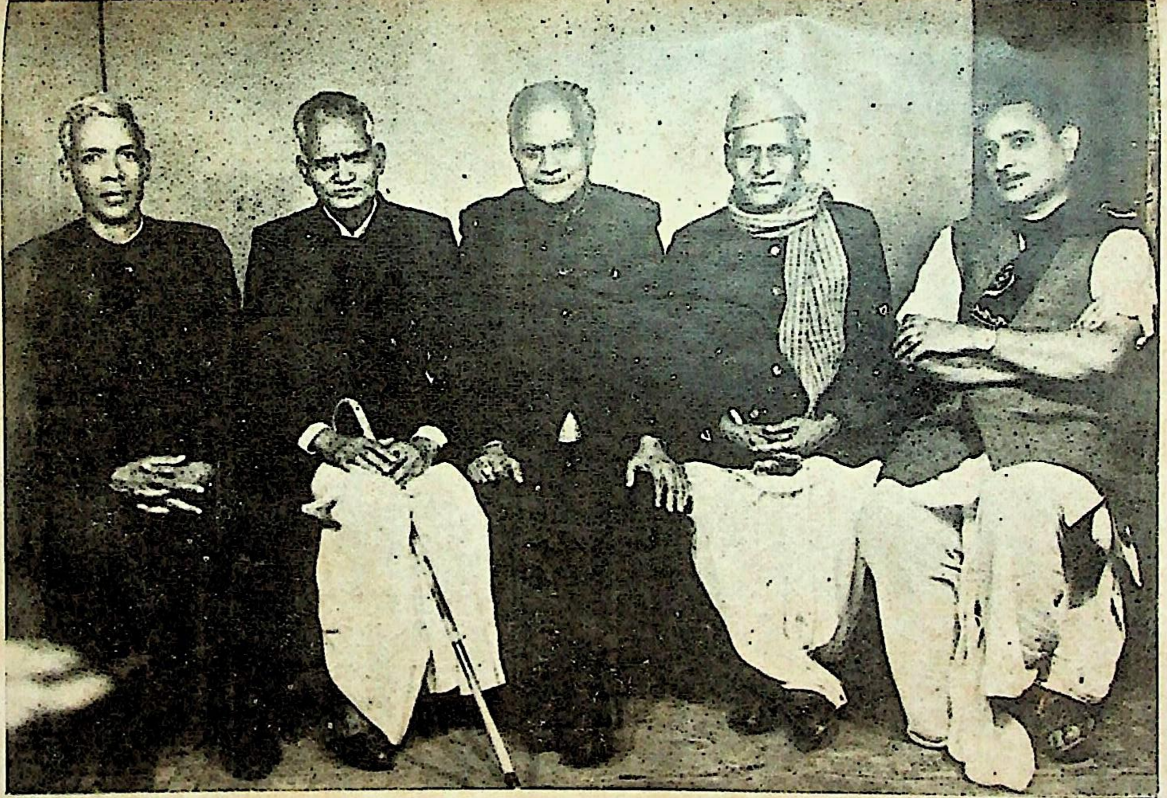

११ फरवरी, १९७९ को लिया गया एक दुर्लभ चित्र :

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके एकमात्र कन्या थी—कृष्ण कुमारी। पत्नी का स्वर्गवास पहले ही हो गया था। क्षयरोग से ग्रस्त कन्या भी १६ वर्ष की आयु में १९०९ में चल बसी। इस घटना ने इन्हें अत्यन्त मर्माहत कर दिया। वे तीन माह तक शोक से व्याकुल रहे। १९१० में कलकत्ते में गणित पर एक व्याख्यान देना था। उसकी तैयारी में शोक भूलता रहा। कन्या के निधन के उपरान्त उनके व्यवहार में एक मोड़ आया। स्वभाव परिवर्तित हो गया। एकान्तनिष्ठ अध्ययन की सीमा से निकलकर वे सामाजिक-कार्यकलापों में भाग लेने लगे। वे अब पहले की तरह न उतने कठोर रह गये, न उतने तीखे। लेकिन समय का मूल्य उनके लिये अभी भी वैसा ही था। उनकी चारपाई के चारों ओर पुस्तकें पड़ी रहती थीं और वही तकिया का काम देती थीं। कभी-कभी बिछौना भी नदारद होता था। तब वे बिखरे स्टेट्समैन समाचार पत्रों पर ही सो जाया करते थे।

डॉ० गणेश प्रसाद हिन्दी के प्रबल पोषक थे। १९२६ में काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय में जब सुधार कमेटी गठित की गयी तो उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि ऊंची से ऊंची पढ़ाई हिन्दी के माध्यम से हो। उन्होंने विदेशों के संदर्भ से कहा कि विदेशी भाषा में शिक्षा देना अस्वाभाविक, विषम, हानिकर एवं अपमानजनक है। इस प्रस्ताव का गुजराती, मराठी एवं बंगाली भाषी सदस्यों ने भी समर्थन किया। डॉ० प्रसाद अपनी गणित की पुस्तकों को स्वयं हिन्दी में अनूदित कर प्रकाशित कराना चाहते थे। इसके लिए वह एक प्रेस खोलना चाहते थे किन्तु काल ने स्वप्न को साकार नहीं होने दिया।

इस विश्वविख्यात गणितज्ञ के प्रति बलियावासियों का व्यवहार प्रायः उपेक्षा का ही रहा। उनके निधन के बाद भले ही जनपद में शोकसभा हुई हो मगर आज हम उनको एकदम भूल गये हैं। हमारे बच्चों को उनके बारे में कोई जानकारी तक नहीं है। अंग्रेजी के विश्वकोष में बलिया के केवल एक ही व्यक्ति का नाम है—डॉ० गणेश प्रसाद का। उनके स्वर्गवासी हुए आधी शताब्दी बीतने वाली है, हम उनकी स्मृति में न कोई स्मारक बना सके, न कोई वाचनालय-पुस्तकालय बना सके, न कोई शिक्षण संस्था ही स्थापित कर सके। उनकी स्मृति-रक्षा के लिये क्या हमारा कोई दायित्व नहीं है?

६, मलोपीबाग,
इलाहाबाद–२११००६,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११ फरवरी, १९७९ को लिया गया एक दुर्लभ चित्र :

बायें से—डॉ० शोभनाथ 'लाल', रामसिंहासन सहाय 'मधुर' डॉ० रामबिचार पाण्डेय, स्व० जगदीश ओझा 'सुन्दर', नगेन्द्र भट्ट ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाषा और साहित्य

—डॉ० रामविचार पाण्डेय

मधुर जी की सलाह

सन् १९४३ में एम० ए० पास करने के बाद मुझमें कवित्व-भावना जगी। मैं कभी हिन्दी और कभी भोजपुरी में कविताएँ लिखने लगा। एक कवि सम्मेलन के बाद श्री राम सिंहासन सहाय 'मधुर' ने बड़ी मधुरता और मित्रता के भाव में मेरा हाथ थामते हुए कहा—पाण्डे! हम तोहरा के एगो सलाह देतानी! तूं खाली भोजपुरिये में कविता लिखऽ। हमरा आसा बा जे एह में तूं हाली देने आगा बढ़ि जइबऽ।

मधुर जी की सलाह मुझे जँच गयी। भोजपुरी की सेवा करने के क्रम में मुझे जब-जब और जहाँ-जहाँ सम्मान और प्रतिष्ठा मिली और मिलती है, मेरी मानसिक स्थिति में—

मधुर-मधुर ऊ मिलन सहित ऊ
मधुर-मधुर मुसुकाइल,
मधुर-मधुर सलाह उनकर ऊ
मधुर रूप धरि आइल।

यह भावना उठ जाती है।

कविताएँ लिखने के साथ-साथ मुझे भोजपुरी भाषा के विषय में कुछ अध्ययन भी करना पड़ा। हमारे प्रेरणा स्रोत एवं पथ प्रदर्शक रहे मधुर जी। अपने अध्ययन का कुछ निचोड़ आपकी जानकारी के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ।

भोजपुरी : अतीत और वर्तमान

विद्वानों ने संसार में प्रचलित भाषाओं, उपभाषाओं और डाइलेक्ट्स यानी बोलियों की गणना करके यह स्थिर किया है कि—

१. भाषाएँ दो हजार हैं,

२. उपभाषाएँ भी दो हजार हैं

३. डाइलेक्ट्स यानी वे बोलियाँ जो बोली तो जाती हैं और काम लायक वाक्य इत्यादि उनमें हैं परन्तु उनकी अपनी लिपि कोई नहीं है। अतः उनका कोई लिखित साहित्य भी नहीं है। सभ्यता के विकास-क्रम में कुछ डाइलेक्ट्स वालों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को ईसाई मिशनरियों ने रोमन लिपि दे दिया है। सुन्दरवन में रहने वाले जंगली इलाका वालों ने बंगला लिपि को अपना लिया है। हजारीबाग और चाईबासा के इलाकों में कुछ वनजातियों ने देवनागरी लिपि को ले लिया है—और धीरे-धीरे उनका साहित्य भी बन रहा है। ये डाईलेक्ट्स सात हजार हैं।

× × ×

भाषाओं में उत्थान-पतन और उनमें परिवर्तन की नजर से संसार की सभी भाषाएँ दो भागों में बँटती रही हैं। इस रीति में भाषा का पहला प्रकार है—'माटी की भाषा' और दूसरा प्रकार है 'कुर्सी की भाषा'। दूसरे शब्दों में प्रथम है 'शासित की भाषा' और दूसरी है 'शासक की भाषा'। 'माटी की भाषा' कभी मरती नहीं। अमर रहती है। उसके निरन्तर जीवित रहने और बढ़ते रहने का रहस्य यह है वह जिस इलाके की माटी में उपजी रहती है वहाँ के निवासी उसको बराबर बढ़ाते रहते हैं। भोजपुरी, भोजपुरी इलाके की भाषा है। इस भाषा में भोजपुरिया लोगों की संस्कृति निगूढ़ रूप से सुरक्षित है।

'कुर्सी की भाषा' कुर्सी पर बैठने वालों के अनुरूप रहती है। इतिहास साक्षी है कि कुर्सी के लिए युग-युगान्तर से युद्ध और उसमें असंख्य लोगों का विनाश होता आया है। संस्कृतियाँ बदलती हैं। वेष-भूषा बदलते हैं। कुर्सी की भाषा और उसका टोन बदलते हैं। इस परिवर्तन में पहले की कुर्सी नष्ट हो जाती है और नई कुर्सी आ जाती है। फिर नई कुर्सी अपना नाटक प्रारम्भ करती है और कालान्तर में उसका भी पटाक्षेप हो जाता है। इस प्रकार कुर्सियों के बदलते रहने का असर माटी की भाषाओं—ब्रजभाषा, बुन्देलखण्डी, बघेली, कन्नौजी, कुमायूनी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मैथिली, मगही इत्यादि पर नहीं के बराबर पड़ा। जो असर पड़ा वह कुर्सियों के कुछ शब्दों को लेकर माटी की भाषाओं ने अपना शब्द-भण्डार बढ़ाया।

'कुर्सी की भाषा' अपना रोब ग़ालिब करने के लिए माटी की भाषा को उसकी अपनी लिपि के अलावा कुर्सी की लिपि को स्वीकार करने और उसमें दरबारी काम-काज करने के लिए बाध्य करती है—बल से, लाठी से, बन्दूक से और दबाव से।

माटी की भाषा को लोकभाषा और उसके साहित्य को लोकसाहित्य कहते हैं। कुर्सी की भाषा एक अच्छा काम भी करती है। अलग-अलग लोकभाषाओं को अपने दबाव से एकजुट रखकर वह विभिन्नता में एकसूत्रता लाने का काम करती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत में अलग-अलग प्रान्तों की अलग-अलग भाषाएँ हैं। बंगाल में बोली जाने वाली बंगला भाषा, पंजाब में बोली जाने वाली पंजाबी भाषा को विभिन्न प्रांतों के लोग समझ नहीं पाते थे। इस प्रकार अलग-अलग प्रांतीय भाषाएँ थीं जो देश की एकता में बाधक थीं। पश्चिम एशिया से भारत में शासक के रूप के आने वाले शासकों की कुर्सी की भाषा फारसी थी और एक समय ऐसा आया पूरे देश में 'कुर्सी की भाषा' फारसी हो गई जिसने भारत को एकता के सूत्र में बाँधा परन्तु वह बंधन पूर्ण नहीं हो पाया कि यूरोप की कई जातियाँ यहाँ आ गईं। उनमें अंग्रेजों ने छल-कपट और कूटनीति के द्वारा पहले बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा का शासन अपने हाथ में करके और वहाँ के सामन्त राजाओं को पराजित करके इन तीनों प्रांतों का एक गवर्नर बना दिया जो कलकत्ते में रहता था। अंग्रेजों ने जनसाधारण में अपनी साख जमाने के उद्देश्य से कलकत्ते के फोर्ट विलियम किले में प्रांतीय भाषाओं को पढ़ाने और उनकी प्रगति के लिए एक स्कूल खोला। उसमें बंगला, उड़िया, देवनागरी इत्यादि की पढ़ाई चलने लगी। १८८० ई० में फोर्ट विलियम में एक प्रतियोगिता आयोजित की गई। कचहरियों में तो कोर्ट की भाषा अंग्रेजी हो गई थी परन्तु सवाल था कि प्रांतों में पटवारियों के कागज और अदालतों में दरख्वास्त देने की भाषा और लिपि क्या हो? बंगाल में बंगला और उड़ीसा में उड़िया लिपि रहे, इसमें कोई विवाद नहीं था। मैथिली की अपनी लिपि थी। बिहार के उस इलाके में, जहां भोजपुरी बोली जाती है, लिपि कात्यायनी (कैथी) थी। देवनागरी कुछ संस्कृत पढ़े-लिखे लोगों में प्रचलित थी। कुछ लोग उर्दू के हिमायती थे। उर्दू के ५०, हिन्दी के ५ और कैथी के ३ लेखक उपस्थित हुए। उस प्रतियोगिता में समय की कमी, सुन्दरता और शुद्धता की दृष्टि से शाहाबाद (वर्तमान भोजपुर) जिले के बाबू जगली लाल प्रथम आये और निश्चय हुआ कि बिहार में भोजपुरी इलाके में कैथी लिपि चलेगी जो सन् १९५० तक स्वतंत्र भारत में भाषा संबंधी प्रस्ताव पास होने तक चलती रही। अब तो देवनागरी लिपि कानून चला रही है।

भोजपुरी ने अपनी माटी पर आने वाली कुर्सियों की बोलियों से शब्द ले-लेकर अपना शब्द-भण्डार बढ़ाया। लेकिन शासन के बहुत प्रयत्न करने पर भी उसके अपने शब्द हैं जिनका कहीं प्रतिशब्द नहीं मिलता। उदाहरण के तौर पर कुछ शब्द प्रस्तुत हैं—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अउँजाइल, गउँजाइल, खरकटल, अदहन, बउचट, बकलोल, छछलोल, वहेंगवा, पलिहर, खुँटार, हेठार इत्यादि।

संस्कृत तत्सम्—जल, पूजा, आसन, कमल इत्यादि।

संस्कृत तद्भव—लक्ष्मण से लछुमन, परवश से परबस, तृष्णा से टिसुना।

तुर्की भाषा— सन्दूक से सनूख, बन्दूक से बनूख आदि।

फारसी तत्सम्—किताब, गिला।

फारसी तद्भव—तोसक, तकिया, सिकाइत, कोसिस, उँचकुन से उभकुन।

पुर्तगाली भाषा से—अंग्रेज, अंग्रेजी, आलमारी।

इंगलिश भाषा से—तत्सम: जज, स्टाम्प, टिकट। तद्भव: लालटेन, पोस्टकाट, टीसन, लाटफार्म।

इधर अन्य भाषाओं के छन्दों में भोजपुरी में छन्द भी लिखे जाने लगे हैं परन्तु भोजपुरी के अपने मौलिक छन्द हैं—बिरहा, घाँटो, निरगुन, झूमर (ठढ़िया), झूमर (डेढ़िया), कजरी, लहरा, चहका, कवित्त इत्यादि।

भोजपुरी का क्षेत्र

भोजपुरी भाषा को बोलने वाले बिहार में पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण, सीवान, छपरा (सारण), गोपालगंज, वैशाली, भोजपुर और रोहतास जिलों में तथा नैपाल के चार जिलों में, मध्य प्रदेश के दो जिलों में, उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में, हरैया तहसील को छोड़कर जौनपुर जिले में, वाराणसी, मिर्जापुर, गाजीपुर, देवरिया, बलिया में विशाल भू-क्षेत्र में फैले हुए हैं। इसके अतिरिक्त भारत के बाहर जो भोजपुरी बोलने वाले लोग चले गये, वे मारीशस, सुरीनाम, ब्रिटिश गुआना में अपनी भोजपुरी भाषा एवं भोजपुरी संस्कृति को सुदृढ़ तथा अक्षुण्ण रखे हुए हैं। भोजपुरी भाषा को स्व० महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने छः भागों में विभाजित किया है।

१—काशिका, २—मल्लिका, ३—बज्जिका, ४—थारू, ५—मधेसिया, ६—नगपुरिया। ठीक-ठीक गणना तो नहीं हो सकी है कि भोजपुरी भाषा-भाषी कितने लोग हैं परन्तु अनुमानतः कुल मिलाकर भारत में लगभग दस करोड़ लोग भोजपुरी भाषा का व्यवहार करते हैं।

भोजपुरी साहित्य

जैसा कि ऊपर उल्लिखित है, भोजपुरी की अपनी लिपि 'कैथी' थी। अतः भोजपुरी इलाके का प्राचीन साहित्य कैथी लिपि में लिखा हुआ है जिसका अपेक्षित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुसन्धान और उद्धार अभी तक नहीं हो पाया है। भोजपुरी का उल्लेख आठवीं सदी से मिलता है। भोजपुरी के आदि कवि कबीरदास जी हुए। इनका ग्रन्थ 'बीजक' शुद्ध रूप में नहीं मिल सका। इसके अतिरिक्त कैथी लिपि में लिखा साहित्य जो कुछ मठ-मठियों में मिला है उसमें प्रायः भजन-कवितायें, जन्त्र-मन्त्र, जादू-टोना-टोटका और कुछ वैद्यक के नुस्खे भी मिले हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भोजपुरी लेखकों ने काव्य, नाटक, उपन्यास, कथा-साहित्य इत्यादि हर प्रकार की विद्या में लिखना प्रारम्भ किया है। निरन्तर इसके साहित्य की अभिवृद्धि हो रही है। कहीं अकादमियाँ स्थापित हो गई हैं तो कहीं रेडियो पर इसका वर्चस्व स्थापित हो रहा है। इधर सिनेमा जगत में भोजपुरी फिल्मों ने अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है। कौन भोजपुरी के बढ़ते कदम को रोक सकता है? 'माटी की भाषा' परमुखापेक्षी नहीं होती। माटी से उपज कर माटी पर रहने वालों के बीच फूलती-फलती है।

भोजपुरी जगत में हमारे मान-सम्मान का एकमेव श्रेय मधुरजी को है, इसे हम बड़ी ईमानदारी से स्वीकारते हैं। इनके नागरिक अभिनन्दन के अवसर पर उम्र में इनसे तीन-चार साल बड़ा होने के नाते हम इन्हें आशीर्वाद देते हैं कि—

लक्ष्मीस्ते पंकजाक्षी निवसतु भवने भारती कण्ठ देशे।
वर्धन्ताम् बंधुवर्गाः सकल रिपुगणाः यान्तु पातालमूले।
देशे-देशे च कीर्तीः प्रसरतु भवतां पूर्ण कुन्देन्दु शुभ्रा।
जीवत्वं पुत्र-पौत्रैः सकल गुणयुतैः स्वस्तिते नित्यमाल्ताम्।

रामरती भवन, स्टेशन रोड

बलिया–277001

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलिया जनपद का साहित्यिक दर्पण

पृथक् कलेक्ट्रेट की स्थापना के साथ १ नवम्बर, १८७९ को बलिया जिला नये अस्तित्व में आया। इसके पूर्व यह गाजीपुर जिले का एक हिस्सा था। इसलिए इस जिले की साहित्यिक उपलब्धियों की जड़ें मूल जनपद के सुदूर अतीत में गई हुई हैं। श्री शिवाराम बाबा को जिले के ज्ञात-कवियों में हिन्दी का आदि-कवि होने का गौरव प्राप्त है। इन्होंने १८वीं सदी में १०९ अध्यायों वाले 'भक्ति जैमाल' काव्य-ग्रन्थ की रचना की थी। ये प्रसिद्ध अघोर पंथी सन्त किनाराम के वैष्णव दीक्षा-गुरु भी थे। इनका कर्म एवं साधना-स्थल जिले का कारों गांव था।

भक्तिकाल की जो मधुर धारा हिन्दी काव्य में तरंगायित हो रही थी वह साहित्येतिहास की विभाजन काल-रेखा (१७०० वि०) का अतिक्रमण कर दूर तक चली आयी हुई है। इसका उदाहरण जनपद के विषय में भी मिलता है। बलिया में साहित्य का प्रारम्भिक काल भक्ति-परक ही रहा है। बाबा शिवाराम के अतिरिक्त शिवनारायणी सम्प्रदाय के संस्थापक सन्त कवि शिवनारायण भी इस जनपद से जुड़े रहे। उन्होंने भी लगभग इसी काल में साहित्य रचा जो कालसीमा को अतिक्रमित कर सम्प्रदाय में अद्यतन 'शिवनरैनी' के नाम से मुखर है। बुलाकी दास तथा विश्राम भगत की रचनाएँ भी शृङ्खला की एक-एक कड़ियां हैं। चितबड़ागांव के सन्त देवकी नन्दन साहेब तथा चन्दाडीह के रामचन्द्र कवि की कृतियां निर्गुण-सगुण का मिश्रित प्रतिनिधित्व करती हैं। निर्गुण कवियों में हल्दी के शिवानन्द की रचनाओं में कबीरदास के अक्खड़पने का स्वाद मिलता है। गजेन्द्रशाहि और उनके ही वंशज रघुनन्दन प्रसाद सिंह ने रामकथा के काव्य रचे। पंचदेव शर्मा की तीन रचनाएँ—पंचदेव रामायण, वैद्यक पंचदेव तथा पंचदेव विलास भक्तिभावना से ओत-प्रोत है। यह है जनपद की साहित्यिक पूर्वपीठिका।

इसके अतिरिक्त उन्नीसवीं सदी में जिले की जिन अन्य कवियों की ज्ञान, वैराग्य, उपासना, अध्यात्म, दर्शन-विषयक रचनाओं का परिचय मिलता है उनमें प्रमुख ये हैं—जयकृष्ण लाल (संतमत-सार), लक्ष्मण तिवारी, राधारमण प्रसाद सिंह, दूधनाथ उपाध्याय (हरेराम पचीसी), पशुपति उपाध्याय (हरेराम चालीसी), सुबचना दासी (प्रेम तरंगिणी-पांच भाग), रमाकान्त पाण्डेय (प्रेमसुधा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रत्नाकर) धनुषधारी सिंह (कृष्ण चरित चन्द्रोदय) और नकछेद तिवारी इत्यादि। इसी काल में पद्मदेव नारायण ने नीतिकाव्य की रचना की। इस काल के शृङ्गारिक कवियों में बच्चूलाल कृष्ण अपने 'नवरस विहार' के लिए तथा बख्शराम पाण्डेय 'सुजान' तथा नारायण देव लाल अपनी शृङ्गारिक रचनाओं के लिए बहुत प्रसिद्ध हुए। मुसलमान कवियों में अब्दुल सत्तार 'प्यारे' का नाम हिन्दी-सेवा के लिए नहीं भुलाया जा सकता।

इस समय तक आते-आते राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत कविताएँ भी लिखी जाने लगी थीं। जगन्नाथ सिंह 'पिंजरे का व्याघ्र' तथा 'गांधी स्तोत्र' नामक रचनाओं के साथ राष्ट्रीय भावना के कवि के रूप में सामने आये। मदनमोहन सिंह ने वीर रस की कविताएँ लिखीं। अभिप्राय यह कि अभी तक रचनाकारों की दृष्टि एकमेव काव्य की ओर ही केन्द्रित रहा और वह शाश्वत मूल्यों की रचनाओं की ओर। आगे चलकर भारतेन्दु बाबू के मित्र रेपुरा निवासी रामदीन सिंह द्वारा पटने में खड्‌गविलास प्रेस की स्थापना के साथ गद्य-विद्या को भी अवसर मिला। जनपद का साहित्यिक क्षितिज और विस्तृत हुआ। बाहर के साहित्यिकों का भी इस जनपद में गमना-गमन प्रारम्भ हुआ। बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा की स्थापना के साथ जनपद का साहित्यिक नवोन्मेष काल प्रारम्भ हुआ, जबकि हिन्दी के जाने-माने कर्णधार खिचकर यहाँ आने लगे और यहाँ की उर्वर भूमि के लिए प्रेरणा-स्रोत बने। इनमें आचार्य क्षितिमोहन सेन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, लाला भगवान 'दीन', महापण्डित राहुल सांकृत्यायन तथा राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के नाम विशेष उल्लेख्य हैं।

पुरानी पीढ़ी के साहित्यकार हमारे बीच से एक-एककर ओझल होते जा रहे हैं। कुछेक जो बचे हुए हैं, हमारा मार्ग-दर्शन कर रहे हैं, काल प्रवाह के तट वृक्ष की तरह सामने खड़े हैं। आश्चर्य होता है उस युग के मनीषियों के साहित्यिक-साधना-पक्ष को देखकर, कि शिक्षा का साधन अत्यल्प होते हुए भी उन्होंने किस प्रकार अपने-अपने क्षेत्र में उन्मेष प्राप्त किया। जिले में आज जितने उपाधि महाविद्यालय हैं, उस समय शायद उतने मिडिल स्कूल भी नहीं थे। फिर भी उस समय जो साहित्यिक उत्कर्ष देखने को मिलता है, वह सांस्कृतिक-साहित्यिक केन्द्र कहे जाने वाले बड़े नगरों वा जनपदों में भी देखने को नहीं मिलता। वस्तुतः आज की शिक्षण-संस्थाएँ मात्र साक्षरता-केन्द्र भर बनकर रह गयी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिणामतः इस भूमि पर स्व० आचार्यद्वय परशुराम चतुर्वेदी तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी, पं० बलदेव उपाध्याय, कृष्णदेव उपाध्याय, उदयनारायण तिवारी, भगवत शरण उपाध्याय प्रभृति विश्व-विश्रुत साहित्य-मनीषियों ने जो अवदान किया वह आने वाली पीढ़ियों के लिए सदा स्पृहणीय एवं अनुकरणीय रहेगा। काल के प्रवाह से भी अबाधित एकरस रहकर इन्होंने स्थाई मूल्य एवं महत्व के साहित्य का निर्माण किया। उनपर प्रत्यक्षतः किसी 'वाद', 'प्रतिवाद' का प्रभाव नहीं पड़ा। समीक्षा और शोध के क्षेत्र में आचार्य शुक्ल और डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल से प्रखर एवं संगत मानदण्ड यदि परशुराम चतुर्वेदी ने रखा, तो डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी जिस ऊँचे धरातल से कबीर-साहित्य का मूल्यांकन प्रस्तुत किया उसी उत्कृष्ट सांस्कृतिक भाव-भूमि से कथा-साहित्य एवं निबन्ध-लेखन में भी एक नया मानदण्ड स्थापित किया। इन मनीषियों ने जो कुछ लिखा वह आत्मसुख के लिए। स्वातन्त्र्योत्तर साहित्यिकों में न वह प्रवाह देखा जाता है, न प्रभाव और न सृजन की सचाई। यदि कहीं है भी तो अत्यल्प। अब तो साहित्य प्रेरणा पाने लगा है राजनीति से और रचनाएँ की जाती हैं यश की भूख मिटाने के लिए। यद्यपि 'अर्थ' का महत्व आज के भौतिक युग में कम महत्व का नहीं है तथापि साहित्य जब भी 'अर्थ' से जुड़कर सृजित होगा, अपनी गरिमा स्वयं खो देगा। मानव की मुक्ति के लिए रचित साहित्य ही वास्तव में साहित्य कहलाने का अधिकारी है।

सौभाग्यवश उन साहित्यकारों में जिन्होंने साहित्य को कभी व्यवसाय नहीं माना, उनमें से 'भक्त' जी, 'सुन्दर' जी, 'चतुरीचाचा' हमारे बीच से चले गये हैं तथा 'मधुर' जी, 'मंजुल' जी, 'झड़प' जी, 'उन्मेष' जी, डा० रामविचार पाण्डेय, नर्मदेश्वर चतुर्वेदी और प्रभुनाथ मिश्र आदि विद्यमान हैं जिनकी साहित्यिक दीपशिखा अनेक चउआइयों के झोंके झेलकर भी अद्यतन अप्रतिहत प्रदीप्त है। मधुर जी ने एक ओर आजादी के पूर्व राष्ट्रीय जनजागरण के गीत गाये तो दूसरी ओर स्वातन्त्र्योत्तर काल में बाल साहित्य के निर्माता भी बने।

कथा साहित्य के क्षेत्र में जनपद का अतीत बहुत सन्तोषजनक नहीं रहा। पर, गद्य-विधा के विकास के साथ इधर कतिपय लेखकों ने कथासाहित्य में अच्छा यशोपार्जन किया है। इनमें केशव प्रसाद मिश्र, भैरव प्रसाद गुप्त तथा अमरकान्त के नाम प्रमुख हैं। अमरकान्त जी सम्प्रति 'मनोरमा' के सम्पादक भी हैं। श्री मिश्र के आंचलिक उपन्यासों में नगरीय चकाचौंध तथा रंगीनियों से हटकर शालीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रामबोध छाया हुआ देखा जा सकता है। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथा-लेखन के अनुक्रम में डॉ० भगवत शरण उपाध्याय तथा मोहम्मद इसराईल का नाम भी जोड़ा जा सकता है।

काव्य-सृजन इस जिले की साहित्यिक गतिविधियों का मुख्य आधार रहा है। पुराने कवि आज भी तरुणों के लिए स्पर्धा एवं प्रेरणा के आधार बने हुए हैं। श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' का व्यक्तित्व 'सतसैया के दोहरे'—सा है। जनपद को इस बात का गौरव है कि मधुर जी 'दिनकर' के प्रेरणा-पुरुष रहे हैं। स्वातन्त्र्योत्तर कवियों में गीत, व्यंग्य, हास्य आदि का पुट पाया जाता है। वर्तमान अधोगति के मूलोच्छेदन का तेवर भी मिलता है। 'सुन्दर' जी ने जन-जन की जनगीता लिखी। परन्तु उनके बाद के कवियों में वह ग्रामबोध, वह स्वर, वह ओज नहीं देखने को मिलता। प्रसिद्धनारायण सिंह ने गद्य-पद्य दोनों में लेखनी चलायी। उन्होंने 'बलिया के कवि और लेखक' पुस्तक लिखकर जिले का बड़ा उपकार किया। डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी के रेखाचित्र सजीवता के लिए प्रसिद्ध हैं।

भोजपुरी में स्व० 'चतुरी चाचा' ने हास्य-व्यंग्य को अभिव्यक्ति दी। डॉ० रामविचार पाण्डेय ने 'मधुर' जी की प्रेरणा से भोजपुरी का दामन पकड़ा। उन्होंने यथार्थ धरातल से सार्थक भोजपुरी-साहित्य रचा है। प्रभुनाथ मिश्र के गीतों में जन-जन के सुख-दुख के साथ प्रकृति-चित्रण भी मिलता है। नगेन्द्र भट्ट के भोजपुरी गीत भाव तथा सरसता के लिए प्रसिद्ध है। 'धीरज' के गीत करुण रस में घुले-पगे होते हैं। किनका-किनका नाम गिनायें, सूची लम्बी है। सच तो यह है कि जनपद का वर्तमान जितना साहित्य की काव्य-विधा में पल्लवित हुआ है उतना किसी अन्य में नहीं। मदनमोहन सिनहा 'मनुज', विजय शंकर पाण्डेय, शंभुनाथ उपाध्याय, रमाशंकर पाण्डेय 'नवल', श्रीराम सिंह 'उदय', शब्दानन्द 'शब्द', विश्वबन्धु, मंगल, राही, 'चंचल', 'देव', 'अरुण' आदि की रचनाओं ने जनपद का काव्य-भण्डार समृद्ध किया है। सुश्री सावित्री श्रीवास्तव तथा कुमारी शैलेश के गीत सहज रंगीनी और रूमानियत के लिए ख्यात है। डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय, डॉ० रवीन्द्र श्रीवास्तव, डॉ० श्रीधर मिश्र अपनी-अपनी सेवाओं से अलग ही जिले का नाम रोशन कर रहे हैं। जनपद के होनहार साहित्यकार श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी दूर रह कर भी बाल-साहित्य सेवा से जिले का नाम उजागर किए हुए हैं। भावों के धनी कवि कपिलदेव सिंह 'कपिल' ने 'कैकशी' की रचना के साथ अपनी पहचान बना ली है। किशोरी शरण शर्मा, डॉ० आद्या प्रसाद द्विवेदी, डॉ० उदयशंकर;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० गौरी शंकर मिश्र भी अग्रसर हैं। गद्य लेखन के साथ भोजपुरी कविता एवं बालकाव्य के क्षेत्र में डॉ० शोभनाथ लाल 'सौमित्र' एक सशक्त हस्ताक्षर बनकर उभरे हैं। ये रामसिंहासन सहाय 'मधुर' तथा चन्द्रभानु सिंह की बाल साहित्य परम्परा को आगे बढ़ाने में लगे हैं।

नई पीढ़ी के कवियों में 'अमृतपुत्र' का 'भराशून्य' प्रकाशित हुआ है। विगत कई दशकों से हिन्दी में जिस तरह के काव्य का अभाव खटकता रहा था, उसकी पूर्ति की दिशा में 'भरा शून्य' बामन भगवान की तरह इसी धरती से एक डेग बढ़ाया है। हरिशंकर चतुर्वेदी की 'त्रिविधा' में उनका बहुआयामी व्यंग्यकार एवं गजलकार उजागर होता है। लालजी सहाय 'लोचन' की 'तीसरी आँख' कुंडलियों पर खूब टिकी है।

प्रारम्भ से लेकर आजतक जिले की काव्यलता मुख्यतः तीन प्रवृत्तियों में क्रमशः विकसित एवं प्रसरित हुई है—प्रारम्भ की भक्तिपरक रचनाएँ, मध्य की राष्ट्रीय जनान्दोलन से भावित रचनाएँ तथा वर्तमान की सामाजिक शोषण, उत्पीड़न, असन्तोष, कुण्ठा, संत्रास एवं भग्नाशा से व्यथित जनचेतना से अभिव्यंजित रचनाएँ।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर छायावाद के पूर्व तक हम यहाँ किसी 'वाद' का उल्लेख नहीं पाते। आलोच्य काल में हिन्दी काव्य अथवा गद्य-साहित्य की 'निर्विवाद प्रगति होती रही। परन्तु चौथे दशक में मार्क्सवाद के प्रभावान्तर्गत जिस प्रगति-'वाद' का काव्य में प्रवेश हुआ, उसके बाद एक-एक करके अनेक 'वादों' के आने और निष्प्राण होकर अपना स्थान दूसरे को दे देने का क्रम जारी रहा है। प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नकेनवाद के साथ ही नई कविता, अकविता, सुकविता, गीत, प्रगती के आने-जाने का भी क्रम लगा हुआ है। राजधानी में बैठा साहित्यिक (नागार्जुन) यदि धैर्यवान की उपमा 'मूत्र सिंचित मृत्तिका में खड़े धैर्यधन गधा' से तथा किसी तरुणी के तमतमाये चेहरे की उपमा हीटर के सूर्ख क्वायल से देता है (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना), तो अन्यत्र बैठे कवि क्यों न उसी राह पर बिम्बों के अजीबोगरीब उपादान प्रस्तुत कर नई कविता के कवियों की सूची में अपना नाम भी अंकित करा लेने को उद्यत हों!

दूसरे, आज का काव्य राजनीति से अभिप्रेरित होकर रचा जाने लगा है। यह किसी भी साहित्य के लिए बड़ा अशुभ है। सन्तोष है कि इस जिले के साहित्यिकों पर इस हवा का असर नहीं पड़ा है। यदि किसी पर पड़ा भी हो तो लेखक को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जानकारी नहीं है। इस प्रकार के प्रभाव में रचित साहित्य क्षणिक होता है, फिर रद्दी के भाव बिक जाता है। यदि राजनीति-धर्मी साहित्य लिखना समय की मांग होती तो बोरिस पैस्टरनॉक तथा सोल्झेनित्शिन को निर्वासन का कष्ट क्यों भोगना पड़ता ? जनपद के तरुण साहित्यकारों ने कुछ मुक्तछन्द में नकल की गति दर्शायी है, वह भी शोषण-उत्पीड़न के प्रति अपने रोषाभिव्यक्ति के लिए ही। इस सन्दर्भ में 'कांटे नागफनी के' का नाम लिया जा सकता है।

कविता, मात्र कविता होती है और कुछ नहीं। उसमें किसी प्रत्यय या विशेषण की आवश्यकता नहीं। कविता ही समय के झंझा को झेलकर अपना अस्तित्व बनाये रखने में सक्षम होती है। नूतन बिम्बों में कविता भी रची जा सकती है, पर, स्वच्छन्दता को तब प्रश्रय कहां मिलेगा ? कविता ही वर्तमान में रची जाकर भविष्य और अतीत के लिए भी होती है। लोकेषणा के लोभ में किसी 'वाद' की हवा में बह जाना श्रेयस्कर नहीं कहा जा सकता। हर एक शोषण और सामाजिक बुराई के लिए जिम्मेदार खोखली तथा सिद्धान्तहीन राजनीति पर आज साहित्यकार को जितना सीधे चोट करने की आवश्यकता आ पड़ी है उतनी पहले कभी नहीं थी। जन-जन का तथा जीवन का साहित्य रचने वाले साहित्यिकों को इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए।

नाटकों और उनके मंचन की जो स्थिति इस समय देखने को मिलती है उससे अपने अतीत के रंगकर्म के प्रति भी एक अच्छी धारणा बनती है। सन् १८८५ ई० में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने यहाँ पधार कर 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक में स्वयं हरिश्चन्द्र की भूमिका निभाई थी। इसमें राधाकृष्ण दास तथा रविदत्त शुक्ल जैसे स्थानीय हिन्दी सेवकों ने पार्ट लिया था। इसके पूर्व ददरी मेले में आर्य देशोपकारिणी सभा के मंच से उन्होंने अपना प्रसिद्ध निबन्ध 'भारत वर्षोन्नति कैसे हो सकती है ?' पढ़ा था। अब तो यहाँ के सांस्कृतिक मंच से नाटक-नौटंकी का नाम शेष हो चला है। रंग शिल्प का कोई पुरसां हाल नहीं रहा। शेष रह गया है कवि सम्मेलन में उद्घोषकों द्वारा विदूषक—जैसे भोड़े अभिनय के साथ कवियों द्वारा सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने का प्रयास भर।

नाट्यकारों की कमी की अपेक्षा नाट्य-प्रदर्शनों की परम्परा संतोषप्रद कही जा सकती है। आज़ादी के पूर्व नगर में नेशनल क्लब द्वारा बड़ी-बड़ी मुश्किलों के साथ राष्ट्रीय नाटक खेले जाते थे। चित्तू पाण्डे इसमें भाग लेते थे। विद्यालयों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के उत्साही छात्रों के अतिरिक्त भी नाट्य-प्रस्तुतियों की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। कलेक्ट्रेट ड्रॉमेटिक एसोसिएशन ने लम्बे अर्से तक शानदार प्रस्तुतियाँ कीं जिसके कर्णधारों में उन्मेष जी भी रहे। यह एसोसिएशन अब नाम शेष रह गया है। जब तक आचार्य पं० सीताराम चतुर्वेदी इस नगर में रहे, उनके प्रयास से प्रतिवर्ष, रंग तकनीक की दृष्टि से, दो-एक प्रयोगधर्मी नाटकों का सफल मंचन हो जाया करता था परन्तु अब नाट्य-परम्परा की धारा क्षीण वा लुप्त हो गई है। तो भी जनपद के ग्रामांचलों में विभिन्न युवा संगठनों द्वारा इस दिशा में अच्छी रुचि दिखाई जा रही है। रतसड़, सुखपुरा, मनियर, बांसडीह और कृपालपुर के युवासंगठन क्रियाशील हैं। रंगमंच परम्परा के कलात्मक शैथिल्य अथवा ह्रास के लिए कई कारण जिम्मेदार हैं। दर्शक टिकट लेकर सिनेमा देखना तो पसंद करते हैं; पर नाटकों के लिये व्यय नहीं करना चाहते। नाटक भी कम ही लिखे जा रहे हैं। कुछ लेखक हैं भी तो उनके सभी नाटक रंगशिल्प की दृष्टि से मंचनीय नहीं हैं। इस संदर्भ में कमलाकान्त मिश्र के 'सूर्योदय' तथा 'तरुण' के 'झंझा' उल्लेख्य हैं। अवध बिहारीलाल 'लहरी', केदार पाण्डेय, नरेन्द्र शास्त्री के नाटक मंचीय हैं। नरेन्द्र शास्त्री का 'मशाल जल उठा' अभिनीत भी हो चुका है। इस कला को पुनरुज्जीवित करने की आवश्यकता है अन्यथा इसे सिनेमा निगल जाएगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में लोकनाट्यों की परम्परा अक्षुण्ण है। किन्तु, सिनेमा निगम द्वारा गाँवों में भी सिनेमा खोल दिये जाने के बाद इनका अस्तित्व-रक्षण भी संकटापन्न हो गया है। रामलीला-प्रदर्शनों में दिनानुदिन प्रगति हुई है। रतसड़ की युवानाट्य परिषद ने रामलीला का अभिनेय नाट्य रूपान्तर तैयार किया है। इसके अतिरिक्त डोमकच (जलुआ) तथा जट-जटिन के प्रदर्शन भी सीमित दायरे में होते आ रहे हैं। लोकनृत्यों में गोंड़ऊ, चमरऊ, धोबिया, अहिरऊ, दुसधऊ, कठघोड़वा, विदेशिया, पँवरिया तथा अँचरा-नाच अपनी जीवन्तता के लिए किसी संस्था वा समिति के मुखापेक्षी नहीं हैं। जनपदीय संस्कृति के संवाहक ये लोकनाट्य एवं लोकनृत्य बिना पैसे के, बिना टिकट खरीदे, ही देखने को मिलते हैं पर, देखने की फुर्सत किसे है ?

—सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्मरण :

स्वातन्त्र्य-संग्राम के कवि दिनकर

—राम सिंहासन सहाय 'मधुर'

[मधुर जी का यह संस्मरण 'दिनकर' जी के जीवन काल में ही साहित्यकार संसद देवघर के मुखपत्र 'हिन्दी-साहित्य' के 'दिनकर-अंक', १९६७ में प्रकाशित हुआ था।—सं०]

'दिनकर' देश की गरजती हुई वेदना के कवि हैं। महात्मा गांधी के दाण्डी-मार्च से लेकर नेहरूजी के नेफा क्षेत्र का रणदोर, कवि का यशस्वी स्वर है। वर्तमान से सुदूर महाभारत-काल के युधिष्ठिर, भीष्म, कुन्ती, कर्ण, सैरन्ध्री तथा भीम का गर्जमान अतर्वेद इनकी रचनाओं में काव्य के विपुल वैभव के साथ विराजमान है। अपने देश पर इस कवि को बड़ा अभिमान है। कवि ने भारत की सभ्यता, संस्कृति तथा गौरव का ओजस्वी जयगान किया है और इसी आधार पर संसार के सामने अपना 'अभिनव मनुष्य' प्रस्तुत किया है। नये रूस को अपने कवि पुश्किन पर, और इंगलैण्ड एवं अमरीका को अपने इलियट पर बड़ा गर्व है, परन्तु अभी हम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जब नये भारत में अपने स्वातंत्र्य-संग्राम के कवि 'भारतीय आत्मा'; मैथिलीशरण, नवीन, दिनकर आदि के प्रति वह अभिमान जाग्रत होगा।

इस प्रसंग में लगभग पांच वर्ष पहले की एक घटना याद आती है। आस्ट्रिया के दो सज्जन भ्रमण करते हुए बलिया में मेरे अग्रज श्री मुरली मनोहर, एम० पी० के यहाँ आये। मुझे उनके स्वागत-सत्कार का अवसर मिला। उनमें एक सज्जन आस्ट्रिया की राजनीतिक पार्टी के मंत्री थे और दूसरे वहां के संसद-सदस्य। मैंने छप्पन प्रकार के तो नहीं, परन्तु पांच-छः प्रकार के भोजन तैयार कराये, और उन्हें प्रसन्नतापूर्वक खिला-पिला कर समझा कि मेरा कार्य सम्पन्न हो गया। इतने में मंत्री महोदय टाइपराइटर लेकर बैठ गये और टप से मुझसे एक प्रश्न कर दिया:—"गांधी जी के नेतृत्व में आप लोगों ने स्वराज कैसे प्राप्त किया ?"

इस प्रश्न पर बाहर से तो मैं विहँस रहा था, परन्तु भीतर से मेरी बुद्धि को पसीना आ रहा था। राजनीति से अनभिज्ञ मैं आज भी नहीं जानता कि इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रश्न का सही उत्तर क्या है। मैंने इस प्रकार निवेदन किया—"प्रिय मित्र, विदेशी शासन ने इस देश को निर्जीव कर दिया था, परन्तु महात्मा गांधी में बड़ा पुण्य प्रताप था। ईश्वर उनको विचित्र सूझ-बूझ देते थे। उन्होंने अंग्रेज सरकार के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन चलाया। संघर्ष और कोलाहल के साथ बड़ा जन-जागरण हुआ। इस देश के कवियों ने हृदय-वेधी कविताओं से देश में बलिदान-पूर्ण वातावरण का निर्माण किया। सारा देश महान बलिदान पर तैयार हो गया। कई लाख भारतवासी जेलों में भर दिये गये। गांधी जी ने विदेशी शासन के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन भी चलाया। भारतीय जान पर खेलने लगे। महात्मा गांधी ने देश को "करो या मरो" का नारा दिया और अंग्रेजों को ललकारा कि 'भारत छोड़ो।"

मंत्री महोदय बड़ी प्रसन्नता से मेरे उत्तर का अंग्रेजी अनुवाद पूछकर टंकन करने लगे। तब तक संसद-सदस्य ने दूसरा प्रश्न कर दिया—"आप लोग यह सब कार्य कैसे करते थे?" छूटते ही मैंने उत्तर दिया—"कोई हथियार चलाकर नहीं, केवल गा-बजाकर।" मेरे अनुवाद पर अतिथिशाला विदेशी हंसी से गूँज उठी। मैंने उस हँसी का समर्थन नहीं किया। मैं कहता गया—"भाई वह लड़ाई हिंसा और अहिंसा की लड़ाई थी। हमारे गांधी सत्य और अहिंसा के अवतार थे। हिंसा को अहिंसा कैसे पराजित करती है, वह खूब जानते थे।" मंत्री महोदय ने मुझे इस प्रकार टोक दिया—"अंग्रेज सभ्य हैं। उन्होंने सैनिक विद्रोह के पहले ही इस देश को छोड़ दिया और आप लोगों का सत्याग्रह सफल हो गया! आस्ट्रिया में यह सम्भव नहीं। पूर्व आस्ट्रिया का कोई परिवार ऐसा नहीं है, जिसके साथ रूसियों ने बर्बरतापूर्ण व्यवहार न किया हो।"

संसद-सदस्य ने मुझसे तीसरा प्रश्न किया—"स्वातन्त्र्य-संग्राम के समय इस देश के कवियों ने क्या गाया? आस्ट्रिया को अपने कवियों पर बड़ा अभिमान है।"

इस प्रश्न का उत्तर मेरे लिए उतना कठिन नहीं था। मैंने राष्ट्रकवि मैथिली-शरण गुप्त तथा 'भारतीय आत्मा' (पं० माखनलाल चतुर्वेदी) की अनेक पंक्तियाँ सुनाईं। एक प्रकार से अज्ञात कवि 'पार्षद' जी का 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' भी सुनाया। अन्त में मैंने निवेदन किया कि 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के पहले कवियों का स्वर बड़ा तेजस्वी हो गया था। सुनिये—यह कविवर 'दिनकर' हैं—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदय-गिरि पर पिनाकी का कहीं टंकार बोला,
दिगम्बरि ! बोल अम्बर में किरण का तार बोला ।
तिमिर के भालपर चढ़कर विभा के बाण वाले,
खड़े हैं मुन्तज़िर कब से नये अभियान वाले !
प्रतीक्षा है, सुनें कब व्यालिनी ! फुंकर तेरा;
विदारित कब करेगा व्योम को हुंकार तेरा ?
दिशा के बन्ध से झंझा विकल है छूटने को,
धरा के वक्ष से आकुल हलाहल फूटने को ।
कलेजों से लगी बत्ती कहीं कुछ जल रही है;
हवा की सांस पर बेताब-सी कुछ चल रही है ।
धराधर को हिला गूंजा धरणि में राग कोई,
तलातल में उभरती आ रही है आग कोई ।
क्षितिज के भाल पर नव सूर्य के सप्ताश्व बोले,
चतुर्दिक भूमि के उत्ताल पारावार बोला !
नये युग की भवानी, आ गयी बेला प्रलय की,
दिगम्बरि ! बोल, अम्बर में किरण का तार बोला ।

× × ×

थकी बेड़ी क़फ़स की हाथ में सौ बार बोली,
हृदय पर झनझनाती टूट कर तलवार बोली ।
कलेजा मौत ने जब-जब टटोला इम्तिहां में,
जमाने को तरुण की टोलियाँ ललकार बोलीं ।
पुरातन और नूतन वज्र का संघर्ष बोला,
विभा-सा कौंधकर भू का नया आदर्श बोला ।
नवागम-रोर से जागी बुझी-ठण्डी चिता भी,
नयी शृंगी उठाकर वृद्ध भारतवर्ष बोला ।
दरारें हो गयीं प्राचीर में बन्दी-भवन के–
हिमालय की दरी का सिंह भीमाकार बोला ।
नये युग की भवानी, आ गयी वेला प्रलय की,
दिगम्बरि ! बोल, अम्बर में किरण का तार बोला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतने में मंत्री महोदय ने झूमते हुए कहा, 'अनुवाद ! अनुवाद !' मैं इस कविता का अंग्रेजी अनुवाद क्या करता ? मुझे तो हिन्दी का भी विशेष ज्ञान नहीं है। केवल उतना ही है जितना माँ के दूध के साथ पी गया था। और, अंग्रेजी ? यह तो उतना ही जानता हूँ जितना पिंजरे का तोता अपना पेट भरने के लिए बोलता है। अंग्रेजी, अंग्रेजों के सामने भी बोलता रहा हूँ और भाग्य का व्यंग है कि अभी तक न्यायालयों में इसे जीभ ऐंठकर बोलता हूँ। मैंने 'दिनकर' जी की इस कविता का मनमाना अनुवाद किया। मंत्री महोदय ने पूछा—"दिनकर जी का पता और परिचय क्या है ?" मैंने बताया, पता है, आर्य्य कुमार रोड, पटना। परन्तु वह आपको दिल्ली में मिलेंगे। राज्य सभा के सदस्य हैं। उनका परिचय उन्हीं के शब्दों में सुनियेः—

उदयाचल पर आलोक शरासन ताने,
आया मैं उज्ज्वल गीत विभा के गाने।
ज्योतिर्धनु की शिंजिनी बजा गाता हूँ,
टंकार-लहर अम्बर में फैलाता हूँ।

किरणों के मुख में विभा बोलती मेरी,
लोहिनी कल्पना उषा खोलती मेरी।
मैं विभा-पुत्र, जागरण-गान है मेरा,
जग को अक्षय आलोक-दान है मेरा।

मैंने कहा उनका एक और परिचय है—

मुझे क्या गर्व हो अपनी विभा का ?
चिता का धूलि-कण हूँ क्षार हूँ मैं ?
पता मेरा तुम्हें मिट्टी कहेगी—
समा जिसमें चुका सौ बार हूँ मैं।
न देखे विश्व, पर, मुझको घृणा से,
मनुज हूँ, सृष्टि का शृंगार हूँ मैं।
पुजारिन ! धूलि से मुझको उठा लो—
तुम्हारे देवता का हार हूँ मैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

याद आता है, सन् १९२८ में मेरी एक कविता-पुस्तक 'मधुर लहरी' प्रकाशित हुई। मेरी इसी मनोदशा में 'दिनकर' जी की कविताओं ने सन् १६३२-३३ में मुझे आकर्षित किया। ऐसा लगा कि जो मैं वर्षों से लिखना चाहता था, किन्तु लिख न सका, वह दिनकर लिख रहे हैं और खूब लिख रहे हैं। साहित्य का सत्य उनके हाथ लग गया है। उनकी रचनाओं को मैं बड़ी आत्मीयता से देखने लगा। देखते-देखते 'दिनकर' साहित्याकाश पर चमक उठे। वह ऐसे समर्थ कवि निकले जो समय के किसी 'वाद' में बाँधे न जा सके। सामयिक राष्ट्रीय रचनाओं के अतिरिक्त 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी' से वह त्रिकाल-जयी हो गये हैं। अब उनको काल के घेरे में भी नहीं बाँधा जा सकता। उनकी रचनाओं की समीक्षा तो काव्य के जौहरी करेंगे। मैं तो तट के वृक्ष के भांति साक्षी मात्र हूँ और उनकी धारा पर मेरे श्रद्धा के फूल बहते रहते हैं। (भगवान की अनुकम्पा से तट-वृक्ष-सा यह साक्षी अभी भी श्रद्धा का फूल बहाता जा रहा है—प्रभु दीर्घायुष्य प्रदान करें।) इतने निकट होते हुए भी उनसे मेरा व्यक्तिगत साक्षात्कार सन् १९४८ के पहले नहीं था। कोई पत्र-व्यवहार भी नहीं। पहले-पहल मैंने उन्हें सन् १६४८ में देखा। देखने पर वह मेरी कल्पना से ऊँचे जान पड़े। शारीरिक गौरव भी वैसा ही प्रभावशाली। यदि अभी 'दिनकर' के कंधे पर तूणीर बाँध दिया जाय और हाथ में धनुष दे दिया जाय तो ऐसा प्रतीत होगा कि कोई प्राचीन आर्य नयी दिल्ली में भटककर आ गया है।

साहित्यप्रेमियों से वह बड़ी आत्मीयता से मिलते हैं। सन् १६५९ में एक बार मैं उनके निवास-स्थान पर पटना पहुँचा। वह कमरा बन्द करके 'उर्वशी' की प्रेस कॉपी तैयार कर रहे थे। बाहर उनके नौकर ने मुझसे कहा—"साहेब भीतर बन्द हैं, अभी नहीं मिलेंगे।" मैंने कहा—"'दिनकर' जी साहेब कबसे हो गये ? और उनको भीतर बन्द किसने कर दिया ?" इतने में वह दरवाजा खोलकर बड़े जोर से हा-हा-हा हँसते हुए निकले। मुझे अन्दर ले जाकर 'उर्वशी' की पाण्डुलिपि दिखाई। इसी सिलसिले में कलेजा और कण्ठ दोनों से उसका पाठ करने लगे। श्री गंगाशरण सिंह भी आ गये। बहुत देर तक यह क्रम चलता रहा कभी गम्भीर साहित्यिक वार्ता और कभी बच्चों की तरह खिलखिला कर उनकी हँसी से घर गूँज उठता था। उनसे मिलने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि वह महान जीव हैं और अपने में भी महत्ता का बोध होने लगता है। (इसी बैठकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में मधुर जी के सुझाव पर दिनकर ने 'उर्वशी' के प्रथम सर्ग से उसके बचपन का वर्णन निकाल देने की बात मान ली थी।)

मधुर-स्वागत-सदन
जगदीशपुर, बलिया।

'मधुरजी की पंक्तियाँ मेरे भीतर एक अपरिचित प्रकाश की सनसनाहट-सी पैदा कर देती थीं।'

— दिनकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्याञ्जलियाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्यांजलि

हम तो इतने मधुर नहीं हैं, जितने मधुर 'मधुर' हैं,
हम उनके संस्पर्श के सुफल, इससे नहीं इतर हैं।
दुख का ताप, जलन पीड़ा की, जहाँ शमित होती है,
वह करुणा-सौहार्द स्नेह-चंदन के रूप 'मधुर' हैं।

जेठ - दोपहर - झुलसा जीवन या पावस का भींगा,
सब ऋतुओं में पाता उनको, शिशिर-धूप प्रियतर है।
वहाँ किसी के लिये अशुभ औ' व्यंग्य-कटूक्ति नहीं है,
सबके हित सद्भाव सतत् ही जिनके उर-अन्तर है।

जीवन सहज खुला अम्बर-सा, और नहीं आडम्बर,
अन्तर की अभिव्यक्ति प्रभा-सी. जगमग काव्य मुखर है।
गाये गीत अनेक विरह के, करुणा के संबल के
कोमल-कठिन भाव जीवन के, पर सब कोमल स्वर हैं।

तेज धार भी होती कितनी हितकर मधुर मनोहर,
इसको वह जाने जो सत् को, जाने शिव-सुन्दर है।
सहमी-ठहरी दिशा खोजती, कवि की अन्तरधारा,
पा जाती है इंगिति पावन मनभावन हितकर है।

छत्ते का आकार नहीं है मधु की राशि बताता,
सागर क्या कहता उसमें कितना गंगा-पुष्कर है।
लघुतम अणु विस्तार बना है, [ऊपर-ऊपर अम्बर,
सार भाव होता अमूल्य है, जो जीवन - संबर है।

वह तो होगा "दिनकर" कोई खोजी अपने पथ का,
जिनकी प्रतिभा की किरणों से बना काव्य-दिनकर है।
"मधुर"—"मधुर—लहरी" से प्रेरित कितने "दिनकर" होंगे,
पर "दिनकर"—सा उर में कितने कवि में भाव सुकर हैं।

नमन-नमन, श्रद्धा के शत-शत सुमन "मधुर" को अर्पित,
जो अन्तर-बाहर सब दिक् से केवल मधुर-मधुर हैं।

—अमृतपुत्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदा सृजन का मूल रूप कवि
नित जन-गन-मंगल का गायक,
नहीं द्वेष का नहीं कपट का
केवल रचना का उन्नायक,
वह बन्धन से दूर, सूर-सा
दीप्तिमान, जलकर प्रकाश
धरती को देता, किन्तु न लेता
कुछ भी, तुम कह लो लेकिन वह मौन रहेगा।

अगर कहेगा, केवल जन की पीड़ा
जो अन्तर्ज्वाला में जलकर
सूक्ष्मरूप से ऊपर उठती
भौतिकता का ढक्कन उसको
टोक न पाता, रोक न पाता,
उठते घन बन भाव और
नभ में छा जाते,
पुनः स्वयं को बिखराते
पर पानी नहीं, सुधा बरसाते।

जन पीड़ा में शोकातुर है
हँसी व्यंग्य में सदा 'मधुर' है।
अतः अगर सचमुच कवि कोई
वह द्रष्टा है, वह स्रष्टा है।
दो पल ही, पर वह तुरीय है
वन्दनीय अभिनन्दनीय है।
केवल कवि ने यह समझा
आँसू कभी न जल है।
जग ने कभी न समझा
कवि कितना कोमल है!

—स्व० जगदीश ओझा 'सुन्दर'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माधुरी मधुर की !

—हरिशंकर चतुर्वेदी

आँख फाड़ फाड़ मूँद-मूँद खोलखोलकर,
देखिए परन्तु आँख मूँदिए नजर की।
काँख में दबाइए गुमान ज्ञान पोटली को,
यादकर चींटी की अथाह छाप खुरकी।
सुनिए केवल मुँह बाए औ लगाए कान,
उनकी जबानी ही कहानी काव्य पुर की।
व्योम वे लगेंगे और बामन सरीखे आप,
भाई है मलाई जैसी माधुरी मधुर की ॥ १ ॥

पातर दुबर देह नेह कऽ सरेहि लागे,
उहाँ का लागीले विदवानन कऽ चुरकी।
आदर करीले जइसे बादर सनेह झरे,
मोहीले लोभावें जइसे साज पर मुरकी।
बलिया के साहित्य सृजन कऽ कहानी बानी,
बानी के चरनभक्त या कि कान लुरकी।
सरजू कऽ भक्ति के लगावें ज्ञान गंगा गरे,
लहरि उठावे नेह माधुरी मधुर की ॥ २ ॥

यार हो बहार हो निखार हो शबाब पर,
और आँख चार होवें प्यार से सबर की।
जोश होवें होश में अदीब नाज पोश होवें,
रास पर काबू पावें चाहत जिगर की।
रहम का मरहम कम हो कभी न जहाँ;
गमो गरदिश में मदद मिले परकी।
कली हो खिलाती और खुशबू लुटाती हवा,
मन को लुभाती तभी माधुरी मधुर की ॥ ३ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डोमिन कौ नेहमें बिदेह सो सदेह होत,
रचत कहानी बानी साग को विदुर की।
हरिजन कौं गरे लगावें हरिजन बनि,
स्नेह में करावें जो सुरति सुर पुर की।
बाल केलि बेलि कौ खिलावें बन के बसन्त,
सुधि जो करावें किलकारिन की सुर की।
सोने की पूरी पऽ तरकारी को हीरे की देय ?
माखन-सी मिसरी-सी माधुरी मधुर की ॥ ४ ॥

शिक्षा अधीक्षक
नगर पालिका, बलिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुगान गूंजा

'मधुर' - स्वर में भारती का
नवल गौरव - गान गूंजा।

देश में स्वाधीनता की
जहाँ रण-भेरी बजी थी।
अन्त करने दासता का
शान्ति-सेनायें सजी थीं।

मुक्ति - हित मृगुक्षेत्र का था
क्रान्तिकारी नाद गूंजा।
मुक्त - स्वर ललकार भरता
था 'मधुर' - संवाद गूंजा।

अमर बलि की मृत्तिका से
क्रान्ति - स्वर बलिदान गूंजा।
'मधुर' - स्वर में भारती का
नवल गौरव - गान गूंजा।

लगी घर - घर गूंजने नव
क्रान्ति जागृति की कहानी।
चली मस्ती में उछलती
देश - भक्तों की जवानी।

शान्ति - मार्गी सैनिकों का
था जहाँ आक्रोश जागा।
शान्ति - मार्गी नव जवानों—
का वहाँ था रोष जागा।

था 'मधुर'—उद्गार में नव
राष्ट्र का अभिमान गूंजा।
'मधुर' — स्वर में भारती का
नवल गौरव - गान गूंजा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिड़े जब साम्राज्यवादी—
शक्ति से रे! वीर मानी।
क्रान्ति में सहयोग देती
छुटी कवि की मुक्त वाणी।

प्रतिध्वनित होने लगा नित
जहाँ 'असहयोग'—नारा।
रूढ़ियों को तोड़ने को
बह चली थी 'मधुर'-धारा।

'मधुर'-शब्दों में सहज निज
देश का अरमान गूंजा।
'मधुर'—स्वर में भारती का
नवल गौरव-गान गूंजा।

क्रूर शासन से जहाँ
जन-शक्ति उत्पीड़ित हुई थी।
तरुण कवि के करुण स्वर में
जन-व्यथा मुखरित हुई थी।

दलित मानव ने जहाँ
युग-क्रान्ति का आधार पाया।
'डोम-डोमिन' ने वहाँ पर
सहज कवि का प्यार पाया।

'मधुर'-स्वर पर मुग्ध
बापू का अरे! वरदान गूंजा।
'मधुर'-स्वर में भारती का
नवल गौरव-गान गूंजा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है जहाँ शोषित उपेक्षित
व्यक्ति जग में मित्र तेरा।
कवे ! नव - युगमें चमकता
मधुर शैशव - चित्र तेरा।

बाल - कविता - क्षेत्र में
सम्मान जो तुमको मिला है।
दे रहा अमरत्व तुमको
दीप यश का जो जला है।

काव्य की अमराइयों में
प्रिय 'मधुर' - मधु गान गूंजा।
'मधुर' - स्वर में भारती का
नवल गौरव - गान गूंजा।

—रमाशंकर पाण्डेय 'नवल'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्द–सुमनांजलि

दिव्य वीणा पाणि हे मां भारती ! वन्दन तुम्हारा।
भारती के पुत्र ! हो स्वीकार अभिनन्दन हमारा।
आपने सद्-काव्य-रचना-कर्म का साधन किया है।
घोर संकट-काल में कवि-धर्म का पालन किया है।
प्रबल झंझा मध्य तुमने काव्य मय दीपक जलाये।
महा संकट के क्षणों में राष्ट्र-हित के गीत गाये।
प्रेरणाओं ने तुम्हारी जन्म कवियों को दिया है।
मंत्रणाओं से तुम्हारी ज्योति "दिनकर" ने लिया है।
बाल कविता को तुम्हीं ने मनोवैज्ञानिक धरा दी।
तरुण कवियों को सदा तुमने सही-सच्ची दिशा दी।
हरिजनों को आप ने निज काव्य का नायक बनाया।
राज-हठ के दर्प को 'इतिहास-पृष्ठों' पर उड़ाया।
युग-पुरुष को समय पर सद्नीति तुमने ही सिखाई।
भाषणों के पूर्व उसने "डोम-डोमिन" थी पढ़ाई।
रह न जाएं चिर कुआँरी हे सुकवि ! तव कल्पनाएं।
हो न जाएं कहीं निष्फल मधुर जीवन-साधनाएं।
मंत्र कुछ ऐसा पढ़ो हे कवि ! जगा दो शक्ति ऐसी।
हो उठें साकार सारी काव्यमय तव भावनाएं।
स्वस्थ हो, सुख-शांतिमय हो, दीर्घ हो जीवन तुम्हारा।
विश्व औ' साहित्य-सेवा-निरत हो तन-मन तुम्हारा।
परम प्रभु स्वीकार कर लेवें हमारी प्रार्थनाएं।
मधुर जी तव प्रति हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

—शब्दानन्द "शब्द"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा नाम गुण का परिचायक मधु-सा मधुर 'मधुर' है,
सरल सरस गीतों का गायक सहज स्वरूप मधुर है।
वीणा-पाणि चरण-कमलों में किया समर्पित जीवन—
स्वर हैं मधुर मधुरतम भाषा अभिव्यंजना मधुर है।

'गरल-सुधा' 'मधुबिन्दु' 'मधुर लहरी' 'बच्चों के गीत',
पढ़ने से लगता है कवि ने लिया हृदय को जीत।
'मधुर गीत बच्चों के' 'डोमिन' 'डोम' सवृश रचनाएं,
पत्थर-दिल में पैदा करतीं सहज प्रेरणा-प्रीति।

जिसके जीवन अभिलाषा का क्षेत्र बना संरचना,
अधिवक्ता होकर भी जिसने अपनाया पथ-रचना!
ऐसे साधक, सर्जनकर्ता परम उपासक हिन्दी के—
'मधुर' सदा कविता-कानन में तुम बन सुरभि महकना;

तुमसे जो पाया है अब तक, तुम्हें समर्पित करता,
मेरे पास नहीं कुछ मेरा, मेरी यही विवशता;
तेरे स्नेहिल हाथों का मेरे सिर पर स्पर्श रहे,
वन्दनीय हे! अग्रणीय, विनती बस इतनी करता।

हे कविवर! शत-शत अभिनन्दन करता है जग सारा,
चरण-कमल में शीश नमन करता है 'विवश' तुम्हारा।
युग-युगान्त तक काव्य-कला-संदेश सुनाते रहना,
तेरे यश का दीप बने मेरे पथ का उजियारा।

—अवधेश पाण्डेय 'विवश'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुर कलाधर

'कर्मवीर' 'गृहलक्ष्मी' 'हरिजन'
में लेखन का अलख जगाया।
इतिहासों के पन्नों पर—
राजा - रानी को खूब उड़ाया।

माँ की बेड़ी देख लिया जो—
देशभक्ति का व्रत जीवन में।
ओजस्वी रचनाओं से निज
क्रान्ति बीज बोया जन - मन में।

जिसने 'गरल - सुधा' में शाश्वत
व्यथा - कथा को सुनवाया है।
उसी लेखनी ने बच्चों को—
गीत मंजु रच बहलाया है।

कोयल की हर कूक बाँटती
डालों से उपहार खुशी का।
फूल-फूल पर तितली फिरती
करती है इजहार खुशी का।

बालगीत – साहित्य – जगत में
पल - छिन फूंक रहा जो स्वर है।
बलिया जनपद का गौरव वह
बिज्ञ कलाधर मधुर 'मधुर' है।

– दयाशंकर तिवारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection